नाचनेवालोंको धन देते हैं, पालनके वास्ते सेवकोंको द्रव्य दिया जाता है, और डरसे राजाको कर देते हैं।

यक्ष बोला, जगतको क्या अच्छादित करता है? प्रकाशको कौन रोकता है? मित्र किससे त्याग किये जाते हैं? मूर्ख स्वर्गमें किस कारणसे नहीं जाता?

महाराज युधिष्ठिर बोले, अज्ञानसे संसार आच्छादित होता है, अन्धकारसे प्रकाश रुकता है, लोभसे मित्र छूटते हैं, और सङ्गसे मूर्खको स्वर्ग नहीं मिलता।

यक्ष बोला, पुरुष काहेसे मरता है? देश काहेसे मरता है? श्राद्ध काहेसे मरते हैं? और यज्ञ काहेसे मरता है?

राजा युधिष्ठिर बोले, दरिद्रसे पुरुष मरता है, राजाके बिना देश मरता है, विद्याहीन पुरोहितसे श्राद्ध मरता है और दक्षिणाके बिना यज्ञ मरता है।

यक्ष बोला, दिशा कौनसी हैं? जल क्या है? अन्न क्या है? विष क्या है? हे राजन श्राद्धका काल कहो, तब जल पियो वा लेजावो।

महाराज युधिष्ठिर बोले, सज्जन दिशा हैं, आकाश जल हैं वायु अन्न हैं, मांगना विष है, और श्राद्धका समय ब्राह्मण हैं।

यक्ष बोला, तपका क्या लक्षण है? दम किसे कहते हैं? कड़ी क्षमा क्या है? और लज्जा किसका नाम है?

महाराज युधिष्ठिर बोले, अपने धर्मका करना तप; मनको विषयोंसे रोकना दम; सुख दुःखको सहन करना क्षमा, और बुरे कार्य्योंसे बचना लज्जा कहाती हैं।

यक्ष बोला, हे राजन्! ज्ञान किसे कहते हैं? शम किसका नाम है? परम दया क्या है? और आर्जव किसका नाम है?

महाराज युधिष्ठिर बोले, तत्वार्थके बोधको ज्ञान, चित्तको शान्तिको शम, सब प्राणियोंके सुखकी इच्छा करनेको दया, और चित्तके सावधान रखनेको आर्जव कहते हैं।

यक्ष बोला, मनुष्योंको दुःखसे जीतने योग्य शत्रु कौन है? जिसका अन्त नहीं ऐसा रोग कौन हैं? साधु किसे कहते हैं? और दुष्ट किसे कहते हैं?

महाराज युधिष्ठिर बोले, क्रोध दुःखसे जीतने योग्य शत्रु है, जिसका अन्त नहीं होता ऐसा रोग लोभ है, सब प्राणियोंका हित करनेवाला साधु और दया रहित दुष्ट कहाता है।

यक्ष बोला, हे राजन्! मोह किसे कहते हैं? अभिमान क्या वस्तु है? आलस्य किसे कहते हैं? और शोक किसका नाम है?

महाराज युधिष्ठिर बोले, धर्मको न जानना मोह, अपनेको सबसे बड़ा समझना अभिमान, धर्मको न करना आलस्य, और अज्ञानही शोक कहाता है।

यक्ष बोला, ऋषिलोग स्थिरता किसे कहते हैं? धैर्य्य क्या है? स्नान क्या है? और दान क्या वस्तु है?

महाराज युधिष्ठिर बोले, अपने धर्ममें स्थिर रहना स्थिरता, इन्द्रियोंको रोकना धैर्य्य, मनके मलको त्यागना स्नान और प्राणियोंकी रक्षा करना दान कहाता है।

यक्ष बोला, हे राजन्! कौन पुरुष पण्डित कौन नास्तिक? कौन मूर्ख! और कौन मत्सरी कहाता है?

महाराज युधिष्ठिर बोले, धर्मज्ञको पण्डित, मूर्खको नास्तिक, संसारके हेतुको काम, और हृदयके सन्तापवालेको मत्सरी कहते हैं।

यक्ष बोला, हे राजन्! अहंकार किसको कहते हैं? प्रारब्ध क्या है? पिशुनता (चुगलखोरी) और पाखण्ड किसको कहते हैं;

महाराज युधिष्ठिर बोले, बड़े अज्ञानको अहंकार, दानके फलको प्रारब्ध, दूसरोंके

दोष दिखानेकी पिशुनता, और धर्म्मध्वजीपन अर्थात यशके वास्ते धर्म्म करनेको पाखण्ड कहते हैं ?

यक्ष बोला, हे राजन्! धर्म्म, अर्थ, और काम परस्पर विरोधी हैं, इनका एक स्थानमें रहना कैसे हो सकता है ?

महाराज युधिष्ठिर बोले, जब धर्म्म और पत्नी, परस्पर वशमें हों तब धर्म्म, अर्थ, और काम एकमें रह सकते हैं।

यक्ष बोला, हे पुरुषोंमें श्रेष्ठ! आप यह कहियेकी अक्षय नरक किसको मिलता है ?

महाराज युधिष्ठिर बोले, जो मनुष्य मांगनेवाले दरिद्र ब्राह्मणको आपही बुलाकर पीछे आपही कहे कि मेरे पास कुछ नहीं है, उसे अक्षय नरक मिलता है, वेदमें, धर्म्म शास्त्रमें, ब्राह्मणमें, देवतोंमें, पितरोंमें, धर्म्ममें और मोक्षमें जो मिथ्या दृष्टि करता है, उसे अक्षय नरक मिलता है। जो धन होते भी दान और भोग नहीं करता है, तथा जो कहता है कि मरनेके पीछे कुछ नहीं होता, उसे अक्षय नरक होता है।

यक्ष बोला, हे राजन्! कुलसे चरित्रसे, वेदपाठसे या विद्यासे ब्राह्मण होता है, यह आप मुझसे निश्चय पूर्व्वक कहिये।

युधिष्ठिर बोले, हे यक्ष! सुनो, न कुलसे और न वेदपाठसे ब्राह्मण होता है, किन्तु आचरणहीं ब्राह्मणतामें कारण है, इस लिये मनुष्यको विशेषत: ब्राह्मणको चाहिये कि यत्नसे अपने आचरणकी रक्षा करे जिसके आचरण हीन हैं, वही हीन है, पढ़ने और पढ़ानेवाले तथा जो और शास्त्रके विचारनेवाले हैं, वे सब मूर्ख और व्यसनी हैं, किन्तु जो क्रियावान हैं. वही पण्डित हैं, चारों वेदोंके जाननेवाला यदि दुरचारी हो तो वह ब्राह्मण शूद्रसे भी नोच है, जो अग्निहोत्रका करनेवाला शान्त है वही ब्राह्मण है।

यक्ष बोला, प्रिय वचन कहनेवालेको क्या मिलता है ? विचारकर कार्य्य करनेवालेको क्या मिलता है ? बहुत मित्र करनेवालोंको क्या मिलता है ? और धर्म्म करनेवालोंको क्या मिलता है !

महाराज युधिष्ठिर बोले, प्रिय वचनवाला सबका प्यारा होता है, विचारकर कार्य्य करने वालोंको जय मिलतो है, बहुत मित्रवालेको सुखसे वास मिलता है और धर्म्म करनेवालेको मोक्ष मिलता है।

यक्ष बो,ला हे राजन्! जगतमें सुखी कौन है ? आश्चर्य्य क्या है ? मार्ग कौनसा है ? और वात क्या है ? इन मेरे चारों प्रश्नोंका उत्तर दो तो तुम्हारे भाई जीवें।

महाराज युधिष्ठिर बोले, दिनके आठवें भागमें जो अपने घरमें शाक खाकर रहता है, और किसीका ऋणी तथा विदेशी नहीं है, वही सुखी है। प्रति दिन प्राणी यमपुरीको चले जाते हैं, और शेष जीना चाहते हैं, इससे अधिक और आश्चर्य्य क्या होगा ? तर्क वे जड़ है, श्रुति भिन्न हैं, और एक ऋषि नहीं जिसके मतका प्रमाण हो, इससे धर्म्मका तत्व कन्दरामें छिपा है, इस लिये महाजन जिसमें चलते हों, वही मार्ग है। इस महा मोहमय कड़ाहमें सूर्य्यरूपी अग्नि इंधन; मास और ऋतु करछी, इन सबसे काल प्राणियोंका हलुआ पका रहा है, यही वात है।

यक्ष बोला, हे शत्रुनाशन! तुमने मेरे प्रश्नोंका ठीक ठीक उत्तर दिया अब पुरुषकी व्याख्या करो और यह कहो कि सब धनवाला पुरुष कौन है ?

महाराज युधिष्ठिर बोले, पुण्यकर्म्मसे शब्द आकाश और भूमिमें फैलता है, जबतक वह शब्द रहता है, तबतक वह पुरुष कहाता है, जिसको प्यारा और अप्यारा सुख और

दुःख भूत और भविष्यत समान हों वही सब धनवाला है।

यक्ष बोला, हे राजन् ! तुमने सबसे धनी पुरुषको कहा इस कारणसे चारों भाइयों-मेंसे जिस एकको कहो वही जीजाय।

महाराज युधिष्ठिर बोले; यह जो श्याम वर्ण लाला नेत्रवाला शालके समान ऊंचा महाबली नकुल है, यही जी जाय।

यक्ष बोला, यह तुम्हारा प्यारा भीम तथा तुम्हारी रक्षा करनेवाला अर्जुन है, इनको त्यागकर अपनी सौतेली माके पुत्र नकुलको जिलानेकी क्यों इच्छा करते हो ? जिस भीम सेनमें दश सहस्र हाथोका बल है, उसे छोड़-कर नकुलको जिलानेकी इच्छा क्यों करते हो ? सब लोग कहते हैं कि भीमसेन युधि-ष्ठिरका प्यारा है, उसे त्यागकर सौतेली माके पुत्र नकुलको क्यों जिलाना चाहते हो ? जिस अर्ज्जुनके बाहु बलके आश्रयसे पाण्डव जगतमें रहते हैं, उस अर्ज्जुनको त्याग कर नकुलको जिलानेकी क्यों इच्छा करते हो ?

महाराज युधिष्ठिर बोले, धर्मका नाश करनेसे धर्मभी पुरुषका नाश कर देता है, और धर्मको रक्षा करनेसे धर्मभी पुरुषकी रक्षा करता है, इससे मैं धर्मको नहीं छोड़ता हूं, कि धर्म नष्ट होके हमारा नाश न करे, सत्य परम धर्म है, मैं यथार्थ रीतिसे जानता हूं; इस कारणसे हे यक्ष ! नकुलही जीवे। हे यक्ष जगतमें मनुष्य कहते हैं कि राजा युधिष्ठिर धर्मशील हैं, इस कारणसे मैं धर्मको त्यागना नहीं चाहता, नकुलही जीवे।

यक्ष बोला, तुम्हारो बुद्धि अर्थ और कामसे भी धर्मको नहीं त्यागती इससे तुम्हारे सब भाई जी जांय।

३१२ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, तब यक्षके बच-नसे सब पाण्डव लोग खड़े होगये, क्षण-भरमें भूख और प्यास उनमें व्याप्त हो गई।

महाराज युधिष्ठिर बोले, तलावमें एक पैरसे खड़े हुए, पराजय रहित तुम कौन हो ? तुम यथार्थमें यक्षही हो ? या तुम वसुवोंमेंसे कोई एक हो ? अथवा रुद्र हो ? या मरुद्गणमेंसे कोई हो ? यहा तुम वज्रधारी इन्द्र हो ? मेरे यह भाई जो सैकड़ों और सहस्रोंसे लड़नेवाले हैं, मैं ऐसा कोई योद्धा नहीं देखता हूं जो इन सबको मार डालता, अब मैं इन सबको सुखसे जिया हुआ तथा विकार रहित इन्द्रिय युक्त देखता हूं, इससे आप हमारे बान्धव वा पिता हैं ?

यक्ष बोला, हे प्यारे ! मैं तुम्हारा पिता धर्म हूं, हे पुरुषोंमें उत्तम ! तुम्हारे देख-नेको यहां आया था। यश, सत्य, दम, शौच, कोमलता, लज्जा, धीरता दान, तप, और ब्रह्मचर्य्य यह सब मेरे पुत्र हैं। अहिंसा, समता, शान्ति; तप शौच, प्रमाद रहित होना, यह मेरी प्राप्तिके द्वार हैं। तुम मेरे प्यारे हो इसही कारणसे मैंने तुमसे प्रकाशित कर दिया है ! प्रारब्धसे तुम नित्यकी पांच यज्ञोंसें तत्पर हो, प्रारब्धसेहो तुमने काम आदि छै शत्रुओंको जीता है, इन शत्रुओंमेंसे दो प्रथम अवस्थामें दो मध्य अवस्थामें और दो अन्तको अवस्थामें दुःख देते हैं। हे राजन् ! मैं धर्म हूं, तुम्हारा कल्याण हो मैं तुमको जाननेके वास्ते यहां आया था, हे पाप रहित ! मै तुम्हारे सत्यसे बहुत प्रसन्न हुआ अब वर मांगो।

हे राजेन्द्र? मैं तुमको वर देता हूं क्योंकि जो मेरे भक्त हैं,उनकी दुर्गति कभी नहींहोती।

महाराज युधिष्ठिर बोले, जिस ब्राह्मणकी अरणीको लेके हरिन भाग गया है उसका अग्निहोत्र नष्ट नहो, यह मुझको पहिला वर दीजिये।

यह बोला; कि ब्राह्मणकी अरणीको तुम्हारी परीक्षाके वास्ते मैं हरिन बनकर उठा लाया हूं।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! धर्म्मने कहा कि हे देवतुल्य राजपुत्र युधिष्ठिर! तुम्हारा कल्याण हो, यह वर मैंने तुमको दिया अब दूसरा वर मांगो।

महाराज युधिष्ठिर बोले, हम लोगोंने बारह वर्ष वनमें बिताये; अब तेरहवां वर्ष आगया है, इसमें हमको कोई मनुष्य न जाने यह दूसरा वर दीजिये।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, भगवान धर्म्मने उत्तर दिया कि वह वर भी मैंने तुम्हें दिया; धर्म्मने फिर सत्य पराक्रमी कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरको समझाया, हे भारत! यद्यपि तुम लोग इस पृथ्वीमें अपने रूपसेही फिरोगे, तोभी तुम्हें तीनो लोकमें कोई नहीं जानेगा, हे कुरुकुल श्रेष्ठ पाण्डवो! यह तेरहवां वर्ष है, इसमें तुम बिराट नगरमें छिपकर रहो, तुम लोगोंके मनमें जैसा रूप धारण करनेकी इच्छा हो वैसाही रूप धारण करके बिचरो, यह अरणी सहित मथानी जिसे तुम्हारे जाननेकी इच्छासे मैं हरिन बनके उठा लाया था सो ब्राह्मणको देदेना। हे सौम्य मैं तुमको वर देते देते तृप्त नहीं होता हूं, तुम तीसरा वर मांगो, हे राजन्! तीसरा वर ऐसा मांगो कि उसकी उपमा नहो, तुम मेरे पुत्र हो और बिदुर भी मेरेही अंशसे उत्पन्न हैं।

महाराज युधिष्ठिर बोले, हे देवदेव! हे सनातन! आप जो प्रसन्न होके वर देंगे, सो मैं ग्रहण करूंगा, हे पितः! मैं लोभ, मोह, और क्रोधको जीतूं दान, तप और सत्यमें मेरा मन सदा लगा रहे।

धर्म्म बोले, हे पाण्डव! इन गुणोंसे तुम आपही भरे हो, तोभी जो तुमने कहा वैसाही होगा।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, ऐसा कहके लोक पूजित भगवान धर्म्म वहीं अन्तर्द्धान होगये, बुद्धिमान वीर पाण्डव भी यम रहित होके आश्रमको आये और तपस्वी ब्राह्मणको अरणी दे दी यह पाण्डवोंका मरके जीना पिता पुत्रकी कीर्त्तिका बढ़ानेवाला है जो मनुष्य जितेन्द्री होके इसे पढ़े वह पुत्र पौत्रके सहित सौ वर्ष जीवे; अधर्म्ममें मित्रोंके प्रेम छुड़ानेमें, पराया धन लेनेमें, व्यभिचार और कादरतामें उस मनुष्यका चित्त नहीं लगता है, जो इस कथाको जानता है।

३१३ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, महाराज! धर्म्मसे आज्ञा पाकर सत्य पराक्रमी पाण्डव तेरहवें वर्षमें गुप्त होकर अज्ञात बासमें रहे थे, जो पाण्डवोंके भक्त विद्वान ब्रतधारी तपस्वी वनमें संग थे उनसे महात्मा पाण्डव हाथ जोड़के अपना निवास बतलानेके लिये बोले, आप लोग सब जानते हैं कि जिस प्रकारसे धृतराष्ट्रके पुत्रोंने छलसे हमारा राज्य छीना और हमको दुःख दिया है। हम लोगोंने बड़े कष्टके साथ बारह वर्ष वनमें निवास किया, अब यह तेरहवां वर्ष अज्ञातवासका आया है, इस कारणसे हम लोग गुप्त होकर रहेंगे, आप लोग आज्ञा दीजिये दुर्योधन और दुरात्मा शकुनी हम लोगोंके अत्यन्त बैरी हैं, वे हमारे सेवक पुरबासो और साथियोंका बहुत अपकार कर सकते हैं, इस कारणसे हम लोग अपने राज्यमें बैठकर आप लोग तथा ब्राह्मणोंसे मिलेंगे।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, ऐसा कहके धर्म्मपुत्र युधिष्ठिर दुःख और शोकसे व्याकुल होके मूर्च्छित होगये और उनके नेत्रोंसे आंसू बहने लगे, तब ब्राह्मण और भाई उनको समझाने लगे, धौम्य राजा युधिष्ठिरसे बोले, हे राजन्! तुम विद्वान, दानी, सत्यबादी और जितेन्द्री हो, आपके समान मनुष्य किसी बिपतमें भी सोच

नहीं करते देवतोंको भी शत्रुओंके लिये छिपना और बिपद भोगनी पड़ी थी, इन्द्रने पहाड़के ऊपर और निषध देशमें गुप्त रह कर शत्रुओंके पकड़नेका उपाय किया था, बिष्णुने घोड़ेका सिर पाके सूर्य्य लोकमें दैत्योंके मारनेके लिये बहुत दिन तक निवास किया था, फिर वामन रूप धारण करके अपने आत्माको छिपाके जैसे बलिके राज्यको छीना वह सब आपने सुनाही है, जैसे अग्निने जलमें छिपकर देवतोंका कार्य्य किया, वह आपने सुनाही है। हे धर्म्मको जाननेवाले! इन्द्रके वज्रमें घुसकर जैसे विष्णुने शत्रुओंका नाश किया वह आपने सुनाही है, ब्रह्मऋषि और्वने जो छिपकर देवतोंका कार्य्य किया था, वहभी आपने सुनाहो है, उत्तम तेजवाले सूर्य्यने पृथ्वीमें रहकर जैसे छिपकर शत्रुओंका नाश किया, उसेभी आप जानते हैं, ऐसेही विष्णुने दशरथके घरमें छिपके युद्धमें रावणको मारा था। जैसे महात्माओंने जिधर तिधर छिपकर शत्रुओंको जीता था; वैसेही तुमभी जीतोगे। धौम्यने ऐसे बाक्योंसे राजाको समझाया, तब राजा शास्त्रकी बुद्धिसे और अपनी बुद्धिसे सावधान हुए, पश्चात् बलवानोंमें श्रेष्ठ महाभुज भीमसेन अपनी वाणीसे राजाको प्रसन्न करते हुए, ऐसे बोले, हे राजन्! तुम्हारी धर्म्मबुद्धिको देखकरही गाण्डीवधारी अर्ज्जुनने कुछ साहस नहीं किया था, हे महाराज! सहदेव और नकुल महा बलवान और शत्रुओंको नाश करनेमें समर्थ हैं, मैंही उनको सदा रोके रहता हूं, जिस शत्रुके मारनेको आप हमें छोड़ेंगे, हम लोग वहांपर हंसी नहीं करावेंगे। आप आज्ञा दीजिये हम बहुत शीघ्र शत्रुओंको जीतेंगे। भीमसेनके ऐसे बचन सुनकर ब्राह्मणोंने परम आशीर्व्वाद दिया और पाण्डवोंसे आज्ञा लेकर अपने अपने घरको चले गये, वेदोंके जाननेवालोंमें मुख्य यति और मुनि लोग यथा योग्य आदर पाके फिर दर्शनकी इच्छासे अपने घरको चले गये। धौम्यके सहित बिद्वान पांचो पाण्डव द्रौपदीके सहित उठके चले, उस स्थानसे एक कोस चलके प्रातःकाल होते हुए, गुप्त वस्त्र पहिरनेको उद्यत हुए, शास्त्र और मन्त्रको जाननेवाले सन्धि और विग्रहके समयको जाननेवाले पाण्डव लोग बिचार करनेके लिये, सबसे अलग बैठ गये।

३१४ अध्याय समाप्त।

हिन्दीभाषा महाभारतमें वनपर्व्व समाप्त।

इस बनपर्व्वको सुनकर मनुष्य महा पापोंसे छूटता है, निर्धन धन पाता है, पुत्र पौत्रसे युक्त होता है, जो जो इच्छा करता सोसो प्राप्त होती हैं, स्त्री वा पुरुष शुद्ध होके जो पाठ करता है, उसकी सब कामना पूर्ण होती हैं, बन पर्व्वको सुनके वा पढ़के ब्राह्मणोंको वस्त्र सुबर्ण गऊ और रत्न दान दे, ब्राह्मणके प्रसन्न होनेसे पाण्डव ब्रह्मा बिष्णु रुद्र इन्द्र तथा और देवता लोग भूत मुनि देवी तथा और लोग प्रसन्न होते हैं, बाचनेवालेको अन्न वस्त्र सोनेके आभूरण बिशेषतः कपिला गऊ देना चाहिये, दूध दूहनेका कांसेका पात्र, गऊके खुर चांदीसे और सींग सोनेसे मढ़कर ब्राह्मणको अन्नके सहित दान दे, इससे पाण्डव लोग प्रसन्न होते हैं, इस बनपर्व्वकी कथाको जो सुनता है उसकी सब इच्छा पूर्ण होती है, और अन्तको स्वर्ग जाता है, इति महात्मय समाप्त।

वनपर्व्व सम्पूर्ण।

महाभारत।

विराटपर्व्व।

पाण्डव प्रवेश प्रकरण।

नारायण नरोत्तम नर और सरस्वती देवीको प्रणाम करके जयकीर्त्तन करना उचित है।

महाराज जनमेजय बोले, हे ब्राह्मणश्रेष्ठ वैशम्पायन महामुनि! हमारे पितामहके पिता पाण्डव लोग दुर्य्योधनके भयसे पीड़ित होकर बिराट नगरमें छिपकर कैसे रहे थे, और सदा ब्रह्मवादिनी महा भाग्यवती पतिव्रता द्रौपदीने कौन दुःख सहकर अज्ञातवास किया?

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे पृथ्वीनाथ! तुम्हारे पुरुषा पाण्डव लोग, जिस प्रकार छिपकर बिराट नगरमें रहे थे, सो कथा हम तुमसे कहते हैं। धर्म्मधारियोंमें श्रेष्ठ धर्म्मराज युधिष्ठिर बरदानोंको पाकर आश्रममें आये, और ब्राह्मणोंसे सब कथा सुनाई। कथा कहकर महाराजने वह अरणी ब्राह्मणको दे दी। फिर महा मनस्वी धर्म्मराजने सब भाइयोंको बुलाकर कहा हम लोगोंको राज्यसे निकले हुए, बारह वर्ष बीत गये, अब यह तेरहवां बर्ष आया है, इस बारह बर्षके समयमें हम लोगोंने अनेक दुःख भोगे; इस तेरहवें बर्षमें जिस स्थानमें हमको कोई शत्रु न जान सकें, तहां निवास करना चाहिये। हे कुन्तीपुत्र अर्जुन! तुम उस स्थानको हमको बतलाओ।

अर्जुन बोले,हे पृथ्वीनाथ! धर्म्मके बरदानसे जब हम लोग जिस किसी स्थानमें रहेंगे, तबभी हमको कोई पुरुष नहीं जान सकेगा, तथापि हम आपके रहने योग्य राज्योंका वर्णन करते हैं। ये सब स्थान रमणीय और गुप्त हैं, इनमेंसे जहां आपकी इच्छा हो तहां रहिये। कुरु राज्योंको छोड़कर और भी ऐसे राज्य हैं, जिनमें अन्न और जल मिल सकते हैं। पाञ्चाल, चेदी, मत्स्य, सूरसेन, पटच्चर, दशार्ण, अनवर, मल्ल, शाल्व, युगन्धर, कुन्ती और सुराष्ट्र इन राज्योंमेंसे जिसमें आपकी इच्छा हो आप रहिये। वहीं हम लोगभी एक बर्ष रहेंगे।

महाराज युधिष्ठिर बोले, हे महाबाहो! तुमने जो कहा हमने सुना, जो कुछ भगवान धर्म्मने हमको बरदान दिये हैं, वे सब कभी मिथ्या नहीं हो सकते, हम सब लोगोंको उचित है, कि परस्पर सम्मति करके और निर्भय होकर किसी एक स्थानमें निवास करें। मत्स्य देशका राजा बिराट धार्म्मिक, पण्डित, प्यारा, बूढ़ा और सदासे पाण्डवोंका भक्त है, इस लिये हम लोग सुखसे एक वर्ष उसीके घर निवास करेंगे, और उसको सेवाके कर्म्मभी करते रहेंगे, हे पाण्डवो! तुम लोग राजसेवाका जो जो कर्म्म कर सकते हो सो हमसे कहो, क्योंकि वही सब कर्म्म बिराटसे कहने होंगे।

अर्जुन बोले, हे देव! हे महाराज! हे साधो! आप पण्डित कोमल लज्जावान और सत्य पराक्रमी हैं, इस लिये आप कहिये कौन कर्म्म करके बिराट नगरमें निवास कीजियेगा। यह नियम है कि जिस प्रकार साधारण मनुष्य आपत्तियोंको सह सकता है, वैसे आप लोग

नहीं सह सकते ; आप महाराज होकर इस घोर आपत्तिमें पड़े हैं, आप किस प्रकार इस दुःखसे पार होंगे, हमें यही सन्देह है।

महाराज युधिष्ठिर बोले, हे पुरुषसिंह पाण्डवो! हम राजा विराटके यहां रहकर जो कर्म्म करेंगे सो तुम लोग सुनो, मैं उस महात्मा राजाका सभासद बनूंगा। मैं अपनी जाति ब्राह्मण नाम कङ्क, और कर्म्म जूआ खिलानेका बताऊंगा, पन्नेसे जड़े हुए, परीके समान सफेद हाथीदांतके बने हुए, काले और लाल मनोहर पासे अपने पास रखूंगा, मैं मन्त्री और बान्धवोंके रहित राजा विराटको प्रसन्न कर लूंगा। मुझे वहां कोई नहीं जान सकेगा, मैं राजासे कहूंगा कि मैं राजा युधिष्ठिरका प्राणके समान मित्र था, मैं राजा विराटसे ऐसे कहूंगा, हे भीम! तुम क्या काम करोगे, सो हमसे कहो।

१ अध्याय समाप्त।

भीमसेन बोले, हे भारत! मेरी बुद्धिमें यह आता है कि राजा विराटके यहां जाकर मैं कहूंगा, कि मैं भोजन बनानेका कर्म्म करता हूं, तब राजा मुझको भोजन बनानेका कार्य्य देंगे। मैं बहुत अच्छा भोजन बनाना जानता हूं, राजाका भोजन बनाऊंगा, और जो उनके यहां पहिलेसे शिक्षित लोग भोजन बनानेवाले हैं, उनको प्रसन्न करके और सब भोजनबनानेकी विद्या सीख लूगा, मैं बड़ी बड़ी लकडियोंके गट्ठरको सिरपर उठाकर चौकेमें डाल दूंगा, मेरे इस घोर कर्म्मको देखकर राजा बहुत प्रसन्न होंगे, मैं अमानुष कर्म्म करूंगा, जिससे सब लोग मुझको राजाके समान मानने लगेंगे, मैं राजाके खाने और पीनेकी सब वस्तुओंका स्वामी बनकर रहूंगा, यदि कोई हाथी भैंसा या सिंह महा बलवान किसीसे नहीं पकड़ा जायगा तो उसको मैं पकड लिया करूंगा, जो कोई योद्धा समाजमें युद्ध करनेकी इच्छा करेगा, उससे मैं युद्धभी करूंगा, मेरे इस कर्म्मसे राजा बहुत प्रसन्न होंगे,। मुझसे जो लड़नेको आवेगा उसको मैं युद्धमें कभी नहीं मारूंगा, उसको मैं इस प्रकार पटकूंगा कि जिसमें वह न मरे, यदि मुझसे कोई पूछेगा तो मैं कहूंगा, कि मैं राजा युधिष्ठिरके यहां आरालिक (अन्न पकानेवाला) गोवि कर्त्ता (साग बनानेवाला) सूपकर्त्ता (तेलमें अन्न पकानेवाला) और योद्धा था, मैं अपनी रक्षा आपही कर लूंगा। हे पृथ्वीनाथ! मैंने जो कर्म्म आपसे कहे वही करूंगा।

महाराज युधिष्ठिर बोले, जिसने ब्राह्मण वेषधारी अग्निको खाण्डव बनमें अग्नि तृप्त किया था जिस महाबाहु अजित अर्ज्जुनके पास अग्नि खाण्डव बनमें आये थे, वह कुन्तीनन्दन अब क्या करेंगे? जिसने अपने बलसे एक रथपर चढ़कर अनेक राक्षस और सर्पोंको मारकर इन्द्रको जीता था, जो साक्षात सर्पराज वासुकीकी बहिनको ले आये थे, जो सब योद्धाओंमें श्रेष्ठ हैं, वह अर्ज्जुन अब क्या करेंगे? जैसे तपनेवालोंमें सूर्य्य श्रेष्ठ हैं, पुरुषोंमें ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं, जैसे सांपोंमें आशीविष, तेजस्वियोंमें अग्नि, शस्त्रोंमें बज्र, बैलोंमें सांड़, तलावोंमें समुद्र, बर्षनेवालोंमें मेघ, सर्पोंमें धृतराष्ट्र, हाथियोंमें ऐरावत, प्यारोंमें पुत्र और जैसे सब मित्रोंमें स्त्री श्रेष्ठ है, तैसे सब धनुषधारियोंमें अर्ज्जुन श्रेष्ठ हैं, यह इन्द्र और कृष्णके समान बली गाण्डीवधारी सफेद घोड़ेवाले अर्ज्जुन क्या करेंगे? जिसने पांच बर्षतक इन्द्रके घरमें रहकर अपने बलसे उन दिव्य अस्त्रोंको प्राप्त किया, जो मनुष्योंको नहीं मिल सकते हैं, जिस देवरूपी तेजस्वी अर्ज्जुनको हम बारवां रुद्र, तेरहवां सूर्य्य, नवम बसु और दशम ग्रह मानते हैं, जिसके

दोनों हाथ विशाल और समान हैं; जिसके दोनों हाथको त्वचा धनुष खींचनेसे कठोर होगई हैं, जिसके दहिने और बांए हाथ धनुष खींचनेसे बैलके कन्धेके समान कठोर होगये हैं, वह अर्ज्जुन अब क्या करेंगे? जैसे पर्व्वतोंमें हिमाचल श्रेष्ठ है, नदियोंमें समुद्र श्रेष्ठ है, देवतोंमें इन्द्र श्रेष्ठ हैं, जैसे मृगोंमें शार्दूल श्रेष्ठ है, जैसे पक्षियोंमें गरुड़ उत्तम हैं, वैसेही शस्त्रधारियोंमें अर्ज्जुन श्रेष्ठ हैं, वह अब क्या करेंगे?

अर्ज्जुन बोले, हे पृथ्वीनाथ! मैं यही प्रतिज्ञा करूंगा कि मैं नपुंसक हूं, हे राजन्! धनुषके रोदेसे जो मेरी भुजा कठोर होगई है, उनको आभूषण (बाजूबन्दसे) छिपा लूंगा, मैं प्रकाशमान कुण्डलोंको कानोंसे निकालकर और गलेमें कण्ठी आदि पहरके नपुंसकों (हीजड़ों) का वेष बना लूंगा, सिरपर जूड़ा बांधकर मैं अपना नाम "बृहन्नला" प्रसिद्ध करूंगा, हे महीपाल! मैं स्त्री बनके रणवासमें रहनेवाली और लोगोंके कन्याओंके सङ्ग कहानी कहाता हुआ, निवास करूंगा, हे राजन्! मैं राजा विराटको स्त्रियोंको गाना, नाचना और अनेक प्रकारके बाजे सिखलाऊंगा। प्रजावर्गके उत्तम कर्म्मको कहकर मैं कपट वेषसे अपने आपको छिपाऊंगा, हे पाण्डव यदि राजा विराट मुझसे पूछेंगे तो मैं यही कहूंगा कि मैं महाराज युधिष्ठिरके स्थानमें द्रौपदीकी दासी थी, इस रीतिसे छिपकर राजा विराटके घर सुखसे रहूंगा, जैसे राजा नलने कपट वेषसे सुख पाया था।

२ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! जब इस प्रकारके वाक्य कहके पुरुषोंमें श्रेष्ठ अर्ज्जुन चुप हुए, तब धर्म्म करनेवालोंमें श्रेष्ठ महाराज युधिष्ठिर अपने दूसरे भाइयोंसे बोले, हे प्यारे नकुल! तुम सुकुमार, देखने योग्य और सुख भोगने योग्य हो, कहो उस राजाके राज्यमें रहकर कौनसा कर्म्म करोगे?

नकुल बोले, हे महाराज! मैं राजा विराटके घोड़ोंका सहीस बनूंगा, घोड़ोंकी रक्षामें मैं बहुत चतुर हूं, और घोड़ोंकी रक्षाका मुझे पूरा ज्ञान है, मैं घोड़ोंको सिखानेमें और घोड़ोंकी औषधि करनेमें बहुत चतुर हूं, मुझे यह कर्म्म बहुत प्यारा है, हे महाराज! मेरा नाम ग्रन्थिक होगा। हे कुरुनाथ! जैसे आपको घोड़े प्यारे हैं, ऐसेही मुझेभी घोड़े प्यारे हैं। हे महाराज! विराट नगरमें जो मुझे बुलाकर पूछेगा उससे मैं कहूंगा कि पाण्डुपुत्र राजा युधिष्ठिरने मुझे अपने घोड़ोंका अधिकारी बनाया था, हे महाराज! ऐसे छिपकर मैं सुखसे विराट नगरमें रहूंगा।

महाराज युधिष्ठिर बोले, हे सहदेव! राजा विराटके पास रहकर तुम छिपकर कौनसे कर्म्मको करके सुखसे निवास करोगे?

सहदेव बोले, हे महाराज! मैं राजा विराटको गौओंका गिनने, रोकने, और दूहनेवाला बनूंगा, मैं गौओंके गिननेमें निपुण हूं। आप अपने मनकी चिन्तारूपी ज्वरको दूर कीजिये, मैं सुखसे वहां रहूंगा, मेरा नाम तन्तिपाल प्रसिद्ध होगा। हे महाराज! प्रथम आपने मुझे गौओंकी रक्षा करनेकी आज्ञा दी थी, तबही मैंने इस विषयमें बहुत गुण सीख लिये। गौओंके लक्षण, चरित्र और मङ्गल सबको मैं भली भांति जानता हूं। उन बैलोंके उत्तम लक्षणोंको भी मैं जानता हूं, जिनके मूत्रको सूंघकर बन्ध्याकेभी पुत्र उत्पन्न हो जाता है। मैं इस प्रकारसे राजा विराटको प्रसन्न करूंगा, मुझे वहां कोईभी नहीं जानेगा।

महाराज युधिष्ठिर बोले, यह हमारी प्राणोंसेभी प्यारी स्त्री जो माताके समान पालनेके योग्य और बड़ी बहनके तुल्य मानने योग्य है, सो किस कामको करती हुई वहां रहेंगी? वह स्त्रियोंके कर्म्मको कुछ भी नहीं जानती है। यह बाला बहुत सुकुमारी, पति-व्रता, यशोवती और राजपुत्री है, इसने जबसे जन्म लिया है, तबसे पुष्पहार, गन्ध, चन्दन और उत्तम वस्त्रोंका पहरनाही सीखा है।

द्रौपदी बोली, हे भारत! लोकमें सैरन्ध्री अर्थात दासी राणियोंके पास जाती हैं, और कोई स्त्री नहीं जाने पाती हैं, यही जगतका निश्चय है; हे महाराज! मैं सिर गूंथनेमें बहुत निपुण हूं, यदि राजा मुझसे पूछेंगे तो मैं यही कहूंगी कि मैं महाराज युधिष्ठिरके घरमें द्रौपदीकी दासी थी, हे महाराज! मैं इस प्रकारसे अपने आपको छिपाऊंगी और सुखसे रहूंगी। राजा विराटकी स्त्री यशस्विनी सुदेष्णाके पास मैं जाऊंगी, वह मुझे अपने पास रक्खेंगी, आप दुःख न कीजिये।

महाराज युधिष्ठिर बोले, हे द्रौपदी! तुम अच्छा कहती हो, हे भामिनी! तुम उत्तम कुलमें उत्पन्न हुई हो, मैं तुमको पापकर्म्म करनेवाली नहीं जानता हूं, क्योंकि साधु और उत्तम व्रत करनेवाली हो। जिससे हमारे पापी शत्रु लोग सुखी न हों, तुमको शत्रु लोग जान न सकें, ऐसाही कर्म्म तुम करना।

३ अध्याय समाप्त।

महाराज युधिष्ठिर बोले, हे पाण्डवो! तुम लोगोंने अपने जो अपने कर्म्म कहे, उन्हींको करोगे, मुझकोभी अपनी बुद्धिके अनुसार निश्चय हो गया है कि तुम लोग इन सब कर्म्मोंको कर सकोगे। हमारे पुरोहित धौम्य मुनि, सारथी और नगर निवासियोंके सहित राजा द्रुपदके यहां जाकर हमारे अग्निहोत्रकी रक्षा करें, हमारे इन्द्रसेन आदि सारथी लोग खाली रथोंको लेकर शीघ्र द्वारिकाको चले जायं, हमारी बुद्धिमें यही निश्चय हुआ है कि ये जो द्रौपदीकी दासी हैं, सो सब नगरनिवासी और रसोइयोंके सङ्ग पञ्चाल देशको चले जायं और ये सब लोग जाकर कहें कि हम लोग पाण्डवोंको नहीं जानते कि कहां चले गये, वे लोग हमको द्वैत बनमें छोड़कर न जाने कहांको चले गये।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, पाण्डव लोग इस प्रकार परस्पर सम्मति करके और अपने अपने कर्म्मोंका निश्चय करके धौम्यको बुलाकर पूंछने लगे, तब धौम्य उनसे ऐसा बोले, हे महाराज युधिष्ठिर! तुम्हारे सब भाई ब्राह्मण और मित्रोंसे उचित व्यवहार करना जानते हैं, और ये लोग शस्त्र विद्या, अग्निविद्या, और वाहनविद्याको भली भांति जानते हैं, पर तोभी आप और अर्जुन द्रौपदीकी रक्षा करना, आप इस जगतके सब व्यवहारको जानते हैं, आप अपने मित्रोंसे प्रेमपूर्वक व्यवहार करना, यही सनातन धर्म्म है, यही सनातन अर्थ है, और यही सनातन व्यवहार है। इस लिये हम आपसे कुछ गुप्त नीति कहते हैं, आप सुनें, हे राजपुत्र! आप लोग हमारी कही हुई, रीतिसे चलनेसे सब दोषोंको तर जावेंगे। हे कुन्तीपुत्र! राजाके घरमें रहना बहुत कठिन है, आप लोग आदर और निरादरको सहकर किसी प्रकारसे एक वर्ष बिताना, फिर चौदहवां वर्ष प्राप्त होनेसे सुख प्राप्त करेंगे, पहले द्वारपालसे समाचार भेजकर तब राजाका दर्शन करना चाहिये, और कभी राजाका विश्वास नहीं करना चाहिये, राजाकी सभामें ऐसे स्थानपर बैठना चाहिये जहां दूसरा न बैठ सके। जो वाहन, पलङ्ग, आसन हाथी और घोड़ेकी इच्छा नहीं करता और राजाको

आज्ञामें सम्मत रहता है, वही राजसभामें रहने योग्य है। जहां जहां बैठनेसे दुष्ट लोग शङ्का करें, जो पुरुष उन स्थानों पर बैठना छोड़ दे, वही राजाके यहां रह सकता है! राजाको किसी प्रकारकी शिक्षा नहीं देनी चाहिये, और बिना पूछे कुछ बोलनाभी नहीं चाहिये, तथा सब समयोंपर राजाकी प्रशंसाही करनी योग्य है। राजा लोग झंठेकी प्रशंसा नहीं करते, वे झूठे मनुष्योंकाभी निरादर करदेते हैं। बुद्धिमानको उचित है कि राजाकी स्त्रियोंसे कभी प्रेम न करे और रनिवासमें रहनेवालोंसे द्वेषभी न करे। छोटे कामकोभी राजाकी आज्ञासे करना उचित है, ऐसा करनेसे कोई दोष नहीं होता है। राजाके यहां उत्तम आसनको पाकर भी राजाको आज्ञाके बिना अन्धेके समान खड़ा रहे, अर्थात बिना आज्ञा आसनपर न बैठे, राजासे बिना अधिकार पाये कोई कामभी न करे, यह सनातन मर्य्यादा है। पुत्र भाई और अपने परम बन्धुकोभी मर्य्यादाहीन—देखकर शत्रु नाशक राजा लोग आदर नहीं देते। सेवा करनेवालोंको उचित है कि राजाको अग्नि और देवताके समान सेवा करें, यदि किसी विषयमें राजाको यह ज्ञात हो जाय कि अमुक पुरुष हमसे झंठ बोलता है, तब निःसन्देह राजा उसको मार डालता है। राजा जिस कर्म्मको करे सेवकको भी वैसाही करना चाहिये। राजाकी सेवा करनेमें भूल, अभिमान और क्रोध करना उचित नहीं है। करने और न करने, प्रिय और अप्रियमें सेवकको वही कर्म्म करना चाहिये जो राजाको प्रिय हो। सब कथा और व्यवहारोंमें राजाका प्यारा बना रहे, जो बात राजाको प्रिय न हो वह उससे न कहे। मैं राजाका प्यारा हूं, यह विचारकर बुद्धिमान राजाकी सेवा न करे, वरन सदा भ्रम रहित होकर राजाके प्रिय कामोंको करता रहे। जो राजाके अप्रिय कामोंको नहीं करता, राजाके शत्रुवोंसे बात नहीं करता और अपने स्थानको नहीं छोड़ता वही राजाके यहां रह सकता है। बुद्धिमानको उचित है कि राजाके दहनी या बाईं ओर बैठे, और शस्त्रधारी पीछे बैठते हैं; वे लोग राजाकी रक्षा करते हैं, राजाके आगे आसन लगाकर बैठना सदा अनुचित है। राजाके आगे जो कुछ मिले उसको अस्वीकार करना उचित नहीं है। आगे बैठना दरिद्रोंकोभी अप्रिय होता है और राजोंकी तो कथाही क्या है? यदि राजा कोई मिथ्या बात कहे तो उसे सर्व्व साधारणके आगे कहना उचित नहीं है, झूंठे और मिथ्या पण्डित मानीका राजा लोग निरादर कर देते हैं। सेवकको उचित है कि कभी अपनी बुद्धि और बलका अभिमान न करे, सदा राजाका प्रिय काम करनेसे मनुष्य राजाका प्यारा होता है, और राजाका प्यारा होनेसे अनेक सुख मिलते हैं। कठिनतासे प्राप्त होने योग्य सुख पाकर भी सावधान होकर राजाहीके प्यारे काम करने चाहिये तथा सदा राजाके कल्याणकी इच्छा रखनी उचित है। जिसके क्रोधसे महा आपत्ति और प्रसन्नतासे महा सुख प्राप्त होते है, ऐसा कौन बुद्धिमान है, जो उसका अहित चाहे? राजसभामें बैठकर होठ, हाथ, जङ्घा और जीभको नहीं चलाना चाहिये, राजाके आगे धीरेसे बोलना उचित है, वायु और मूत्रकोभी धीरेसे निकालना चाहिये। यदि राजाके हंसाने योग्य कोई वस्तु सभामें आजाय तो हंसीको रोकना उचित नहीं है, और न पागलके समान वेगसे हंसनाही उचित है, अत्यन्त धैर्य्य करनाभी उचित नहीं है, क्योंकि सदा चुप रहनेसे सभावाले लोग उसे मूर्ख जान लेते हैं। राजाको कृपाको थोड़ा हंसकर प्रकाश करना उचित है। जा लाभमें प्रसन्न

नहीं होता और अनादरसे दुःख नहीं मानता और जो सदा सावधान रहता है, वही राजाके यहां रहने योग्य होता है। जो पण्डित पुरुष मन्त्री होकर राजा और राजपुत्रकी सेवा करता है, वह बहुत दिनतक सुख भोगता है। जो मन्त्री कृपा और बिना कारण राजाके क्रोधकी निन्दा नहीं करता वही बहुत दिन-सुख भोगता है, और नष्ट सम्पत्तिको लाभ करता है, जो राज्यमें रहनेवाला अथवा नौकर राजाके आगे अथवा पीछे प्रशंसा करता है, वही बहुत दिनतक सुखी होता है। जो मन्त्री अपने बलसे राज्यका भोग करना चाहता है वह बहुत दिन सुख नहीं भोगता और अन्तमें अपने प्राणोंको भी नाश कर देता है। मन्त्रीको उचित है कि सदा अपने और राजाके कल्याण-को देखता रहे, तथा शत्रुवोंसे अपने राजाकी उन्नति चाहता रहे। मन्त्री तेजस्वी, बलवान, सूरवीर, सत्यवादी, कोमल कठोर और छायाके समान राजाके सङ्ग चलनेवाला हो। जो दूत दूसरे दूतको भेजने समय राजासे कहे कि महा-राज मैंही काम करूं वही दूत राजाका प्यारा और राज्यमें रहनेवाला होता है। जो भीतर और बाहरसे राजाकी आज्ञाको सुनके कभी न डरे, वही राज्यमें रहने योग्य है। जो घरसे निकलकर अपने प्यारे कुटम्बिओंका स्मरण करे और दुःख सहनेके पीछे सुख चाहे, वही दूत राजाके राज्यमें रहने योग्य है। जो कभी राजाके समान वस्त्र और आभूषण नहीं पह-नता अपनेसे ऊंचोंके सङ्ग नहीं बैठता और राजाकी सम्मतिको प्रकाशित नहीं करता, वही राजाका प्यारा दूत होता है। जो कर्म्म करनेमें धनकी इच्छा नहीं करता, जो धन लेनेके समय प्राण नाश अथवा बन्धनको प्राप्त होता है, वही राजाका प्यारा दूत होता है। जो राजाके दिये हुए वाहन, वस्त्र और आभू-षणको धारण करता है, वह पुरुष राजाका अत्यन्त प्यारा होता है। हे प्यारे पाण्डवो! आप लोग अपने मनको स्थिर करके एक वर्ष जैसे हो तैसे बिता दो, पश्चात अपने राज्यको प्राप्त करके इच्छानुसार सुख भोगना।

महाराज युधिष्ठिर बोले, आप सदाही हमको उपदेश करते हैं, आपके समान कुन्ती और महा बुद्धिमान विदुरके सिवा हमें और कौन उपदेश करेगा? आपका कल्याण हो, इसके पश्चात हमारे करने योग्य जो कर्म्म हो सो कहिये, क्योंकि आपके उपदेशसे हम इस दुःखके पार होंगे, और सुख तथा जयको प्राप्त करेंगे।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, महाराज युधि-ष्ठिरके ऐसे वचन सुन ब्राह्मणश्रेष्ठ धौम्य मुनि उन कर्म्मोंको करने लगे जो चलते समय करने उचित थे, धौम्यने वृद्धि, लाभ और विजयके लिये पाण्डवोंके अग्निहोत्रमें मन्त्रोंसे होम किया और अग्निकी प्रदक्षिणा करी; फिर सब तपस्वियोंसे अग्निकी प्रदक्षिणा कराई, अनन्तर पांचो पाण्डव द्रौपदीको अगाड़ी करके एक ओरको चले गये।

जब वीर पाण्डव लोग इस प्रकार चले गये, तब जप करनेवालोंमें श्रेष्ठ धौम्य मुनि अग्निहोत्रका लेकर पाञ्चाल देशको गये, और इन्द्रसेन आदि सारथी लोग राजाकी आज्ञा-नुसार रथोंको लेकर द्वारिकामें जाकर घोड़े और रथोंकी रक्षा करने लगे और पाण्डवोंके विजयकी इच्छा करके वहां रहने लगे।

४ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे महाराज! जनमेजय वीर पाण्डव लोग कवच, खड्ग तूणीर और अंगुलित्राण धारण करके यमुनाके दक्षिण तटपर पैरों चलने लगे और उन्होंने जाना कि हम वनवाससे छूट गये, अब राज्यको प्राप्त करेंगे। अनन्तर पर्व्वत गुफा और वनोंमें निवास करते हुए चलने लगे। महा बलवान

महा धनुषधारी पाण्डवलोग हरिनोंको मारकर खाते हुए दशार्णा देशकी उत्तर और पञ्चाव देशकी दक्षिण सोमासे होकर निकले। अनन्तर शूरसेन और यकुल्लोम देशकी सीमाको नाघकर राजा विराटके राज्यमें पहुंचे। पाण्डवलोग निरन्तर बनहोमें चलते थे, धनुष कवच और मूछधारी पाण्डवलोग जब राजा विराटके नगरमें पहुंचे, तब द्रौपदीने महाराजसे कहा, हे महाराज! देखो यह सब बोये हुए खेत दिखाई देते हैं, इससे जान पड़ता है, कि राजा बिराटका नगर पास आगया, और मैं थकभी बहुत गई हूं, इस लिये आजकी रात यहीं रह जाइये।

महाराज युधिष्ठिर बोले, हे अर्ज्जुन! तुम द्रौपदीको अपने कन्धेपर बिठलाकर ले चलो, हमलोग इस बनसे निकलकर राजा बिराटके नगरमें रहेंगे।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, राजाकी आज्ञा सुन अर्ज्जुनने द्रौपदीको अपने कन्धेपर बिठला लिया, और मतवारे हाथीके समान चलने लगे। नगरके पास जाकर अर्ज्जुनने द्रौपदीको उतार दिया। विराटकी राजधानीमें पहुंचकर महाराजने अर्ज्जुनसे कहा कि हम लोग शस्त्रोंको कहां रखकर नगरमें प्रवेश करें? यदि हम लोग शस्त्रोंको लिये हुए नगरमें जायंगे तो निःसन्देह सब नगर निवासी हमको देखकर घबड़ा जायंगे, हमारे शस्त्रोंमें यह गाण्डीव धनुष लोकप्रसिद्ध है, उसको यदि लेकर हम लोग नगरमें जायंगे तो निःसन्देह हमको सब नगरनिवासी पहचान जायंगे, तब हम लोगोंको फिर बारह बर्षतक बनमें रहना होगा यदि हम लोगोंमेंसे किसी एकको भी कोई जान जायगा, तौभी सबको यह आपत्ति भोगनी पड़ेगी।

अर्ज्जुन बोले, हे पृथ्वीनाथ! यह इस शिखरपर बड़ा भारी शमीका वृक्ष है, और इस पर कोई नहीं चढ़ सकता, क्योंकि यह श्मशानके समीप है, और इस समय हम लोगोंको देखने वाला यहां कोई मनुष्यभी नहीं है, जो नगरमें जाकर कहे कि हमने पाण्डवोंको देखा है। हमारी बुद्धिमें आता है कि इस मार्गसे दूर श्मशान और बनके पासवाले शमी वृक्षपर शस्त्रोंको रखकर नगरमें चलें! हे भारत! हम लोग इस प्रकार विचार करके विराटके यहां रहेंगे।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे भरतर्षभ! धर्म्मराज युधिष्ठिरसे ऐसा कहकर अर्ज्जुन शस्त्र रखनेको उस शमी वृक्षपर चढ़े। जिस महा शब्दवाले घोर धनुषसे अर्ज्जुनने एक रथपर बैठकर समस्त देवता और मनुष्य तथा नगरोंको जीता था, उसही भयङ्कर शत्रुसेना नाशक गाण्डीव धनुषसे अर्ज्जुनने रोदेको उतारा। महा प्रतापी शत्रुनाशक युधिष्ठिरने जिस धनुषसे कुरुक्षेत्रकी रक्षाकी थी उससे रोदेको उतारा। जिस धनुषसे द्रौपदीके स्वयंम्बरमें अनेक शत्रुवोंको नाश किया था, जिससे दिग्विजयमें अनेक शत्रुवोंको रोका था, जिसका शब्द सुनकर शत्रु लोगोंके इस प्रकार हृदय फटते थे जैसे बज्रका शब्द सुननेसे पर्व्वत फटते हैं, जिससे सिन्धु देशके राजाको जीता था, उस धनुषसे भीमसेनने रोदा उतारा। जिसके समान जगतमें कोई सुन्दर नहीं था, उस नकुलने अपनी उस धनुषसे रोदेको उतारा जिससे पश्चिम दिशाको जीता था और जिससे महाबाहु महाशूर सहदेवने अनेक शत्रुओंको मारा था, जिस धनुषके आश्रयसे दक्षिण और दक्षिणके सब राजोंको जीता था, सहदेवनेभी उस धनुषसे रोदेको उतारा। पाण्डवोंने धनुषोंके सङ्ग हो बड़े बड़े प्रकाशमान खड्ग और अन्य शस्त्रोंकोभी धनुषके सङ्गही रख दिया।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, पश्चात कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरने नकुलको आज्ञा दी कि हे वीर!

तुम इस शमी वृक्षपर चढ़कर इन सब धनुषोंको रख आओ, उसी समय नकुल उस वृक्षपर चढ़ गये और उन दिव्यरूपी प्रकाशमान धनुषोंको रख दिया। नकुलने ऐसे स्थनपर धनुषोंको रक्खा, जहां बरसते हुए पानीसे न भींग सकें और उनको दृढ़ बन्धनोंसे बांध दिया। फिर पाण्डवोंने उस शमी वृक्षपर एक मरे हुए पुरुषका शरीर बांध दिया, इसका प्रयोजन यह था कि कोई पुरुष उस वृक्षके पास न आसके। पाण्डवोंने बिचारा कि जो पुरुष इस शवको बन्धा देखेगा और इसको दुर्गन्धि सूंघेगा वह कहेगा कि यह वृक्ष पास जानेके योग्य नहीं है, और यह शमी हमारे शस्त्रोंकी रक्षा करेगी, इस लिये हमारी माताके समान है, यह हमारा कुल धर्म्म है, हमारे पुरुषावोंने इसीको ग्रहण किया है, इस लिये इस वृक्षमें शस्त्रोंको रखकर हम लोग, विराट नगरको चलेंगे। ऐसा कहकर शत्रुनाशन वीर पाण्डव लोग गोपालोंसे तथा गड़रियोंसे बोले, कि इस वृक्षमें हमारी बूढ़ी माताको मृतदेह रक्खी गई है! ऐसा कहते हुए विराट नगरके समोप पहुंचे। जय, जयन्त, विजय जयत्सेन और जयद्दल येही पाण्डवोंने अपने गुप्त नाम रक्खे, अनन्तर पांचो पाण्डवोंने यह निश्चय करके कि हम लोग छिपकर एक वर्ष रहेंगे, विराट नगरमें प्रवेश किया।

५ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! जनमेजय! महाराज युधिष्ठिरने जिस समय विराट नगरमें प्रवेश किया, उसी समय मनसे तीनों लोकोंकी स्वामिनी दुर्गा देवीकी इस प्रकारसे स्तुति की। हे देवि! तुम यशोदाके गर्भसे नन्द गोपके घरमें उत्पन्न हुई हो, तुम नारायणको प्यारो, मङ्गलकारिणी, कुलबर्द्धिनी, सङ्कटनाशिनी, और दैत्य विनाशिनी हो। तुमको जिस समय कंसने शिलापर फेंका था, तब तुम आकाशको चली गई थीं। तुम श्रीकृष्णकी बहिन, दिव्य माला, आभूषण, खड्ग और खेटकधारिणी हो। तुमको महा घोर दुःख उतारनेके समयमें जो मनुष्य स्मरण करता है, तुम उसकी इस प्रकार रक्षा करती हो जैसे कोई दुर्ब्बलकी रक्षा करता है।

ऐसा कहकर राजा युधिष्ठिर देवीका आवाहन करके और उनके दर्शनकी इच्छा करके नीचे लिखा स्तोत्र पाठ करने लगे,—

हे देवि! तुम बरदान देनेवाली, कृष्णा, कुमारी और ब्रह्मचारिणी हो, हम तुम्हें प्रणाम करते हैं, तुम्हारा तेज प्रातःकालके सूर्य्यके समान और मुख चन्द्रमाके तुल्य है। तुम्हारे स्तन और नितम्ब कठोर हैं, तुम मोरके पंखोंके समान धाजू, केयूर और भूषण धारण करके साक्षात लक्ष्मीके समान शोभित होती हो, नारायण तुम्हाराही रूप हैं, हे आकाशगामिनि! तुम्हारा रूप और ब्रह्मचर्य्य बहुत प्रकाशित है, तुम्हारी सुन्दरता कृष्णके समान और मुख बलदेवके तुल्य है। तुम्हारी भुजा साक्षात इन्द्रधनुषके समान विशाल हैं, तुम्हारे हाथमें कमल और घण्टा है। तुम सब जगतकी स्त्रियोंसे पवित्र और शुद्ध हो, तुम्हारे हाथमें फांसी धनुष और महा चक्रादि अनेक प्रकारके शस्त्र हैं, तुम्हारे कानमें पूर्ण कुण्डल शोभित हैं। हे देवि! तुम्हारे विचित्र मुकुट और उत्तम बन्धे हुए बालोंसे युक्त मुखको देखकर चन्द्रमाभी लज्जित हो जाता है, तुम्हारे सर्पके समान कांटसूत्रको देखकर सर्पयुक्त मन्दराचलभी थकित हो जाता है। तुम मोरोंके पंखको बनी हुई ऊंची ध्वजासे बिराजित हो, तुम्हारे ब्रह्मचर्य्य व्रतसे स्वर्गभी पवित्र होगया है, इस लिये देवता लोगभी तुम्हारी स्तुति और पूजा

करते हैं, तुमने तीनो लोकोंकी रक्षाके लिये महिषासुरको मारा है। हे देवि! तुम हमसे प्रसन्न हो, तुम जया, विजया और युद्धमें विजय देनेवाली हो, इस लिये हमकोभी वरदान दो, जिसमें हमारी विजय हो। हे देवि! विंध्य नामक पर्व्वत तुम्हारा सनातन स्थान है, तुम काली, महाकाली हो; मद्य, मांस और पशुवोंको भक्षण करनेवाली हो, सब पुरुष सदा तुम्हारी सेवा करते हैं, तुम अपनी इच्छासे सदा चलनेवाली हो। जो पुरुष भार उतारनेके समय तुम्हारा स्मरण करते हैं, और प्रातःकाल तुम्हें प्रणाम करते हैं, उनको जगतमें कोई वस्तु दुर्लभ नहीं है, पुत्र और धनकी तो कथाही क्या है? तुम जगतके मनुष्योंको दुःखसे उबारती हो, इस लिये तुम्हारा नाम दुर्गा है। बनमें भूले हुए, समुद्रमें डूबते हुए और चोरोंके वशमें पड़े हुएको तुमही बचाती हो, तुमही उनकी रक्षा करती हो, हे देवि! बनमें घूमते हुए जो तुम्हारा! स्मरण करते हैं, वे कभी दुःखमें नहीं पड़ते। तुम कीर्त्ति, लक्ष्मी, धारणा, सिद्धि, लज्जा विद्या, सन्तान, बुद्धि, संध्या, रात्रि, शोभा, निद्रा, चांदनी, तेज, क्षमा और दया हो! जो तुम्हारी पूजा करते हैं उनको बन्धन मोह, पुत्रनाश, धननाश, रोग, भय और मृत्यु नहीं होती। सो मैं राज्यसे नष्ठ होकर तुम्हारी शरणमें आया हूं, हे देवि! शरणागतरक्षिणि! हे भक्तपालिनि! हे सुरेश्वरि! हे कमल नयनि! हे दुर्गा! मैं तुम्हें शिरसे प्रणाम करता हूं, तुम हमारी रक्षा करो।

महाराज युधिष्ठिरकी ऐसी स्तुति सुन दुर्गादेवी प्रत्यक्ष हुईं और राजासे कहने लगीं,—

श्रीदेवीजी बोलीं, हे राजन्! हे महाबाहो! हे पृथ्वीनाथ! तुम हमारे वचनोंको सुनो; मेरी कृपासे थोड़े दिन पश्चात युद्धमें तुम्हारी विजय होगी, तुम कौरवोंकी सेनाको जीतकर समस्त पृथ्वीका निष्कण्टक राज्य पावोगे और अपने भाइयोंके सहित अत्यन्त प्रसन्नताको प्राप्त होगे, मेरी कृपासे तुम्हें कोई रोग और दुःख नहीं होगा। इस स्तोत्रको जो धर्म्मात्मा पढ़ेगा, मैं प्रसन्न होकर उसको शरीर सुख, पुत्र, राज्य और आयु दूंगी। परदेशमें, नगरमें, युद्धमें, शत्रुसङ्कटमें, बनमें, घोरस्थानमें, समुद्रमें और पर्व्वतमें जो मेरा स्मरण करेंगे, उनको इस लोकमें कोई वस्तु दुर्लभ नहीं होगी, हे पाण्डवो! इस स्तोत्रको जो भक्तिसे पढ़ें या सुनेंगे उनके सब कार्य्य सिद्ध होजायंगे। मेरी कृपासे तुमको विराट नगरमें रहते हुए कोई कौरव या नगर निवासी नहीं जान सकेगा, शत्रु-नाशन युधिष्ठिरसे ऐसा कह-कर और पाण्ड-वोंकी रक्षा करके देवी वहीं अन्तर्द्धान होगई।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, अनन्तर महाराज युधिष्ठिर सोनेके मणि जटित पासोंको कपड़ेमें लपेटकर अपनी बगलमें दबाय राजा विराटकी सभामें गये।

महायशस्वी कौरववंश वर्द्धन महानुभाव महाराज युधिष्ठिर यशस्वी राजा विराटकी सभामें इस प्रकार गये, जैसे घोर विषेला सर्प कहीं जाता है। महाराज युधिष्ठिर बलसे रूपसे और तेजसे साक्षात देवताके समान दीखते थे, उनका तेज ऐसा जान पड़ता था जैसे मेघोंमें छिपे हुए सूर्य्य और भस्मसे छिपी हुई महा अग्निका। उन महा तेजस्वी पाण्डुपुत्र युधिष्ठिरको आते देख विराट विचार करने कि यह क्या बादरसे निकलकर चन्द्रमा आया है? अथवा यह पूर्ण चन्द्रमाके समान महा तेजस्वी महानुभाव पुरुष है? राजाने मन्त्री, सूत, ब्राह्मण, वैश्य और सब सभासदोंसे पूछा कि; यह कौन पुरुष चला आता है? मैं आज इसे पहलेही देखता हूं, यह राजोंकी दृष्टिसे

यहां रहना चाहती हूं। रानी बोली, हे भामिनि! तुम्हारे समान सुन्दरी स्त्री दासी क्यों होगी? दासी तो चलने घूमनेके योग्य और काम करनेके योग्य स्त्रिया होती हैं। दासी ऊंची एड़ीवाली, गम्भीर बुद्धि वचन, और नाभीवाली, ऊंचे आंख, नाक, हृदय, कान, स्तन और हृदयवाली, लाल तलवे, हथेली, नखून नेत्र और जिह्वावाली, हंसके समान शब्दवाली, उत्तमकेश, उत्तम स्तन, थोड़ी अवस्था, कठोर-स्तन और नितम्बयुक्त दासी नहीं होती हैं। तुम उन उत्तम लक्षणोंसे भरी हो जो काश्मीर देशकी स्त्रियोंमें होते हैं! तुम्हारे नेत्र टेढ़े हैं और कटाक्ष विचित्र हैं, तुम्हारे ओठ कन्दरीके समान लाल और कमर अत्यन्त पतली है, तुम्हारा गला शङ्खके समान स्वर ऊंचा, मुख चन्द्रमाके तुल्य और नेत्र शरत् ऋतुके कमलके समान हैं। तुम्हारे शरीरसे पद्मकी सुगन्धि आती है, हमें निश्चय होता है कि तुम साक्षात लक्ष्मी हो। अब तुम हमसे सत्य कहो कि तुम कौन हो? क्योंकि तुम्हारा दासी होना हमको निश्चय नहीं होता। क्या तुम यक्षी, गन्धर्व्वी, देवी, अप्सरा, देवकन्या, नागकन्या, नगरकी देवता, विद्याधरी, किन्नरी, या साक्षात् रोहिणीही हो? क्या तुम अलम्बुषा, मिश्रकेशी, पुण्ड-रीकी, मालिनी, या साक्षात इन्द्राणीही हो? क्या ब्रह्माने अपनी चतुरता तुम्हारे बनानेमें समाप्त कर दी है? हे सुन्दरी! क्या तुम साक्षात देवियोंमेंसे कोई हो? क्योंकि रूपमें देवीही प्रशंसाके योग्य हैं।

द्रौपदी बोली, मैं तुमसे सत्य कहती हूं कि मैं कोई देवी राक्षसी या असुरी नहीं हूं, मैं दासी हूं और बाल बांधनेकी बहुत अच्छी रीति जानती हूं। हे सुन्दरी! मैं उबटन लगाना भी अच्छा जानती हूं, मैं कमल और चमेली आदिकी विचित्र माला भी बनाना जानती हूं, मैंने बहुत दिन तक कृष्णकी प्यारी पटरानी सत्यभामाकी सेवा करी है। पाण्डवोंकी प्यारी स्त्री जगतमें एक सुन्दरी द्रौपदीके सङ्ग में बहुत दिनतक रही हूं। वह मुझको भोजन और वस्त्र देती थीं, वैसेही मैं उनके सङ्ग विहार भी करती थी, साक्षात सुन्दरी द्रौपदीने मेरा नाम मालिनी रक्खा था। हे देवि! सोई अब मैं तुम्हारे घरमें आई हूं।

रानी बोली, मैं तुमको अपने शिरपर रखूंगी, यदि साक्षात राजा भी अनेक कारणोंसे तुमको न रखना चाहेंगे तो तुमको मैं रक्खूंगी। यह जितनी राजकुलकी स्त्रियां हैं, सब तुम्हारे रूपको देखकर मोहित हो रही हैं। तब ऐसा पुरुष कौन होगा जो तुमको देखकर मोहित न होगा? हे सुन्दरी देखो हमारे घरके जितने वृक्ष हैं, ये सबभी तुमको देखकर नीचे हुए जाते हैं, तब तुम कौनसे पुरुषको मोहित नहीं कर सकती हो? हे सुन्दर हंसनेवाली! हे सुन्दर कमर-वाली! हे सुन्दर मुखवाली! राजा विराट जब तुम्हारे विचित्र शरीरको देखेंगे तब मुझको छोड़कर तुम्हारे वशमें होजायंगे। हे चञ्चलनैनी! तुम्हारे सुन्दर अङ्गको देख-कर राजा विराट कामके अत्यन्त वशमें होजा-यंगे, यह हो नहीं सकता कि जो पुरुष प्रति दिन देखे और तुम्हारे वशमें न हो। मुझे पूर्ण निश्चय है कि राजा तुमको देख-तेही तुम्हारे वशमें होजायंगे। जैसे कोई वृक्षपर चढ़कर वृक्षको काटता है, और वह गिरकर मर जाता है, वैसेही मैं तुमको राजभवनमें रहनेकी आज्ञा देती हूं। जैसे कोंकड़ेकी स्त्री अपना सर्व्वनाश करनेके लिये गर्भ धारण करती है, तैसेही मैं तुमको राजभवनमें रहनेकी आज्ञा देती हूं।

द्रौपदी बोली, हे सुन्दरि! मुझे विराटराज अथवा और कोई पुरुष प्राप्त नहीं कर

सकता है, क्योंकि किसो महा बलवान गन्धर्व्वराजके पांच पुत्र मेरे पति हैं, वे सदा दुःख और दुराचारोंसे मेरो रक्षा करते हैं, जो मुझसे पैर नहीं धुलावे और जूठा भोजन नहीं दे उसीसे मेरे पति प्रसन्न रहते हैं। जो पुरुष मुझे साधारण स्त्रीके समान प्राप्त करना चाहता है, वह उसो रात्रिको इस जगतसे विदा होजाता है। हे सुन्दरि! मेरे चित्तको कोई नहीं चला सकता है, क्योंकि वे बलवान गन्धर्व्व मेरे अत्यन्त प्यारे पति हैं, वे लोग गुप्त रूपसे मेरी सदा रक्षा करतेहैं।

रानो बोलो, हे सुन्दरि! तुम जैसे चाहतो हो वैसेही मेरे घरमें रहो, मैं तुमसे कभो पैर और जूठे बर्त्तन नहीं धुलाऊंगी।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! जनमेजय! इस प्रकार धर्म्मचारिणी द्रौपदी राजा विराटकी स्त्रीके यहां रहने लगी, परन्तु किसीने उसको जाना नहीं।

८ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! जनमेजय! सहदेवभी ग्वालेका वेष बनाके और ग्वालोंकी ऐसी भाषा बोलते हुए राजा विराटके पास पहुंचे। राजाने उस विचित्र पुरुषको गउवोंके पास खड़ा देखकर विस्मित होकर अपने मन्त्रियोंके द्वारा उसे बुलाया, इतनेमें सहदेव सभामें पहुंच गये। राजा उस विचित्र पुरुषको देखतेही उठ खड़े हुए और कहने लगे; हे पुरुषसिंह! तुम कौन हो? किसके पुत्र हो? और क्या करना चाहते हो? हमने तुमको पहले कभी नहीं देखा था, तुम सत्य कहो कि कौन हो? राजाके वचन सुन शत्रुनाशन सहदेव मेघके समान गम्भीर वाणीसे बोले, मैं जातिका वैश्यहूं, मेरा नाम अरिष्टनेमी है, मैं पहले समयमें कुरुश्रेष्ठ महाराज युधिष्ठिरके यहां गउओंकी संख्या करता था। अब मैं नहीं जानता कि राजसिंह पाण्डव लोग कहां और कैसे हैं? हे राजन्! आप जानते हैं कि, बिना जीविकाके कोई नहीं जी सकता और मुझे आपके सिवा दूसरे राजामें भक्तिभो नहीं है।

महाराज विराट बोले, हे शत्रुनाशन! तुम ब्राह्मण या कोई क्षत्रिय हो, क्योंकि वैश्योंका कर्म्म तुममें अनुचित जान पड़ता है। जा हो, तुम समुद्र पर्य्यन्त पृथ्वीके राजा हो, अब तुम हमसे सत्य कहो कि तुम कौन हो? तुम कौन से राजाके राज्यसे हमारे यहां आये हो? और कौन कौनसी विद्या जानते हो? हमारे यहां किस प्रकारसे रहोगे और क्या वेतन लोगे?

सहदेव बोले, पांचो पाण्डवोंमें बड़े महाराज युधिष्ठिर थे, उनके यहां आठलाख गउओंके वर्ग थे, और सौ हजार एवं दो सौ हजार गउओंके वर्ग थे। मैं उन सबका स्वामी और संख्या करनेवाला था, इसी लिये राजाने मुझको तन्तिपालका पद दिया था। भूत भविष्यत और वर्त्तमान सब संख्याको मैं जानता हूं, चारों ओर दस दस योजन तक जितनी गउ रहती हैं उन सबको मैं जान सकता हूं। महात्मा युधिष्ठिरही मेरे गुणको जानते थे और मैंभी कुरुराज युधिष्ठिरके सब गुणोंको जानता हूं। मैं उन सब उपायोंको भी जानता हूं जिनसे गउवोंकी वृद्धि शीघ्र हो और गउओंके सब रोगोंकी चिकित्सा भी मैं जानता हूं हममें यही सब गुण हैं, हम उन बछड़ोंकोभी पहचान सकते हैं जिनके मूत्रको संघने मात्रसे बन्ध्याके पुत्र होते हैं, और भो बछड़ोंके सब उत्तम लक्षणोंको मैं जानता हूं।

राजा विराट बोले, हमारे यहां एक वर्णवाले एक लक्ष पशु हैं, हम उन सबको तुम्हें देते हैं, आजसे हमारे सब पशु तुम्हारे आधीन रहें।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, पुरुषश्रेष्ठ सहदेव राजा विराटसे ऐसा वार्त्तालाप करके सुखपूर्व्वक उनके यहां रहने लगे। राजाने उनकी इच्छा-नुसार जीविका कर दी, परन्तु किसीने उनको पहचाना नहीं।

९ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजा जनमे-जय! उसी समय एक दूसरा मनुष्य दिखाई दिया जो स्त्रियोंके ऐसे वस्त्र और आभूषण धारण किये हुए था, जो सुन्दर कुन्डल और कर्णफूल पहने था। पुरुषोंने उसे एक स्थानके नीचे खड़े हुए देखा, वह बड़े हाथोंवाला पुरुष अपने बालोंको ठीक करके अपने पराक्रमसे मतवारे हाथीके समान पृथ्वीको कंपाता हुआ राजा विराटकी सभाके पास आया। उस शत्रुनाशक इन्द्रपुत्र मतवारे हाथीके समान पराक्रमी महातेजस्वीको छिपे हुए वेशमें देखकर सब लोग आश्चर्य करने लगे। तब राजाने अपने सब सभासदोंसे पूंछा, यह कौन है? मैंने इसको कभी नहीं देखा और न सुना है? राजाके प्रश्नका किसीने कुछ उत्तर नहीं दिया। तब राजाने आश्चर्य करके उससे पूछा, तुम महा पराक्रमी देवतोंके समान रूपवाले, हस्तिराजके समान बली कौन हो? तुम शङ्खके और सोनेके आभूषण क्यों पहने हो? और यह चोटी इस प्रकार क्यों गुही है? ऐसे कुण्डल पहननेका क्या प्रयोजन है? तुम इस मालासे ऐसे दीख पड़ते हो जैसे कोई वीर धनुषवाण और कवच धारण करके शोभित होता है। आजसे तुम वाहनों पर चढ़के घूमो, तुम मेरे पुत्र वा मेरे तुल्य होकर यहां निवास करो। मैं बहुत बूढ़ा होगया हूं, इस लिये अपने राज्यका भार सब मन्त्रियोंको देना चाहता हूं आजसे तुम्हीं इस देशको राज्य करो। मेरे मनमें आता है कि तुम्हारे ऐसे पुरुष नपुंशक नहीं होते।

अर्ज्जुन बोले, हे नरदेव! मैं नाचना गाना और बजाना जानाता हूं, इस लिये आप मुझे उत्तराके घरमें रहनेकी आज्ञा दीजिये। मैं राजपुत्रीको नाचना गाना सिखलाऊंगा। जो आपने हमसे हमारे रूपका वर्णन किया सो केवल शोक बढ़ाने वाला है! मेरा नाम वृहन्नला है। मेरा कोई पुत्र, पुत्री, माता पिता नहीं है।

विराट बोले, हे बृहन्नले! जो तुमने बर-दान मांगा तुम्हें हम सोई देते हैं, तुम हमारी पुत्री और उनकी सखियोंको नचाओ, परन्तु मेरी बुद्धिमें आता है कि तुम समस्त पृथ्वीके राजा होनेके योग्य हो।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, इस प्रकारसे राजा विराटने बृहन्नलासे वार्त्तालाप करके नाचने और गानेके काममें नियुक्त कर दिया। इसके पहले राजाने अपने मन्त्रियोंसे सम्मति करके उसकी परीक्षा कराई और स्त्रियोंसे भी उसकी परीक्षा कराली। राजाने सुना कि वृहन्नला निश्चय नपुंसक है, तब उसको राजपुत्रीके घरमें जानेकी आज्ञा दी। अर्ज्जुन भी उसी दिनसे राजा विराटकी पुत्रीको नाचना गाना और बजाना सिखलाने लगे। राजपुत्री, सखी और उसकी दासी लोग अर्ज्जुनसे बहुत प्रेम करने लगीं। इस प्रकार इन्द्रीजीत अर्ज्जुन छल वेष बनाकर राजपुत्रीकी सेवा करने लगे, परन्तु किसी बाहर वा भीतरके पुरुषने उन्हें पहचाना नहीं।

१० अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! उसी समय नकुल राजा विराटकी सभामें पहुंचे, इनको आते हुए देखकर लोग शङ्का करने लगे कि यह क्या मेघोंमेंसे निकल कर सूर्य

उदय हुआ है? राजा विराटने उसे देखाकि यह घोड़ोंको देखता हुआ चला आता है। तब उन्होंने अपने मन्त्रियोंसे पूछा कि यह देवतुल्य पुरुष कहा चला आता है? यह हमारे घोड़ोंको देख रहा है, इससे जान पड़ता है कि यह बुद्धिमान् पुरुष निश्चय घोड़ोंकी विद्या जाननेवाला है, इसको शीघ्र हमारे पास ले आवो, हमको जान पड़ता है कि यह देव तुल्य पुरुष महावीर है, इतनेहीमें शत्रु नाशक नकुल राजाके पास पहुंच गये और कहने लगे, हे महाराज! आपकी जय हो और आपके समाजका कल्याण हो। मैं घोड़ोंकी सब विद्याको जानता हूं और रथ हांकनेमें परम निपुण हूं। आपके यहां सारथीकी नौकरी करना चाहता हूं।

विराट बोले, मैं तुम्हें वाहन, भोजन और स्थान देता हूं; तुम मेरे सारथी होनेके योग्य हो। तुम कौन हो? कहांसे आये और किससे पुत्र हो? तुममें क्या विद्या है?

नकुल बोले, पांचों पाण्डवोंमें बड़े भाईका नाम महाराज युधिष्ठिर था, उन्होंने मुझे घोड़ोंका स्वामी बनाया था। हे शत्रुनाशन! मैं घोड़ोंके स्वभाव, प्रसन्न करनेकी रीति; दुष्ट घोड़ोंके ठीक करनेका यत्न और उनके सब रोगोंकी चिकित्साको जानता हूं, मेरा घोड़ा कभी कायर नहीं हो सकता, मुझसे शिक्षित घोड़ी कभी दुष्ट नहीं होगी, मुझको राजा युधिष्ठिर और सब लोग ग्रन्थिक नामसे पुकारते थे।

विराट बोले, यह कर्म्म तुम्हारे योग्य नहीं है, तुम जगतके राजा होनेके योग्य हो, परन्तु यदि तुम्हारी ऐसीही इच्छा है तो हमारे घोड़े आदि सब वाहनोंके स्वामी होकर रहो। मेरे सब सारथी और अश्वयोजक तुम्हारे आधीन होकर रहेंगे। अब तुम कहो तुम्हें कितना धन चाहिये? तुम्हारी चेष्टा महाराज युधिष्ठिरसे मिलती है। कहो महाराज युधिष्ठिर किस प्रकारसे सेवकोंके बिना वनमें रहते हैं?

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, इस प्रकार गन्धर्व्व-राज तुल्य नकुलको राजा विराटने प्रसन्न होकर अपने घरमें रक्खा, परन्तु किसीने उनको पहचाना नहीं। इस प्रकार समस्त पृथ्वीके स्वामी महा पराक्रमी पाण्डव लोग अपने अपने रूपोंको छिपाकर दुःखित होकर राजा विराटके यहां रहने लगे।

११ अध्याय समाप्त।

प्रवेश पर्व्व समाप्त।

अथ समय पालन पर्व्व।

महाराज जनमेजय बोले, इस प्रकार महा पराक्रमी पाण्डव लोग छिपकर विराट नगरमें क्या करते थे सो हमसे कहिये।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, पाण्डव लोग छिपकर विराट नगरमें राजाको प्रसन्न करते हुए जो जो कर्म्म करते थे सो तुम श्रवण करो।

महात्मा तृणविन्दु और धर्म्मके बरदानसे पाण्डव लोग छिपकर विराट नगरमें रहने लगे। राजा युधिष्ठिर राजा विराट और उनके पुत्रोंके प्यारे सभासद हुए, जुवेके जाननेवाले राजा युधिष्ठिर विराट और उनके पुत्रोंको इस प्रकार खेलाने लगे कि जैसे कोई सूतमें बन्धे हुए पक्षियोंको खिलाता है। महाराज युधिष्ठिर राजासे जीतकर राजासे छिपाकर अपने भाइयोंको उचित धन देने लगे। भीमसेन उत्तम उत्तम भोजन चौकेमें जो राजासे बचते थे वह युधिष्ठिरको दे जाते थे। अर्ज्जुनको रनिवासमें जो पुराने वस्त्र मिलते थे, वे सब अपने भाइयोंको बांट देते थे। सहदेव अहिरका वेष बनाकर पाण्डवोंको दूध दही और घृत दे जाते थे। नकुल भी राजा विराटको प्रसन्न करके जो धन पाते थे सो सब अपने भाइयोंको दे जाते थे। तपस्विनी द्रौपदी

पतियोंको देखकर प्रसन्न होती थी और जिसमें कोई न पहचाने ऐसे यत्न करती थी। इस प्रकार महारथ पाण्डव लोग छिपकर विराट नगरमें रहने लगे, जैसे गर्भमें रहते थे। उनको वहांभी धृतराष्ट्रके पुत्रोंकी शङ्का और भय बना रहता था। इस प्रकार उनको वहां रहते रहते तीन महीने बीत गये, चौथे महीने उस देशमें ब्राह्मणोंका एक भारी मेला हुआ, उस मेलेमें सब देशोंके अनेक लोग उपस्थित हुए और सब देशोंसे सहस्रों मल्ल लोगभी आये। वह समाज शिवके समाज तुल्य होगया। उसमें कालखञ्ज दैत्योंके समान महाशरीरवाले, बल और बीर्य्यसे भरे, सिंहके समान कन्धे और विशाल कमरवाले अनेक मल्ल आये। वे सब लोग राजासे पूजित होकर राजाके पास अखाड़ेमें बैठे। उनमें एक बड़ा बलवान मल्ल था, वह सबसे लड़नेको कहने लगा, उस गर्जते हुए मल्लसे लड़नेको कोई खड़ा न हुआ। जब अखाड़ेका कोई मल्ल उससे न लड़ सका, तब राजाने भीमसेनको बुलाया, परन्तु भीम दुःखसे लड़नेको उद्यत न हुए। फिर भीमने विचारा कि हम राजाकी आज्ञाको टालभी नहीं सकते हैं। तब पुरुषसिंह भीम मतवारे शार्दूलके समान अखाड़ेमें पहुंचे और राजाकी प्रशंसा करके कांछा बांधके खड़े होगये। भीमको देख सब लोग प्रसन्न हुए। अनन्तर भीमने महा बलवान बृत्रासुरके समान शरीरवाले मल्लको पुकारा। भीम और जीमूत नामक महा उत्साही, महा पराक्रमी, महाबली साठ बर्षके मतवारे हाथियोंके समान युद्ध करने लगे। अनन्तर उन दोनों पुरुषसिंहोंने बाहु युद्ध करना आरम्भ किया। उन दोनों प्रसन्न महाबीरोंका अपनी अपनी जयकी इच्छासे ऐसा युद्ध हुआ जैसे बज्र और पर्व्वतका होता है। वे दोनों महाबलवान बीर प्रसन्न होकर जयकी इच्छासे एक दूसरेके छिद्रको देखने लगे। दोनों प्रसन्न होकर महा मतवारे हाथियोंके समान युद्ध करने लगे। वे लोग एक दूसरेके कर्म्मको निवारण करने लगे। फिर विचित्र बाहुयुद्ध करने लगे, वह एक दूसरेको मारने लगा, कोई एकको उठाकर फेंकने लगा, एक दूसरेको मुक्के मारने लगा। एक दूसरेको घुमाकर फेंकने लगा। कोई दूसरेको बज्रके समान तमायचा मारने लगा, कोई शलाका और नखूनोंसे मारने लगा, कोई पत्थरके समान शब्दवाली जांघ और शिरसे युद्ध करने लगे। उस समाजमें यह घोर युद्ध बिना शस्त्रके हुआ। दोनों बीरोंने अपने प्राणातक छोड़नेकी इच्छा करी। तब सब लोग उस समाजमें होहो शब्द करने लगे, तब वे इन्द्र और बलिके समान बीर फिर युद्ध करने लगे। कभी वे सन्मुख हो जाते थे, कभी एक दूसरेको फेंक देता था, कभी एक दूसरेको खींचता था, कभी एक दूसरेको पैरसे मलता था, इस प्रकार उन्होंने बहुत देर तक युद्ध किया। बिशालबाहु, युद्धनिपुन ऊंचे हृदयवाले दोनो बीर गर्जने लगे और मुद्गर तुल्य हाथोंसे एक दूसरेको मारने लगे। अनन्तर शत्रुनाशन भीमने गर्जकर उस गर्जते हुए मल्लको अपने हाथोंमें इस प्रकार उठा लिया, जैसे कोई शार्दूल हाथीको उठा लेता है। महाबाहु महाबलवान भीमने जब उस मल्लको हाथोंमें उठा लिया, तब सब योद्धा और राजा विराट आश्चर्य्य करने लगे। तब भीमने उस मल्लको सौवार घुमाया और चेतनारहित देखकर पृथ्वीमें पटककर पीस दिया। उस प्रसिद्ध जीमूत नामक मल्लके मरनेसे राजा विराट अपने बान्धवोंके सहित भीमसेनसे बहुत प्रसन्न हुए। अनन्तर कुवेर तुल्य महामनस्वी राजा विराटने प्रसन्न होकर भीमसेनको बहुत धन दिया। इस प्रकार भीमने अनेक महा बलवान मल्लोंको मारकर राजा विराटको बहुत प्रसन्न कर लिया। जब उनके समान वहां कोई

पुरुष न रहा तो राजा विराटने भीमको सिंह व्याघ्र और मतवारे हाथियोंसे लड़ाना आरम्भ किया। इसके पश्चात् राजा विराटने भीमसेनको अपने सङ्ग रनिवासमें ले जाकर महा मतवाले बली सिंहोंसे लड़ाया। अर्ज्जुनभी अपने नाचने और गानेसे राजा विराट और रनिवासकी सब स्त्रियोंको अपने वशमें कर लिया। नकुलनेभी शीघ्र चलनेवाले घोड़ोंको उत्तम शिक्षा देकर राजा विराटको प्रसन्न किया। राजाने प्रसन्न होकर नकुलको बहुत धन दिया। पुरुषसिंह विराटने अपने बैलोंको अच्छा देखकर सहदेवको बहुत धन दिया। द्रौपदी अपने महारथ पतियोंको इस क्लेशमें पड़े हुए देख प्रसन्न नहीं होती और सदा लम्बे श्वास लिया करती थी। पुरुषसिंह पाण्डव लोग राजा विराटके कर्म्म करते हुए इस प्रकार छिपकर विराट नगरमें रहने लगे।

१२ अध्याय समाप्त।

बिराट पर्व्वमें समय पालन पर्व्व समाप्त।

(अथ कीचकवधपर्व्व।)

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! इस प्रकार महारथ पाण्डवोंने छिपकर राजा विराटके घरमें दस महीने बिता दिये। द्रौपदी सुदेष्णा राणीकी सेवा करती हुई दुःखसे दिन काटने लगी। द्रौपदीने अपनी सेवासे रनिवासकी सब स्त्रियोंको प्रसन्नकर लिया, वर्ष समाप्त होनेसे थोड़े दिन पहले राजा विराटके सेनापति महा बलवान कीचकने द्रुपदराजपुत्रीको देखा। देवताकी स्त्रियोंके समान उसे रूपवती देख कीचक कामसे व्याकुल होगया और उसके प्रसन्न करनेको यत्न करने लगा। कीचक कामरूपी अग्निसे जलता हुआ सुदेष्णाके पास जा हंसकर कहने लगा, मैंने इस सुन्दरीको पहले कभी राजा विराटकी रनिवासमें नहीं देखा था। इसने अपने रूपसे मुझे उन्मत्त कर दिया है, इस सुन्दरीके शरीरसे पद्मकी सुगन्धि आती है। हे सुन्दरी! तुम कहो कि यह मेरे हृदयमें निवास करनेवाली सुन्दरी कौन है? यह मेरे चित्तको मथकर अपने वशमें कर रही है, मुझे इस रोगकी कोई औषधी नहीं मिलती है, तुमको धन्य है कि जिसकी ऐसी सुन्दरी महारूपवती दासी है। मेरी बुद्धिमें यह तुम्हारी दासी होनेके योग्य नहीं है,इससे यह मेरी और मेरे सर्व्वस्वकी स्वामिनी बने। मैं चाहता हूं कि, यह अनेक हाथी, घोड़े, धन, दास दासी, अन्न, पान और सोनेके मनोहर भूषणोंसे भरे हुए मेरे घरको शोभित करे? तब सुदेष्णाने कीचककी प्रार्थनाको स्वीकार कर लिया, अनन्तर कीचक द्रुपदराज पुत्रीके पास जाकर शान्ति पूर्व्वक इस प्रकारसे कहने लगा,जैसे कोई महा सिंहकी पुत्रीसे बनमें सियार कुछ कहै। हे सुन्दरी! हे कल्याणि! हे सुमुखि! तुम कौन और किसकी स्त्री हो? तथा विराट नगरमें कहांसे आई हो सो सब हमसे कहो? हे सुन्दरि! हे उत्तम भौंहवाली! तुम्हारा रूप कोमलता और तेज सब स्त्रियोंसे अधिक है। तुम्हारा शोभा-भरा मुख निर्म्मल चन्द्रमासे भी अधिक है, तुम्हारे विशाल नेत्रकमलको भी लज्जित करते हैं। हे सर्व्वाङ्ग-सुन्दरी! तुम्हारी बोली कोकिलकी बोली समान है। मैंने तुम्हारे समान रूपवती स्त्री पृथ्वीमें कभी न देखी और न सुनी है। हे सुश्रोणि! हे अनिन्दिते! हे उत्तम नयनवाली हे सुमुखि! तुम क्या साक्षात् कमल-निवाशिनी लक्ष्मी हो? अथवा भूति, लज्जा, कीर्त्ति, या शोभा हो? क्या तुम महारूपवती सक्षात् रति हो? हे उत्तम भौंहवाली! तुम्हारी शोभा साक्षात् चन्द्रमाके समान विराजमान है। तुम्हारे नेत्र बहुत उत्तम हैं। तुम्हारे हंसते समय चांदनी भी लज्जित हो जाती है। दिव्य वस्त्रसे छिपे हुए; तेजसे भरे हुए,

तुम्हारे महासुन्दर चन्द्र-मुखको देखकर कौन काम-पीड़ित नहीं हो सकता? तुम्हारे हार आदि आभूषणोंके योग्य सुन्दर, ऊंचे अन्तर-रहित, कठोर, कमलकी कलीके समान सुन्दर स्तन मुझे कामके फाड़ेके समान पीड़ा देते हैं। हे उत्तम हंसनेवाली! हे उत्तम भौंहवाली! तुम्हारी त्रिवलीसे शोभित स्तनके बोझसे नीचा हुआ मुट्ठीमें आने योग्य मध्यका शरीर मुझे बेवश किये देता है। तुम्हारी नदीके तटके समान सुन्दर जङ्घाओंको देखकर मेरे शरीरमें असाधारण काम रोग उत्पन्न हुआ है। हे भामिनि! यह निर्दय कामदेव मेरे शरीरको अग्निके समान जला रहा है। इस कामदेवने सङ्कल्प किया है कि जबतक तुम्हारा सङ्ग न होगा, तबतक जलायेही जाऊंगा। हे सुन्दर रूप-वाली! अपने मिलापरूपी वर्षाकाल और सम्भोगरूपी मेघसे इस जलती हुई काम अग्निको बुझाओ। हे चन्द्रसुखी! तुम्हारे सङ्गमकी इच्छासे मेरे चित्तको उन्मत्त करने-वाले कामके प्रचण्ड बाण दयारहित होकर मेरे हृदयको वेध रहे हैं। ये घोर कामदेवके बाण मेरे चित्तको पागलके समान बना रहे हैं, इनसे तुम मेरी रक्षा करो। हे सुनयनी! हे विलासिनी! तुम उत्तम माला और विचित्र भूषणोंको धारण करके हमारे सङ्ग अपनी इच्छाके अनुसार विहार करो। हे मन्दगा-मिनि! तुम सुख करनेके योग्य हो, और यहां सुख नहीं मिलता है। इस लिये यहां दुःख सहकर मत रहो और मेरे घरमें रह-कर अनेक सुख भोगो। मेरे घरमें रहनेसे तुम्हें अमृतके समान मीठी अनेक प्रकारकी पीनेकी वस्तु मिलेंगी उन उत्तम वस्तुओंको पीकर तुम सुखपूर्व्वक विहार करना। हे महाभागी! हमारे सङ्गसे तुम्हें उत्तम सौभाग्य प्राप्त होगा, और अनेक प्रकारके भोग तथा पीनेकी वस्तु मिलेंगी। हे भामिनि! इस समय तुम्हारा यह सब रूप निरर्थक जान पड़ता है, क्योंकि बिना उत्तम मालाके तुम अच्छी नहीं लगती हो। हे सुन्दरि! जैसे दुष्ट स्त्री शोभित नहीं होती, तैसेही तुमभी दीखती हो। मैं तुम्हारे लिये अपनी पुरानी सब स्त्रियोंको छोड़ दूंगा अथवा वे सब तुम्हारी दासी होकर रहेंगी। हे सुन्दर हंसनेवाली! हे पाप-रहिते! मैं आजसे तुम्हारे दासके समान होकर रहूंगा, और सदा तुम्हारे वशमें रहूंगा।

द्रौपदी बोली, हे सूतपुत्र! तुम्हारा कल्याण हो। मैं तुम्हारे योग्य नहीं हूं, क्योंकि मैं नीचवर्णमें उत्पन्न हुई हूं, तब तुम मेरी इच्छा क्यों करते हो? तुम जानते हो कि स्त्री अपने पतियोंको बहुत प्यारी होती हैं। और मैं दूसरेकी स्त्री हूं,। इस लिये तुम्हारे योग्य नहीं हूं। तुम स्त्रीधर्मका विचार करो। तुमको उचित है कि दूसरी स्त्रियोंके ऊपर कभी मन न चलाओ, क्योंकि बुरे कर्मको छोड़नाही पुरुषोंका धर्म है। जो पापी भूलसे कर्म करता है, वह महा अयश और भयको प्राप्त होता है।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, द्रौपदीके ऐसे बचन सुन, दुष्ट कामहोहित कीचक परस्त्रि-योंके पास जानेके अनेक प्राणनाशक लोक निन्दित दोषोंको जानकर भी इन्द्रियोंको जीत न सका, और द्रौपदीसे कहने लगा, हे सुमुखि! हे उत्तम हंसनेवाली! मैं तुम्हारे लिये कामसे अत्यन्त पीड़ित होगया हूं, इस लिये तुम मुझसे ऐसे बचन मत कहो, हे सुन्दरि! हे भीरु! मुझे यह निश्चय है कि तुम मुझ प्यारे बचन कहनेवाले पुरुषको छोड़-कर अवश्य पछताओगी, हे उत्तम कमरवाली! मैं इस सब राज्यका स्वामी, बसानेवाला और पृथ्वी भरमें एकही बलवान हूं। समस्त

पृथ्वीमें रूप, यौवन, सुन्दरता और उत्तम भोगोंमें मेरे समान दूसरा कोई पुरुष नहीं है। हे कल्याणि! उपमा रहित, भोगने योग्य उत्तम भोगोंको तुम क्यों नहीं भोगना चाहती हो? हे सुमुखि! तुम इस समस्त राज्यकी स्वामिनी हो, अब मुझसे दिये हुए राज और भोगोंको भोगो, मेरी सेवा करो।

पतिव्रता द्रौपदी कीचकके ऐसे बुरे बचन सुनकर उसकी निन्दा करती हुई कहने लगी।

द्रौपदी बोली, हे सूतपुत्र! तू भूलमें मत पड़े, अपने प्राणको नाश मत करे। मेरे पति बड़े बलवान पांच गन्धर्व्व हैं, वे सदा मेरी रक्षा करते हैं, इस लिये मैं तुमको प्राप्त नहीं हो सकती हूं, वे क्रोध करके तुझे मार डालेंगे। इससे साधु बन कर रह, अधर्म्म मत कर। तू उस मार्गको चलना चाहता है, जिसपर मनुष्य नहीं चल सकते। तेरी वैसी दशा है, जैसे नदीके एक तटपर बैठा हुआ मूर्ख बालक तैरकर दूसरे तटपर जानेकी इच्छा करता है। तू चाहे पृथ्वीके भीतर या आकाशमें, या समुद्रके पारही भाग जायगा तौभी आकाशगामी महाबली मेरे पति देवपुत्र तुझे जीता नहीं छोड़ेंगे। रे कीचक! तू मुझे कालरात्रिके समान मत चाहे। क्या तैंने मुझको वैसाही सुलभ समझा है, जैसे माको गोदमें सोया हुआ लड़का आकाशके चन्द्रमाको सुलभ समझता है? मैं गन्धर्वोंको प्यारी स्त्री हूं, वे तुझको आकाश और पातालमें भी जीता नहीं छोड़ेंगे। मुझे जान पड़ता है कि यह तेरी बरीदाष्ट तेरा नाश कर देगी।

१३ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजा जनमेजय! द्रौपदीके ऐसे बचन सुन मर्य्यादा-रहित घोर काम पीड़ित कीचक सुदेष्णाके पास जाकर कहने लगा, हे कैकेयी! जिस प्रकारसे सैरिन्ध्री मेरे वशमें हो तुम वैसाही यत्न करो। हे सुदेष्णे! यदि वह गजगामिनी सैरिन्ध्री मेरे वशमें न होगी तो मैं अपने प्राणोंको छोड़ दूंगा।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, महामनस्विनी विराटकी रानीने बहुत रोते हुए कीचकके बचन सुनकर उसके ऊपर कृपा करी। रानी अपने मनमें निश्चय करके द्रौपदी और सूतपुत्रके मिलानेका यत्न विचारने लगी। सुदेष्णा कीचकसे बोली, तुम किसी पर्व्वमें मद्य और अन्न बनाकर अपने घरमें रखना मैं सैरिन्ध्रीको मद्य लेने तुम्हारे घरमें भेजूंगी, तब तुम बाधा-रहित एकान्त स्थानमें इसको ले जाना, वहां इसे शान्त करके अपनी इच्छानुसार विहार करना।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, अपनी बहिनके बचन सुन कीचक वहांसे चला गया, और अपने घरमें राजोंके योग्य उत्तम मद्य तथा अनेक प्रकारके उत्तम भोजन बनवाये। उन सब भोजनोंको उसने उत्तम रसोइयोंसे बनवाया। भोजन बनानेके पश्चात सुदेष्णाको बुला भेजा। तब सुदेष्णाने द्रौपदीसे कहा, हे सैरिन्ध्री! तुम उठकर कीचकके घरमें जाओ मुझे बहुत प्यास लगी है, उसके घरसे पानी ले आओ।

द्रौपदी बोली, हे रानी! तुम स्वयं जानती हो कि वह कैसा निलज्ज पुरुष है? इस लिये मैं उसके घरमें नहीं जाऊंगी। हे सुन्दरि! मैं तुम्हारे यहां रहकर अपने पतियोंके विरुद्ध व्यभिचार नहीं करूंगी। मैं कभी कामक्रीड़ा नहीं करूंगी। हे देवि! तुमको स्मरण होगा कि मैंने तुम्हारे यहां आनेके समय क्या प्रतिज्ञा कर ली थी? हे सुन्दरि! मूर्ख कीचक कामके वशमें होगया है, वह मुझे देखकर अधर्म्म करेगा। हे देवि! औरभी अनेक दासी तुम्हारे यहां हैं, तुम दूसरी किसीको भेज दो।

सुदेष्णा बोली, हे सैरिन्ध्रि! मैं तुमको

वहां भेजती हूं, वह तुमको मार नहीं डालेगा, सुदेष्णाने यह कहकर ढकनेके सहित सोनेका पात्र द्रौपदीके हाथमें दिया। तब द्रौपदी शङ्का करती और रोती हुई प्रारब्धको स्मरण करने लगी, और मद्यका पात्र लेकर कीचकके घरको चली। मार्गमें द्रौपदी बोली, मैंने अपने पतियोंके सिवा आजतक दूसरे पुरुषके दर्शन नहीं किये; वही सत्य मेरी रक्षा करे, जिससे कीचक मेरे संग कुछ अत्याचार न करने पावे।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, उस समय द्रौपदीने थोड़े समय तक सूर्य्यका ध्यान किया। तब सूर्य्यने सुन्दरी द्रौपदीकी सब अभिलाषाको जान लिया, और एक गुप्त राक्षसको उसकी रक्षाके लिये भेज दिया। उस राक्षसने निन्द्रारहित द्रौपदीको रक्षा करी। डरी हुई हरिनके समान द्रौपदीको अपने पास आते हुए देख कीचक प्रसन्न होकर इस प्रकार उठा, जैसे कोई पार जाने वाला नावको देखकर उठता है।

१४ अध्याय समाप्त।

कीचक बोला, हे सुन्दरि! मैं तुम्हारा स्वागत करता हूं, यह रात्रि मुझे सुखसे बीती। अब तुम मेरे स्थानकी स्वामिनी होकर आई हो। हमारे प्रिय कामोंको सिद्ध करो। तुम्हारे लिये मैंने अनेक सोनेकी माला, शङ्ख, कुण्डल, अनेक नगरोंके बने हुए सुवर्णके आभूषण, और उत्तम उत्तम रेशमके वस्त्र और उत्तम शय्या ठीक करी है। तुम यहां आओ और मेरे सहित मद्यवीका मद्य पीओ।

द्रौपदी बोली, मुझसे सुदेष्णा रानीने कहा था कि मुझे बहुत प्यास लगी है, तुम कीचकके घरसे जल ले आओ, सो तुम मुझे जल दो।

कीचक बोला, हे भद्रे! रानीके काम करनेके लिये औरभी अनेक दासी हैं, ऐसा कहके कीचकने द्रौपदीका दहिना हाथ पकड़ लिया।

द्रौपदी बोली, हे दुष्ट! मैंने महा दुःखमेंभी अपने पतियोंके विरुद्ध आचरण नहीं किया और कभी व्यभिचारभी नहीं किया, उसी सत्यसे मैं तुझे पृथ्वीमें खिचता हुआ देखूंगी।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, उसीसमय राजपुत्री विशाल नयनी द्रौपदीके वस्त्रको पापी कीचकने पकड़ लिया। द्रौपदी उसकी निन्दा करने लगी और वस्त्रको छुड़ाने लगी। जब राजपुत्री द्रौपदीको कीचकने बलसे पकड़ा तब द्रौपदीने लम्बा सांस लेकर वस्त्र छुड़ा लिया। उस झटकेसे पापी कीचक इस प्रकार पृथ्वीमें गिरा, जैसे जड़ कट जानेसे वृक्ष गिर जाता है। कीचकको गिराकर द्रौपदी कांपती हुई सभाकी शरण गई। उस समय राजा युधिष्ठिरभी वहीं बैठे थे। कीचकने भागती हुई द्रौपदीके बाल पकड़ लिये, और पृथ्वीमें गिराके राजाके आगे लातसे मारा। हे भारत! सूर्य्यने जो द्रौपदीकी रक्षाके लिये राक्षस भेजा था, उसने बड़े वेगसे कीचकको उठाकर दूर फेंक दिया। राक्षसके बलसे पीड़ित होकर कीचक इस प्रकार पृथ्वीमें गिरा, जैसे जड़ कटनेसे वृक्ष। महाराज युधिष्ठिर और भीमसेनने कीचकको और द्रौपदीके दुःखको देखा। भीमने दुष्ट कीचकके मारनेकी इच्छा करी। बलवान भीमसेन क्रोधसे अपने दांत पीसने लगे। भीमके नेत्र अग्निके समान लाल होगये। पलकें बार बार बार खुलने और बन्द होने लगीं। भौंह और विशाल माथेपर पसीना आगया। शत्रुनाशन भीम क्रोधसे माथेको मलने लगे, फिर क्रोधसे उठकर कीचकके मारनेको उद्यत हुए। उसी समय महाराज युधिष्ठिरने प्रत्यक्ष होनेके भयसे अपने पैरके अंगूठेको हाथके अंगूठेसे मला।

महाराजके इस चिह्नको देख मतवारे हाथीके समान बलवान वृक्ष उखाड़नेकी इच्छावाले भीमसेन शान्त हुए। महाराज युधिष्ठिर बोले, हे रसोइया बल्लव! सूखे काठकी इच्छासे इस वृक्षको क्यों देखते हो? यदि तुम्हें लकड़ियोंकी आवश्यकता होय तो बाहरसे वृक्ष काटवालो। द्रौपदी सभाके द्वारपर आकर रोने और अपने दुःखी पतियोंको देखने लगी। अपने धर्म्मकी रक्षा करती हुई द्रौपदीने घोर नेत्रसे सभाको इस प्रकार देखा मानो सबको भस्म कर देगी।

द्रौपदी बोली, जिनका बैरी कभी पांच देशोंको छोड़कर भागनेपर भी सुखसे नहीं सो सकता है, मैं उन्हींकी प्यारी स्त्री हूं, उस मुझको सूत-पुत्रने लातसे मारा। जो सदा दान करते हैं, और कभी मांगते नहीं, मैं उन्हींकी स्त्री हूं, उसी मुझको सूतपुत्रने लातसे मारा! जिनके नगारे और धनुषके शब्द सदा सुनाई देते हैं, मैं उन्हींकी स्त्री हूं, उसी मुझको सूतपुत्रने लातसे मारा। जो महातेजस्वी, बलवान, अभिमानी और महात्मा हैं, मैं उन्हींकी प्यारी स्त्री हूं, उसी मुझको सूतपुत्रने लातसे मारा। जो सर्व्वलोकका नाश कर सकते हैं, वे मेरे पति इस समय धर्म्मपाशमें बन्धे हैं, इसी लिये सूतपुत्रने मुझे लातसे मारा, जो सब दीनोंको शरण देनेमें समर्थ हैं, वे महारथ आज कहां चुप होकर बैठे हैं? किस प्रकार वेलोग अपनी प्यारी पतिव्रता स्त्रीको सूतपुत्रके हाथसे पिटती देख रहे हैं? वे महा बलवान महातेजस्वी नपुंसकोंके समान क्यों क्षमा कर रहे हैं? उनका तेज, बल और पराक्रम कहां गया? वे लोग अपनी स्त्रीको दुष्टके हाथसे पिटती क्यों देख रहे हैं? जहां विराट ऐसा अधर्म्मी राजा वर्त्तमान हैं, तहां मैं क्या कर सकती हूं? यह राजा स्वयं देखता है, तौभी कुछ नहीं कह सकता। राजा कीचकके सङ्ग राजाके समान कुछ व्यवहार नहीं करता, यह चोरोंके ऐसा अधर्म्म करनेवाला राजा सभामें शोभित नहीं होता। हे मत्स्यराज! मैं तुम्हारे घरमें रहकर इस दुष्टसे मारखानेके योग्य नहीं हूं। सब सभासद लोग कीचककी दुष्टताको देख रहे हैं, राजा विराट और कीचक कुछ धर्म्मको नहीं जानते। तथा जो सभासद राजाकी सेवा करते हैं, वे भी धर्म्मज्ञ नहीं हैं।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, रोती हुई द्रौपदी इस प्रकारके अनेक वचन कहकर राजा विराटकी निन्दा करने लगी,—

राजा विराट बोले, कीचककी और तेरी लड़ाई, हमारे आगे नहीं हुई। हम विना सब जाने कोई न्याय नहीं कर सकते।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, सभासद लोग सब अभिप्रायको जानकर द्रौपदीको प्रशंसा और कीचककी बहुत निन्दा करने लगे।

सभासद बोले, कि यह विशालनयनी सर्व्वाङ्ग सुन्दरी जिसकी स्त्री है, उसको सब सुख है, उसे कभी शोक नहीं हो सकता, क्योंकि ऐसी उत्तम स्त्री मनुष्योंको दुर्लभ है। हम इसको परम देवी मानते हैं।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, इस प्रकार द्रौपदीको और देखकर सभासद लोग उसकी प्रशंसा करने लगे। उसी समय क्रोधसे महाराज युधिष्ठिरके मुखपर पसीना आगया। महाराज अपनी प्यारी पटरानी द्रुपदराजपुत्रीसे बोले, हे सैरिन्ध्री! तुम शीघ्र सुदेष्णा रानीके घरमें चली जाओ, यहां खड़ी होनेका कुछ प्रयोजन नहीं है। वीरोंकी स्त्री अपने पतियोंके सुखके लिये अनेक दुःख सहती हैं। पतियोंके सेवा करनेसे स्त्रियोंको पति लोक मिलता है। मुझे जान पड़ता है कि तुम्हारे पति इस समयको क्रोध करनेका नहीं समझते, इसी लिये सूर्य्यके समान गन्धर्व्व लोग तुम्हारी रक्षा नहीं करते। हमें जान पड़ता है कि

तुम्हें अपने समयका कुछ ध्यान नहीं है इसी लिये नटनोके समान लज्जारहित होकर सभामें रोरही हो। तुम्हारे यहां रहनेसे राजा विराटके जुवेमें विघ्न होता है। हे सैरिन्ध्री! तुम यहांसे चली जाओ, तुम्हारे पति तुम्हारा हित साधन करेंगे। जिसने तुमको दुःख दिया है उसको मारेंगे।

द्रौपदी बोली, मैं अपने दयावान पतियोंके लिये धर्मके अनुसार अनेक दुःख सह रही हूं। मेरे पतियोंमें जो बड़े हैं, वे जुवेके जाननेवाले हैं, मुझे आशा है कि वही सब शत्रुओंका नाश करेंगे। विशालनयनी उत्तम कमरवाली द्रौपदी ऐसा कहके और अपने बालोंको खोलकर रोती हुई सुदेष्णा रानीके घरको चली गई। रोती हुई द्रौपदीका मुख ऐसा शोभित हुआ, जैसे आकाशमें मेघसे निकला हुआ चन्द्रमा।

सुदेष्णा बोली, हे सुन्दरी! हे सुमुखि! हे कल्याणि! तुमको किसने मारा? तुम क्यों रो रही हो? आज किसका सुख नाश होनेका समय आगया?

द्रौपदी बोली, तुमने मुझे जल लेनेको कीचकके घर भेजा था, वहां उसने मुझको मारा और राजाके आगेभी मुझको इस प्रकार मारा, जैसे कोई निर्ज्जन बनमें किसीको मारता है।

सुदेष्णा बोली, जिस दुष्ट कीचकने कामके वशमें होकर तुम्हारा निरादर किया है, तुम कहो तो मैं उसे अभी मरवा दूं?

द्रौपदी बोली, कीचक जिनका दोष करता है, वे उसे आपही मार डालेंगे। मुझे निश्चय है कि वह शीघ्रही यमलोकको जायगा।

१५ अध्याय समाप्त।

———

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! जब यशस्विनी राजपत्नी द्रौपदीको सेनापति सूतपुत्रने मारा, उसी समयसे वह उसके नाश होनेकी इच्छा करने लगी। अनन्तर द्रुपदराजपुत्रीने वस्त्रसे अपने सब शरीरोंको पोंछा और शुद्ध जलसे स्नान किया। फिर उत्तम कमरवाली द्रौपदी उचित रीतिसे पवित्र होकर अपने घरमें जाकर एक स्थानमें बैठी, और रोती हुई अपने दुःखका विचार करने लगी। द्रौपदी शोचने लगी कि मैं इस समय कहां जाऊं? कौनसा कार्य्य करूं जिससे मेरा दुःख दूर हो? ऐसा विचार द्रौपदीने अपने मनमें निश्चय किया कि इस समय भीमसेनको छोड़कर और मेरा दुःख कोई दूर नहीं कर सकता। ऐसा विचार आधी रातके समय विशालनयनी सुन्दरी पतिव्रता, नाथवती द्रौपदी अपने पलङ्गसे उठी और नाथकी इच्छा करके भीमसेनके घरमें गई। उस समय मनस्विनी द्रौपदीके मनमें बहुत दुःख था। द्रौपदी विचारने लगी कि मेरे शत्रु पापी कीचकके जीते हुए और उसका दुराचार देखकरभी देखूं भीमसेन कैसे सो रहे हैं?

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, द्रौपदी ऐसा विचारती हुई भीमसेनके सोनेके घरमें गई। जहां सिंहके समान श्वांस लेते हुए भीमसेन सो रहे थे, वह स्थान भीमके और द्रौपदीके तेजसे अधिक प्रकाशमान होगया। जैसे बनमें उत्पन्न हुई बगुली कामसे व्याकुल होकर बगुलेके पास जाती है, अथवा जैसे तीन वर्षकी गौ कामसे उन्मत्त होकर सांड़के पास जाती है, तैसेही द्रौपदीभी अपने प्यारे पति भीमसेनके पास गई। जैसे गोमतीके तटपर उत्पन्न हुए फूलयुक्त महाशाल वृक्षसे लता लपट जाती है, तैसेही द्रौपदीभी भीमसेनसे लपट गई। सुन्दरी द्रौपदीने भीमको अपने दोनो हाथोंमें भरकर हृदयसे लगा लिया, फिर इस प्रकार जगाने लगी, जैसे महा बनमें सोते हुए सिंहको सिंहिनी जगाती है। द्रौपदी भीमसेनके हृदयसे

ऐसो लपट गई जैसे हथिनी हाथियोंके राजसे। लपटती है। अनन्तर मीठे स्वरवाली निन्दा-रहित द्रौपदी अपने स्वरसे गान्धारराजको लज्जित करती हुई भीमसेनको जगाने लगी।

द्रौपदी बोली, हे भीम! उठो उठो! मरे हुएके समान क्यों सो रहे हो? क्योंकि जीते हुए पतियोंको स्त्रियोंका निरादर करके कोई जीवित नहीं रहता। जब राजपुत्रीने जगाया। तब महामिषके तुल्य भीम अपने गद्दीयुक्त पलङ्ग पर उठकर बैठे। कुरुनन्दन भीमने अपनी प्यारी स्त्री राजपुत्री द्रौपदीको देखकर कहा, तुम इस समय घबड़ाई हुई मेरे घरमें क्यों आई हो? तुम्हारा रङ्ग पहलेके ऐसा नहीं है। तुम बहुत दुर्व्वल और पीली क्यों हो गई हो? तुम सब समाचार हमसे कह सुनाओ। सुख, दुःख, अच्छा या बुरा जो कुछ होगा मैं सुनकर वैसाही उपाय करूंगा। हे द्रौपदी! तुम्हें मेरा सब कामोंमे विश्वास है, मैं तुम्हें बार बार आपत्तियोंसे छुड़ाता हूं। मुझसे सब कहकर यहांसे शीघ्र अपने सोनेके घरमें चली जाओ, जिसमें कोई पहचान न सके।

१६ अध्याय समाप्त।

द्रौपदी बोली, जिस स्त्रीके पति युधिष्ठिर हैं? वह सोचरहित होकर कैसे रह सकती है, तुम सब दुःखोंको जानकर भी मुझसे क्यों अजानेके समान पूछते हो? हे भारत! प्रातकामी सूत जो मुझे दासी कहकर सभामें ले आया था, वही दुःख मेरे हृदयको जला रहा है। ऐसी कौनसी राजपुत्री होगी जो मेरे समान दुःख सहकर भी जीती रहेगी? हे नाथ! द्रौपदीके सिवा ऐसा दुःख कौन राजपुत्री सह सकती है? बनमें दुष्ट जयद्रथने मेरा निरादर किया, मेरे सिवा इस दूसरे दुःखको कौन राजपुत्री सह सकती है? धूर्त्त राजा बिराटके देखते हुए नीचे कीचकने मुझे कैसा दुःख दिया, इस तौरसे दुःखको मेरे सिवा और कौनसी राजपुत्री सह सकती है? हे भरत-कुलश्रेष्ठ कुन्तिनन्दन! इनको आदि लेकर और भी मैंने अनेक दुःख सहे, अब मेरे जीनेसे क्या फल होगा? हे भारत! हे पुरुषव्याघ्र! यह जो दुर्बुद्धि कीचक नामक राजा विराटका साला और सेनापति है, सो मुझे राजाके घरमें सैरिन्ध्रीके वेषमें रहते हुए देख सदा कहा करता है कि तू मेरी स्त्री बन जा। यह दुष्ट मारनेके योग्य है, अब मेरा हृदय उसकी बात सुनते सुनते इस प्रकार फटने लगा है, जैसे समय आनेपर पका हुआ फल फटने लगता है। हे शत्रुनाशन! तुम अपने बड़े भाईको निन्दा करो, जो सदा जुवेहीको अपना कर्म्म समझते हैं, उन्हींके कर्म्मसे मैं इस अपार दुःखमें पड़ी हूं। जगतमें ऐसा कौन पुरुष होगा, जो अपने सुख और राज्यको छोड़कर जुवेमें बनवासको प्रतिज्ञा करे? यदि महाराज प्रति दिन अपने उस दिव्य धनसे दोनों समय हजार हजार निष्कसे जूवा खेलते तो भी सहस्त्रोंबर्ष तक कोष खाली न होता। और सोना, वस्त्र, वाहन, बकरी भेड़ घोड़े और खच्चर भी बने रहते। महाराजने उस सब लक्ष्मीको जुवेमें हार दिया। अब वेही महाराज अपने कर्म्मको बिचारते हुए मूर्खके समान चुप बैठे हैं। जिन महाराजके पीछे दस सहस्र हाथी और सोनेके भूषण पहने हुए घोड़े चलते थे, सो आज जुवा खिलाकर जीते हैं। जिन महाराजके सङ्ग एक लाख रथ चलते थे, जिनकी महा-पराक्रमी सहस्त्रों राजा सेवा करते थे, जिन युधिष्ठिरके चौकमें एक लाख दासी रात दिन सोनेके पात्र लिये अतिथियोंको भोजन कराया करती थीं, जो दानियोंमें श्रेष्ठ युधिष्ठिर सहस्रों निष्क दान करते थे, सो जुवेके महा अनर्थमें पड़ कर दुःख सह रहे हैं।

जिनकी प्रातःकाल और सन्ध्याके समय स्वर जाननेवाले, मणिजटित सोनेके कुण्डल धारण करनेवाले, सूत, मागध और बन्दी लोग स्तुति करते थे, जिनकी सभामें सहस्रों तपस्वी और वेद जाननेवाले ब्राह्मण बैठते थे, जा उन सबको इच्छानुसार दान देते थे, जिनके घरमें नित्यही अट्टासी सहस्र वेदपाठी ब्राह्मण भोजन करते थे, जिन महाराजके घरमें दस सहस्र ऊर्द्धरेता (ब्रह्मचारी) नित्य भोजन पाते थे, सो महाराज युधिष्ठिर आज इस आपत्तिमें पड़े हैं। इनके यहां जो यति भोजन पाते थे, सो दूसरे राजासे कुछ मांगनेकी इच्छा नहीं करते थे। जिनमें कोमलता, दया और न्याय पूर्ण रूपसे निवास करते हैं, वेही महाराज युधिष्ठिर आज इस दुर्दशामें पड़े हैं। जा अन्धे, बूढ़े, और अनाथ बालकोंको सदा पालते थे, जो बुद्धिमान सत्य-पराक्रमी महाराज युधिष्ठिर अपने चित्तको कभी अन्यायमें नहीं जाने देते हैं, वेही आज इस दुर्दशामें पड़े हैं। जिनके इन्द्रप्रस्थमें रहनेके समय अनेक राजा सभासद थे, वेही महाराज आज राजा विराटके सभासद बने हैं। उन्हींको राजा विराट कङ्क कहकर पुकारता है। जिनके द्वारपर आकर अनेक राजा लोग जीविका मांगनेको खड़े रहते थे, वेही महाराज आजा राजा विराटसे जीविका मांगते हैं। जिन महाराजके वशमें सब राजा लोग रहते थे, वेही आज विवश होकर राजा विराटके वशमें हुए हैं। जिनने अपने सूर्य्यके समान तेजसे समस्त पृथ्वीको तपा दिया था, वेही आज विराटके सभासद बने हैं। हे पाण्डव! जिसकी सभामें बैठकर राजा और ऋषि लोग सेवा करते थे, वेही युधिष्ठिर आज विराटकी सेवा करते हैं। महाराज युधिष्ठिरको राजा विराटकी प्यारी बात कहते हुए देखकर मुझे महा क्रोध होता है। धर्म्मात्मा युधिष्ठिरको अन्य राजाके वशमें देखकर किसको दुःख नहीं होगा? हे भारत! जिसकी सभामें बैठतेही पृथ्वीके समस्त राजा आते थे, वेही आज विराटकी सेवा कर रहे हैं। हे भारत! इन सब दुःखोंसे पीड़ित होकर मैं शोक सागरमें डूबी जाती हूं। क्या तुम मेरी इस दशाको नहीं देखते हो?

१७ अध्याय समाप्त।

———

द्रौपदी बोली, हे भारत! मैं जो तुमसे अपना दुःख कहती हूं, सो कुछ साधारण नहीं है। तुम मेरा निरादर मत करना; मैं दुःखसे पीड़ित होकर यह सब वृत्तान्त तुमसे कह रही हूं। हे भरतकुलसिंह! तुम जा रसोइयाका काम करते हो, यह क्या तुम्हारे योग्य है? तुमको इस दीनदशामें पड़े हुए देख किसको दुःख नहीं होगा? जब तुम अपनी बल्लव जाति बताते हो, तब मुझको महा शोक होता है। जब तुम सरीखे राजाके यहां रसोइया होकर रहे, तब इससे अधिक मुझे क्या दुःख होगा? जब साधारण लोग तुम्हें राजा विराटका दास और रसोइया कहते हैं, तब इससे ज्यादे मुझे और क्या दुःख होगा? भोजन सिद्ध होनेपर जब तुम विराटके समीप बैठते हो, तब मेरा मन बड़ा छोटा होजाता है। जब राजा प्रसन्न होकर तुम्हारे सङ्ग हाथियोंको लड़ाते हैं, तब रनिवासकी स्त्री तुम्हें देखकर हंसती हैं, उस समय मेरा मन बड़ा छोटा होजाता है। जिस समय तुम भैंसे शार्दूल और सिंहोंसे लड़ते हो, तब सुदेष्णा रानीको हंसते देख मेरा चित्त घबड़ा उठता है, मुझे दुःखित देखकर रानी अपनी दासियोंसे कहती है और दासी रानीसे कहती हैं कि, जब यह रसोइया किसीसे युद्ध करता है, तब न जाने सुन्दरी सैरीन्ध्रीको दुःख क्यों होने लगता है? जान पड़ता है कि एक

स्थानमें रहनेसे सैरिन्ध्री और बल्लवसे कुछ प्रेम होगया है, इसीसे सुन्दरी सैरिन्ध्री महा बलवान बल्लवको लड़ते देख दुःख पाती है। सैरिन्ध्री महा बलवान बल्लवको लड़ते देख दुःख पाती है सैरिन्ध्री बहुत सुन्दरी है, और यह रसोइआभी वैसाही सुन्दर है, स्त्रियोंके चित्तकी बातको कोई नहीं जान सकता। ये दोनों समान रूपवाले हैं, इससे इनमें अवश्य कुछ प्रेम हैं। इस राजभवनमें ये दोनों एकही दिन आये हैं, इससेभी इनमें कुछ प्रेम जान पड़ता है। ऐसेही रानी सदा मुझे डांटा करती है; मुझे क्रोध आनेसे उसे औरभी अधिक शङ्का होती है। उसके ऐसे वचन सुनकर मुझे महा दुःख होता है। महापराक्रमी तुम्हें और महाराज युधिष्ठिरको इस दुःखमें पड़ा देख मैं शोकसे अत्यन्त व्याकुल होगई हूं। इस लिये मुझे अब जीनेकी इच्छा नहीं है।

अकेले रथपर बैठकर समस्त मनुष्य और देवतोंको जिसने जीता था, वही अर्ज्जुन आज राजा विराटकी कन्याको नचाते हैं। जिस महा पराक्रमीने खाण्डव बनमें अग्निको सन्तुष्ट किया था, वही आज रनिवासमें रहकर कन्याको नचाते हैं। अर्ज्जुन इस प्रकार छिपकर रहते हैं, जैसे कूएमें अग्नि। जिस पुरुषसिंहसे सदा शत्रु कांपते रहते थे, वेही अर्ज्जुन आज महानिन्दित वेष धारण करके रनिवासमें रहते हैं। जिसके मुद्गरके समान हाथ धनुषके खींचनेसे महा कठोर होगये थे, आज वेही उनही हाथोंमें शङ्खकी चूड़ी पहनकर दिन काटते हैं। जिसकी धनुषकी घोर टङ्कारको सुनकर शत्रुओंका हृदय कांप उठता था, आज उन्हींके मीठे गीत सुनकर स्त्रियां प्रसन्न होती हैं। जिसके शिरपर सूर्य्यके समान प्रकाशमान मुकुट विराजता था, आज वही अर्ज्जुन स्त्रियोंके समान बालोंको गूंथकर रनिवासमें रहते हैं। हे भीम! उस महा पराक्रमी अर्ज्जुनको वेनी धारण किये हुए देख मेरा मन कांप उठता है। जो महात्मा समस्त दिव्य शस्त्रोंको जानते हैं, जो सब विद्याओंके आधार हैं, उन्ही अर्ज्जुनने आज स्त्रियोंके कुण्डल पहने हैं। जो अपने तेज, बल और विद्यासे समुद्रके समान अगाध हैं, युद्धमें जिनके समीप सहस्रों राजाभी नहीं आसकते वही अर्ज्जुन आज अपने रूपको छिपाकर राजा विराटकी कन्याको नचाते हैं। हे भीम! जिस महा धनुषधारीके रथका शब्द सुनकर पर्व्वत, बन, स्थावर और जङ्गमोंके सहित समस्त पृथ्वी कांप उठती थी, जिसके उत्पन्न होनेसे कुन्तीका शोक नष्ट होगया था, उन्ही अर्ज्जुनकी दुर्दशा देखकर मुझे शोक बढ़ता है। मैं अर्ज्जुनको स्त्रियोंके कुण्डलादि भूषण और शङ्खकी चूड़ी पहने हुए देख बहुत दुःखी होती हूं। जिसके समान इस पृथ्वीमें कोई बलवान और धनुषधारी नहीं है, वेही अर्ज्जुन आज राजा विराटकी कन्याको नचाते हैं। धर्म्म, पवित्रता और सत्यसे भरे हुए अर्ज्जुनको इस लोकमें स्त्री वेषसे छिपे हुए देखकर मेरा मन बहुत दुःखी होता है। जब मैं देवरूपी अर्ज्जुनको कन्याओंके बीचमें मतवारे हाथीके समान घूमते हुए देखती हूं, तब मेरा मन अत्यन्त व्याकुल होजाता है।

हे भारत! छोटे पाण्डव सहदेवको ग्वालका वेष बनाये हुए आते देखकर मेरा शरीर पीला होजाता है। हे भीमसेन! सहदेवके चरित्रोंको स्मरणकरके मुझे निद्रा नहीं आती है, और सुखकीतो कथाही क्या है? हे महाबाहो! सत्य पराक्रमी सहदेवके इस घोर दुःखको देखकर मुझे सुख प्राप्त नहीं होता। हे भरतकुल श्रेष्ठ! तुम्हारे भाई सहदेवको मतवारे बैलके समान गौवोंमें घूमते हुए देख और राजा विराटको आज्ञानुसार चलते देखकर मेरा हृदय कांपने लगता है। जब वे सब ग्वालोंके अगाड़ी आकर राजा

विराटकी प्रशंसा करते हैं, तब मुझे ज्वर चढ़ आता है। हमारी सोही कुन्ती सदाही सहदेवकी प्रशंसा किया करती हैं और इस प्रकार कहा करती हैं कि मेरे सब पुत्रोंमें सहदेव बड़ा वीर, शीलवान, पराक्रमी, उत्तम चरित्रयुक्त, लज्जावान, प्रियवादी और मेरा प्यारा है। उन्होंने हमसे चलते समय कहा था कि मेरा पुत्र सहदेव सुकुमार, वीर, धर्मराजका भक्त और धर्म्मात्मा है; तुम सदा वनमें इसकी रक्षा करना, हे द्रौपदी! तुम सहदेवको अपने हाथसे परसकर भोजन करना, ऐसा कहकर कुन्ती बनको चलते समय सहदेवको अपने हृदयसे लगाकर बहुत रोई थीं। हे पाण्डव! उन महा योद्धा सहदेवको गौवोंके बीचमें रहते और रातको बैलोंके चमड़ेपर सोते हुए देख अब मुझे जीनेकी इच्छा नहो रही।

जो नकुल शस्त्रविद्या, रूप और बुद्धिसे भरे हैं, वेही आज राजा विराटके अश्वरक्षक बने हैं। देखो समयकी गति कैसी कठोर है कि वेही नकुल आज विराटके आगे खड़े होकर लगाम हाथमें लिये घोड़ोंको शिक्षा देते हैं। जिसके भयसे शत्रुओंके समूह कांपते थे, वेही महातेजस्वी श्रीमान् नकुल आज राजा विराटको घोड़े दिखला रहे हैं। हे शत्रुनाशन कुन्तीनन्दन! इन सब दुःखोंको मैं सह रही हूं, क्या तुम मुझको अभी जीतो समझते हो? ये सहस्रों दुःख केवल युधिष्ठिरके कारण हमारे ऊपर पड़े हैं। इन दुःखोंको छोड़ कर और भी अनेक दुःख मैं सह रही हूं सुनो,—मुझे इससे अधिक और दुःख क्या होगा कि, जो तुम लोगोंके जीवित रहते मेरे शरीर अनेक दुःखोंसे सूखे जाते हैं।

१८ अध्याय समाप्त।

द्रौपदी बोली, महाराज युधिष्ठिरके कारणसे मुझेभी दासोका वेष बनाकर और राजाके घरमें रहकर सुदेष्णा रानीकी सेवा करनी पड़ी। हे वीर! मैं राजपुत्री होकर ऐसे ऐसे कर्म्म करती हूं, इससे अधिक और आपत्ति क्या होगी? मैंने विचारा है कि सब दुःख नाश हो जाते हैं, पुरुषोंकी हार जीत, सिद्धि और असिद्धि सब अनित्य हैं, यही विचारकर मैं अपने पतियोंकी उन्नतिका समय देख रही हूं। मुझे यह निश्चय है कि सुख और दुःख चाकके समान घूमते हैं, इसीसे मैं अपने पतियोंकी उन्नतिका समय देख रही हूं। मुझे यह निश्चय है कि जिन कारणोंसे मनुष्यको विजय होता है वेही कारण किसी समय मनुष्यके हानिकारक भी हो जाते हैं। हे भीमसेन! मैं मरे हुएके तुल्य हो गई हूं, क्या तुम मेरी दशाको नहीं देखते हो। मैंने बुद्धिमानोंसे सुना है कि जो पुरुष पहले समयमें महादानी होता है, वही दूसरे समयमें भिक्षा मांगने लगता है। जो एक समय अपने बलसे शत्रुओंको मारता है, वही दूसरे समयमें निर्ब्बल होकर शत्रुओंके हाथसे मारा जाता है। ऐसेही जो एक समयमें शत्रुओंको गिराता है, वही दूसरे समयमें दुर्ब्बल होकर शत्रुओंसे गिरता है। कोई कर्म्म ऐसा नहीं है जिसको प्रारब्ध न कर सके, और प्रारब्धको कोई चलाभी नहीं सकता। यही विचारकर मैं अच्छे समय आनेका मार्ग देख रही हूं। मैं यह जानती हूं कि जो जल पहले जहां होता है, फिर वह उसी स्थानमें बह कर आ जाता है। यही विचारकर मैं अपने पतियोंकी उन्नतिका समय देख रही हूं। जिस प्रारब्धसे मनुष्यका धन नष्ट होता है, बुद्धिमानको उचित है कि उसीका यत्न करे, तुमने जो मेरे बचनोंका प्रयोजन समझा हो, सो मुझ दुःखिनीसे पूछो, मैं तुम्हारे पूछनेपर उत्तर दूंगी। पाण्डवोंकी पटरानी और राजा द्रुपदकी प्यारी

पत्नी द्रौपदीके सिवा इन सब दुःखोंको सहकर और कौन राजपत्नी जो सकती है? हे शत्रुनाशन! इस मेरे दुःखसे समस्त कुरुकुल, समस्त पाण्डव-कुल और समस्त पाञ्चाल कुलका निरादर हुआ है। मेरे समान दूसरी कौनसी स्त्री होगी जो भाई, ससुर और बहुत पुत्रोंके जीते भी बन-वासके दुःखोंको सहे? हे भरतकुलसिंह! मैंने निश्चय बालकपनमें ब्रह्माका कोई दोष किया था, जिसके कारणसे अब यह सब दुःख सह रही हूं। हे भीमसेन! तुम हमारे रूपकी विपरीतताभी देख लो। उस महाघोर बनमें अनेक दुःख सहनेपर भी मेरी यह दुर्दशा नहीं हुई थी। हे भीम! हे कुन्तिनन्दन! तुम भली भांति जानते हो कि पहले मैं कैसी सुख करती थी, सोई मैं आज दासी भावको प्राप्त हुई हूं, तब मुझे सुख कैसे हो! जहां साक्षात् महा-धनुषधारी महाबाहु कुन्तीपुत्र अर्जुन छिपी हुई अग्निके समान स्त्री वेष बनाकर रहते हैं, तहां प्रारब्धके सिवा और किसका दोष है? हे कुन्तीनन्दन! प्रारब्धकी गतिको कोई मनुष्य नहीं जान सकता है। तुम लोगोंकी जो यह दुर्दशा हो गई, क्या किसीको इसकी सम्भावना थी? जिस मेरे सुखको इन्द्रके समान पाण्डव लोग देखने रहते थे, सोई पतिव्रता मैं श्रेष्ठ स्त्रियोंमें श्रेष्ठ होनेपरभी दूसरोंका सुख देखती हूं। हे पाण्डव! आज मेरी अयोग्य दशाको तुम देखो! तुम लोगोंके जीते क्या मैं इस दुर्दशामें पड़ने योग्य थी? यह केवल समयहीका दोष है। जिसके भयसे समुद्र पर्य्यन्त पृथ्वी कांपती थी, वही मैं आज सुदेष्णाके भयसे कांपती हूं, और उसके वशमें रहती हूं। जिसके आगे और पीछे सहस्रों दासियां फिरती थीं, सोई मैं आज सुदेष्णाके आगे पीछे फिरती हूं। हे कौन्तेय! मैं जो तुमसे अपने दुःखोंका वर्णन करती हूं, सो तुम सुनो। जो मेरे हाथ कुन्तीके शरीरमें चन्दन लगानेके सिवा और किसीके शरीरमें कभी उबटन नहीं लगाते थे, उन्ही मेरे हाथोंको तुम देखो, क्या इनमें ऐसी ठेठ कभी पहलेभी पड़ी थी? ऐसा कहकर द्रौपदीने अपने हाथ भीमको दिखाये, और कहने लगी कि जो मैं कभी कुन्ती और तुम लोगोंसे भी नहीं डरती थी, सो आज विराटसे डर रही हूं; और उसकी दासी बनकर सेवा करती हूं। मैं सदा यही विचा-रती रहती हूं कि न जाने आज महाराज मुझे क्या कहेंगे? यह चन्दन उनके योग्य घिसा गया है या नहीं? क्योंकि राजा विराटको मेरे सिवा और किसीका घिसा हुआ चन्दन अच्छा नहीं लगता।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, कि, भीमसेनसे अपने सब दुःख सुनाकर सुन्दरी द्रौपदी भीम-सेनकी ओर देखकर धीरे धीरे रोने लगी। फिर आंसू पोंछ और भीमसेनके हृदयसे लपटकर धीरे धीरे बोली, हे भीमसेन! मैंने अपनी जानमें कभी देवतोंका थोड़ा अपराध भी नहीं किया, न जाने कौनसे अपराधसे मैं अब तक जीती हूं।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, भीमसेनने अपनी प्यारी द्रौपदीके ठेठयुक्त कोमल हाथोंको चूमे और रोने लगे। महा बलवान शत्रुना-शन कुन्तीनन्दन भीम उस समय दुःखसे व्याकुल होगये, और आंसू पोंछकर द्रौपदीसे कहने लगे।

१८ अध्याय समाप्त।

भीमसेन बोले, मेरे बाहुबल और अर्जु-नके गाण्डीव धनुषको धिक्कार है। जिनके होतेभी तुम्हारे लाल हाथोंमें ठेठ पड़ गई। मैं राजा विराटकी सब सभाको नाश कर दूंगा, परन्तु सन्देह इतनाही है कि महा-राजकी आज्ञा नहीं है। अथवा धनके अभि-मानसे पागल हुए कीचकके शिरको अपने

पैरसे इस प्रकार पीसंगा, जैसे मतवारा हाथी किसी फलको चूर कर देता है। हे द्रौपदी। जिस समय कीचकने तुम्हारे लात मारी थी, उसी समय मैंने विचारा था कि विराटको सब सभाका नाश कर दूंगा! परन्तु उसी समय धर्म्मराजने मुझे आंखोंसे रोक दिया। हे सुन्दरि! उनका अभिप्राय जान मैं भी चुप होकर बैठ गया। जो हम लोगोंका राज्य नाश हो गया है; कौरवोंने जो हमारे सङ्ग अन्याय किया है, उससे दुर्य्योधन, कर्ण, सुवल-पुत्र शकुनि और पापी दुःशासनका मैंने शिर नहीं काटा इसी दुःखसे मेरे शरीर जले जाते हैं। यह दुःख मेरे हृदयमें शल्यके समान लगा है। हे सुन्दर कमरवाली! हे महाबुद्धिमती! तुम धर्म्मका नाश मत करो और क्रोधका नाश करो, यदि महाराज युधिष्ठिर सुनेंगे कि भीमसेनके कारणसे हम प्रत्यक्ष होगये, तब वे निस्सन्देह आत्महत्या करेंगे। हे पतलीकमरवाली! महाराजके मरनेसे अर्ज्जुन, नकुल और सहदेवभी जीते न रहेंगे, इन सबके मरनेसे मैं कैसे जाऊंगा? तुमने सुना होगा कि पहले समयमें राजपुत्री सुकन्याके पति च्यवन मुनि बनमें मिट्टीके तुल्य होगये थे, तौभी वह उनकी सेवा करनेसे निवृत्त नहीं हुई थी। तुमने महारूपवती, नारायणी इन्द्रसेनाकी कथा सुनी होगी, वह सहस्र वर्षके बूढ़े अपने पतिकी सेवा करती थी। तुमने जनकराज दुलारी सीताका इतिहास सुना होगा, वह अपने बनबासी पतिके सङ्गही बनको चली गई थी। बनसे उसे रावण चुराकर लेगया, रामकी प्यारी सीताने अनेक क्लेश सहकर भी रामहोकी सेवा करी। तुमने थोड़ी अवस्थावाली महा रूपवती लोपामुद्राका वृत्तान्त सुना होगा, वह अपने सब भोगने योग्य सुखोंको छोड़कर अगस्त्य मुनिके सङ्ग जङ्गलको चली गई थी। तुमने यशस्विनी सावित्रीका इतिहास सुना है, वह द्युमत्सेनके पुत्र अपने पति सत्यवानके सङ्ग अकेली यमलोकतक चली गई थी। जैसी ये सब स्त्रियां रूपवती और पतिव्रता थीं, तमभी वैसीही हो! हे कल्याणि! तुममेंभी उन्हीं सबके पूरे लक्षण पाये जाते हैं। तुम अब बहुत दिन तक इन दुःखोंको नहीं सहोगी, अब समय पूरा होनेमें केवल पन्द्रह दिन शेष हैं, यह तेरहवां वर्ष पूरा होनेसे तुम महारानी बन जाओगी।

द्रौपदी बोली, मैंने तुमसे रोकर जो कुछ कहा है, उसका कारण दुःखही है। मैं महा दुःख सहने पर भी महाराजकी निन्दा नहीं करूंगी। हे महाबल भीमसेन! समय बीतने पर क्या होगा, जो कार्य्य इस समय उपस्थित है, उसके करनेको उद्यत हो। हे भीम! सुदेष्णा रानी मेरे रूपको देखकर सदा यही शङ्का किया करती है कि राजा इसके वशमें होजायंगे। उसके इस भावको देखकर मिथ्याबादी पापी कीचक सदा मेरी इच्छा किया करता है। मैं पहले क्रोध करके फिर अपने क्रोधको शान्त करती हूं, और काम-मोहित कीचकसे कहती हूं कि तू अपनी रक्षा कर, मैं महा पराक्रमी पांच गन्धर्व्वोंकी प्यारी स्त्री हूं, वे साहसी और महाशूर हैं, तुझे क्रोध करके अवश्य मार डालेंगे। मेरे ऐसे वचन सुन कर पापी कीचक कहता है कि, हे सुन्दर हंसनेवाली सैरिन्ध्री! मैं गन्धर्व्वोंसे कुछ नहीं डरता, मैं युद्धमें सहस्रों और लक्षों गन्धर्वोंको नाशकर सकता हूं, मैं कीचक हूं, मुझे कोई नहीं मार सकता है। उसके ऐसे वचन सुनके मैंने पुनः काम पीड़ित कीचकसे कहा, तू महाबलवान गन्धर्वोंके समान पराक्रमी नहीं है, मैं कुल और शीलके अनुसार अपने धर्म्ममें स्थित हूं, और पाप करनेकी कभी इच्छा नहीं

करती। मेरे ऐसे बचन सुनकर वह दुष्टात्मा फिर कहने लगा कि तुम मेरी स्त्री हो।, एक दिन सुदेष्णा रानीने मुझे उसके घरमें भेजा, उसने पहले हो अपने भाई कीचकसे यह सब सम्मति कर ली थी। उसने मुझे मद्यका पात्र देकर कहा कि हे कल्याणि! तू कीचकके घरसे मेरे लिये मद्य लेआ। जब मैं उसके घर गई, तब सूतपुत्र कीचकने मुझसे शान्ति पूर्व्वक कहा कि तू मेरी सेवाकर। जब मैंने उसके बचनको न माना, तब उसने महाक्रोध किया। मैं दुष्ट कीचककी इच्छा जानकर उसी समय वेगसे राजाकी शरण गई; हे पाण्डव! सूतपुत्र कीचकने राजाके आगेही मुझको मारा, उस दुष्टात्माने मुझको पृथ्वीमें गिराकर लातसे मारा। राजा विराट और कङ्क आदि सब पुरुष देखते रहे, उस समय सभामें राजाके प्यारे मित्र शूरवीर और अनेक बनिये भी बैठे थे, मैंने उस समय महाराज विराटसे और कङ्कसे अनेक प्रार्थना करी, परन्तु किसीने कुछ न सुना और कीचककी किसीने निवारण भी न किया, यह जो राजा विराटका कीचक नामक सारथी है, सो अधर्मी और महा निर्लज्ज है, तथापि इस नगरके सब स्त्री पुरुष उससे प्रेम करते हैं, वह शूर, अभिमानी, पापी, सब वस्तुओं और स्त्रियों पर अत्याचार करनेवाला है, राजा उसको सब देते हैं; वह दुष्ट रोते हुए पुरुषोंका भी धन छीन लेता है, कभी साधुओंके मार्गसे नहीं चलता, और धर्म्मको धारण नहीं करता, वह दुष्ट, पापी, पाप करनेवाला काम-पीड़ित, धृष्ट और दुष्ट है। यदि तुम उसको न मारोगे तो वह बार-बार निरादर पाकरभी मेरा निरादर करेगा। तब मैं अवश्यही अपने शरीरको छोड़ दूंगी, ऐसा करनेसे सब धर्म्म करनेवालोंका धर्म्म नष्ट हो जायगा, आप लोग जो अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार समयको रक्षा करते हैं, उसका भी नाश हो जायगा, क्योंकि स्त्रीका नाश होनेसे सन्तानकी रक्षा नहीं हो सकती; और यह नियम है कि सन्तानकी रक्षा होनेसे अपनी रक्षा होती है। आत्माही स्त्रीके गर्भसे उत्पन्न होता है, इसी लिये पण्डितोंने स्त्रीका नाम जाया कहा है। स्त्री पतिकी रक्षा करती है, फिर वही स्त्रीके गर्भमेंसे उत्पन्न होता है, हमने वर्णोंके धर्म्म करनेवाले ब्राह्मणोंके मुहसे ऐसाही सुना है शत्रुओंके मारनेके समान क्षत्रियोंका दूसरा धर्म्म नहीं है। धर्म्मराजके देखते कीचकने मुझे लातसे मारा। हे महा-बल भीमसेन! तुम भी उस समय वहीं देख रहे थे, तुमने महाघोर जटासुरके हाथसे मुझे छुड़ाया था, तुम्हीने अपने भाइयोंके सहित जयद्रथको जीता था, तुम्हीं मेरा निरादर करनेवाले दुष्ट कीचकको भी जीतो। हे भारत! कीचक राजाका बहुत प्यारा है, इस लिये उसे देखकर मुझे बहुत शोक होता है, तुम उसके शिरको इस प्रकार तोड़ दो, जैसे कोई पत्थर मारके घड़ा तोड़ता है। जो दुष्ट कीचक मेरे अनेक दुःखोंका मूल है, यदि वह कल सूर्य्य निकलनेके समयतक जीता रहा तो मैं विष घोलकर पीलूंगी। हे भीमसेन! कीचकका सङ्ग करनेसे तुम्हारे आगे मेरा मरना श्रेष्ठ है।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, ऐसा कहकर द्रौपदी भीमसेनके हृदयसे लिपट गई, और बहुत रोने लगी। भीमसेनने उसे अपने हृदयसे लगाकर शान्त किया। सुन्दरी पतली कमर-वाली, दुःखसे व्याकुल द्रुपदराज दुलारीसे भीम-सेनने हेतु सहित अनेक वचन कहे। भीमसेनने अपने हाथसे द्रौपदीकी आंसू पोंछकर कीचक-के मारनेकी इच्छासे क्रोधमें भरकर दांत चबाये, और दुःखपीड़ित द्रौपदीसे बोले।

२० अध्याय समाप्त।

भीमसेन बोले, हे कल्याणि ! हे भीरु ! तुम जैसे कहती हो हम वैसेही करेंगे। हम आज उस कीचककी भाइयोंके सहित नाश कर देंगे। तम आज सन्ध्या समय अपने सब शोक और दुःखको दूर करके कीचकसे बात करना। हे सुन्दर हंसनेवाली याज्ञसेनी ! राजा विराटने जो यह नाचनेका स्थान बनाया है, उसमें दिन भर कन्या नाचती हैं, और रात्रिको अपने अपने घरको चलीजाती हैं। वहां एक सुन्दर दृढ़ सोनेका स्थान बना है, उसी स्थानपर मैं उस दुष्टको मार उसके बाप दादेके पास भेज दूंगा। जिस प्रकार तुम्हें कोई बात करते न देखे, तुम उसी यत्नसे उसे उस स्थानमें भेज दो।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, इस प्रकार द्रौपदी और भीमने दुःखित होकर उस रात्रिको बिताया। रात्रि बीततेही द्रौपदी रानीके घरको चली गई। उधर प्रातःकाल होतेही कीचक भी राजाके भवनमें पहुंचा और द्रौपदीसे बोला, राजा विराटके आगे मैंने तुझे पृथ्वीमें गिराके लातसे मारा, मुझ बलवानका विरोध करनेसे कोई तेरी रक्षा कर सकता है? कोई मुझे दोष न दे, इस लिये मैंने राजा विराटको नाम मात्रका राजा बना रक्खा है। वास्तवमें मैंही मत्स्यदेशका राजा और सेनापति हूं। हे सुश्रोणि ! हे भीरु ! तू सुखसे मेरी सेवाकर. मैं प्रति दिन तुझे सौ निष्क दूंगा। तेरी सेवाके लिये सौ दासी और सौ दास हर समय उपस्थित रहेंगे। तथा मैंभी तेरा दास होकर रहूंगा। हे भीरु ! तेरे लिये खच्चरयुक्त रथ उपस्थित रहेंगे, इस लिये तू मुझसे सङ्गम कर।

द्रौपदी बोली, हे कीचक ! मैं यशस्वी गन्धर्व्वोंसे बहुत डरती हूं। यदि तुम मुझसे यह प्रतिज्ञा करो कि तुम्हारे और मेरे सङ्गमको भाई और मित्रभी न जान सकेंगे। तब मैं तुमसे सङ्गम करूंगी।

कीचक बोला, हे कदलीके समान जङ्घावाली ! हे सुश्रोणि ! हे कल्याणि ! तुम जैसे कहती हो, मैं वैसेही करूंगा, मैं तुमसे सङ्गम करनेके लिये शून्य घरमें अकेलाही जाऊंगा ऐसा करनेसे महा तेजस्वी गन्धर्व्व तुम्हें नहीं देख सकेंगे।

द्रौपदी बोली, यह जो राजा विराटने नाचनेके लिये स्थान बनाया है, जहां दिनभर कन्या नाचती हैं, और रातको अपने अपने घरको चली जाती हैं, उसे गन्धर्व्व लोग नहीं जानते हैं। तुम अन्धेरेमें आधी रातको वहां जाना। मैं निःसन्देह तुमसे वहीं मिलूंगी।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, इस प्रकार द्रौपदी और कीचकसे बात होते होते दो पहर दिन बीत गया। द्रौपदीको यह आधा दिन महीनेके समान बीता। हे राजन् जनमेजय ! तब कीचक बहुत प्रसन्न होकर अपने घरको गया; परन्तु उस मूर्खने यह न जाना कि सैरिन्ध्री मेरे लिये मृत्युरूप होगई है। काम मोहित कीचक उसी समयसे अपने शरीरको संवारने लगा। कीचक विशालनयनी द्रौपदीका स्मरण करते हुए, अपने शरीरमें चन्दन और माला धारण करने लगा, उसको वह समय अनेक वर्षोंके समान जान पड़ा, कीचकके आभूषण धारण करनेसे उसके मरनेके समय ऐसी शोभा बढ़ी, जैसे बुतनेके समय दियेकी बत्तीका प्रकाश बढ़ता है। काम मोहित कीचकने द्रौपदीके वचनमें विश्वास कर लिया, परन्तु यह न जाना कि मेरी मृत्यु भी आजहीकी रात्रिमें है। उसी समय द्रौपदी भीमसेनके पास चौकेमें गई और कहने लगी कि मैंने तुम्हारी आज्ञानुसार आधीरातके समय कीचकको उसही नाच घरमें बुलाया है, वह आधीरातको अकेला उस शून्य नाचघरमें आवेगा, तुम वहीं उसको मार डालना। हे कुन्तीनन्दन ! तुम वहां

जाकर उस काममोहित सूतपुत्र कीचकका नाश करो। वह मूर्ख अभिमानके वशमें होकर गन्धर्वोंका निरादर करता है। हे मारनेवालोंमें श्रेष्ठ! तुम उसको मारो और कीचमें फँसी हुई हथिनीके समान मेरा उद्धार करो। हे भारत! मुझ दुःखिनीको आंसू पोछो तथा अपना और अपने कुलका कल्याण करो।

भीमसेन बोले, हे सुन्दर मुखवाली! तुमने हमको बहुत प्यारी बात सुनाई। हम तुम्हारा आदर करते हैं, और युद्धके लिये कुछ सहायको इच्छा नहीं करते। हे उत्तम रङ्गवाली! कीचकसे युद्ध होनेकी वार्त्ता सुन मुझे वैसाही आनन्द हुआ, जैसा हिड़म्बासुरके मारनेसे हुआ था। मैं अपने धर्म्म और भाइयोंको शपथ करके तुमसे सत्य कहता कि कीचकको इस प्रकार मारूंगा, जैसे इन्द्रने वृत्रासुरको मारा था। मैं निश्चय कीचकको अन्धेरे अथवा चांदनेमें पीस दूंगा, यदि उसको ओर होकर राजा विराट लड़ेगा तो उसका भी नाश कर दूंगा। फिर दुर्य्योधनको मारकर राज्य छीन लूंगा, राजा युधिष्ठिर इच्छानुसार विराटकी सेवा करें।

द्रौपदी बोली, हे प्राणनाथ! आप मेरे लिये अपने सत्यको मत छोड़िये, जैसे उसे छिपकर मार सकें ऐसाही यत्न कीजिये।

भीमसेन बोले, हे भीरु! जैसे तुम कहती हो मैं वैसेही करूँगा, आज अवश्य कीचकको बान्धवोंके सहित मारूंगा। हे अनिन्दिते! मैं उस स्थानमें छिपकर कीचकके शिरको इस प्रकार तोड़ूंगा जैसे मतवारा हाथी बेलको तोड़ता है; वही दुष्ट न प्राप्त होने योग्य द्रौपदीकी इच्छा करता है?

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, तब भीमसेन आधी रातको छिपकर उस नाचघरमें जा बैठे और इस प्रकार कीचकका मार्ग देखने लगे, जैसे छिपकर सिंह हरिनका मार्ग देखता है। उसी समय कीचक भी द्रौपदीसे सङ्गम करनेको इच्छासे अपने शरीरको सुधारकर उस नाचघरमें पहुंचा। कीचक द्रौपदीके बतलाये हुए स्थानमें गया, उस समय वह स्थान अन्धेरेसे भरा था, इससे कीचक द्रौपदीको ढूंढ़ने लगा। अनन्तर दुरात्मा कीचकने पहलेसे आये हुए, महा बलवान भीमसेनको एकान्त पलंगपर सोते हुए पाया। द्रौपदीके निरादरसे क्रोधमें भरे हुए भीमसेनका हाथ सूतपुत्रने पकड़ लिया। पश्चात् कामसे व्याकुल कीचक आनन्दके वशमें होकर भीमसेनके पास सो गया, और प्रसन्न होकर कहने लगा, हे सुन्दरि! मैं तेरे लिये बहुत धन लाया हूं, और सुन्दर सुन्दर आभूषण लाया हूं। हे सुन्दर भौंहवाली! मैंने तुम्हारे लिये रत्न भूषण धारिणी, उत्तम वस्त्रवाली, रूप और लावण्यसे भरी, क्रीड़ा करनेवाली अपनी युवती स्त्रियोंको छोड़ दिया, आज मेरे घरकी सब स्त्रियां अकस्मात् कहने लगीं कि तुम्हारे समान सुन्दर और उत्तम वस्त्रधारी जगत्‌में कोई पुरुष नहीं है।

भीमसेन बोले, ईश्वरने तुमको मेरोही प्रारब्धसे सुन्दर बनाया है। तुम प्रारब्धहीसे अपनी प्रशंसा करते हो, जैसा मुझे तुम्हारे शरीरका स्पर्श जान पड़ता है, ऐसा और दूसरे पुरुषका नहीं, तुम्हारे छूनेसे मुझे जान पड़ता है कि तुम स्त्रियांसे प्रसंग करनेमें बहुत चतुर हो, और यह भी निश्चय होता है कि जगतमें तुम्हारे समान कोई पुरुष ऐसा नहीं है जो स्त्रियोंको प्रसन्न कर सके।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, महा बलवान महाबाहु कुन्तीपुत्र भीमसेन ऐसा कहकर वेगसे उठे और हंसकर कहने लगे। रे पापी! अब तेरो बहन थोड़े समयमें तुझे भूमिमें पड़ा हुआ वैसेही देखेगी जैसे सिंहसे मारे हुए बड़े

शरीरवाले हाथीको जन्तु देखते हैं। तेरे मरनेसे सैरिन्ध्री सुख पूर्व्वक विहार करेगी और उसके पतिभी आनन्दसे रहेंगे। ऐसा कहकर महाबलवान भीमसेनने बलवान कीचकके बाल पकड़ लिये कीचकने भी वेगसे छुड़ाकर भीमसेनके हाथ पकड़ लिये। तब बलवान कीचक और भीमसेनका घोर बाहुयुद्ध होने लगा, कीचकोंमें श्रेष्ठ कीचक और पुरुषोंमें श्रेष्ठ भीमका द्रौपदीके लिये इस प्रकार घोर युद्ध हुआ, जैसे बसन्त ऋतुमें एक हथिनोके लिये दो हाथी लड़ते हों। वे दोनों अपनी अपनी जयकी इच्छासे इस प्रकार लड़ने लगे जैसे पहले वानरकुल सिंह सुग्रीव और बालिसे युद्ध हुआ था, वे दोनों पांच शिरके सर्पके समान अपने हाथोंको उठाकर युद्ध करने लगे। तब बलवान कीचकने भीमको वेगसे मारा, परन्तु स्थिर प्रतिज्ञावाले भीम युद्धमें एक चरण भी पीछेको न हटे। वे दोनों परस्पर लपटकर एक दूसरेको बड़े बैलके समान खींचने लगे। उन दोनोंका यह घोर युद्ध इस प्रकार हुआ, जैसे नाखून और दांत रूपी शस्त्रधारी मतवारे सिंहोंका युद्ध होता है। अनन्तर कीचकने क्रोध करके भीमसेनको इस प्रकार पकड़ा जैसे मतवारा हाथी मतवारे हाथीको पकड़ता है। बलवान भीमसेननेभी उसको वैसेहो पकड़ा, तब कीचकने बलसे उठाकर भीमको फेंक दिया। उन दोनों बलवानोंके हाथ घिसनेसे युद्धमें ऐसा शब्द होने लगा, जैसा बांस फटनेसे बनमें होता है। अनन्तर भीमने उसका पैर पकड़कर इस प्रकार घुमाया जैसे महावायु वृक्षको घुमाता है। बलवान भीमके घुमानेसे कीचकका बल नष्ट होगया। और श्वास लेता लेता भीमको खीचने लगा। यद्यपि उस समय कीचकको बहुत थोड़ा बल रह गया था, तौभी उसने क्रोधकर अपनी शक्तिके बलसे भीमसेनको पृथ्वीमें गिरा दिया, बलवान कीचकके हाथसे पृथ्वीमें गिरकर भीमसेन पुनः दण्डधारी यमराजके समान उठे और फिर वे दोनों परस्पर स्पर्द्धा करके युद्ध करने लगे। उस आधी रातके समय यह युद्ध निर्ज्जन स्थानमें हुआ। तब वह उत्तम स्थान उन दोनों क्रोधी वीरोंके गर्जनेसे कांपने लगा। तब भीमने बलवान कीचकके हृदयमें एक थप्पड़ मारा, परन्तु कीचक क्रोधमें भरकर एक चरणभी पीछेको न हटा, उस थप्पड़के लगनेसे सूतपुत्र कीचक पृथ्वीमें बैठ गया और उसका बल नष्ट होने लगा, भीमने उसको बलहीन देखकर पृथ्वीमें गिरा दिया। फिर बलवान भीमने क्रोधमें भरकर और लम्बा श्वास लेकर कीचकके बाल पकड़ लिये! विजय करनेवालोंमें श्रेष्ठ महाबलवान भीमसेनने कीचकको इस प्रकार पकड़ा जैसे मांस खानेकी इच्छावाला शार्द्दूल हरिनको पकड़ता है। जब भीमसेनने देखा कि कीचकका बल नष्ट होगया तब उसे अपने हाथोंसे ऐसे दबाया जैसे रस्सोसे पशुको बांधते हैं। उस समय कीचकके कण्ठसे फटो हुई भेरके समान शब्द निकलने लगा। तब भीमने मूर्च्छित कीचकको बहुत समयतक घुमाया, फिर पृथ्वीमें गिराकर द्रौपदीका क्रोध शान्त करनेके लिये उसका कण्ठ तोड़ने लगे, जब उसके शरीर टूट गये और आंख बाहर निकल आईं, तब भीमने उसको कमरको पैरसे तोड़ दिया, भीमने कीचकको इस प्रकार मारा जैसे कोई पशुको मारता है। जब पाण्डुनन्दन भीमने देखा कि कीचक मर गया, तब उसे पृथ्वीमें रगड़कर ऐसा कहने लगे, मैं इस द्रौपदीके शत्रुको मारकर आज भाईके ऋणसे छुटा, और परम शान्तिको प्राप्त हुआ। पुरुषसिंह महा क्रोधी भीमसेनने इस प्रकार कीचकको मारकर उसके शरीरको फेंक दिया। मरते समय कीचकके वस्त्र और आभूषण सब गिर गये थे। बलवानोंमें श्रेष्ठ भीम

क्रोधसे दांत चवाने लगे और हाथसे हाथको मलने लगे। फिर उसके हाथ पैर और शिरको तोड़कर उसके पेटमें प्रवेश कर दिये। भीमने कीचकको इस प्रकार मारा, जैसे शिव पशुको मारते हैं। महापराक्रमी भीमने कीचकको मांसपिण्डकी भांति बनाकर द्रौपदीको दिखाया। भीम महा सुन्दरी द्रौपदीसे बोले, हे पाञ्चालि! तुम यहां आकर इस कामी कीचककी दशा देखो। हे महाराज! ऐसा कहकर भीमने अग्नि जलाई और अपने पैरसे दबाकर दुरात्मा कीचकका शरीर द्रौपदीको दिखाया और कहने लगे, हे भीरु! हे सुन्दरी! जो रूप गुण और शीलसे भरी हुई द्रौपदीकी इच्छा करते हैं, उनको हम ऐसेही मारते हैं, जैसे कीचक विराजमान है। इस प्रकार द्रौपदीके प्यारे घोर कर्म्मको करके भीमने क्रोधको शान्त किया; और द्रौपदीसे पूछकर शीघ्रही चौकेमें आकर सो गये। स्त्रियोंमें श्रेष्ठ द्रौपदीभी कीचकका नाश करके अत्यन्त प्रसन्न हुई, फिर पहरेवालोंसे बोली कि मेरे गन्धर्व्व पतियोंने उस कीचकको मार डाला, पराई स्त्रियोंके चाहनेवाले ऐसेही मारे जाते हैं, तुमलोग इसको आकर देखो। उसके ऐसे वचन सुन सहस्रों पहरेवाले मशाल जलाकर उस स्थानमें आये। उन सबने रुधिरसे भीगे हुए प्राण रहित कीचकका पृथ्वीमें पड़ा हुआ देखा। वे हाथ पैरसे रहित कीचकका देखकर बहुत डर और आश्चर्य करने लगे। इस अद्भुत कर्म्मका देखकर वे लोग कहने लगे कि इसके हाथ पैर और शिर कहां गये? इसको अवश्य गन्धर्वोंने मारा है।

२१ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजा जनमेजय! इस समाचारको सुनकर कीचकके सब बान्धव लोग वहां आये और कीचकको हाथ पैर रहित कछुवेकी खोपरीके समान पड़ा हुआ देखकर रोने लगे, और अत्यन्त आश्चर्य करने लगे। उन्होंने भीमसेनसे मारे हुए कीचकको इस प्रकार देखा, जैसे इन्द्रसे मरे हुए राक्षसको उसके बन्धु लोग देखते हैं। अनन्तर उन्होंने संस्कार करनेके लिये कीचकको बाहर निकाला। फिर थोड़ी दूरपर खम्भेसे लगी हुई सुन्दरी द्रौपदीको खड़ी देखा। फिर वे सब लोग सम्मति करके बोले, इसी दुष्टाके लिये कीचक मारा गया है, इस लिये इसे भी शीघ्रही मारडालना चाहिये अथवा इसको मारो मत कीचकके सङ्ग जीतीही जला दो। क्योंकि मरे हुए कामी कीचकका भी हम लोगोंको हित करना चाहिये। अनन्तर वे सब लोग राजा विराटके पास जाकर बोले कि इसीके लिये कीचक मारा गया है, यदि आप आज्ञा दीजिये तो कीचकके सङ्ग इसकोभी जला दें? राजाने सूतपुत्रोंके बलसे डरकर द्रौपदीके जलानेकी आज्ञा दे दी। अनन्तर वे सब लोग कमल नयनी भयसे व्याकुल मूर्च्छित द्रौपदीके पास आये, और द्रौपदीको पकड़ने लगे। वे सुन्दरी द्रौपदीको अरथीमें कीचकके सङ्ग बांधकर श्मशानमें ले चले। निन्दा रहित पतिव्रता द्रौपदी सूतपुत्रोंके वशमें होकर अपने पतियोंको पुकारकर रोने लगी।

द्रौपदी बोली, जय, जयन्त, विजय, जयत्सेन और जयद्बल मेरे इस वचनको सुनें। ये कीचक मुझे पकड़े लिये जाते हैं, युद्धमें जिनके धनुषोंका शब्द बज्रके समान होता है, जिन वेगवान गन्धर्व्वोंके रथोंका शब्द महाघोर होता है, वे मेरे पति मेरे वचनको सुनें। ये सूतपुत्र मुझे पकड़कर लिये जाते हैं।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, रोती हुई द्रौपदीकी दीनवाणी सुनकर भीमसेन उठे और दौड़कर कहने लगे।

भीमसेन बोले, हे सुन्दरि सैरिन्ध्रि! हम तेरे बचनको सुनते हैं, इस लिये तुझे सूतपुत्रोंसे कुछ भय नहीं है।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, ऐसा कहकर महाबाहु भीमसेनने जमुहाई ली और सूतपुत्रोंके मारनेके लिये अपने वेषको बदलकर दूसरे मार्गसे बाहर निकले। फिर नगरकी छाड़दिवालोके वृक्षपर चढ़कर देखने लगे, फिर वहांसे उतरकर छाड़दिवालीको नांघ कर वेगसे श्मशानकी ओर दौड़े कीचकोंके पहलेही श्मशानमें पहुंच गये और चिताके पास जाकर वृक्षोंको देखने लगे, फिर एक ताड़के समान ऊंचे ऊपरसे सूखे हुए भारी वृक्षको देखा, यह वृक्ष दस पुरुसा लम्बा था। भीमने उसको हाथीके समान उखाड़ लिया और कन्धेपर रखकर महाबलवान दण्डधारी यमराजके समान रूप धारण करके सूतोंकी ओर दौड़े उनके दौड़नेसे अनेक बड़गद पीपल और कचनारके वृक्ष टूटकर पृथ्वीमें गिर गये। उस सिंहके समान गन्धर्वको आते हुए देख सब सूतपुत्र डरसे कांपने लगे। तब वे लोग कहने लगे कि यह क्रोधमें भरा वृक्ष लिये गन्धर्व चला आता है इस लिये सैरिन्ध्रीको छोड़ दो। यही हमारे डरका कारण है। जब उन्होंने देखा कि यह गन्धर्व हम लोगोंको इस वृक्षसे मार डालेगा, तब वे लोग अरथीको छोड़ कर कर नगरको ओर भागे। भीमने भागते हुए एक सौ पांच सूतोंको इस प्रकार मारा, जैसे वज्रधारी इन्द्र दानवोंको मारते हैं। बलवान भीमने उसी वृक्षसे शत्रुओंका नाश करके द्रौपदीको खोल दिया और दुःखसे भरी रोती हुई द्रौपदीसे बोले, हे सुन्दरी! तुम्हें जो क्लेश देते हैं, हम उनका इसी प्रकार नाश करते हैं, अब तुम नगरको जाओ तुम्हें कुछ भय नहीं है। मैं दूसरे मार्गसे विराटकी रसोईको जाता हूं।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, महा बलवान भीमसेनसे कीचकोंका कुल ऐसे नाश हुआ,जैसे अग्नि लगनेसे बन। एक सेनापति कीचकको भीमनेमारा था और एकसौ पांचको फिर मारा इस प्रकार एक सौ छः कीचक मारे गये; इस महा आश्चर्यको देखकर सब नगरके स्त्री पुरुष चुप हो रहे।

२३ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! नगरके लोगोंने महाबलवान कीचकोंको गन्धर्वोंके हाथसे मरा हुआ देख राजासे जाकर कहा, हे महाराज! जिस प्रकार वज्रसे इन्द्रने पर्वतोंको नाश किया था, ऐसेही गन्धर्वोंने कीचकोंको मारडाला, सब कीचक पृथ्वीमें पड़े हैं। सैरिन्ध्री छूटकर पुनः आपके नगरको आती है। हे राजेन्द्र! पुरुषोंको मैथुन सदाही प्यारा है और सैरिन्ध्री बहुत रूपवती है, एवम् गन्धर्व भी बहुत बलवान हैं, जिस प्रकार उसके दोषसे आपके नगरका नाश न हो, ऐसा उपाय कीजिये। उनके वचन सुन कर महाराज विराट बोले, कि इन सब सूतपुत्रोंको एकही चितामें रख और सुगन्धोंके सहित जला दो। फिर राजाने अपनी पटरानी सुदेष्णासे दुःखित होकर कहा कि जब सैरिन्ध्री यहां आवे तब तुम हमारे बचनसे उसको ऐसा कहना कि हे सैरन्ध्री! तुम्हारा कल्याण हो, हे सुश्रोणि! राजा विराट गन्धर्वोंके भयसे बहुत डरते हैं, इस लिये जहां तुम्हारी इच्छा हो वहांको चली जाओ; यद्यपि हमारी शक्ति तुम्हें छोड़नेकी नहीं है, क्योंकि साक्षात् गन्धर्व तुम्हारी रक्षा करते हैं, परन्तु क्या करें। यद्यपि मैंही सैरिन्ध्रीसे कहता परन्तु दोषसे डरकर नहीं कहता हूं, तुम्हारे कहनेसे कुछ दोष नहीं होगा, इस लिये तुमही कह देना।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, द्रौपदी भयसे छूटकर और सूतपुत्रोंको मारकर नगरको ओर

चली। उस समय द्रौपदीकी ऐसी दशा हुई जैसी सिंहसे डरी हुई हरिनीकी। नगरमें आकर द्रौपदीने अपने शरीरको जलसे धोया और वस्त्रोंसे पोंछा। उसको नगरमें आती हुई देख नगरके लोग गन्धर्व्वोंके डरसे इधर उधर भागने लगे, और कोई डरसे आंख बन्द करके बैठने लगा। अनन्तर द्रौपदी भीमको रसोईके द्वारपर मतवारे हाथीके समान बैठे हुए देखकर धीरे धीरे कहने लगी, जिस गन्धर्व्वराजने मुझे महा भयसे छुड़ाया मैं उसे प्रणाम करती हूं। भीमसेन बोले, जो पहले इस विराट नगरमें दूसरोंके वशमें होकर रहते थे, वे आज ऋणहीन होकर सुखसे विहार करें।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, अनन्तर द्रौपदीने विराटके नर्त्तनागारमें कन्याओंको नचाते हुए महाबाहु अर्ज्जुनको देखा, तब वे सब कन्या नृत्यशालासे अर्ज्जुनके सहित बाहर निकल कर दुःखिनी द्रौपदीको देखने लगीं।

कन्या बोलीं, हे सैरिन्ध्री! तू आज प्रारब्धहीसे छूटकर आई है, और प्रारब्धहीसे तुम्हें दुःख देनेवाले कीचकोंका नाश हुआ।

बृहन्नला बोली, हे सैरिन्ध्री! तुम कैसे छूटी? और किस प्रकार पापी कीचकोंका नाश हुआ? मैं सबको सुनना चाहती हूं, तुम कहो।

सैरिन्ध्री बोली, हे बृहन्नले! हे कल्याणि! तुम तो सुखसेसे कन्याओंके सहित रहती हो, अब तुम्हें सैरिन्ध्रीसे क्या प्रयोजन है? तुम्हें कुछ दुःख नहीं होता और सैरिन्ध्री महा दुःखमें पड़ी है, इसी लिये तुम हंसकर मुझसे पूछती हो।

बृहन्नला बोली, हे कल्याणि! बृहन्नला भी घोर आपत्तिमें पड़ी है, हे बाले! क्या तुम नहीं जानती हो कि वह नीचयोनिको प्राप्त होगई है। मैं तुम्हारे सङ्गही रहती हूं और तुम सबके सङ्ग रहती हो, हे सुन्दरी! तुम्हें दुःख होनेसे किसको दुःख नहीं होता? कोई मनुष्य किसीके हृदयको नहीं देखता इससे तुम हमारे अन्तःकरणको नहीं जानती हो।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, अनन्तर सब कन्याओंके सहित द्रौपदी सुदेष्णा राणीके घरमें गई। तब राजपत्नी सुदेष्णाने राजाकी आज्ञाके अनुसार द्रौपदीसे कहा, हे सैरन्ध्री! हे भद्रे! राजा गन्धर्वोंसे बहुत डरते हैं इस लिये तुम्हारी जहां इच्छा हो तहां शीघ्र चली जाओ। तुम यह भी जानती हो कि कि पुरुषोंको मैथुन अत्यन्त प्रिय है, और तुम अत्यन्त सुन्दरी युवती और असाधारण स्त्री हो, तथा तुम्हारे पति गन्धर्व्व अत्यन्त क्रोधी हैं, इस लिये तुम्हारा यहां रहना उचित नहीं।

सैरिन्ध्री बोली, महाराज केवल तेरह दिन हमारे ऊपर और कृपा करें। इसके पश्चात मेरे पति कृतकृत्य होजायंगे, तब वे मुझको यहांसे ले जायंगे; तुम्हारा और बान्धवोंके सहित राजाका भी कल्याण होगा।

विराटपर्व्वमें कीचक बध पर्व्व समाप्त।

२३ अध्याय समाप्त।

अथ गोहरण पर्व्व।

श्रीशम्पायन मुनि बोले, हे राजा जनमेजय! जब भाइयोंके सहित कीचक मारा गया, तब तब लोग आश्चर्य सहित इस कथाको कहने लगे। उस समय सब नगरोंमें कीचक मारा गया, यही कोलाहल होने लगा। सब लोग कहने लगे कि यह कीचक महादुर्बुद्धि, कामी, बलवान, साहसी, राजाका प्यारा और शत्रुओंसे युद्ध करनेवाला था, उस दुष्ट पापीको गन्धर्वोंने मारा। हे महाराज! सब देशोंमें यह समाचार फैल गया कि पापी कीचक मारा गया।

दुर्य्योधनने जो पाण्डवोंके ढूढ़नेके लिये दूत भेज थे, वे सब अनेक नगर, गांव और देशोंमें अच्छो प्रकार पाण्डवोंको ढूंढ़कर हस्तिनापुरमें लौट आये। उन्होंने राजसभामें जाकर महारथ विगर्त्त, महात्मा भोष्म, कृपाचार्य्य, द्रोणाचार्य्य और अपने भाइयोंके सङ्ग धृतराष्ट्रपुत्र राजा दुर्य्योधनको बैठे देखा। फिर दूत लोग प्रणाम करके कहने लगे, हे पृथ्वीनाथ! हम लोगोंने उस मनुष्य रहित हरिनोंसे भरे अनेक वृक्ष लता और वृक्षोंके गुल्मोंसे भरे हुए घोर बनमें पाण्डवोंको बहुत ढूंढ़ा परन्तु हमारा परिश्रम सफल न हुआ। हम लोग नहीं जानते हैं कि महा पराक्रमी पाण्डव लोग कहां चले गये। हम लोगोंको बनमें उनके चरणोंके चिह्न भी नहीं मिले, हमने पर्व्वत पर्व्वतोंके उंचे शिखर, नगर, मनुष्योंसे भरे देश, और शून्य स्थानोंमें पाण्डवोंको बहुत ढूंढ़ा परन्तु उन लोगोंका कहीं भी पता नहीं लगा। हे पृथ्वीनाथ! हे पुरुषसिंह! हम लोगोंको निश्चय होता है कि पाण्डव लोग मर गये। हे महावीर! हम लोगोंने पाण्डवोंको रथोंके मार्गमें भी ढूढ़ा परन्तु वहां भी उनका पता नहीं लगा। हे शत्रुनाशन! हम लोग थोड़े दिन पाण्डवोंके सारथियोंके पास रहे, वे सब लोग पाण्डवोंके बिनाही द्वारिकामें आबसे हैं। हे राजेन्द्र! द्वारिकामें न द्रौपदी हैं और न महाव्रतधारी पाण्डव हैं। हे भरतकुलसिंह! हम आपको प्रणाम करते हैं। पाण्डव लोग निश्चय मर गये। हम लोगोंको कुछ निश्चय नहीं होता है कि वे लोग कहां हैं? क्या काम करते हैं? और किस वेषमें हैं? हे पृथ्वीनाथ! अब आप हम लोगोंको कोई दूसरी आज्ञा दीजिये। हे नरनाथ! अब आप जहां कहैं तहां हम पाण्डवोंको ढूढ़नेको जायं। हे वीर! अब हम एक प्यारी बात आपको सुनाते हैं, जिस महावलवान मत्स्यदेश निवासी कीचक नामक सूतने विगर्त्तोंका नाश किया था, उसको रातमें गन्धर्वोंने मारडाला, परन्तु उन गन्धर्वोंके दर्शन किसीने नहीं किये। कीचकके सङ्गही उसके सब भाई भी मारे गये। हे कौरव! इस शत्रुओंकी पराजयको सुनकर उचित कार्य्य कीजिये।

२४ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! राजा दुर्य्योधनने उनके बचन सुनकर बहुत समयतक बिचार किया, फिर सभासदोंसे बोले, कार्य्योंको पूर्णगति जानना बहुतही कठिन है, इस लिये तुम सब विचार करो कि वे पाण्डव लोग कहां चले गये? देखो इस तेरहवें वर्षका बहुत थोड़ा समय शेष है, महापराक्रमी सत्यव्रतधारी पाण्डव लोग इस तेरहवें बर्षके पूरा होते हो प्रत्यक्ष हो जायंगे। वे लोग मतवारे हाथीके समान बलवान और बिषैले सांपके तुल्य क्रोधी हैं, अब उन्होंने तेरह वर्षतक महादुःख भोगा है, इस लिये अवश्यही हम लोगोंसे युद्ध करेंगे, वे सब समयके जाननेवाले घोररूपधारी पाण्डव लोग यदि इस समय प्रत्यक्ष हो जायं तो फिर भी क्रोधको जीतकर बनको चले जायंगे। इस लिये तुम लोग शीघ्रही उन लोगोंको ढूढ़ लो। उनके मिलनेसे हम बहुत दिन पर्य्यन्त निष्कण्टक राज्य करेंगे। उसी समय कर्ण बोले,—

हे भारत! इसी समय दूसरे धूर्त्त, बुद्धिमान उत्तम कार्य्य करनेवाले दूत पाण्डवोंको ढूंढ़ने जायं, वे सब उत्तम देश, मनुष्योंसे भरे नगर, रमणीय सभा, सिद्धोंके स्थान, राजधानो, तीर्थ और अनेक प्रकारके स्थानमें पाण्डवोंको ढूंढ़ें, और बुद्धिसे विचारें कि पाण्डव कहां हैं? और जाननेवाले बुद्धिमान निपुण तथा पाण्डवोंके भक्त लोग भी छिपे हुए पाण्डवोंको ढूंढ़ें। नदी, कुञ्ज, तीर्थ, गांव, नगर, रमणीय आश्रम,

पर्व्वत और गुफाओंमें भी पाण्डवोंको ढूंढ़ना चाहिये।

अनन्तर महापापी दुर्य्योधनका छोटा भाई दुःशासन राजा दुर्य्योधनसे बोला, हे महाराज! हे पृथ्वीनाथ! जिन दूतोंपर हमारा विश्वास है, वेही लोग पुनः पारितोषिक पाकर पाण्डवोंको ढूंढ़ने जायं। कर्णने जिस प्रकार कहा वैसेही दूत पाण्डवोंको ढूढ़ें। ये सब लोग क्रमके अनुसार एक देशसे दूसरे देशको जायं और पाण्डवोंको ढूढ़ें। यदि उनका पता न लगे तो जान लीजिये कि वीर पाण्डवोंको महा बनमें सर्पोंने खा लिया, या वे लोग समुद्रके पार चले गये। अथवा बहुत दिनतक दुःख भोगते भोगते कहीं मर गये होंगे। हे कुरुनन्दन! हे पृथ्वीनाथ! इसलिये आप अपने मनको स्थिर करके उत्साह सहित अपने कार्य्योंको कीजिये।

२५ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! जनमेजय! इसके पश्चात महा बलवान सब शास्त्रोंको जाननेवाले द्रोणाचार्य्य बोले,—

पाण्डवोंके समान पुरुष नष्ट नहीं होते और न कोई उनका निरादर कर सकता है। वे चारो शूर, विद्वान, बुद्धिमान, जितेन्द्रिय, धर्म्मज्ञ और धर्म्मराज युधिष्ठिरके भक्त हैं। चारो पाण्डव नीति और धर्म्मके जाननेवाले हैं, सब धर्म्मोंके करनेवाले, बुद्धिमान, युधिष्ठिरको समानही मानते हैं। हे महाराज! महात्मा श्रीमान भाइयोंको माननेवाले अजातशत्रु युधिष्ठिरके चारों भाई उनके भक्त हैं! अपने भक्त महात्मा, बलवान, भाइयोंके लिये महाराज युधिष्ठिर क्यों नहीं यत्न करेंगे? इस लिये मुझे अपनी बुद्धिसे निश्चय होता है कि उनका नाश नहीं हुआ, वे लोग कहीं छिपकर अपना समय बिता रहे हैं, इस लिये इस समय जो कुछ करनेके योग्य कार्य्य हो, सो तुमको अत्यन्त विचारके सहित करना चाहिये। क्योंकि अब बिलम्ब करनेका समय नहीं है। पाण्डव लोग शूरबीर और तपस्वी हैं; इस लिये उनका जानना बहुत कठिन है। तुम महात्मा सब शास्त्रोंके जाननेवाले पाण्डवोंको शीघ्र ढूंढ़ो। महाराज युधिष्ठिर पवित्रात्मा, गुणवान, पवित्र, सत्यवादी, नीति जाननेवाले, अनन्त पराक्रमी और धर्म्मात्मा हैं, इस लिये प्रत्यक्ष रहनेपर भी उनको कोई नहीं देख सकता। इस लिये तुम उनको यत्नसे ढूंढ़ो, फिर हम ब्राह्मण; सिद्ध, और उनके जाननेवाले मनुष्योंसे ढुढ़वावेंगे।

२६ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! जनमेजय! द्रोणाचार्य्यके बचनके पश्चात उनके बचनकी प्रशंसा करके सब धर्म्मोंके तत्व तथा देश और कालको जाननेवाले सब कौरवोंके पितामह शान्तनुपुत्र भीष्म सबके कल्याणके लिये ऐसा बचन बोले। भीष्मके बचन पक्षपात रहित, साधुओंके मानने योग्य दुष्टोंको दुर्लभ और धर्म्म जाननेवाले युधिष्ठिरके अनुकूल थे।

भीष्म बोले, सब अर्थके जाननेवाले ब्राह्मण द्रोणाचार्य्यने जो कुछ कहा सो सब सत्य है, पाण्डव लोग सब लक्षणोंसे भरे, उत्तम कार्य्य करनेवाले, वेदपाठी, व्रतधारी, अनेक श्रुतियोंके जाननेवाले सत्यवादी, वृद्धोंकी आज्ञा माननेवाले, समयवेत्ता और पवित्र हैं। वे लोग कहीं अपना समय बिता रहे हैं। पाण्डव क्षत्रियोंका धर्म्म करनेवाले कृष्णके भक्त, महावीर, महाबली, महात्मा और साधुओंके मार्गपर चलनेवाले हैं। इस लिये उनको कदापि दुःख नहीं होगा। उनका बल और धर्म्मही उनकी रक्षा करता है, मुझे निश्चय है कि उनका नाश नहीं होगा।

हे भारत! मैं उनके ढूंढ़नेकी एक नीति बतलाता हूं, महात्मा पाण्डवोंको दुष्टलोग नहीं ढूंढ़ सकते हैं, इस लिये हमलोगोंको जो करना चाहिये सो तुमसे कहते हैं, हम यह सम्मति तुम्हारे द्रोहसे नहीं देते हैं। ऐसा नियम है कि कदापि दुष्ट या साधुसे अधर्मके वचन नहीं कहने चाहिये और तुमसे कदापि अधर्मके वचन नहीं कह सकते। हे तात! बड़ोंकी आज्ञा माननेवाले, धीर मन्त्रीको धर्मको सत्य मानके सत्यही कहना उचित है। तुम्हारे मन्त्री लोग इस तेरहवें वर्षमें धर्मराजके जो जो स्थान बतलाते हैं, हम उन सबको नहीं मान सकते। जिस नगरमें महाराज युधिष्ठिर होंगे, वहां राजा और प्रजा सब सुखी होंगे। जहां राजा युधिष्ठिर होंगे, तहांके मनुष्य दान, सत्य और लज्जासे भरे होंगे। जहां राजा युधिष्ठिर होंगे, तहांके पुरुष मीठीवाणी बोलनेवाले, सत्यवादी, कल्याणयुक्त, दानी, प्रसन्न; पुष्ट, पवित्र और सब कर्म्मोंमें निपुण होंगे। जहां राजा युधिष्ठिर होंगे, तहां कोई भी निन्दक, दुष्ट अभिमानी, और परद्रोही नहीं होगा। जहां राजा युधिष्ठिर होंगे उस देशमें चारों वेदके शब्द पूर्णाहुती और महादक्षिणावाली अनेक यज्ञ होती होंगी। वहां सदाही मेघ उचित समयपर वर्षा करता होगा, पृथ्वी अन्नसे भरी होगी, और देश दुःखसे रहित होगा। उस देशके अन्न गुणसे, फल रसोंसे, फूल सुगन्धियोंसे वाणी कोमलतासे, वायु शीतलतासे और दर्शन साधुतासे भरे होंगे। जहां राजा युधिष्ठिर होंगे, वहां कोई भय नहीं होगा, उस देशमें अनेक बल और पुष्टिसे भरी गऊ होंगी, दूध दही और घी रसोंसे भरा होगा, वहांको खाने और पीनेको वस्तु गुणयुक्त होंगी; वहांके रस, स्पर्श, गन्ध, शब्द और रूप गुणोंसे भरे होंगे। जहां राजा युधिष्ठिर होंगे वहां सब लोग अपने अपने कर्म्मको करते होंगे। हे तात! इस तेरहवें वर्षमें पाण्डवोंके सहित जहां राजा युधिष्ठिर होंगे, उस देशके सब लोग पवित्र और प्रसन्न होकर परस्पर प्रीति करते होंगे। जहां राजा युधिष्ठिर होंगे, तहांके सब लोग उत्साह सहित अपने अपने धर्म्मोंके अनुसार इष्ट देवता और अतिथियोंकी पूजा करते होंगे, और अनेक उत्तम उत्तम कार्य्योंमें तत्पर होंगे। जहां राजा युधिष्ठिर होंगे, तहांके लोग पापको छोड़कर धर्म्मही करते होंगे और यज्ञ तथा व्रत करते होंगे। उस देशके सब लोग धार्म्मिक हो गये होंगे। हे तात! कुन्तीनन्दन युधिष्ठिरके जाननेमें धर्म्मात्मा ब्राह्मण भी समर्थ नहीं हैं, और सामान्य पुरुषोंकी तो बात ही क्या है? युधिष्ठिरमें सत्य, धारणा, दान, दम, शान्ति, क्षमा, लज्जा, तेज, कीर्त्ति, शील, और साधुता निवास करते हैं। मैं इससे अधिक और कुछ नहीं कह सकता, मैं जानता हूं कि बुद्धिमान युधिष्ठिर ऐसे ही स्थानमें होंगे। यदि तुमको मेरे वचनपर विश्वास होतो विचार पूर्वक अपने कल्याणके कार्य्य करो।

२७ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! इसके पश्चात् शारदतके पुत्र कृपाचार्य्य बोले।

वृद्ध भीष्मने पाण्डवोंके विषयमें जो कुछ कहा सो सब सत्य है। भीष्मकी वाणी हेतु और धर्म्मसे भरी अनुकूल मीठी और अत्यन्त कोमल थी, मैं भी इस विषयमें कुछ कहना चाहता हूं; सुनिये। पाण्डवोंके रहनेका स्थान दूतोंके द्वारा जानना चाहिये, और जो कल्याणदायक नीति हो सो भी इस समय करनी चाहिये। हे तात! साधारण वैरीको भी छोड़ना उचित नहीं है, फिर सब शास्त्रोंके

जाननेवाले पाण्डवोंकी तो कथाही क्या है? इस लिये हमें निश्चय होता है कि महात्मा पाण्डव लोग कहीं छिपकर यत्न करते होंगे और अपने समयको विताते होंगे। इसमें सन्देह नहीं है कि अब पाण्डवोंके उदय होनेका समय आगया, इस लिये तुम अपने और मित्रोंके राज्यमें सेनाका प्रबन्ध करो; क्योंकि इस वर्षके बीततेही अपार तेजस्वी महा बलवान पाण्डवोंका उत्साह बहुत बढ़ जायगा, इस लिये तुम सेना, कोश और राजनीतिका विचार करो, फिर समय आनेपर हम लोग उचित कार्य्य करेंगे। हे तात! तुम अपनी बुद्धिसे भी अपने बलका विचार करो, तथा निर्ब्बल और बलवान मित्रोंका भी विचार कर लो; इसके पश्चात हम लोग अपने उचित और अनुचित बलको देखकर शत्रुओंके सङ्ग कोई व्यवहार करेंगे। चाहे शान्तिसे हो, चाहे भेदसे हो, चाहे दानसे हो, चाहे दण्डसे हो, चाहे कुछ देनेसे हो, तुम सब राजासे मिलकर लो। बलवानोंको न्यायसे, दुर्ब्बलोंको डरसे, और मित्रोंको शान्तिसे अपने वशमें कर लो; इसके पश्चात् सेना और कोषको बढ़ावो, क्योंकि तुम्हारा युद्ध बलवान पाण्डवोंसे होनेवाला है। पाण्डवोंके पास सेना और वाहन कुछ भी नही हैं, इस लिये तुम धर्म्मानुसार विचार कर सब कार्य्योंको करो, तब बहुत कालतक सुख भोगोगे।

२८ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजा जनमेजय! उसी समय त्रिगर्त्त देशका राजा दुर्य्योधनका रथ-सेनापति महा बलवान सुशर्म्मा बोला, हे प्रभो! मत्स्यदेशके राजा विराटके जिस सेनापति सूतने कई बार शाल्व देशके क्षत्रियोंको जीता था, उसको बन्धुओं सहित किसीने मारडाला। राजा सुशर्म्माके ऐसे वचन सुन राजा दुर्य्योधनने कर्णकी ओर देखकर ऐसे वचन कहे, पहले समयमें मत्स्यराज विराटने हमारे राज्यमें बहुत उपद्रव किया था, उसका कीचक नामक सेनापति बड़ा बलवान था, उस महाक्रोधी, क्रूर, दुष्ट, महा बलवान, पापी, निर्लज्ज कीचकको गन्धर्व्वोंने मारडाला। मेरी बुद्धिमें आता है कि उसके मरनेसे राजा विराट निरुत्साह और निराश्रय होगया होगा। हे पापरहित! यदि तुम्हारी सम्मति हो तो सब कौरव और तुम्हारे सहित हम वहांकी यात्रा करें, मेरी बुद्धिमें यह काम इस समय करनेके योग्य है। उस राज्यमें बहुत अन्न उत्पन्न होता है, इस लिये लेनेके योग्य है, उसके मिलनेसे अनेक प्रकारके रत्न और धन मिलेंगे। फिर हम सब लोग उसके गांव और राज्य बांट लेंगे, अथवा अनेक प्रकारकी उत्तम गऊ छीन लावेंगे, और अपने बलसे उसके राज्यको पीड़ा भी देंगे। हे कर्ण! हम लोग त्रिगर्त्त और कौरवोंके सङ्ग जाकर उनकी गौओंको छीन लावेंगे। फिर सेनाका विभाग करके उसको बांध लावेंगे; अथवा उसको सब सेनाको मारकर राजाको वशमें कर लेंगे, फिर हम लोग उसके सङ्ग न्याय करके सुखसे रहेंगे। ऐसा करनेसे निःसन्देह तुम लोगोंकी वृद्धि होगी।

राजाके ऐसे वचन सुन कर्ण बोले, हे राजन्! सुशर्म्माने बहुत उत्तम बात कही, यह कार्य्य हम लोगोंको इसी समय करने योग्य है, इससे अवश्यही हमारा कल्याण होगा, इस लिये हम लोग सेनाका विभाग करके शीघ्रही विराट नगरको चलें, अथवा हमारे सबके पितामह महा पण्डित कुरुकुल वृद्ध भीष्म, गुरु द्रोणाचार्य्य और कृपाचार्य्यकी जैसी सम्मति हो, तैसाही कार्य्य करना चाहिये; हम सब लोगोंकी सम्मतिके अनुसार राजा विराटको जीतनेके लिये जायंगे। अब हम

लोगोंको हीनबल पाण्डवोंसे क्या प्रयोजन है? वे लोग कहीं पड़े होंगे या मर गये होंगे। हे राजन्! अब हम लोग विराट नगरको सुखपूर्व्वक जायंगे, और वहां जाकर उसकी सब गऊ और सब धनोंको छीन लावेंगे।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, राजा दुर्य्योधनने बिकर्त्तनपुत्र कर्णके बचनको ग्रहण किया और सब वृद्धोंसे सम्मति करके अपने आज्ञा पालक दुःशासन भाईको शीघ्र सेना ठीक करनेकी आज्ञा दी। दुर्य्योधन बोले, राजा सुशर्म्मा सेना और वाहनोंके सहित पहलेही बिराट नगरको जायं, पोछेसे हम लोग भी युद्धके समय दूसरे दिन बिराट नगरमें पहुंचेंगे। सब ऋद्धियोंसे भरे हुए मत्स्य देशमें शीघ्रही हमारी सेना पहुंचे, और सङ्गही अहीर लोग भी जायं। सेनाके लोग अनेक प्रकारके धनको लूटें, अहीर लोग उत्तम लक्षणयुक्त लाख गौओंको प्राप्त करें। हमारी सेनाके दो विभाग किये जायं, एकके सङ्ग त्रिगर्त्तराज सुशर्म्मा जायं और दूसरेके सङ्ग हम स्वयम जायंगे।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, राजाकी आज्ञाके अनुसार वह महासेना हस्तिनापुरसे निकलकर अग्निकोणको चली, उस दिन कृष्णपक्षको सप्तमी थी। अनेक बलवान वीर सन्नद्ध होकर रथोंपर चढ़े; अनेक पदाति लोग पैरों चलने लगे। यह महा बलवती सेना पहले बैरको स्मरण करके गौओंके लोभसे शीघ्र चलने लगी। इस सेनाके सेनापति राजा सुशर्म्मा हुए।

दूसरे दिन अर्थात् कृष्णपक्षकी अष्टमीको सेनाका दूसरा भाग गौओंको लेनेके लिये सब कौरवोंके सहित हस्तिनापुरसे चला।

२८ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! जनमेजय! उसी दिन कपट वेषधारी महातेजस्वी महात्मा पाण्डवोंका तेरहवां वर्ष पूर्ण होगया। पाण्डवोंने बिराटकी सेवा करते करते इस एक वर्षको उसी नगरमें बिताया। कीचकके मरनेके पश्चात् शत्रुनाशन बिराटने कुन्तीनन्दन युधिष्ठिरमें बहुत श्रद्धा बढ़ाई। इस तेरहवें वर्षके अन्तके दिन कौरवोंकी सेनाका प्रथम भाग बिराटनगरमें पहुंचा। राजा सुशर्म्माने बिराटके अहीरोंसे सब गऊ छीन लीं। उसी समय गोपरूपधारी सहदेव बहुत बेगसे दौड़कर नगरमें आये और रथसे उतरकर राजसभामें पहुंचे। उस समय राजा कुण्डल और बाजूबन्दधारी महा पराक्रमी योद्धा महात्मा पाण्डव और मन्त्रियोंके सहित बैठे थे। राजाको देख गोपने प्रणाम करके कहा, हे राजन्! त्रिगर्त्त देशके राजा सुशर्म्माने बान्धवों सहित हम लोगोंको युद्धमें जीत कर आपकी एकलाख गऊ छीन लो। हे राजेन्द्र! आप शीघ्र प्रबन्ध कीजिये, वह आपके पशुओंको लेकर चला जाता है। गोपके ऐसे वचन सुन राजाने शीघ्र सेनाके सन्नद्ध होनेकी आज्ञा दी। राजाको आज्ञा सुनतेही रथ, हाथी घोड़े और पदातियोंसे भरी हुई सेना युद्धको उपस्थित होगई, रथोंपर ध्वजा उड़ने लगीं, राजा और राजपुत्र कवच पहनने लगे, शूरवीर लोग वीर सेवित तेजस्वी शस्त्रोंको धारण करने लगे। उसी समय राजा बिराटके प्यारे भाई शतानीकने लोहेका बना सोनेके तारोंसे खिचा वज्रके समान दृढ़, शत्रुओंको भय देनेवाला कवच पहना। उसके पश्चात् शतानीकसे छोटे भाई मदिराक्षने भी सो सूर्य्यके समान प्रकाशमान सैकड़ों बिन्दुओंसे शोभित अभेद्य कवच धारण किया। उसके पश्चात राजा बिराटने अनेक सुगन्धित कमलोंसे शोभित सोनेके कवचको पहना, फिर

पीठमें सोनेका और सर्व्वत्र लोहेका बना सफेद सोनेवाला कवच राजाके छोटे भाई सूर्य्यदत्तने धारण किया। इनके पश्चात् राजाके बड़े पुत्र वीर शंखने कवच पहिना, उसके पश्चात् अनेक महारथोंने कवच धारण किया। वे सब वीर लोग कवचोंको धारण करके ऐसे शोभित हुए, मानो साक्षात् देवता रूप धारण करके आये हैं। उसी समय सारथियोंने सुन्दर प्रकाशमान महारथ वीरोंके रथोंमें चांदीके जालसे शोभित घोड़ोंको जोड़ा; उसी समय महानुभाव विराटके सोनेके बने हुए सूर्य्य और चन्द्रमाके समान प्रकाशित रथमें ध्वजा चढ़ाई गई। उसके पश्चात् और सब वीरोंके रथोंमें सोनेके दण्डवाली ध्वजा लगाई गई। फिर राजाकी आज्ञासे शूरवीर क्षत्री लोग क्रमके अनुसार रथोंमें बैठने लगे, उसी समय राजा विराटने अपने छोटे भाई शतानीकको आज्ञा दी। विराट बोले मेरी बुद्धिमें आता है कि कङ्क, वल्लव, गोपाल, और दामग्रन्थि अवश्य युद्ध करेंगे। ये चारों बहुत बलवान दीखते हैं, इस लिये तुम इन चारोंकोभी ध्वजायुक्त रथ, और विचित्र तथा दृढ़, कोमल कवच दो। ये लोग कवचोंको पहनें और शस्त्रोंको धारण करें। इनके रूपसे मुझे निश्चय होता है कि, ये सब महावीर हैं, इनके हाथ हाथीके सूंड़के समान हैं, मुझे निश्चय है कि ये लोग कदापि युद्धसे नहीं हटेंगे। राजाकी आज्ञा सुनतेही शतानीकने युधिष्ठिर, भीम, नकुल और सहदेवको रथ, कवच और शस्त्र दिये। उसी समय राजभक्त सारथियोंने पाण्डवोंके निमित्त उत्तम रथोंमें घोड़े जोड़े। राजाकी आज्ञानुसार शत्रुनाशन पुरुषसिंह पाण्डवोंने प्रसन्न होकर कोमल और दृढ़ कवचोंको धारण किया। शत्रुसेना नाशक, युद्धविद्याके पण्डित, महा बलवान पाण्डव कवच और शस्त्रोंको धारण करतेही ऐसे शोभित हुए जैसे मतवारे हाथी। महाबलवान कुरुकुल श्रेष्ठ सत्यपराक्रमी चारों पाण्डव प्रसन्न होकर सोनेके रथोंमें बैठकर राजाके सङ्ग चले। उस सेनामें साठ वर्षके बड़े दांतवाले मतवारे हाथी शिक्षित वीरोंके सहित इस प्रकार चले जैसे रूपधारी पर्व्वत। उत्तम जीविका पानेवाले युद्धविद्याके जाननेवाले मुख्य योद्धाओंके आठ हजार रथ, एक हजार हाथी और साठ हजार घोड़े विराटके सङ्ग नगरसे निकले। हे भरतकुलसिंह! यह विराटकी महासेना नगरके बाहर आकर खड़ी हुई। सेनाके अगाड़ीके रथ और घोड़ोंपर चढ़े हुए शस्त्रधारी वीरोंने देखा कि राजा सुशर्मा गौओंको लिये चले जाते हैं।

३० अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, कि हे राजा जनमेजय! जब वह सेना नगरके बाहर पहुंची, उस समय सूर्य्यका तेज कम होगया अर्थात दोपहर दिन बीत गया। उसी समय राजा विराटने अपनी सेनाका व्यूह बनाया। तब वह सेना सुशर्म्माकी सेनासे युद्ध करनेको उपस्थित हुई। त्रिगर्त्त देश और मत्स्य देशकी सेना युद्धमें उन्मत्त होकर लड़ने लगीं। दोनों सेनाके महा बलवान वीर इस प्रकारसे गर्ज गर्ज युद्ध करने लगे, जैसे एक गऊके लिये दो बैल लड़ते हों। बड़े शरीरवाले मतवारे हाथी निपुण वीरोंके सहित युद्ध करने लगे। यह युद्ध ऐसा घोर हुआ कि वीरोंके रोवें खड़े होने लगे, एक दूसरेको मारने लगा, इस लिये यह युद्ध देवासुर संग्रामके तुल्य होगया। उस समय दिन बहुत थोड़ा शेष रह गया था, तब हाथी घोड़े और पदातियोंमें परस्पर युद्ध होनेसे आकाशमें धूल छागई, मांस खानेवाले पक्षी सेनामें गिरने लगे। बाणोंसे सूर्य्य छिप गये, आकाशमें शस्त्र जुगनूके समान चमकने लगे।

उसी समय धनुषधारी वीर लोग सोनेमें चित्रित लोहेके बाणोंको छोड़ने लगे; अनेक वीर लोग इधर उधर गिरने लगे, रथी रथीसे, पदाति पदातिसे, घोड़ेवाले घोड़ेवालोंसे और हाथीवाले हाथीवालोंसे युद्ध करने लगे। युद्धमें खड्ग, पट्टिस, प्राश, शक्ति और तोमर चलने लगे। परिघके समान हाथवाले वीर लोग एक दूसरेको मारने लगे, परन्तु यह किसीकी शक्ति न हुई कि दूसरेकी सेनाको हटा दे। किसीका होठ, किसीकी नाक, और किसीके गाल कट गये। वह पृथ्वी कटे हुए कुण्डलधारी शिरोंसे भर गई। पृथ्वीमें बाणोंसे कटे हुए शरीर दीखने लगे। वह महायुद्धभूमि शालके समान ऊंचे क्षत्रियोंके शरीर, हाथीके सूण्डके समान चन्दन लगे हाथ और कुण्डलधारी शिरोंसे भर गई। उस समय रथीसे रथी, और पदातिसे पदाति युद्ध करने लगे। रुधिर बहनेसे सब धूल शान्त हो गई, तब वीरोंको मूर्च्छा होने लगीं, तब मर्य्यादा रहित युद्ध होने लगा, आकाशके उड़नेवाले पक्षी भी बाणोंसे व्याकुल हो गये। परिघके समान हाथवाले वीरोंने महायुद्ध किया, तौभी दूसरी सेनाको न हटा सके। उस समय शतानीकने एक सौ और विशालाक्षने चार सौ वीरोंको मारकर सुशर्म्माकी महा सेनामें प्रवेश किया। उन दोनों महारथ महा बलवान तेजस्वी वीरोंने सुशर्म्माकी सेनामें घुसके अपने बाहुबलसे घोर युद्ध किया, अनन्तर आगे सूर्य्यदत्त और पीछेसे मदिराक्ष भी सुशर्म्माकी सेनामें प्रवेश किया। राजा विराटने पांच सौ रथोंको आठ सौ घोड़ोंको और पांच महारथोंको मारकर घोर युद्ध किया, फिर राजा सुशर्म्माके सोनके रथको अपने बाणोंसे छा लिया। ये दोनों महात्मा महा बलवान दोनों राजा इस प्रकार गर्जकर युद्ध करने लगे, जैसे दो बैल लड़ते हैं। उस समय विगत्त देशके राजा युद्धमत्त सुशर्म्मा मत्स्यराज विराटके आगे युद्ध करनेको आये। तब उन दोनोंका दो रथसे युद्ध होने लगा। ये दोनों क्रोधी राजा इस प्रकार बाण बरसाने लगे, जैसे मेघ जल बरसाते हैं। वे दोनों क्रोधी शस्त्रोंके जाननेवाले तीक्ष्णबाण, खड्ग, शक्ति और गदाओंसे युद्ध करने लगे। अनन्तर राजा विराटने सुशर्म्माके शरीरमें दस बाण मारे और पांच पांच बाणोंसे चारों घोड़ोंको मार डाला, इसी प्रकार शस्त्रोंके जाननेवाले महा योद्धा सुशर्म्माने भी राजा विराटके शरीरमें पचास तीक्ष्ण बाण मारे। उस समय कोई सैनिक अपने पक्षके पुरुषको नहीं जान सकता था, क्योंकि आकाश धूल और अन्धकारसे भर गया था।

३१ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! जनमेजय! जब सब लोग अन्धकार और धूलसे भर गये, तब दोनों सेना व्यूह बनाकर एक क्षण युद्धसे विमुख हो गईं। तब निर्म्मल रात्रिको प्रकाश करता हुआ और युद्धमें क्षत्रियोंका आनन्द बढ़ाता हुआ चन्द्रमा उदय हुआ। तब चांदनी होनेसे फिर घोर युद्ध होने लगा। उस समयके युद्धमें एक दूसरेको नहीं देखता था। उस समय राजा सुशर्म्मा अपने छोटे भाई और रथ समूहके सहित राजा विराटकी ओर दौड़ा और उन्हें चारों ओरसे घेर लिया, अनन्तर वे दोनों भाई रथसे उतर कर और गदा धारण करके विराटकी ओर दौड़े। राजा सुशर्म्माकी सेनाभी तीक्ष्ण धारवाले खड्ग, गदा परिघ और प्राश धारण करके विराटकी ओर दौड़ी। उस समय विराटकी सेना सुशर्म्माकी सेनासे हार गई। तब वे दोनों भाई विराटकी ओर इस प्रकार दौड़े जैसे कामी स्त्रीकी ओर दौड़े। उन दोनोंने राजा विराटके रथकी धुरीको तोड़ दिया और उनके रक्षकोंको मारडाला। फिर

उनके रथपर चढ़कर विराटको जीते ही बांध लिया, और अपने रथमें डालकर शीघ्र चल दिया। जब बलवान विराट रथहीन होकर पकड़े गये, तब उनकी सब सेना भयसे व्याकुल होकर भागने लगी। तब कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरने शत्रुनाशक महाबाहु भीमसेनसे कहा, हे महाबाहो! इस त्रिगर्त्तराज सुशर्म्माने विराटको पकड़ लिया! इस लिये तुम ऐसा उपाय करो जिससे राजा शत्रुओंके वशमें न हों, हे भीम! हम इसके घरमें सुखसे एक वर्ष रहे हैं, तुम उसके कर्म्मका प्रतिफल दो!

भीमसेन बोले, हे महाराज! मैं आपकी आज्ञासे अभी विराटको छुड़ा लेता हूं, आप इस युद्धमें मेरे महा पराक्रमको देखिये। मैं अभी सब शत्रुओंका नाश कर दूंगा। हे राजन्! आप भाइयोंके सहित एकान्तमें खड़े होकर मेरे बाहुबलको देखिये। यह बड़ो शाखावाला जो वृक्ष खड़ा है, मैं अभी उसका उखाड़कर सब शत्रुओंको नाश कर दूंगा।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, जब भीमसेन मतवारे हाथीके समान उस वृक्षको देखने लगे, तब धर्म्मराज युधिष्ठिरने वीर भीमसे कहा, हे भीम! तुम साहस मत करो क्योंकि इस वृक्षके उखाड़नेसे सब लोग जान जायंगे कि यही भीम है। तुम कोई दूसरा शस्त्र धारण करो, चाहे धनुष, चाहे खड्ग या शक्तिहो धारण करके राजाका छुड़ा लो। तुम युद्धमें कोई अमानुष कर्म्म मत करना, महा बलवान नकुल और सहदेव तुम्हारे रथकी रक्षा करेंगे, तुम तीनों मिलकर विराटको छुड़ा लो।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, राजाकी आज्ञा सुन भीमसेनने घोर धनुष धारण करी और वेगसे सुशर्म्माकी ओर दौड़े। भीमसेनने ऐसे बाण बरसाये जैसे मेघ जल बरसाता है। अनन्तर घोर कर्म्म करनेवाले सुशर्म्मासे भीमने पुकारकर कहा कि खड़ारह! खड़ारह! उसी समय भीमने राजा विराटकी ओर देखा, तब राजा सुशर्म्माने विचारा कि यह साक्षात् मृत्यु और यमराजके समान रूपधारी कौन वीर चला आता है? मुझे निश्चय है कि अब घोर युद्ध होगा। तब सुशर्म्मा भी अपने भाइयोंके सहित धनुष धारण करके युद्ध करनेको लौटा। भीमसेनने क्षण भरमें सहस्रों रथ, हाथी, घोड़े और पदातियोंको मारके पृथ्वीमें गिरा दिया। भीमसेनके बाणोंसे सहस्रों धनुषधारी शूरवीर पृथ्वीमें सो गये। राजा विराटके समीपही भीमने सहस्रों वीरोंको गदासे मारके गिरा दिया। भीमसेनके इस घोर कर्म्मको देखकर राजा सुशर्म्मा विचारने लगे कि अब मेरी सेनामें क्या शेष है? मेरा दूसरा भाई महायुद्ध कर रहा है, अब मुझे क्या करना चाहिये? उस समय राजा सुशर्म्मा अपने कानतक धनुष खींचकर बाण छोड़ने लगे। तब सब वीरोंने अपने अपने रथोंको युद्धकी ओर चलाया। तब पाण्डव लोग दिव्यास्त्र चलाने लगे। पाण्डवोंको युद्ध करते देख विराटकी सब सेना लौटी। तब उस समय विराटका बड़ा पुत्र क्रोध करके महा युद्ध करने लगा। उस युद्धमें राजा युधिष्ठिरने हजार वीरोंको मारा। भीमने सात सहस्र वीरोंको मारा। नकुलने सात सौको मारा, और प्रतापवान सहदेवने भी तीन सौ वीरोंको मारा। उस समय युधिष्ठिरकी आज्ञासे भीमसेन गदा लेकर सुशर्म्माकी ओर दौड़े। महाराज युधिष्ठिर उस महासेनाका नाश करके आपही राजा सुशर्म्माकी ओर चले। उसके रथके समीप जाकर महाराजने बाणवर्षा करनी आरम्भ करी। सुशर्म्माने भी क्रोध करके राजा युधिष्ठिरके शरीरमें नवबाण मारे और चारबाण चारों घोड़ोंको मारे, उसी समय महातेजस्वी भीमने राजा सुशर्म्माके चारों घोड़ोंको मार

डाला और उसके रक्षकोंको मारकर उसके सारथीको भी पृथ्वीमें गिरा दिया ; उसी समय जगत् विख्यात मदिराच नामक रथश्चक रथ सहित राजा सुशर्म्माके पास आकर युद्ध करने लगा, उसी समय राजा विराट सुशर्म्माके रथसे उतरे और सुशर्म्माकी गदा छीनकर घोर युद्ध करने लगे। बूढ़े विराट तरुण पुरुषके समान युद्ध करने लगे। उस समय सुशर्म्मा युद्धको छोड़कर भागा। तब भीमसेन बोले, हे राज-पुत्र तुमको भागना उचित नहीं है। क्या इसी बलपर गउओंको छीनने आये थे ? क्या इसी बलसे युद्ध करना चाहते थे ? अपने संगियोंको शत्रु-ओंके बीचमें छोड़ कर क्यों भागे जाते हो ? भीम-सेनके ऐसे बचन सुन सुशर्म्माने भीमसेनसे कहा कि खड़ा रह ! खड़ारह ! फिर सुशर्म्मा भीम-सेनकी ओर वेगसे दौड़ा। महापराक्रमी भीमभी अपने रथसे उतरकर सुशर्म्माको जीतेही पकड़नेके लिये उसकी ओर दौड़े। भीमसेन दौड़ते हुए सुशर्म्माकी ओर ऐसे दौड़े जैसे सिंह छोटे हरिनकी ओर दौड़ता है। भीमसेनने दौड़कर सुशर्म्माके बाल पकड़ लिये और क्रोधसे उठाकर पृथ्वीमें पटक दिया, फिर रोते हुए सुशर्म्माके शिरमें लात मारी और जङ्घासे दबाकर उसको घूसे मारने लगे। बहुत चोट लगनेसे राजा सुशर्म्माको मूर्च्छा हो गई। महारथ सुशर्म्माके पकड़े जानेसे उसकी सब सेना भाग गई। महाराज पाण्ड-वोंने अपनी सब गौओंको छीन लिया और उनका सब धन लूट लिया तथा सुशर्म्माको पकड़ लिया। तब महाव्रतधारी महात्मा लज्जावान महाबली पाण्डव लोग राजा विराट के चारों ओर खड़े हो गये। तब भीमसेन बोले यह पापी मुझसे जीता नहीं बच सकता परन्तु महाराज अत्यन्त दयावान हैं, इस लिये मैं कुछ नहीं कर सकता। अनन्तर भीमसेनने विवश सुशर्म्माका गला पकड़ बांध लिया और धूलमें लिपटे हुए मूर्च्छित सुशर्म्माको रथमें डालकर युद्धसे बाहर निकाला। फिर महा-राज युधिष्ठिरसे बोले कि यही पापी सुशर्म्मा नामक राजा है। महाराज युधिष्ठिर राजा सुशर्म्माको देखकर बहुत हंसे और भीमसेनसे बोले, हे भीम ! इस पापी सुशर्म्माको छोड़ दो।

भीम बोले, हे मूर्ख ! यदि तू अपना जीवन चाहता है तो हमारे वचनको सुन, यदि तू जीना चाहता है तो सब पण्डितोंकी सभामें जाकर कह कि मैं राजा विराटका दास हूं, ऐसा करनेसे मैं, तुझे जीवदान दूंगा ; युद्धसे जीते हुएके सङ्ग ऐसाही किया जाता है।

भीमसेनके ऐसे वचन सुन राजा युधिष्ठिर बोले, हे भीम ! यदि तुम हमारे वचनको मानते हो तो इस पापीको शीघ्र छोड़ दो। हे सुशर्म्मन् ! हम तुम्हें अदास पदवी देते हैं, जा हमने, तुम्हें छोड़ दिया, फिर ऐसा कभी मत करना।

३२ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमे-जय ! ऐसा सुनकर सुशर्म्माने लज्जासे अपना मुख नीचा कर लिया, फिर राजा विराटको प्रणाम किया। पाण्डवोंने सुशर्म्माको इस प्रकारसे जीता। शत्रुओंके नाश करनेवाले बाहुबल, लज्जा और व्रतसे भरे पाण्डवोंको राजा विराटने बहुत धन दिया और उन महा-रथोंका असाधारण पराक्रम देखकर उनका बहुत सम्मान किया।

विराट बोले, जो कुछ हमारे रत्न हैं सो सब आपही लोगोंके हैं। इस लिये आप लोग अपनी अपनी इच्छानुसार राज्यके काम कीजिये, और सुख भोगिये। हम आप लोगों-को भूषणोंके सहित अनेक कन्या देंगे और अनेक प्रकारके धन भी देंगे। आप लोग सब शत्रुओंकी नाश करनेवाले और महा बलवान

हैं; हम आप लोगोंके पराक्रमसे शत्रुके हाथसे छुटे और सुखी हुए। इस लिये आपही लोग इस देशके राजा हुए।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, राजा विराटके ऐसे बचन सुन युधिष्ठिरादि पाण्डव हाथ जोड़कर बोले, हे महाराज! आप जो कुछ कहते हो, सो सब सत्य है, हम लोग आपके बचनकी प्रशंसा करते हैं। हे पृथ्वीनाथ! आप शत्रुओंके हाथसे छूट गये, इसीसे हमको सब कुछ प्राप्त होगया। पाण्डवोंके ऐसे बचन सुनकर मत्स्यराज विराट प्रसन्न होकर युधिष्ठिरसे बोले, आप हमारे पास आइये, हम आपको इस देशका राजा बनाते हैं, यह पद जगतमें दुर्लभ है, सब लोग मनसे भी इस पदकी इच्छा करते हैं, आप हमारे सर्व्वस्वके अधिकारी होनेके योग्य हैं। रत्न, गौ, सुवर्ण, मणि, मुक्ता और भी अनेक वस्तु हमारे जो हैं सो आपहीको हैं। हे व्यैयाघ्र पद गोत्रोत्पन्न! हे ब्राह्मण श्रेष्ठ! हम आपको प्रणाम करते हैं। आपहीके बलसे मेरे राज्य और पुत्रादि बचे हैं! मैं आज युद्धमें शत्रुओंके वशमें होगया था, आपहीके बलसे छूटा हूं। ऐसे बचन सुन महाराज युधिष्ठिरने राजा विराटसे पुनः कहा, हे राजन्! हम आपके उत्तम वचनोंको ग्रहण करते हैं, आप निर्भय होकर सुख भोगिये। अब दूत लोग शीघ्रही नगरमें जायं, आपके मित्र और सब पुरुषोंसे भी आपके विजयका वर्णन करें। तब राजा विराटने युधिष्ठिरके बचनानुसार दूतोंको आज्ञा दी कि तुम लोग नगरमें जाकर हमारे विजयका समाचार कह दो, कुमारी आभूषण पहन कर नगरसे हमारे पास आवें, सब प्रकारके बाजे बजें और वेश्या आभूषण धारण करके नाचें। राजा विराटकी ऐसी आज्ञा सुन दूत प्रसन्न होकर नगरको गये और प्रातः काल होतेही नगरमें उस समाचारको प्रकाशित कर दिया।

३३ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! जब राजा सुशर्म्मा हारकर मत्स्यदेशसे चला गया और राजा विराटने अपने पशुओंको पा लिया, उसी दिन कौरवोंको सेनाके दूसरे भाग मल्लो भीष्म, द्रोणाचार्य्य; कर्ण, शस्त्रविद्याके जाननेवाले कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा, शकुनि, दुःशासन, विविंशति, विकर्ण, बलवान चित्रसेन, दुर्मुख और दुःशह आदि महारथोंको सङ्गमें ले राजा दुर्य्योधन विराट नगरमें पहुंचे। उन्होंने दूसरे द्वारपर जाकर साठ हजार गौओंको छीन लिया। उस समय उस गोशालामें चारो ओर यही शब्द होने लगा कि कौरव लोग बहुत सेनाके सहित राजा विराटकी गऊ लिये जाते हैं। ग्वालोंने थोड़ा युद्ध भी किया, परन्तु अन्तको ग्वालोंका स्वामी भयसे व्याकुल हो, और रथपर चढ़ रोता हुआ नगरकी ओर भाग गया। नगरमें आकर राजभवनमें गया और रथसे उतरकर राजा विराटके पुत्र महा अभिमानी उत्तरसे मिलकर कहने लगा, हे वीर! कौरव लोग आपकी साठ हजार गऊ लिये जाते हैं, इस लिये आप शीघ्रही उठिये और शीघ्रही उनसे गउओंको छीन लीजिये। राजा विराटने आपको इस ओरकी रक्षाका भार दे रक्खा है, और वे प्रायः सभामें कहा करते हैं कि हमारा पुत्र हमारे समान बलवान, शूर और कुलदीपक है। राजा विराट यह भी कहा करते हैं कि हमारा पुत्र सब शस्त्रविद्याका जाननेवाला योद्धाओंमें श्रेष्ठ और महावीर है। सो आप राजा विराटके बचनको सत्य कीजिये, और कौरवोंको जीतकर अपनी गौओंको छुड़ा लीजिये। भीष्म आदि सब वीरोंको अपने

धनुषसे छूटे सोनेके पङ्खवाले वाणोंसे भस्म कर दीजिये। उनकी सेनाको छिन्नभिन्न कर दीजिये, जैसे हाथियोंका राजा घोर युद्ध करता है, तैसेही आप भी युद्ध कीजिये। आप युद्धमें जाकर अपनी धनुषकी रौंदे, दण्ड और उसके शब्दसे शत्रुओंको कंपा दीजिये। आपके रथमें इसी समय चांदीके समान स्वच्छ वर्णवाले घोड़े जोड़े जायं, रथपर ऊंची सोनेके दण्डवाली ध्वजा लगाई जाय; आपके हाथसे छूटे हुए बाण राजोंका नाश करनेवाले और सोनेके पङ्खवाले तीच्ण बाण सूर्य्यको छा लें। आप कौरवोंको इस प्रकार युद्धमें जीतिये जैसे बज्रधारी इन्द्र दानवोंको जीतते हैं। जब आप उनको जीतकर नगरमें आइयेगा, तब बहुत यश प्राप्त होगा। जैसे पाण्डवोंमें विजयी अर्ज्जुन श्रेष्ठ हैं, तैसेही आप भी विराटके पुत्रोंमें श्रेष्ठ हैं। आपको स्वामी पाकर हम सब लोग सनाथ हुए हैं, आपही हम सबकी गति हैं।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, इस उत्साहसे भरे हुए बचनको सुनकर स्त्रियोंके बीचमें बैठे हुए विराटपुत्र ऐसा बोले,—

३४ अध्याय समाप्त।

उत्तर बोले, मैं इसी समय दृढ़ धनुषको लेकर कौरवोंसे युद्ध करनेको जाता परन्तु कोई घोड़ोंकी विद्या जाननेवाला सारथी नहीं है, यदि सारथी मिले तो मैं अभी चला जाऊं; तुम लोग शीघ्र योग्य सारथीको ढूंढ़ो, जो युद्धमें मेरे घोड़ोंको हांक सके। जिस युद्धको एक महीना या अट्टाइस दिन बीते हैं, उसमें मेरा सारथी मारा गया। यदि मैं घोड़ोंकी विद्या जाननेवाले अन्य सारथीको पाऊं तो इसी समय जाकर ऊंची पताका; हाथी और घोड़ोंसे भरी हुई कौरवोंकी सेनाकोकी अपने बाणोंके प्रतापसे जीतकर पशुओंको छीन लाऊं। मैं अपने बलसे दुर्य्योधन, भीष्म, कर्ण, द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य और अश्वत्थामा आदि महावीरोंको इस प्रकार कंपा दूं जैसे इन्द्र दानवोंको कंपाते हैं। क्या करें कौरवोंने द्वारको शून्य देखकर हमारे पशुओंको छीन लिया। हम क्या करें उस समय वहां नहीं थे? इसीसे वे लोग पशुओंको लेगये हैं। अब तुम सब हमारे पराक्रमको देखो। क्या साक्षात अर्ज्जुन युद्ध करनेको आया है, जो हमको जीत लेगा?

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, राजपुत्र उत्तरके ऐसे वचन सुन और अपने समयको बीता हुआ जान, अपनी प्यारी निन्दारहित द्रुपद-पुत्री, अग्निकुण्डसे उत्पन्न हुई सत्य, शील और गुणोंसे भरी पतिका प्रिय कर्म्म करनेवाली द्रौपदीसे अर्ज्जुन एकान्तमें बोले, हे कल्याणि! तुम शीघ्र जाकर उत्तरसे कहो कि यह बृह-न्नला पाण्डवोंका सारथी था, यह बहुत युद्धमें पाण्डवोंके सङ्ग रहा है, सो यही तुम्हारा सारथी होगा।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, जब अर्ज्जुनने बार बार द्रौपदीसे यह कहा तब तपस्विनी द्रौपदी स्त्रियोंके बीचसे उठी और उत्तरके पास जाकर लज्जा सहित धीरे धीरे कहने लगी; यह जो हाथीके समान शरीरवाला सुन्दर युवा बृहन्नला नपुंसक है, सो अर्ज्जुनका सारथी था, और धनुर्वेदमें महात्मा अर्ज्जुनका शिष्यभी है; मैं जब पाण्डवोंके घरमें रहती थी, तबही इसको देखा था। जब अर्ज्जुनने खाण्डव बनको जलाया था, तब इसीने उनके घोड़े हांके थे, इसीकी सहायतासे अर्ज्जुनने खाण्डव बनमें सब प्राणियोंको जीता था, जगत्में इसके समान दूसरा सारथी कोई नहीं है।

उत्तर बोले, हे सैरिन्ध्री! तुम इस नपुंसक युवा पुरुष को जानती हो, इस लिये मैं बृहन्न-लाके पास जाकर नहीं कह सकता कि तुम

मेरे घोड़े हांको, सो तुम्हीं जाकर उससे कहो।

द्रौपदी बोली, हे वीर! तुम्हारी जो यह सुन्दरी छोटी बहिन है, इसीको उसके पास भेजो, वह इसके वचनको अवश्य मानेगा। यदि वृहन्नला तुम्हारा सारथी बने तो निस्सन्देह सब कौरवोंको जीतकर गऊ छीन लोगे। द्रौपदीके ऐसे बचन सुन उत्तर अपनी बहनसे बोले, तुम शीघ्र वृहन्नलाके पास जाकर उसे बुला लाओ। अपने भाईके बचन सुन उत्तरा शीघ्र उस नर्त्तनागारमें गई जहां महाबाहु अर्ज्जुन छिपकर रहते थे।

३५ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! अपने भाईकी आज्ञा सुनते ही सुवर्णमालाधारिणी, यशस्विनी पतली कमरवाली, कमल नयनी, मोर पंखके आभूषणवाली कोमलाङ्गी, विचित्र-मणि-जटित आभूषणवाली, शोभासे भरी, उत्तम बालवाली विराटराजपुत्री उस नर्त्तनागरको इस प्रकार चली जैसे बिजली तलावकी ओर जाती है। हाथीके सुण्डके समान जङ्घावाली पतली कमर और उत्तम दांतवाली, और उत्तम रूपधारिणी राजपुत्री अर्ज्जुनके पास इस प्रकार चली जैसे हथिनी हाथीके पास जाती है। विशाल नयनी सुन्दरी यशस्विनी इन्द्रकी लक्ष्मीके समान तेजस्विनी रत्नभूषणधारिणी विराट राजपुत्री अर्ज्जुनके पास गई।

उस उत्तम जङ्घावाली, सोनेके समान वर्णवाली राजपुत्रीको देख अर्ज्जुन बोले, हे सुवर्णमालाधारिणी! हे मृगनैनी। तुम इस समय हमारे पास क्यों आई हो? हे सुन्दरी! तुम घबड़ा क्यों रही हो? तुम्हारा मुख प्रसन्न क्यों नहीं है?

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, विशालनयनी राजपुत्रीको देख अर्ज्जुन हंसकर बोले, हे सखी! तुम इस समय यहां क्यों आई हो? पुरुषसिंह अर्ज्जुनके ऐसे बचन सुनकर राजपुत्री सखियोंके मध्यमें विनयपूर्व्वक बोली, हे वृहन्नले! कौरव लोग हमारे पशुओंको लिये जाते हैं, और सैरिन्ध्रीने तुम्हारे रथ हांकनेकी बहुत प्रशंसा की है, तुम पहले अर्ज्जुनके प्यारे सारथी थे, उन्होंने तुम्हारी सहायतासे पृथ्वीको जीता था, सो तुम अब हमारे भाईका रथ हांको; क्योंकि कौरव लोग हमारी गौओंको लेकर बहुत दूर चले गये। यदि तुम हमारी विनयको नहीं मानोगे, तो मैं अपने जीवनको त्याग दूंगी।

सुन्दरी राजपुत्रीके ऐसे वचन सुन महा तेजस्वी शत्रुनाशन अर्ज्जुन राजपुत्रीके पास आये, उनके पीछे विशालनयनी राजपुत्री भी इस प्रकार चलने लगी, जैसे मतवारे हाथीके पीछे हथिनी। उनको देखकर राजपुत्र उत्तर बोले, हे वृहन्नले! तुमहीको सारथी बनाकर अर्ज्जुनने खाण्डव बनको जलाया था? तुम्हारी सहायतासे अर्ज्जुनने सब पृथ्वीको जीता था? हमसे वह सब समाचार सैरिन्ध्रीने कहा है, क्योंकि वह पाण्डवोंको जानती है, सो तुम हमारे घोड़ोंको हांको, हम गौओंके लिये कौरवोंसे युद्ध करेंगे। तुम पहले समयमें अर्ज्जुनके प्यारे सारथी थे, तुम्हारीही सहायतासे उन्होंने सब पृथ्वीको जीता था। उनके ऐसे बचन सुन अर्ज्जुन बोले, हे राजपुत्र! मैं नाचने गानेवाला नपुंसक युद्धमें घोड़े हांकने क्या जानूं? तुमको नाचना, गाना या बजाना सीखना हो तो हमसे सीखो, और सारथीका काम हम कैसे कर सकते हैं?

उत्तर बोले, हे वृहन्नले! चाहे तुम नाचनेवाले हो, चाहे गानवाले हो, परन्तु मेरे घोड़ोंको तुम्हें शीघ्र हांकनाही होगा।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, यद्यपि अर्ज्जुन सब विद्याओंको जानते थे, तौभी उत्तरके आगे बहुत प्रकारकी बातें करने लगे, और उत्तरके दिये कवचको उलटा पहनने लगे। तब विशाल

नयनी कन्या उन्हें देखकर हंसने लगीं। उस समय उत्तरने अपने हाथसे अर्ज्जुनको बहुमूल्य कवच पहनाया और आपनेभी उत्तम प्रकाशमान कवच पहना और सिंहचिन्हित ध्वजाको रथपर चढ़ाकर अर्ज्जुनको सारथी बनाया। अनन्तर रथमें उत्तम धनुष और सुन्दर वाणोंको रखकर बृहन्नलाको सारथी बनाकर चलनेकी इच्छा करी। चलते समय उत्तरा आदि राजकन्या कहने लगीं, हे बृहन्नले! तुम हमारी गुड़ियोंके लिये सुन्दर सुन्दर और कोमल कोमल वस्त्र लेती आइयो, युद्धमें भीष्म और द्रोण आदि महारथोंको जीतकर शीघ्र लौटना। कन्याओंके ऐसे बचन सुन अर्ज्जुन मेघ और नगारेके समान गम्भीर वाणीसे बोले, यदि राजपुत्र उत्तर युद्धमें महारथ कौरवोंको जीतेंगे, तो मैं उनके दिव्य वस्त्रोंको अवश्य लेता आऊंगा।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, महावीर अर्ज्जुनने ऐसा कहकर रथको उस ओर हांका जिधर पताकाओंसे भरी हुई कौरवोंकी सेना खड़ी थी; जिस समय बृहन्नला रथपर बैठी और महाबाहु उत्तर रथमें बैठे, तब स्त्री कन्या और व्रतधारी ब्राह्मण उनकी प्रदक्षिणा करके कहने लगी, खाण्डव बन जलाने समय अर्ज्जुनको जो मङ्गल हुआ था, सोई आज तुमको और उत्तरको भी हो।

३६ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजा जनमेजय! निर्भय राजपुत्र उत्तर राजधानीसे निकलकर अर्ज्जुनसे बोले, हे सूत! जिधर कौरवोंकी सेना है उधरहीको हमारा रथ ले चलो। इन सब कौरवोंको जीतकर और गौओंको छीनकर मैं शीघ्रही नगरको लौटूंगा। तब अर्ज्जुनने घोड़ोंको वेगसे हांका। पुरुषसिंह अर्ज्जुनके हांकनेसे वायुके समान वेगधारी और सोनेकी मालधारी घोड़े इस प्रकार वेगसे चले मानो आकाशको उड़ जायंगे। थोड़े समयमें शत्रुनाशन अर्ज्जुन और उत्तर बलवान कौरवोंकी सेनाके समीप पहुंच गये। श्मशानके समीप होकर अर्ज्जुन निकले। उन्होंने उस शमी वृक्षको देखा, जहां उनके शस्त्र रक्खे थे। उस समय समुद्र समान कौरवोंकी सेनाकी ऐसी शोभा बढ़ी जैसे अनेक वृक्षवाले बनकी। अर्ज्जुनने उस सेनासे उठी हुई आकाशमें उड़ती धूलको देखा। वह धूल आकाशतक छा गई थी, इससे किसीको कुछ नहीं दीखता था। वह समुद्रसमान सेना कर्ण, दुर्य्योधन, कृपाचार्य्य और भीष्मसे रक्षित थी, उसमें पुत्रके सहित महाशस्त्रधारी, महाबुद्धिमान द्रोणाचार्य्य भी थे। इस सेनाको देखतेही भयके मारे उत्तरके रोवें खड़े हो गये, और कहने लगा कि हे सारथे! मेरी शक्ति कौरवोंसे युद्ध करनेकी नहीं है। देखो मेरे शरीरके सब रोवें खड़े हो गये, इस सेनामें बड़े बड़े वीर हैं, जिनको देवता भी नहीं जीत सकते। मैं कौरवोंकी इस महासेनासे युद्ध नहीं कर सकता हूं। मैं इस घोर धनुषधारियोंकी सेनामें प्रवेश भी नहीं कर सकता हूं, यह सेना रथ, हाथी, घोड़े, पदाति और ध्वजाओंसे पूरित है, इस लिये इसे देखतेही हमारा मन कांपा जाता है, जहां साक्षात् द्रोणाचार्य्य, कुरुवृद्ध भीष्म, कृपाचार्य्य, कर्ण, विविंशति, अश्वत्थामा, विकर्ण, सोमदत्त, वाल्हिक, और महारथ राजा दुर्य्योधन आदि महातेजस्वी बुद्धिमान् और शस्त्रबिद्याके जाननेवाले उपस्थित हैं, तहां युद्ध करनेकी मेरी क्या शक्ति है? इन सब योद्धा कौरवोंको देखतेही मेरा मन कांपा जाता है, रोवें खड़े हुए जाते हैं और मुझे मूर्च्छा आई जाती है।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, जिस समय महाबुद्धिमान् अर्ज्जुनके आगे धूर्त्त विराटपुत्र इस प्रकार कह चुका, तब फिर रोकर ऐसा बोला,

मुझे नगरमें अकेला छोड़ मेरे पिता राजा सुशर्म्मासे युद्ध करनेको चले गये, मेरे सङ्ग कोई सैनिक भी नहीं है, सो मैं अकेला बालक इन सब शस्त्रधारियोंसे कैसे युद्ध करूंगा? इसके अतिरिक्त मैं शस्त्रविद्या भी नहीं जानता हूं।

बृहन्नला बोले, हे राजपुत्र! तुम भयसे इतने क्यों घबड़ाये जाते हो? तुम्हारे घबड़ानेसे शत्रु लोग प्रसन्न होते हैं, शत्रुओंने अभी तक कोई ऐसा भारी कर्म्म भी नहीं किया है कि जिससे तुम घबड़ा गये। तुम कुछ सन्देह मत करो। मैं इस सब सेनाके बीचमें तुमको ले चलूंगा। हे महाबाहो! यदि समस्त पृथ्वीके वीर एक ओर होंगे, तौ भी मैं तुमको युद्धके बीचमें ले चलूंगा। जहां मांसके खानेवाले अनेक गिद्ध उड़ रहे हैं, उसी युद्ध-भूमिमें तुमको चलना होगा। क्या तुम स्त्री और पुरुषोंके बीचमें वृथा बकनहोके थे? अब यहां आकर युद्ध क्यों नहीं करते हो? यदि तुम पशुओंको बिना जीते नगरको चले जावोगे तो सब स्त्री और पुरुष तुमको हंसेंगे, मैं भी सैरन्ध्रीके कहनेसे तुम्हारा सारथी बनकर आया हूं, अब बिना पशुओंके जीते नगरको लौट नहीं सकता, सैरन्ध्रीके कहने और तुम्हारे वचनसे क्या मैं भी सब कौरवोंसे युद्ध नहीं कर सकता?

उत्तर बोले, हे बृहन्नले! कौरव अपनी इच्छानुसार भले ही हमारा सब धन ले जायं, चाहे हमको स्त्री और पुरुष हंसें, हमारी सब गाय चली जायं, परन्तु हम युद्ध नहीं करेंगे।

बृहन्नला बोली, हे राजपुत्र! युद्धसे भागना क्षत्रियोंका धर्म्म नहीं है, युद्धमें मरना उत्तम है, परन्तु भागना अच्छा नहीं!

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! अर्ज्जुनके ऐसे वचन सुन राजपुत्र उत्तर रथसे उतरकर भागा, तब अर्ज्जुन भी रथसे उतरकर उसके पीछे वेगसे दौड़े। दौड़नेसे अर्ज्जुनकी वेणी हिलने लगी और लालवस्त्र उड़ने लगे, अर्ज्जुनको भागते देख और उसकी वेणीको हिलती देख सब सेनाके लोग हंसने लगे, अर्ज्जुनको देखतेही सब कौरव लोग कहने लगे, कि यह छिपे हुए रूपमें कौन है? इसका रूप ऐसा जान पड़ता है जैसे भस्ममें छिपी हुई अग्नि हो; इसके थोड़े शरीर स्त्री और थोड़े पुरुषके समान हैं। इस नपुंसकका रूप अर्ज्जुनके ऐसा दीखता है; वैसाही शिर वैसाही गला, वैसेही परिघके समान हाथ और वैसाही इसका तेज है। यह निश्चय अर्ज्जुनही है! देवतोंमें इन्द्र और पुरुषोंमें अर्ज्जुनको छोड़कर और जगतमें ऐसा कौन है जो अकेला कौरवोंसे युद्ध करनेको आवे? विराटने अकेले अपने पुत्रको सूने नगरमें छोड़ दिया था, सो यह खाली बालपनसे अकेला युद्ध करनेको आया था, न कि बल से। हमें निश्चय है कि यह कुन्तीपुत्र अर्ज्जुनही छिपा हुआ है। इसी अर्ज्जुनको सारथी बनाकर उत्तर युद्ध करनेको आया है। सो देखो हम लोगोंको देखतेही भयके मारे भागा जाता है, सो उसीके लौटानेके वास्ते अर्ज्जुन भी उसके पीछे जाता है।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, जब कौरव लोग इस प्रकार परस्पर वार्त्तालाप करने लगे, तब निश्चय उत्तर देनेको किसीको शक्ति न हुई। यह लोग ऐसेही वार्त्तालाप करते रहे। उधर अर्ज्जुन उत्तरके पीछे दौड़े, सौ चरण दौड़कर अर्ज्जुनने उत्तरके बाल पकड़ लिये। अर्ज्जुनके पकड़नेसे उत्तर दीनके समान रोने लगा, और बहुत दीन बनकर कहने लगा।

उत्तर बोला, हे कल्याणि! हे बृहन्नले! हे पतली कमरवाली! तुम हमारे वचनोंको सुनो, हमारे रथको शीघ्र लौटाओ, क्योंकि जीनेसे अनेक सुख प्राप्त होते हैं। नगरमें जातेही मैं

तुमको सोनेके बने सौ निष्क दूंगा और सोनेमें जड़े हुए बहुत सुन्दर आठ हीरे दूंगा। सोनेके जड़े हुए दांतवाले दस हाथी और एक उत्तम घोड़ेयुक्त रथ दूंगा।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, इत्यादि वचन कहते हुए उत्तरको पुरुषसिंह अर्ज्जुनने उठाकर रथमें डाल दिया। अनन्तर भयसे व्याकुल मूर्च्छित उत्तरसे अर्ज्जुन बोले, हे शत्रुनाशन! यदि तुम शत्रुओंसे युद्ध नहीं कर सकते हो, तो घोड़ोंको हांको मैं युद्ध करूंगा, तुम हमारे बलसे रक्षित होकर इस सेनामें प्रवेश करो, यह न जीतने योग्य महावीरोंसे रक्षित सेना युद्ध करनेको उपस्थित है। हे राजपुत्र! हे शत्रुनाशन! तुम क्षत्रिय हो, इस लिये युद्धसे मत डरो। हे पुरुषसिंह! तुम शत्रुओंके बीचमें इस प्रकार क्यों रोते हो? हम कौरवोंसे युद्ध करके तुम्हारे पशुओंको जीत लेंगे। हम इस घोर सेनामें प्रवेश करके सबको जीत लेंगे। हे पुरुषश्रेष्ठ! तुम हमारे सारथी बनो, हम कौरवोंसे युद्ध करेंगे। हे जनमेजय! इस प्रकार अर्ज्जुनने थोड़े समयतक विराटपुत्र उत्तरको धैर्य्य दिया। अनन्तर योद्धाओंमें श्रेष्ठ अर्ज्जुनने विराटपुत्रको रथमें बिठला दिया।

३७ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! उनका नपुंसकके वेशमें देख और उत्तरको रथमें बिठलाकर शमी वृक्षकी ओर जाते देख भीष्म और द्रोण आदि महारथ अर्ज्जुनके भयसे डरने लगे। उन सबको उत्साहरहित और उत्पातोंको देखकर कौरवोंके गुरु भरद्वाज पुत्र द्रोणाचार्य्य बोले, यह घोर सूखे और धूलसे भरे वायु चल रहा है, आकाश धूलरूपी अन्धकारसे भर गया है; अद्भुतरूपवाले रूखे मेघ आकाशमें छा गये हैं, शस्त्र हाथोंसे गिरे जाते हैं। रोती हुई सियारी जलती हुई दिशाकी ओर भागती है, घोड़ोंकी आंखोंसे आंसू बह रहे हैं, ध्वजा कांपी जाती हैं। इन अशगुनोंको देखकर हमको बहुत हानिकी सम्भावना होती है, आप लोग सावधान होकर सेनाकी रक्षा कीजिये अपनी अपनी रक्षा कीजिये और सेनाका व्यूह बनाइये। अब घोर युद्ध होनेवाला है। इस लिये गौओंकी रक्षा कीजिये, इसमें कुछ सन्देह नहीं है कि यह सब धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ सब शस्त्रोंके जाननेवाले सक्षात अर्ज्जुन युद्ध करनेको आये हैं। हे गङ्गासुत भीष्म! ये वेही अर्ज्जुन हैं, जिनकी ध्वजापर लङ्कानाथ रावणको वाटिकाके नाश करनेवाले हनुमान विराजते हैं। येही स्त्रीका वेष धारण करके हम सब लोगोंको जीत लेंगे और गौओंको छीन लेंगे। इस लिये आप दुर्य्योधनको रक्षा कीजिये, ये सब शत्रुओंके नाश करनेवाले कुन्तीपुत्र अर्ज्जुन देवता और राक्षसोंसे भी विना युद्ध किये नहीं लौट सकते; इन्होंने बहुत दिन पर्य्यन्त वनमें क्लेश भोगे हैं, और इन्द्रसे शिक्षाभी पाई है, ये क्रोध होनेसे इन्द्रके समान युद्ध करते हैं, मुझे इस सेनामें इनसे युद्ध करनेवाला कोई नहीं दीखता। हमने सुना है कि हिमाचल पर्व्वतपर किरातरूपधारी भगवान शिवको भी अर्ज्जुनने युद्धमें प्रसन्न कर लिया है।

कर्ण बोले, आप सदा अर्ज्जुनके गुणोंको प्रशंसा किया करते हैं, अर्ज्जुन हमारे और दुर्य्योधनको सोलवीं कलाके भी समान नहीं हैं।

दुर्य्योधन बोले, हे कर्ण! यदि यह अर्ज्जुनही है, तो हमारे सब काम सिद्ध होगये, क्योंकि पहचाननेसे पाण्डवोंको फिर बारह वर्ष वनमें रहना होगा और यदि यह कोई दूसरा पुरुष नपुंसकका वेष धारण करके आया है तो अभी

तीक्ष्ण बाणोंसे मारकर हम उसे पृथ्वीमें गिरा देंगे।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे शत्रुनाशन जनमेजय! धृतराष्ट्रपुत्रके ऐसे वचनको सुन भीष्म, द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य और अश्वत्थामा उनको प्रशंसा करने लगे।

३८ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! शमी वृक्षके पास जाकर विराट-पुत्रको युद्धमें अनिपुण और सुकुमार जानकर अर्ज्जुन बोले, हे उत्तर! तुम इस वृक्षपर चढ़कर धनुष उतार ले आवो। ये तुम्हारे धनुष हमारे बलको नहीं सह सकते हैं, न भारी बोझ उठा सकते हैं, न हाथियोंको मार सकते हैं, और न मेरे बाहुबलको सहनेमें समर्थ हैं। इस लिये तुम इस बहुत पत्तेवाले शमी वृक्षपर चढ़ो। हे भमिञ्जय! इस वृक्षपर महा पराक्रमी पाण्डुपुत्र युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्ज्जुन, नकुल और सहदेवके धनुष सूर्य्यके समान प्रकाशमान कवच और ध्वजा रक्खे हैं। उन्हींमें बहुत दृढ़ अर्ज्जुनका गाण्डीव धनुष भी है। वह धनुष अकेलाही सैकड़ों और सहस्रों धनुषोंके तुल्य और एक ताड़ लम्बा है, वह अकेलाही सब शस्त्रोंके तुल्य शत्रुओंका नाश करनेवाला, सोनेसे विचित्र सुन्दर और घावरहित है। वह अकेलाही सब शत्रुओंको नाश कर सकता है, वैसेही और भी युधिष्ठिर भीम नकुल और सहदेवके धनुष रक्खे हैं।

३९ अध्याय समाप्त।

उत्तर बोले, मैंने सुना है कि इस वृक्षमें एक पुरुषका शरीर बन्धा है, सो मैं राजपुत्र होकर उसे किस प्रकार छूजंगा? क्षत्रियकुलमें उत्पन्न हुआ, मन्त्र और यज्ञोंको जाननेवाला पण्डित मेरे समान राजपुत्र ऐसा कर्म्म कैसे कर सकता है? हे वृहन्नले! मैं इसको छूकर अपवित्र हो जाऊंगा, तब तुम हमारे सङ्ग कैसे व्यवहार करोगे?

वृहन्नला बोला, हे राजपुत्र! तुम पवित्रही रहोगे, इस वृक्षपर केवल धनुष रक्खे हुए हैं, मरे हुए पुरुषका शरीर नहीं है। हे राजपुत्र! उत्तम मत्स्यराजके कुलमें उत्पन्न हुए तुमसे मैं नीच कर्म्म कैसे करा सकता हूं?

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, अर्ज्जुनके ऐसे वचन सुन उत्तर विवश होकर रथसे उतरा और शमीवृक्षपर चढ़ गया। उसी समय शत्रुनाशन अर्ज्जुनने उससे कहा कि तुम धनुषोंको शीघ्र उतारो, देर मत करो। इनके बन्धन शीघ्र तोड़ दो।

अर्ज्जुनके वचन सुन उत्तरने बलवान पाण्डवोंके धनुष उतारे और उनके बन्धन तोड डाले। फिर चार धनुषोंके सहित गाण्डीव धनुषको देखा। जब सूर्य्यके समान प्रकाशित उन धनुषोंके बन्धन टूटे तब वे सब ऐसे चमकने लगे जैसे उदय होनेके समय तारे। उनको फुफुकारते हुए सर्पके समान रूपको देखकर विराटपुत्र भयसे कांपने लगा, और उसके सब रोवें खडे होगये। उन प्रकाशमान बड़े बड़े धनुषोंको छूकर उत्तर अर्ज्जुनसे बोले।

४० अध्याय समाप्त।

उत्तर बोले, जिसपर सोनेके सहस्रों विन्दु लगे हैं, जिसके दोनों प्रान्त बहुत उत्तम बने हैं, यह किसका धनुष है? जिसकी पीठपर प्रकाशमान हाथी बने हैं, जिसके मध्य और प्रान्त बहुत दृढ़ हैं, यह किसका धनुष है? जो शुद्ध सोनेका बना है, जिसकी पीठमें वीरबहूटी बनी हैं, सो उत्तम धनुष किसका है? जिसपर तेजसे भरे हुए तीन सूर्य्य बने हैं, यह उत्तम धनुष किसका है? जिसपर सुवर्णके

उत्तम कोट बने हैं, सो मणिजटित उत्तम धनुष किसका है? ये रोवां काटनेवाले, सोनेके पंखयुक्त मोटे दण्डवाले गृद्धके पंखोंसे शोभित शिलीपर लगे तेज करनेवाले जलमें बुझे हलदीके समान पीले तेज मुखवाले सहस्रों बाण किसके हैं? बराहके कानके समान दस बाण और पांच शार्दूलोंसे चिह्नित धनुष किसका है? ये रुधिर पीनेवाले मोटे और लम्बे साक्षात् चन्द्रमाके समान प्रकाशित सात सौ बाण किसके हैं? ये ऊपरसे तोतेके पंखके समान सुन्दर तीक्ष्ण लोहेसे बने हुए, तेज-पानीमें बुझे सोनेके पंखयुक्त शिलीपर घिसे बाण किसके हैं? यह शत्रुओंकी नाश करनेवाला शिलीपर घिसा मेड़कीके मुखके समान सुन्दर विशाल खड्ग किसका है? यह सिंहके चमड़ेके कोशमें रक्खा हुआ बहुत प्रकाशित मूठवाला अत्यन्त तेज घुघुरु बन्धा खड्ग किसका है? यह गजके चमड़ेके कोषमें रक्खा निर्म्मल सोनेकी मूठवाला खड्ग किसका है? यह निषध देशमें बना हुआ सोनेकी मूठवाला अत्यन्त दृढ़ शत्रुओंका नाशक बकरेके चमड़ेमें रक्खा हुआ खड्ग किसका है? यह बड़ा रूपसे भरा हुआ तेज जलमें बुझा तपे हुए प्रकाशित सोनेके कोषमें रक्खा आकाशके समान प्रकाशित और काला तीस अंगुलसे भी अधिक लम्बा व्रण-रहित तीक्ष्ण खड्ग किसका है? हे वृहन्नले! ये सब शस्त्र सर्पके समान तेज, शत्रुओंके शरीरमें प्रवेश करनेवाले महा भयङ्कर और दिव्य हैं, इन सबका वर्णन तुम हमसे करो, क्योंकि इन सबको देखकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ है।

४१ अध्याय समाप्त?

वृहन्नला बोला, तुम जो हमसे पूंछते हो, सो हम कहते हैं, तुमने जिसको पहले पूंछा था, सो सुवर्ण खचित दिव्य धनुष साक्षात अर्ज्जुनका है। यह गाण्डीव नामसे जगतमें प्रसिद्ध है, इसीको धारण करके अर्ज्जुन देवता और दैत्योंको जीतते हैं, यह धनुष नीचे ऊपरसे चित्रित घावरहित सब शस्त्रोंको काटनेवाला तथा बहुत वर्षोंसे देव दानव और गन्धर्वोंसे पूजित है। इसको एक सहस्र वर्षतक ब्रह्माने धारण किया, फिर प्रजापतिने पांच सौ वर्षतक धारण किया, इन्द्रने तीन सौ वर्ष, चन्द्रमाने सौ वर्ष, राजा वरुनने सौ वर्ष और श्वेतवाहनने पैंसट वर्ष धारण किया है। यह धनुष परम श्रेष्ठ, दिव्य और दृढ़ है; इसे अर्ज्जुनने वरुणसे प्राप्त किया था। दूसरा सुन्दर और विशाल धनुष भीमसेनका है, देवता और मनुष्य इसकी पूजा करते हैं, इसही सुवर्ण चित्रित धनुषसे कुन्तीपुत्र शत्रुनाशन भीमने समस्त पूर्व्व दिशाको जीता था। जिस सुन्दर धनुषपर वीरबहूटी बनी है, वह साक्षात महाराज युधिष्ठिरका धनुष है। जिसमें सोनेके बने महा प्रकाशमान सूर्य्य विराजमान हैं, सो नकुलका धनुष है, जिसमें सोनेके कोट बने हैं, सो माद्रीपुत्र सहदेवका धनुष है। ये रोवें काटनेवाले सांपके समान विष भरे सहस्रों बाण अर्ज्जुनके हैं। ये युद्धमें जाकर अपने तेजसे प्रकाश कर देते हैं और शीघ्र चलकर शत्रुओंके व्यूहको काट देते हैं। ये जो लम्बे, चन्द्रमाके समान प्रकाशमान शत्रुनाशन बाण हैं, सो भीमसेनके हैं। जो हलदीके समान वर्ण और सोनेके पंखवाले सिलीपर घिसे तीक्ष्णबाण हैं, सो महा बुद्धिमान माद्रीपुत्र नकुलके हैं। यह जो पांच शार्दूलोंसे चिह्नित तूरीण है सो भी नकुलहीका है, इसीकी सहायतासे उन्होंने युद्धमें समस्त पश्चिम दिशाको जीता था। ये जो सूर्य्यके समान प्रकाशित सब शत्रुओंको नाश करनेवाले बाण हैं, सो विचित्र योद्धा सहदेवके हैं। ये जो तीक्ष्ण, तेज पानीमें बुझाये, सोनेके पंखवाले तीन धारवाले बाण हैं। सो साक्षात धर्म्मराज

महाराजके हैं। यह जो सोनेकी मूठवाला शिलापर घिसा हुआ विशाल खड्ग है, सो युद्धमें शत्रुओंको नाश करनेवाले अर्ज्जुनका है। यह जो बाघके चमड़ेमें रक्खा है, सो दिव्य, शत्रुओंको नाश करनेवाला भीमसेनका खड्ग है। जिसकी सोनेकी मूठ है, और जो बहुत तेज है, सो खड्ग बुद्धिमान धर्म्मराजका है। जो बकरेके चमड़ेमें रक्खा है, जो सदा विचित्र यद्धोंमें चलता है, सो सब शत्रुओंके नाश करनेवाला दृढ़ खड्ग नकुलका है। यह जो विचित्र, दृढ़ शत्रुओंका भार सहनेवाला खड्ग गायके चमड़ेमें रक्खा है सो साक्षात सहदेवका है।

४२ अध्याय समाप्त।

उत्तर बोले, ये सुवर्णखचित तेजसे भरे जिन शत्रुनाशन महात्मा पाण्डवोंके शस्त्र हैं, वे महात्मा युधिष्ठिर, भीम, अर्ज्जुन, नकुल, और सहदेव कहां हैं? वे सब लोग शत्रुओंके नाश करनेवाले राज्यको जुबेमें हारकर न जाने किधर चले गये? जगत विख्यात रत्नके समान स्त्री, द्रुपदराजपुत्री द्रौपदी भी न जाने किधर चली गई? हमने सुना है कि युधिष्ठिर उसे भी जुवेमें हार गये थे।

अर्ज्जुन बोले, मैंही अर्ज्जुन हूं, राजा विराटके कङ्क नामक सभासद कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर हैं। तुम्हारे पिताके बल्लव नामक रसोइया भीमसेन हैं। नकुल अश्वरक्षक हैं, और सहदेव गौओंकी रक्षा करते हैं। जिसके निमित्त कीचकोंका नाश हुआ, वही सैरिन्ध्री द्रौपदी है।

उत्तर बोले, हमने जो अर्ज्जुनके दश नाम सुने हैं, यदि तुम हमसे उनको कहो तो हम तुमको अर्ज्जुन जानें।

अर्ज्जुन बोले, हे विराटपुत्र! हम अपने दशों नाम तुमसे कहते हैं, तुम सावधान होकर सुनो। अर्ज्जुन, फाल्गुन, जिष्णु, किरीटी, श्वेतवाहन, विभत्सु, विजय, कृष्ण, शव्यशाची और धनञ्जय येही मेरे दश नाम हैं।

उत्तर बोले, तुम्हारे नाम विजय, श्वेतवाहन, किरीटी, शव्यशाची, अर्ज्जुन, फाल्गुन जिष्णु, कृष्ण, विभत्सु और धनञ्जय क्यों हुए? इसका कारण कहिये, मैंने आजतक वीर अर्ज्जुनके नामही सुने हैं, यदि तुम इनका कारण कहो तो हम तुम्हीको अर्ज्जुन जानें।

अर्ज्जुन बोले, मैंने सब नगर नगरके शत्रुओंको जीतकर धन छीना है, और सदा धनके मध्यमें रहता हूं, इसीसे मेरा नाम धनञ्जय है। मैं बड़े बड़े बलवान योद्धाओंसे युद्ध करनेको चला जाता हूं, और उनको बिना जीते नहीं लौटता, इसीसे मेरा नाम विजय है। मेरे रथमें युद्धके समय सोनेके जालयुक्त सफेद घोड़े जोड़े जाते हैं, इसीसे मुझे सब लोग श्वेतवाहन कहते हैं। मैं उत्तरा फाल्गुनी और पूर्व्वफाल्गुनी नक्षत्रके सन्धिमें हिमाचलमें जन्मा था, इसीसे मेरा नाम फाल्गुन हुआ। पहले जब मैं घोर दानवोंसे युद्ध करनेको गया था, इन्द्रने अपने हाथसे मेरे शिरपर किरीट बांधा था, इसीसे मैं किरीटी नामसे प्रसिद्ध हुआ हूं। मैं कभी युद्धमें डरकर काम नहीं करता, इस लिये मेरा नाम विभत्सु है। मेरे दोनों हाथ धनुष खीचनेमें समान हैं, अर्थात जैसे दहने हाथसे धनुष खींचता हूं, ऐसेही बायेंसे भी खींच सकता हूं; इससे सब देवता और मनुष्य मुझे शव्यशाची कहते हैं। मेरे समान वर्णवाला जगतमें कोई पुरुष नहीं है, और मैं निर्म्मल कर्म्म करता हूं, इस लिये मेरानाम अर्ज्जुन है। मैं अत्यन्त दुर्लभ, दुर्धर्ष शत्रुओंको जीतनेवाला और इन्द्रका पुत्र हूं, इसीसे लोग मुझे जिष्णु कहते हैं। मेरे पिताने मेरा कृष्णवर्ण देखकर कृष्ण नाम रक्खा था।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, अर्ज्जुनके ऐसे वचन सुन, विराटपुत्र उत्तर बोला, हे महाबाहो हे लालनेवाले! हे कुन्तीपुत्र! मैं भूमिञ्जय नामक विराटपुत्र आपको प्रणाम करता हूं। हे धनञ्जय! मैंने प्रारब्धहीसे आज आपके दर्शन किये हैं और मैं आपका स्वागत करता हूं। हे हाथीके सूंड़के समान हाथवाले! मैंने जो आज्ञासे आपको कहा हो, सो आप क्षमा कीजिये। आपने जो पहले बड़े बड़े घोर और विचित्र कर्म किये हैं, उनको स्मरण करनेसे मेरा सब भय दूर होगया और आपमें बहुत श्रद्धा बढ़ गई।

४३ अध्याय समाप्त।

उत्तर बोले, हे वीर! आप मुझ सारथीके सहित इस उत्तम रथमें बैठकर कौनसी सेनासे युद्ध करना चाहते हैं? सो कहिये मैं उसी सेनाको ओर चलूंगा।

अर्ज्जुन बोले, हे पुरुषसिंह! हे युद्धविद्या जाननेवाले! हम तुमसे बहुत प्रसन्न हैं, इस लिये तुम कुछ भय मत करो। हम तुम्हारे सब शत्रुओंको जीत लेंगे। हे महाबाहो! तुम स्वस्थ हो, हमको इस युद्धमें शत्रुवोंसे युद्ध करते देखो। तुम शीघ्र हमारे रथमें इन तूणीरोंको बांधो, और एक सोनेकी मूठवाला खड्ग ले आओ।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, अर्ज्जुनके ऐसे वचन सुन उत्तर अर्ज्जुनके शस्त्रोंको लेके वृक्षसे शीघ्र उतारा। तब अर्ज्जुन बोले, हे वीर! हम कौरवोंसे युद्ध करके तुम्हारे पशुवोंको छीन लेंगे, तुम हमारे रथके जुवे पर बैठके इस प्रकार रक्षित रहोगे जैसे कोई नगरके बीचमें। इस रथरूपी नगरमें दोनों पहिये मार्गके दोनों ओरके स्थान हैं, दो तूणीर और एक धनुष तीनो दण्ड हैं, हाथही नगरके स्थान और तोरण हैं। इसकी ध्वजाही नगरकी पताका हैं। शत्रुओंको मारनेकी इच्छासे जो धनुष और पहियोंका शब्द है, सोही नगारा है। तुम इसमें रहकर हमसे रक्षा पावोगे। हे विराट-पुत्र! तुम अपने भयको परित्याग कर दो, क्योंकि हम तुम्हारे शत्रुवोंसे गाण्डीव धनुष लेकर युद्ध करेंगे, और पशुओंको जीत लेंगे, तुमको भी कोई शत्रु जगत्में नहीं जीत सकता है।

उत्तर बोले, हम कौरवोंसे भी नहीं डरते हैं, क्योंकि आपको युद्धमें साक्षात् इन्द्र और विष्णुके समान जानते हैं। परन्तु मुझ दुर्बुद्धिको एक ऐसा सन्देह है कि उसका निश्चय नहीं होता है, आप अनेक लक्षणोंसे युक्त और महावीर होकर भी इस नपुंसक रूप धारण करके शिव, गन्धर्व्वराज और इन्द्रके समान छिप करके कैसे रहे?

अर्ज्जुन बोले, हे महाबाहो! हे राजपुत्र! हम अपने बड़े भाईकी आज्ञाहीसे एकवर्ष इस व्रतको करते रहे, परन्तु वास्तवमें नपुंसक नहीं हैं, अब हमारा व्रत समाप्त होगया, अब हमें कुछ आपत्ति शेष नहीं है।

उत्तर बोले, हे पुरुषोत्तम! हम इस बातसे बहुत प्रसन्न हुए कि हमारा सन्देह वृथा नहीं था क्योंकि ऐसे महापुरुष नपुंसक नहीं होते हैं। अब मेरा सब भय दूर होगया, अब मैं आपको सहायतासे सब शत्रुओंके सङ्ग युद्ध कर सकता हूं, कहिये अब मैं कौनसा काम करूं? हे पुरुषसिंह! मैं शत्रुओंके रथ तोड़नेवाले आपके घोड़ोंको हाकूंगा, मैंने यह विद्या गुरुसे सीखी है। हे पुरुषोत्तम! जैसे इन्द्रके मातलि और कृष्णके दारुक सारथी हैं, तैसेही हमें भी जानिये। जिसके चलनेमें चरण नहीं दीखते हैं, जो पीछे दहिनी ओर लगा है, वह घोड़ा साक्षात सुग्रीवके समान बलवान है, जो सुन्दर घोड़ा बांई ओरकी धुरीमें जुड़ा है, वह पुष्पके समान बलवान है। जो

सोनेका जालओढ़ें बाईं ओर जुड़ा है, सो वेग और बलमें शैब्यके तुल्य है, और जो दहिनी ओर जुड़ा है सो वेग और बलमें कृष्णके घोड़े बलाहकके तुल्य है। मेरी बुद्धिमें यह रथ आपके बैठने योग्य है, और आप इसमें बैठकर युद्ध करने योग्य हैं।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, अनन्तर महा बलवान अर्ज्जुनने अपने बाजूबन्द और सोनेके छल्ले उतारे, फिर घूघुरवारेकाले बालोंको सफेद कपड़ेसे बांधकर पवित्र सावधान और पूर्व्वमुख होकर सब शस्त्रोंका ध्यान किया और शस्त्रोंको रथमें रक्खा, फिर सब शस्त्र हाथ जोड़कर अर्ज्जुनसे बोले, हे पाण्डुपुत्र! हम सब तुम्हारे दास हैं। अनन्तर अर्ज्जुनने उन सब शस्त्रोंको प्रणाम करके कहा कि तुम सब हमारे मनमें स्थित रहो। फिर अर्ज्जुन सब शस्त्रोंको अपने हाथमें लेकर बहुत प्रसन्न हुए और गाण्डीव धनुषपर रोदा चढ़ाया और टङ्कार दिया। वह शब्द ऐसा घोर हुआ जैसे पर्व्वत गिरनेसे पर्व्वतके फटजानेसे होता है; पृथ्वी कांपने लगी घोर वायु चलने लगा, कोई दिशा न दीखने लगी, आकाश भ्रमित होगया, और वृक्ष कांपने लगे। अर्ज्जुनके वज्रके समान धनुष शब्दको कौरवोंने भी सुन लिया।

उत्तर बोले, हे पाण्डव! आप अकेले अनेक शस्त्र अस्त्र जाननेवाले महारथोंको कैसे जीतियेगा? हे कुन्तीपुत्र! आपसहायरहित और कौरव लोग सहाय सहित हैं, इससे हमको बहुत भय होता है।

उत्तरके ऐसे वचन सुन अर्ज्जुन हंसके ऐसे वचन बोले, हे वीर! तुम कुछ भय मत करो। जब मैंने घोषयात्रामें गन्धर्व्वोंसे युद्ध किया था, तब मेरा सहायक कौन था? जब देवता और दानवोंसे भरे हुए महा भयङ्कर खाण्डव बनमें मैंने युद्ध किया था, तब मेरा सहायक कौन था? जब मैंने इन्द्रके लिये निवातकवच और महा बलवान पौलोम दैत्योंसे युद्ध किया था, तब मेरा सहायक कौन था? हे तात! जब द्रौपदीके स्वयम्बरमें सब राजोंसे मैंने युद्ध किया था, तब मेरा सहायक कौन था? मैं गुरु द्रोणाचार्य्य इन्द्र, कुबेर, यम वरुण, अग्नि, कृपाचार्य्य, लक्ष्मी-पति कृष्ण और साक्षात शिवकी सहायतासे इन सबके सङ्ग क्यों नहीं युद्ध कर सकूंगा? तुम अपने भयको दूर करके घोड़ोंको शीघ्र हांको।

४४ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! पश्चात अर्ज्जुने उत्तरको सारथी बनाया, शमी-वृक्षकी प्रदक्षिणा करी और शस्त्रोंको रथमें रखकर वेगसे चले;। उत्तरकी सिंहयुक्त ध्वजाको उतारकर शमीवृक्षके नीचे रख दिया; और उत्तरको सारथी बनाकर चल दिये। अर्ज्जुनने विश्वकर्म्माकी दैवी मायाको रथमें स्थापन किया और हनुमानयुक्त सोनेकी ध्वजाको रथमें लगाया। फिर अग्निके वर-दानका ध्यान किया। अर्ज्जुनके ध्यान करते ही अनेक प्राणियोंको अग्निने उनके रथकी रक्षाके लिये भेजा। पश्चात् सोनेके दण्डवाली सुन्दर विचित्र ध्वजा अर्ज्जुनके रथपर आकाशसे आकर लग गई, और दिव्य रथ आकाशसे आया। अर्ज्जुनने उस रथको देखकर प्रणाम किया, फिर धनुष हाथमें लेकर अंगुलित्राण पहर और उस रथमें बैठकर उत्तरकी ओर चल दिये। कुछ दूर जाकर अर्ज्जुनने शत्रुओंको कंपानेवाले देवदत्त शङ्खको बलसे बजाया। उस शब्दको सुनतेही अर्ज्जुनके बलवान घोड़े पृथ्वीमें बैठ गये और उत्तरको भी भयसे मूर्च्छा आगई। अर्ज्जुनने रथसे उतरकर घोड़ोंको ठीक किया और उत्तरकोभी शान्त करने लगे।

अर्ज्जुन बोले, हे शत्रुनाशन राजपुत्र! तुम क्षत्रिय होकर क्यों डरते हो? हे पुरुषसिंह!

तुम शत्रुओंके बीचमें क्यों रोते हो? तुमने अनेक युद्धोंमें शंख, भेर और व्यूहोंमें खड़े हुए हाथियोंके शब्द सुना है, सो तुम केवल शङ्खके शब्दसे क्यों डर गये? तुम्हारे मुखका रङ्ग सामान्य पुरुषके ऐसा क्यों हो गया?

उत्तर बोले, मैंने अनेकवार शंख भेर और युद्धमें उपस्थित हाथियोंके शब्द सुने हैं, परन्तु ऐसा शब्द कभी भी नहीं सुना। यह ध्वजा भी मैंने पहले कभी नहीं देखी थी, और ऐसा धनुषका शब्द भी मैंने पहले कभी नहीं सुना था। धनुष शङ्ख और ध्वजामें बैठे हुए राक्षसोंके घोर शब्दसे मेरा मन कांपा जाता है, सब दिशाओंको व्याकुल देखकर मेरा मन कांपा जाता है। ध्वजासे सब दिशा भर गई हैं इससे मुझे कुछ नहीं दीखता है। ऐसा कहकर उत्तर चुप रहे; एक मुहूर्त्तके पश्चात अर्ज्जुन बोले, हे उत्तर! तुम हमारे रथको एकान्तमें ले चलो, पैरोंसे रथको पकड़ लो और सावधान होकर घोड़ोंकी लगाम पकड़ो; हम पुनः शंख बजाते हैं।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, अर्ज्जुनने पुनः शंख बजाया। उससे पर्व्वत फटने लगे, तथा गुफा और दशो दिशा पूरित होगईं। उत्तर भी रथसे लपट गया। उस शङ्खके, रथके और गाण्डीव धनुषके शब्दसे पृथ्वी कांपने लगी। अर्ज्जुनने उत्तरको फिर सावधान किया।

द्रोणाचार्य्य बोले, इस मेघ समान रथके शब्दसे हमें निश्चय होता है, कि यह क्षत्री अर्ज्जुनके सिवाय दूसरा कोई नहीं है। हमारे शस्त्र प्रकाशित नहीं होते, घोड़े नहीं हींचते, आहुति देनेसे अग्नि नहीं जलती, हरिन घोर शब्द करते हुए सूर्य्यकी ओर जाते हैं; ध्वजाओंपर कौवे गिरते हैं, ये सब शकुन अच्छे नहीं हैं। मांस खानेवाले पक्षी दहनी ओरको उड़ते हैं, यह रोता हुआ सियार हमारी सेनाकी ओर चला आता है, इसका रूप बहुत कराल है, इससे हमें बहुत भयकी सम्भावना है। तुम सब लोगोंके रोवें खड़े होगये हैं, इससे हमको जान पड़ता है कि इस युद्धमें बहुत क्षत्रियोंका नाश होगा। किसी तेजमें प्रकाश नहीं रहा, हरिन और पक्षियोंने घोररूप धारण किया है और भी क्षत्रियोंके नाशके अनेक लक्षण दीखते हैं; विशेष करके हमारीही सेनाका नाश दीखता है! आकाशसे हमारी सेनामें उल्का गिरती हैं, हाथी और घोड़े रो रहे हैं, सेनाके चारों ओर गिद्ध गिरते हैं, तुम भी अर्ज्जुनके बाणसे पीड़ित सेनाको देखकर दुःख पाते हो, किसी योद्धाको युद्ध करनेकी इच्छा नहीं देखते, सब योद्धाओंके मुख पीले होगये हैं, कोई वीर चैतन्य नहीं है इससे हम लोग व्यूह बनाकर गौओंकी रक्षा करें।

४५ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! द्रोणाचार्य्यके ऐसे बचन सुन राजा दुर्य्योधनने भीष्म, महावीर द्रोणाचार्य्य और महारथ कृपाचार्य्यसे कहा कि, हे मान्यपुरुषो! हमने और कर्णने आप लोगोंसे पहले भी कहा था और फिर भी कहते हैं क्योंकि इसके कहनेसे मेरी तृप्ति नहीं होती हैं। हमारी और पाण्डवोंकी यही प्रतिज्ञा थी कि यदि अज्ञात वासमें तुम लोग प्रत्यक्ष हो जावोगे तो पुनः बारह वर्ष बनमें रहना होगा; अभी तेरहवां वर्ष पूरा नहीं हुआ और हमने अर्ज्जुनको जान लिया, इस लिये पुनः पाण्डवोंको बारह वर्ष बनमें रहना होगा; परन्तु हम लोग लोभ और मोहके वशमें होकर समय नहीं जान सकते हैं, इसका ठीक निश्चय भीष्मही कर सकते हैं। विषयोंके निश्चय करनेमें प्रायः सन्देह हो जाता है, कोई विषय दूसरे प्रकार विचारा जाता है और वह दूसरेही प्रकार

हो जाता है, हम लोग इस युद्धमें युद्ध करनेके लिये उत्तरका मार्ग देख रहे थे, परन्तु अर्ज्जुन अनायास आमिला, इसमें हमारा क्या दोष है? हम लोग राजा सुशर्म्माकी सहायता करनेके लिये राजा विराटसे लड़नेको आये थे, और आपके आगे विराटहीके अनेक दोष भी हमने कहे थे; ऐसो सम्मति हुई थी कि जब राजा विराट त्रिगर्त्त देशीय क्षत्रियोंके भयसे डरकर सप्तमीके दिन राजा त्रिगर्त्तसे युद्ध करनेको चला जायगा तब अष्टमी तिथिको सूर्य्यके उदय होते इस सब गौओंको छीन लेंगे। और ऐसा भी निश्चय था त्रिगर्त्त देशके क्षत्री उनकी गौओंको छीन ले आवेंगे अथवा उनसे हारकर सन्धि करेंगे, या हम लोगोंसे मिलकर युद्ध करेंगे। हमें जान पड़ता है कि राजा विराट त्रिगर्त्त देशके क्षत्रियोंका युद्ध छोड़के और अपने नगरको छोड़के हम लोगोंसे युद्ध करनेको आया है; इसका कारण भी यह जान पड़ता है कि राजा विराटने उधर अधिक परिश्रम जानकर इधर यात्रा करी है; अथवा उन्हींमेंसे अर्थात् राजा विराटके पुरुषोंमेंसे यह कोई महा बलवान वीर है जो हम लोगोंसे युद्ध करनेको चला आता है। हमारी बुद्धिमें यह निश्चय होता है कि चाहे यह विराट हो, चाहे अर्ज्जुन हो, हम लोगोंको मिलके युद्ध करना चाहिये। न जाने भीष्म, द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य, विकर्ण और अश्वत्थामा आदि महारथ क्यों घबराये रथोंमें बैठे हैं? हे वीरो! इस समय सिवा युद्धके और किसी बातमें कल्याण नहीं है। यदि हमसे इन्द्र, यम, या और कोई महाबली भी गौओंको छीन लेगा, तब हस्तिनापुरमें कौन जा सकेगा? इस घोर बनमें हमारे बाणोंसे बचकर कोई घोड़े पर चढ़ा वीर भी नहीं भाग सकता है, और पदातियोंकी तो कथाही क्या है।

महाराज दुर्य्योधनके बचन सुन कर्ण बोले कि,—द्रोणाचार्य्यके बचनोंका निरादर करके आप युद्धका विधान कीजिये। ये पाण्डवोंकी सम्मति जानते हैं और अर्ज्जुनसे प्रेम अधिक करते हैं, इस लिये हम लोगोंको डरा रहे हैं। अर्ज्जुनको आता देख उनकी प्रशंसा कर रहे हैं। जिसमें हमारी सेना भाग न जाय ऐसा विधान कीजिये, पाण्डव लोग अत्यन्त स्वार्थी हैं, उन्होंने द्रोणाचार्य्यको आपके पास बसा दिया है, अर्थात् ये आपके पक्षपाती नहीं बरन पाण्डवोंके पक्षमें हैं, इसमें प्रमाण यही है कि द्रोणाचार्य्य सदा पाण्डवोंकी प्रशंसा किया करते हैं। भला घोड़ोंका शब्द सुनकर वीरोंकी कौन प्रशंसा कर सकता है? घोड़ोंका स्वभावही है कि नये स्थानपर जाकर बोलने लगते हैं! वायु सदा चला करता है, जल सदा बरसा करता है, बिजली सदाही तड़का करती है, इस सबमें अर्ज्जुनकी प्रशंसा करनेकी कौनसी बात है? हां ऐसा जान पड़ता है, कि आचार्य्यके चित्तमें हम लोगोंसे कुछ द्वेष, काम, या क्रोध भरा हुआ है। इसके अतिरिक्त एक यह भी बात है कि आचार्य्य लोग दयावान पण्डित और धर्म्मदर्शी होते हैं; इस लिये इनसे युद्धमें कुछ सम्मति नहीं पूछनी चाहिये। उत्तम अटारी, सभा और बनोंमें बैठकर उत्तम कथा कहनेको समस्त पण्डितको बुलाना चाहिये। जब अनेक आश्चर्य्य दिखलाने हों, या यज्ञसे कोई विचित्र वस्तु उत्पन्न करनी हो तब पण्डितोंसे सम्मति पूछनी चाहिये। जहां शत्रुका छिद्र देखना हो, किसी मनुष्यका चरित्र पूछना हो, हाथी, घोड़े, रथ, गधे, ऊंट, बकरी और भेड़ोंके लक्षण पूछने हों, गौओंकी रक्षा करनी हो, नगर बाहर और द्वारपर देवताओंको बलि देनेमें और अन्नके संस्कार तथा दोषोंमें पण्डितोंकी सम्मति लेनी

चाहिये। इस समय शत्रुओंके गुण जाननेवाले पण्डितोंको पीछे करके ऐसी नीति करनी चाहिये जिसमें शत्रुओंका नाश हो। गौओंको बीचमें करके रक्षा सहित सेनाका ऐसा व्यूह बनना चाहिये जहां खड़े होकर हम लोग शत्रुओंसे युद्ध करें।

४६ अध्याय समाप्त।

———

कर्ण बोले, हम सब क्षत्रियोंको भयसे व्याकुल, चञ्चल और युद्धसे विरक्त देखते हैं। यदि राजा विराट या स्वयं अर्ज्जुनही युद्ध करने को आया होगा, तौभी मैं इस प्रकार निवारण करूंगा जैसे तट समुद्रको रोकता है। मेरे नवाये हुए धनुषसे छूटे सर्पोंके समान महाबाण विना शत्रुओंका नाश किये कभी नहीं लौटेंगे। आज मुझ वीरके हाथसे छूटे हुए सोनेके पंख और तेज धारवाले बाण अर्ज्जुनको इस प्रकार ढो लेवेंगे, जैसे छोटे कीट वृक्षको ढो लेते हैं। अब लोग बाण छूटता हुई मेरी दृढ़ धनुषके शब्दको इस प्रकार सुनें जैसे पुरुष बजती हुई भेरके शब्दको सुनते हैं। अर्ज्जुन तेरह वर्षसे वनमें रहता है, इस लिये आज प्रेम सहित मेरे ऊपर बाण छोड़ेगा। आज अर्ज्जुन गुण-वाण ब्राह्मणके समान दानपात्र बनकर मेरे दिये हुए सहस्रों बाणोंका ग्रहण करे। यद्यपि अर्ज्जुन वीर तीनों लोकके धनुष धारियोंमें प्रसिद्ध है, तो मैंभी इस पुरुषसे कम नहीं हूं। अब सोनेसे खिंचे गिद्धके पंखयुक्त मेरे धनुषसे छूटे हुए बाणोंसे आकाश इस प्रकार व्याप्त होजाय, जैसे बरसातमें जुगुनुओंसे व्याप्त होता है। आज मैं और किसीसे न मारने योग्य अर्ज्जुनको मारकर धृतराष्ट्रपुत्र दुर्य्योधनके भारी और विख्यात ऋणसे छूटूंगा. मेरे हाथसे छूटे हुए, पंखवाले बाण आकाशमें इस प्रकार घूमें जैसे आकाशमें पतङ्ग घूमते हैं; आज मैं इन्द्रके बज्रके समान धनुषवाले और इन्द्रके समान तेजस्वी अर्ज्जुनको युद्धसे इस प्रकार भगाऊंगा जैसे पुरुष मसालसे हाथीको भगाता है। आज मैं सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ महारथ वीर अर्ज्जुनको इस प्रकार अपने वशमें कर लूंगा जैसे गरुड़ सर्पको अपने वशमें कर लेता है। मैं खड्ग और बाणरूपी इन्धनसे जलते हुए महा घोर अर्ज्जुन रूपी अग्निको घोड़ेरूपी वायुसे प्रेरित होकर रथ शब्दसे गर्जता हुआ मेघसे समान बाणरूपी जलकी धारासे बुझा दूंगा। मेरे धनुषसे छूटे हुए बाण अर्ज्जुनकी ओर इस प्रकार जायं जैसे सांप बिलकी ओर जाता है। हे राजन्! आज आप तेजपानीमें बुझे तीक्ष्ण धारावाले सोनेके पंखयुक्त महा तेजस्वी मेरे बाणोंसे अर्ज्जुनको इस प्रकार व्याप्त देखियेगा, जैसे वृक्षोंसे पर्व्वत। मैंने जो ऋषि श्रेष्ठ परशुरामसे शस्त्र सीखा है, उसके बलसे साक्षात इन्द्रके सङ्ग भी युद्ध कर सकता हूं। अर्ज्जुनके ध्वजा पर बैठा हुआ बन्दर मेरे बाणसे गिरकर पृथ्वीमें घोर शब्द करे, अर्ज्जुनकी ध्वजापर बैठे हुए अनेक राक्षस मेरे बाणसे पीड़ित होकर आकाशमें घोर शब्द करें। आज मैं दुर्य्योधनके हृदयमें स्थित कांटेको मूल सहित निकाल दूंगा, अर्थात युद्धभूमिमें अर्ज्जुनको रथसे नीचे गिरा दूंगा। आज कौरव लोग रथ और घोड़ोंसे रहित वीर अर्ज्जुनको इस प्रकार श्वास लेते देखें जैसे मरते हुए हाथीको मनुष्य देखते हैं। सब कौरवोंकी जहां इच्छा हो तहां धन लेकर चले जाय, अथवा रथोंमें बैठकर हमारे युद्धको देखें।

४७ अध्याय समाप्त।

———

कृपाचार्य्य बोले, हे राधापुत्र! तू बड़ा दुर्बुद्धि है, जो सदा युद्धकी इच्छा करता है। तुझे राज्यकी प्रकृतिका ज्ञान है, और न युद्धके फलका ज्ञान है। ये जो शकुनि आदि छली हैं, इनको केवल छलही करना आता है, पण्डित

लोग इनके युद्धकी सदा निन्दा करते हैं, और सदा उनके युद्धको नाशकारक बताते हैं। जो युद्ध देश और कालके अनुसार होता है, उसीसे विजय होती है और इससे उलटे युद्धमें हानि होती है। देश और कालके अनुसारही कल्याण होता है, अनुकूल कार्य्य करनेसे सुख प्राप्त होता है। पण्डित लोग रथ बनानेवालेके वचन पर विश्वास करके रथमें बैठकर युद्धको नहीं चले जाते हैं। अर्ज्जुनके बलको देखकर हमें निश्चय होता है कि हम लोगोंमें अर्ज्जुनसे युद्ध करने योग्य कोई नहीं है, अकेला कौरवोंसे युद्ध करने योग्य कोई नहीं है, यह अकेला कौरवोंसे युद्ध करनेका चला आया, अकेलेने खाण्डव वनमें अग्निको तृप्त किया, अकेलेने पांच वर्षतक ब्रह्मचर्य्य धारण किया, अकेले सुभद्राको अपने रथपर बैठाकर कृष्णको युद्ध करनेके लिये बुलाया। अकेलेने किरातरूपी शिवसे युद्ध किया, अकेलेने इसी वनमे जलद्रथसे द्रौपदीको छुड़ाया, अकेलेने पांचवर्षतक इन्द्रसे विद्या सीखा, एकलेन चित्रसेन गन्धर्व्वराजको दुर्जय सेनाके सहित जीता और एकलेही अर्ज्जुनने देवतोंसे भी अवध्य निवातकवच और कालखञ्ज राक्षसोंका नाश किया। वही अकेला शत्रुनाशन अर्ज्जुन सब कौरवोंको जीतकर यश प्राप्त करेगा। हे कर्ण! अकेले अर्ज्जुनने इतने काम किये हैं। और तैंने अकेले कौनसा युद्ध जीता है? एक पाण्डवने एक एक दिशाके राजोंको अपने वशमें कर लिया था। उन लोगोंसे युद्ध करनेकी कौन इच्छाकर सकता है? जो पागल अर्ज्जुनसे युद्ध करनेको कहै, उसकी औषधी करनी चाहिये। क्या तू क्रोधमें भरे विषैले सर्पको दहने हाथसे पकड़कर अङ्गुलीसे उसके दांत तोड़ना चाहता है? क्या तू वनमें अकेले घूमते हुए अंकुशरहित मतवारे हाथीपर चढ़कर नगरको जाना चाहता है? क्या घी और मज्जा सहित जलती हुई अग्निमें घीमें भीगे हुए वस्त्रोंको पहरकर घुसना चाहता है? ऐसा कौन मूर्ख होगा जो गलेमें शिला बांधकर समुद्रमें कूदे और हाथोंसे पैरकर समुद्रमें पार होनेकी इच्छा करे? हे कर्ण! जो अर्ज्जुनसे युद्ध करनेकी इच्छा करता है, वह वैसाही मूर्ख है, जैसे कोई शस्त्र विद्या न जाननेवाला दुर्बल, शस्त्र विद्या जाननेवाले बलवानसे युद्ध करनेकी इच्छा करे। हम लोगोंने अर्ज्जुनको तेरहवर्ष पर्य्यन्त महा दुःख दिया है, सो अब यह पिञ्जरेसे छूटे हुए सिंहके समान हमारा नाश कर देगा। हम लोग एकान्त बैठे अर्ज्जुनके वशमें इस प्रकार हो गये, जैसे कोई अग्नि भरे कुएंमें गिर पड़ता है। अब हम लोगोंको उचित है कि सेनाका व्यूह बना लें और महावीर अर्ज्जुनसे द्रोणाचार्य्य, दुर्य्योधन, भीष्म, तुम और हम मिलकर युद्ध करें। यदि हम छओ महारथी इकट्ठे होकर युद्ध करेंगे तब अर्ज्जुनके सङ्ग लड़ सकेंगे अन्यथा तुम्हारा साहस वृथा है। हम लोग सेनाका व्यूह बनाकर और धनुष धारण करके अर्ज्जुनसे इस प्रकार युद्ध करेंगे जैसे इन्द्रसे राक्षस लोग।

४८ अध्याय समाप्त।

अश्वत्थामा बोले, हे कर्ण अभी न गौओंको जीता, न राज्यकी सीमापर पहुंचे हैं, तुम पहिलेही अपनी प्रशंसा करने लगे? अनेक युद्धोंको जीतकर और अनन्त लक्ष्मीको प्राप्त करके भी महात्मा लोग अपनी प्रशंसा नहीं करते। देखो अग्नि मौन होकर सबको भस्म करता है, सूर्य्य मौन होकर प्रकाश करते हैं और पृथ्वी मौन होकर सब जगतको धारण करती है; ब्रह्माने चारोवर्णोंके पृथक पृथक कर्म्म बना दिये हैं, उन्हीके करनेसे मनुष्यको धन मिल सकता है, और उन्हीके करनेसे

मनुष्यको दोष भी नहीं होता। ब्राह्मण चारों वेदोंको पढ़कर यज्ञ करे और करावे। क्षत्री धनुषके आश्रयसे यज्ञ करें, परन्तु करावें नहीं। वैश्य द्रव्य उपार्जन करके वेदोक्त कर्म करें और शूद्रको नम्र होकर सामान्य वृत्तिसे चारो वर्णोंकी सेवा करनी चाहिये। महात्मा लोग शास्त्रके अनुसार कर्म करके और समस्त पृथ्वीके स्वामी होकर भी गुरुओंकी सेवा करते हैं, भला ऐसा कौन क्षत्रिय होगा जो जुवेमें राज्यको जीतकर अपनी प्रशंसा करेगा? यह मूर्ख धृतराष्ट्र पुत्रही ऐसा निर्लज्ज है, जो ऐसे ऐसे अधर्म करता है। दुर्य्योधनके समान दुष्ट जगतमें व्याधके सिवा और कोई न होगा, जो छलसे धन जीतकर अपनी प्रशंसा करता है। और साधुओंके सङ्ग छलकर अपनेको बुद्धिमान कहता है, रे दुष्ट! तैने कौनसे रथ-युद्धमें अर्ज्जुनको जीता है? तैने कौनसे युद्धमें सहदेवको पकड़ा था? तैने कब रथयुद्धमें नकुलको मारा था? तुझसे कौन से युद्धमें युधिष्ठिर हार गये? तैने कौनसे घोर युद्धमें महा बलवान भीमसेनको जीता था? तैंने कब इन्द्रप्रस्थके ऊपर चढ़ाई करी थी? और वह कौनसा युद्ध हुआ था जिसमें तने द्रौपदीको जीता था? कौनसे न्यायसे रजस्वला द्रौपदीको एक वस्त्र पहनाके सभामें बुलाया था? हे सूत! तुम लोगोंने पाण्डवोंका मूल इस प्रकार नाश किया है,जैसे कोई लोभी चन्दनके वृक्षको काटता है। तुमको स्मरण होगा कि जुवेके समय विदुरने क्या कहा था? तुम सूत हो अपना कर्म करो युद्धको क्या जानो। हमलोग देखते हैं कि मनुष्यसे चौंटी पर्य्यन्त अपने बैरका शक्तिके अनुसार बदला लेतेही हैं। पाण्डव लोग द्रौपदीके दुःखको क्षमा नहीं करेंगे। अर्ज्जुनने धृतराष्ट्रका वंश नाश करनेको अवतार लिया है। तहां तुम पण्डित होकर वचन कहना चाहते हो? अर्ज्जुन पूर्व्व बैरको स्मरण करके अवश्य अवश्य हमारा नाश करेगा। कुन्तीपुत्र अर्ज्जुन गन्धर्व्व, देवता, राक्षस और सर्पोंसे भी युद्ध करनेको समर्थ है; अर्ज्जुन युद्धमें क्रोध करके जिसकी ओर जायगा, उसका इस प्रकार नाश कर देगा, जैसे गरुड़ वृक्षका, और अर्ज्जुन तुझसे अधिक बलवान इन्द्रके समान धनुषधारी वृष्णके समान योद्धा है। उसकी पूजा कौन नहीं करेगा? जो अर्ज्जुन देवतोंके सङ्ग देव विधिसे, मनुष्यके सङ्ग मनुष्य विधिसे लड़ता है, जो अस्त्रोंको अस्त्रसे काटता है, उसके समान कौन मनुष्य होगा? पुत्रसे भी शिष्य अधिक होता है, इसी कारण अर्ज्जुन द्रोणाचार्य्यको अधिकतर प्रिय हैं, तुमने जैसे जुवा खेला था, जैसे इन्द्रप्रस्थको जीता था, जिस बलके भरोसे द्रौपदीको सभामें बुलाया था, उसी बलसे अब अर्ज्जुनके सङ्ग युद्ध करो। हे दुर्य्योधन! यह तुम्हारा पण्डित मामा क्षत्रिय धर्म्मको जाननेवाला जुवारी शकुनि युद्ध करे, अर्ज्जुन शययुग, त्रेता, द्वापर और कलियुगके समान फांसे नहीं फेंकता, यह जलते हुए तीक्ष्ण वाणोंको छोड़ता है। गाण्डीवसे छूटे हुए गिद्ध पंखयुक्त तेज बाण पहाड़ोंको काटकर भी पार चले जाते हैं। मृत्यु, यम, पवन, और अग्नि ये सब क्रोध करके शत्रुओंका कुछ शेष छोड़ सकते हैं, परन्तु अर्ज्जुन नहीं। तुमने जैसे अपने मामाको सहायतासे जुवा खेला था, वैसेही अपने मामासे रक्षित होकर युद्ध करो। जिसकी इच्छा हो, सो युद्ध करे, हम अर्ज्जुनसे नहीं लड़ेंगे; क्योंकि हम विराटसे युद्ध करनेको आये हैं। यदि वह गौओंको छीनने आये हों तो हम लड़ेंगे।

४८ अध्याय समाप्त।

भीष्म बोले, हे राजन् दुर्य्योधन! द्रोणपुत्र अश्वत्थामा उचित कहते हैं, और कृपाचार्य्यने

उचित कहा, परन्तु कर्ण केवल हठसे युद्ध करनेकी इच्छा करता है। ज्ञानी पुरुषको उचित है कि गुरुको कुछ न कहे, और युद्ध भी देश और कालके अनुसार करे। जिसके सूर्य्यके समान तेजस्वी पांच शत्रु हैं, उस पण्डितको भी भ्रम क्यों न होगा? धर्म्मज्ञ पण्डित लोग भी अपने प्रयोजनके लिये भूल जाते हैं, इस लिये हम कुछ वचन कहते हैं। कर्णने जो कुछ तुमसे कहा था, सो सब तेज बढ़ानेके लिये इसहेतु अश्वत्थामाको क्षमा करनी चाहिये, क्योंकि महायुद्ध होनेवाला है। जिस समय अर्ज्जुन युद्ध करनेको उपस्थित हो, वह समय विरोधका नहीं है, तुम द्रोणाचार्य्य और अश्वत्थामा सब क्षमा करो। आप लोगोंकी शस्त्र-विद्या ऐसी उत्तम और अक्षय है, जैसा सूर्य्य और चन्द्रमाका तेज। आप लोगोंकी वेद विद्या और ब्रह्मास्त्र भी वैसेही उत्तम है। हमें द्रोणाचार्य्य और अश्वत्थामामें शस्त्र-विद्या और वेद विद्या भरी दीखती हैं। हमारी बुद्धिमें द्रोणाचार्य्य और अश्वत्थामाके सिवा दोनों विद्या एक पुरुषमें नहीं हैं। हे राजन्! वेदान्त पुराण और इतिहासोंको परशुरामके सिवा द्रोणाचार्य्यसे अधिक कौन जानता है? ब्रह्मास्त्र और वेद विद्या द्रोणाचार्य्यके सिवा किस पुरुषमें है? इस लिये आचार्य्यपुत्र अश्वत्थामा हमारे ऊपर कृपा करें, यह समय विरोधका नहीं है। महात्मा पण्डितोंने जो दोष कहे हैं, उनमें भेदही मुख्य है, इससे सर्व्वनाश हो सकता है।

अश्वत्थामा बोले, हे पुरुषसिंह भीष्म! आप हमारे न्याययुक्त वचनोंकी निन्दा करने योग्य नहीं हैं, क्योंकि आचार्य्यने क्रोधसे अर्ज्जुनके गुण कहे थे, इसमें यही हेतु है कि शत्रुके गुण और गुरुके भी दोष कहने चाहिये। विशेष कर पुत्र और शिष्यको तो कल्याणहीका उपदेश करना चाहिये।

दुर्य्योधन बोले, आचार्य्यको क्षमा करना उचित है, क्योंकि यह समय शान्तिका है। उन्होंने जो कुछ कहा था, क्रोधसे कहा था, परन्तु भेदकी इच्छासे नहीं।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे जनमेजय! अनन्तर दुर्य्योधनने द्रोण, भीष्म महात्मा कृपाचार्य्यके सहित द्रोणाचार्य्यसे कहकर कर्णका अपराध क्षमा कराया।

द्रोणाचार्य्य बोले, शान्तनुपुत्र भीष्मने जो पहले वचन कहा था, हम उसीसे प्रसन्न होगये थे, अब जो कर्त्तव्य है सो कीजिये, ऐसा यत्न करना चाहिये जिसमें साहस और भूलसे भी दुर्य्योधन युद्धमें अर्ज्जुनके आगे न जायं। अर्ज्जुन समय पूरा होनेके पहले कदापि प्रत्यक्ष नहीं हो सकता, इससे जान पड़ता है कि वर्ष पूरा होगया। अब अर्ज्जुन बिना गौओंको लिये नहीं लौटेगा। ऐसा उपाय करना चाहिये, जिसमें अर्ज्जुन हमारी सेना और धृतराष्ट्रके पुत्रोंका नाश न करे। हे गङ्गापुत्र! राजा दुर्य्योधनने जो पहले वचन कहे थे, उसको विचारकर जो उचित हो, सो आप कहिये।

५० अध्याय समाप्त।

———

भीष्म बोले, समयकी गिनतीमें कला, काष्ठा, मुहूर्त्त, दिन, पक्ष, महीने, नक्षत्र, ग्रह, ऋतु और वर्ष गिने जाते हैं, इन सबको मिलाकर जगतमें कालचक्र घूमता है। नक्षत्रके अतिचारसे और समयकी ठीक गिनतीसे प्रति पांच वर्षमें दो महीने बढ़ जाते हैं, ऐसी गणना करनेसे पाण्डवोंके तेरह वर्षसे पांच महीने और तेरह दिन अधिक हो गये। तथा इसी गिनतीसे पांच महीने दो दिन सत्ताइस नाड़ी पैंतालिश पल और पन्द्रह निमिषसे भी अधिक समय हो गया। पाण्डवोंने जो कुछ प्रतिज्ञा की थी, उसको उचित रीतिसे

निर्वाह किया! यह सब निश्चय विचारकर अर्ज्जुन युद्ध करनेको आया है, जहां साक्षात युधिष्ठिर हों तहां अधर्म्म क्यों होगा! पांचो पाण्डव महात्मा, धर्म्म जाननेवाले और लोभ रहित हैं। इसीसे उन्होंने इस घोर व्रतको पालन किया, वे लोग कदापि अधर्म्मसे राज्यकी इच्छा नहीं करेंगे क्योंकि कुरुकुल श्रेष्ठ पाण्डव लोग महापराक्रमी हैं,उन्होंने धर्म्मपाशमें बंधकर इस क्षत्रिय व्रतको समाप्त किया। यदि यह अर्ज्जुन न होगा और मिथ्या बोलेगा, तो हमसे अवश्य हार जायगा। पाण्डव लोग मर जायेंगे परन्तु झूंठ नहीं बोलेंगे। पुरुषसिंह पाण्डवोंकी जो वस्तु प्राप्त होने योग्य है, उसे वे छोड़ेंगे नहीं क्योंकि वे साक्षात वज्रधारी इन्द्रके समान बलवान हैं। इस लिये हम सब लोग मिलकर अर्ज्जुनसे युद्ध करेंगे। इस लिये पण्डितोंने जो कल्याणकारी बातें कही हैं, सो तुमको शीघ्रही करनी चाहियें। हे कौरव! हे राजेन्द्र! अब अर्ज्जुन युद्ध करनेको आया है, इस लिये हमें परम सिद्धिका निश्चय नहीं होता। युद्धमें लाभ, हानि, जय और पराजय इनमेंसे एक वस्तु अवश्य ही प्राप्त होती है, इस लिये धर्म्म सहित युद्धका कार्य्य शीघ्र करना चाहिये।

दुर्य्योधन बोले, हे पितामह! मैं पाण्डवोंको राज्य नहीं दूंगा, इस लिये शीघ्र युद्धका विधान कीजिये।

भीष्म बोले, हे कुरुनन्दन! हमको सदा तुम्हारे कल्याणका उपदेश करना चाहिये, इस लिये इस विषयमें हमारी जो सम्मति है, सो तुमसे कहते हैं, यदि तुमको प्रिय लगे तो सुनो। इसी समय सेनाके चार भाग कर देने चाहियें। एक भागको लेकर इसी समय तुम हस्तिनापुरको चले जाओ, दूसरा भाग गौओंको लेकर हस्तिनापुरको जाय, और आधी सेनासे हम लोग अर्ज्जुनके सङ्ग युद्ध करेंगे। हम, द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य, कर्ण और अश्वत्थामा मिलकर अर्ज्जुनसे युद्ध करेंगे। यदि उनकी सहायताको राजा विराट भी आजायगा, और साक्षात इन्द्र भी अर्ज्जुनकी रक्षा करनेको आवेगा तौभी मैं इस प्रकार से निवारण करूंगा, जैसे तट समुद्रको निवारण कर देता है।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, भीष्मके यह वचन सबको प्रिय लगे, और राजा दुर्य्योधनने उसी प्रकार सेनाके चार भाग किये। एकके सङ्ग राजा दुर्य्योधनको भेज दिया, और दूसरेको गौओंके सङ्ग भेजकर मुख्य सेनापतियोंकी सम्मतिसे व्यूह बनाना आरम्भ किया।

भीष्म बोले, हे आचार्य्य! आप सेनाके बीचमें रहिये, अश्वत्थामा बाईं ओर बुद्धिमान शारद्वत पुत्र कृपाचार्य्य दहनी ओरसे सेनाकी रक्षा करें। सूतपुत्र कर्ण सब युद्ध सामग्रीके सहित सन्नद्ध होकर सेनाके मुखमें खड़े हों और मैं पीछे रहकर सबकी रक्षा करूंगा।

५१ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजा जनमेजय! जिस समय कौरवोंकी सेनाका इस प्रकार व्यूह बन चुका तब अपने रथके शब्दसे दिशाओंको पूर्ण करते हुए, अर्ज्जुन सेनाकी ओर आये। कौरवोंने अर्ज्जुनकी ध्वजा देखी और गाण्डीव धनुषका महा शब्द सुना। गाण्डीव धनुषधारी महारथ अर्ज्जुनको देख द्रोणाचार्य्य बोले, यह अर्ज्जुनकी ध्वजा दूरहीसे दीखने लगी, यह रथ और बाणके शब्द आने लगे। यह देखो महारथ अर्ज्जुन रथमें बैठे हुए वज्रके समान धनुषको खींच रहे हैं। यह देखो अर्ज्जुनके दो बाण मेरे पैरोंमें गिरे, और दूसरे दो कानोंको छूकर चले गये। इनका प्रयोजन यह है कि अर्ज्जुन वनवाससे निवृत होकर और अमानुष कर्म्म करके हमको प्रणाम करता है, और

युद्ध करनेकी आज्ञा मांगता है। आज हमने अपने प्यारे बुद्धिमान शिष्यको बहुत दिनमें देखा। इस समय पाण्डुपुत्र अर्ज्जुन तेजसे प्रकाशित हो रहा है! रथ, बाण, तूणीर, तलहत्थो, शङ्ख, पताका, कवच, किरोट, खड्ग और धनुषके सहित अर्ज्जुनकी ऐसी शोभा बढ़ रही है, जैसे ज्वालाओंके सहित जलती हुई अग्निकी।

अर्ज्जुन बोले, हे सारथी! तुम हमारे रथको एकबार रणभूमितक हांको, वहां जाकर हम देखेंगे कि कुरुकुलकलङ्क दुर्य्योधन कहां है? इन सब कौरवोंको छोड़कर करके मैं महा अभिमानी दुर्य्योधनहीसे युद्ध करूंगा। क्योंकि उसके हारनेसे सब हार जायंगे। यह देखो! गुरु द्रोणाचार्य्य खड़े हैं, इधर उनके पुत्र अश्वत्थामा हैं। एक ओर भीष्म खड़े हैं। दहनी ओर कृपाचार्य्य हैं और आगे कर्ण खड़े हैं। क्या सबही वीर हस्तिनापुरसे युद्ध करनेको चले आये? परन्तु आश्चर्य्य यही है कि हम राजा दुर्य्योधनको नहीं देखते हैं। आहा! वह देखो जोनेके भयसे राजा दुर्य्योधन दक्षिण मार्गसे गौओंके सहित भागा जाता है। हे विराटपुत्र! तुम इस सब सेनाको छोड़कर हमारे रथको शीघ्र दुर्य्योधनके आगे ले चलो हम वहीं चलकर युद्ध करेंगे। क्योंकि निष्प्रयोजन महारथियोंसे युद्ध करनेसे क्या लाभ है? दुर्य्योधनको जीतकर गौ छीन कर अपने नगरको लौट जायंगे, और युद्ध करना वृथा है।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, अर्ज्जुनके ऐसे बचन सुन विराटपुत्र उत्तरने अत्यन्त यत्न करके कौरवोंकी सेनासे बचाकर वेगसे घोड़ोंको हांका, जिधरसे दुर्य्योधनकी सेना जा रही थी थोड़ी दूर जाकर उत्तरने घोड़ोंको और भी वेगसे चलाया। अर्ज्जुनको सेना छोड़कर जाते हुए देख कौरव लोग उनके अभिप्रायको जान गये। तब कृपाचार्य्य बोले, हमें निश्चय होता है, कि अर्ज्जुन राजासे युद्ध करनेको जा रहे हैं, इस लिये आप सब लोग रथोंको शीघ्र हांककर इसके आगे होजाइये। क्योंकि युद्धमें क्रोधी अर्ज्जुनके आगे इन्द्र और देवकीपुत्र कृष्णके सिवा कोई नहीं ठहर सकता। पृथ्वीमें भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्य और महारथ अश्वत्थामा भी अर्ज्जुनसे युद्ध कर सकते हैं, हम गौओंको और धनको लेकर क्या करेंगे? अर्ज्जुन समुद्रमें दुर्य्योधन रूपो नाव डूबजायगी; ये लोग इधर सम्मति करतेही रहे उतनेमें अर्ज्जुन दुर्य्योधनके आगे जा पहुंचे। वहां जाकर अर्ज्जुनने अपनी धनुषपर टङ्कार दी और अपना नाम सुनाकर शङ्ख बजाया। शङ्खके शब्द सुनतेही सब शत्रुओंके रोवें खड़े हो गये और सब लोग आश्चर्य्य करने लगे। उतनेही समयमें अर्ज्जुनने अपने तीक्ष्ण बाणोंसे दुर्य्योधनकी सेनाको इस प्रकार छा लिया, जैसे वृक्षोंको छोटे कीड़े छा लेते हैं। उस समय दुर्य्योधनकी सेनामें जरासी भी भूमि ऐसी न बची जहां अर्ज्जुनके बाण न पहुंचे हों, परन्तु किसी योद्धाने युद्धमें भागनेकी इच्छा न करी और सब अर्ज्जुनकी प्रशंसा करने लगे। तब अर्ज्जुनने धनुषपर टङ्कार देकर शङ्ख बजाया और रथपर बैठे हुए राक्षसोंको गर्ज्जनेको आज्ञा दी। उन सबके शब्दसे वीर लोग घबड़ा गये, गौए अपनी पंछ ऊंची करके और हम्मा बोलती हुई दक्षिणको ओरसे नगरकी ओर आपसे आप भाग गईं।

५२ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! धनुर्धारियोंमें श्रेष्ठ अर्ज्जुन जब गौओंको जीत चुके, तब युद्धकी इच्छासे शत्रुओंकी सेनापर बाण बरसाते हुए दुर्य्योधनके आगे पहुंचे। जब कौरवोंने जाना कि अर्ज्जुनने गौओंको

कुड़ाकर कार्य्य सिद्ध कर लिया और दुर्य्योधनसे युद्ध करनेको चले जाते हैं, तब सब लोग वेगसे उनकी ओर दौड़े। ध्वजायुक्त कौरवोंकी अनेक सेनाके व्यूहको देखकर शत्रुनाशन अर्ज्जुनने विराटपुत्र उत्तरसे कहा, हे सारथे! तुम हमारे सोनेके लगामवाले घोड़ोंको शीघ्र हांको, क्योंकि हम इन कौरवोंसे शीघ्र युद्ध करना चाहते हैं। हे राजपुत्र! यह दुरात्मा सूतपुत्र कर्ण दूर्य्योधनके आश्रयसे अभिमानमें भर गया है, और हमसे इस प्रकार युद्ध करना करना चाहत है, जैसे हाथी हाथीसे; इस लिये तुम हमारे रथको इसीके आगे ले चलो। उसी समय राजा विराटके पुत्रने अपनी चतुरतासे सोनेके साजवाले बड़े घोड़ोंको इस प्रकार हांका कि वे कौरवोंकी सेनाके बीचसे निकलकर कर्णके रथके आगे पहुंचे। उसी समय अर्ज्जुनको क्रोधसे आते हुए देख कर्णकी रक्षाके निमित्त महारथ चित्रसेन; संग्राम जित, शत्रुसह और जय आदि वीरोंने अर्ज्जुनके ऊपर तीक्ष्ण बाण चलाये। उसी समय पुरुषवीर अर्ज्जुनने क्रोधमें भरकर अपने बाणोंसे उस रथ समूहको इस प्रकार नाश किया जैसे अग्नि ज्वालासे वनको भस्म करती है। उसी समय उस घोर युद्धमें महारथ अर्ज्जुनसे युद्ध करनेके लिये विकर्ण आया। विकर्ण महारथ भीमसेनके छोटे भाई अर्ज्जुन पर तीक्ष्ण बाण वर्षाने लगा। उसी समय अर्ज्जुनने अपने बाणोंसे विकर्णकी सोनेसे चित्रित विचित्र दृढ़ रोदेवाली धनुषको काटकर उसकी ध्वजाको गिरा दिया। ध्वजा और धनुषके कटनेसे विकर्ण बहुत घबड़ाये और युद्धको छोड़कर भागे। विकर्णको भागते तथा अपनी सेनाको नाश होते देख राजा शत्रुन्तपको महाक्रोध हुआ और उनके ऊपर तीक्ष्णबाण वरसाने लगा। जब अर्ज्जुनने देखा कि राजा शत्रुन्तप हमसे युद्ध करनेको आये, तब उनके शरीरमें पांच बाण और सारथीको दश बाण मारे। राजा शत्रुन्तप उन शरीरवेधी बाणोंके लगनेसे मरकर इस प्रकार पृथ्वीमें गिरे, जैसे पर्व्वत लगनेसे वृक्ष टूटकर गिरता है। जब महावीर कुरुकुल सिंह अर्ज्जुनने राजा शत्रुन्तपको मारा, तब कौरव सेनाके योद्धा इस प्रकार कांपने लगे जैसे अधिक वायु चलनेसे वनके वृक्ष कांपने लगते हैं। उसी समय अर्ज्जुनने सुन्दर वेषवाले इन्द्र तुल्य पराक्रमी अनेक वीरोंको मार कर पृथ्वीमें गिरा दिया। उस समय मरे हुए वीर ऐसे दीखने लगे जैसे हिमाचलमें उत्पन्न हुए बड़े बड़े हाथी। गाण्डीवधनुषधारी महावीर अर्ज्जुन योद्धाओंको मारते हुए उस युद्धमें सब ओर इस प्रकार घूमने लगे जैसे जेठ मासकी अग्नि। उस समय युद्धमें घूमते महारथ अर्ज्जुनकी ऐसी शोभा बढ़ी जैसे वसन्त ऋतुमें पत्ते उड़ाते हुए वायुकी। उसी समय अर्ज्जुनने वेगसे जाकर कर्णके छोटे भाईके घोड़ोंको मार-डाला और एक बाणसे संग्रामजितका शिर काट कर पृथ्वीमें गिरा दिया। भाईके मरनेसे विकर्त्तन पुत्र कर्णको महा क्रोध हुआ और विषैले सर्पके समान दांत पीस कर अर्ज्जुनकी ओर ऐसे दौड़ा, जैसे सिंह सिंहकी ओर दौड़ता है। कर्णने क्रोध करके अर्ज्जुनके शरीरमें बारह बाण मारे और विराट-पुत्रके हाथमें एक तथा अपने बाणोंसे अर्ज्जुनके घोड़ोंको व्याकुल कर दिया। अर्ज्जुन कर्णको क्रोध किये आते हुए देख उसकी ओर इस प्रकार वेगसे दौड़े जैसे विचित्र पंखवाले गरुड़ सर्पकी ओर दौड़ते हों। वे सब धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ महाबलवान और सब शस्त्रोंको सहनेवाले अर्ज्जुन और कर्ण परस्पर घोर युद्ध करने लगे और सब कौरव लोग उनका युद्ध देखने लगे। क्रोध भरे अर्ज्जुनने कर्णको युद्धमें खड़े देख क्षण भरमें

हंसते हंसते घोड़े रथ और सारथीके सहित बाणोंसे छा लिया, तब अर्ज्जनके बाणोंसे रथ और हाथियोंपर चढ़े हुए वीर गिरने लगे और भीष्म आदि सब कौरव बाणोंसे छिप गये। महावीर कर्ण भी अपने बाणोंसे अर्ज्जनके सब बाणोंको काटकर धनुष और बाण लेकर जलती हुई अग्निके समान प्रकाशित होने लगे। तब सब कौरव लोग कर्णको धन्यवाद देकर तथा ताली और शङ्ख, भेर बजाकर कूदने लगे और धनुषोंपर टङ्कार देने लगे। विशाल पंछवाले बानरयुक्त घोर ध्वजाको देखकर और गाण्डीव धनुषके शब्दको सुनकर तथा अर्ज्जुनको प्रसन्नता पूर्व्वक युद्धमें खड़े देख कर्ण गर्ज्जने लगे। अर्ज्जुनने उतनेही समयमें अपने बाणोंसे रथ, घोड़े और सारथीके सहित कर्णको व्याकुल कर दिया। फिर भीष्म, द्रोणाचार्य्य और कृपाचार्य्यको देखकर सिंहके समान गर्ज्जने लगे। वीर कर्णने भी अर्ज्जुनके ऊपर इस प्रकार बाणोंकी वर्षा करी जैसे मेघ जल वर्षाता है। उन दोनों वीरोंको घोर युद्धमें तीक्ष्ण बाण चलाते और रथोंमें बैठे लोगोंने इस प्रकार देखा जैसे मेघसे छिपे चन्द्रमा और सूर्य्यको। उसी समय शीघ्र बाण चलानेवाले कर्णने अर्ज्जनके चारों घोड़ोंपर चार चार बाण, तीन बाण विराटपुत्र उत्तरको और तीन बाण अर्ज्जुनको ध्वजामें मारे। इन बाणोंके लगनेसे कुरुकुल सिंह शत्रुनाशन अर्ज्जनको इस प्रकार क्रोध हुआ, जैसे निद्रासे जगे सिंहको। तब महात्मा अर्ज्जुनने शस्त्रोंसे व्याकुल होकर दिव्य बाणोंका प्रयोग किया और अपने बाणोंसे कर्णके रथको ऐसे छा लिया, जैसे सूर्य्य अपनी किरणोंसे लोकको छा लेता है। अर्ज्जनने अपने तीक्ष्ण बाणोंको तूणीरसे निकाल और कान पर्य्यन्त खींचकर सूतपुत्र कर्णको ओर चलाना आरम्भ किया। उन दोनोंका इस प्रकार युद्ध हुआ जैसे दो मतवारे हाथी लड़ते हैं। उस समय अर्ज्जुनके धनुषसे छूटे हुए तीक्ष्ण और वज्रके समान बाणोंसे कर्णके हाथ, जङ्घा, शिर, माथा, गला, मुख, और सब अङ्ग पूर्ण होगये विकर्त्तनपुत्र कर्ण अर्ज्जुनके तीक्ष्ण बाणोंसे व्याकुल होकर युद्धको छोड़ इस प्रकार भागी जैसे मतवारे हाथीसे हरकर हाथी भागता है।

५३ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! जब राधापुत्र कर्ण युद्धको छोड़के भागे, तब दुर्य्योधनादि वीर अपनी अपनी सेनामें खड़े होकर धीरे धीरे अर्ज्जुनके ऊपर बाण चलाने लगे, तब अर्ज्जुन उन सब वीरोंके बाणोंको इस प्रकार सहने लगे, जैसे समुद्रके वेगको तटका पर्व्वत। तब सफेद घोड़ेवाले महारथ अर्ज्जुन हंसकर दिव्य बाण चलाने लगे। उस समय अर्ज्जनके बाणोंसे दशोंदिशा इस प्रकार पूरित हो गई जैसे जगत सूर्य्यकी किरणोंसे। उस सेनामें कोई रथ, घोड़ा, हाथी और पदाति ऐसा न बचा जिसके शरीरमें अर्ज्जनके बाण न लगे हों। सब सेनावाले उत्तरके घोड़ा हांकने तथा अर्ज्जुनके दिव्य बाण, पराक्रम और शीघ्रताकी प्रशंसा करने लगे। उस युद्धमें शत्रुओंको नाश करते हुए अर्ज्जुनका ऐसा तेज बढ़ा जैसा प्रलय कालमें यमराजका। जलती हुई अग्निके समान तेजस्वी अर्ज्जनको शत्रु युद्धमें देख भी न सके। उस सेनाको उस समय ऐसी शोभा बढ़ी जैसे पर्व्वतके समोपवाले मेघोंको सूर्य्यकी किरण लगनेसे। हे जनमेजय! उस सेनाके वीर अर्ज्जुनसे बाण लगनेसे ऐसे शोभित हुए जैसे पुष्पोंसे अशोकवृच्छ। अर्ज्जुनके बाणोंसे अनेक फूलोंकी माला, सोनेकी माला, छत्र और ध्वजा कटकर आकाशमें उड़ने लगीं।

अनेक वीर अपना पक्ष निर्बल देखकर इधर उधर भागने लगे, अनेक घोड़े रथ रहित पहियोंको लेकर भागने लगे। अर्ज्जुनने कान, कोख, मुख, मर्म्म और सब शरीरोंमें वाण मारकर अनेक हाथियोंको पृथ्वीमें गिरा दिया। सेनाके अगाड़ी चलनेवाले मरे हुए हाथियोंसे वह भूमि इस प्रकार भर गई जैसे मेघोंसे आकाश। हे महाराज! जिस प्रकार प्रलयकालमें अग्नि सब स्थावर और जङ्गम जगतको भस्म करता है, तैसेही अर्ज्जुनभी सब कौरवोंकी सेनाको नाश करने लगे, उस समय अर्ज्जुनके तेज, धनुषके टङ्कार, ध्वजावासी राक्षसोंके शब्द और हनुमानके गर्ज्जनेसे दशोंदिशा पूर्ण हो गई। अनन्तर वह दुर्य्योधनकी सेना अर्ज्जुनके शङ्ख शब्दको सुनकर भयसे व्याकुल हो गई। जिस समय अर्ज्जुन युद्ध करनेको आये थे, उसी समय शत्रुओंकी शरीर शक्ति नाश हो चुकी थी, परन्तु वे लोग साहस मात्रसे युद्धकर रहे थे। अर्ज्जुनने अपने तीक्ष्ण वाणोंसे अकाशको इस प्रकार पूर्ण कर दिया, जैसे मांस खानेवाले पक्षियोंसे। उस समय अर्ज्जुनके महातेजस्वी वाणोंसे सब दिशा इस प्रकार पूर्ण हो गईं, जैसे सूर्य्यके तेजसे। किसी शत्रुको यह शक्ति न पड़ी कि अर्ज्जुनसे युद्ध करे, क्योंकि सब लोग शङ्का करते थे कि इनके पास जातेही हम मारे जायंगे। जैसे अर्ज्जुनके वाण युद्धमें कुण्ठित नहीं होते थे, तैसेही रथकी गति भी चलनेसे नहीं थकती थी। अर्ज्जुनने उस सेनाको इस प्रकार घबड़ा दिया, जैसे शेषनाग खेलते खेलते समुद्रके जीवोंको व्याकुल कर देते हैं। उस समय शत्रुओंको नाश करनेवाले महा पराक्रमी अर्ज्जुनके धनुषका शब्द सब ओर व्याप्त हो गया; थोड़ी दूरपर अर्ज्जुनके वाणोंसे मरे हुए हाथी इस प्रकार दीखने लगे। जैसे सूर्य्यकी किरणोंसे भरे मेघ। सब दिशाओंमें घूमते हुए अर्ज्जुनके वाणोंके मण्डल दीखने लगे, जैसे शरीर रहित वस्तु पर किसीको दृष्टि नही पड़ती है, तैसेही अर्ज्जुनके वाण बिना दीखे वीरोंपर नहीं चले। जैसे सहस्रो हाथियोंके चलनेसे बनके वृक्ष टूट जाते हैं और मार्ग बन जाता है, तैसेही अर्ज्जुनका रथ चलनेसे सेनामें मार्ग बन गया, अर्ज्जुनको देखकर सब शत्रु कहने लगे कि अर्ज्जुनका रूप धारण करके हम लोगोंको मारनेके लिये, इन्द्रही आये हैं। अपना नाश होते हुए देख शत्रुलोग कहने लगे कि इस युद्धमें अवश्य अर्ज्जुनकी विजय होगी, क्योंकि ये इस प्रकार शत्रुओंका नाश करते हैं, जैसे काल प्रजाका नाश करता है। अर्ज्जुनके वाणोंसे अर्ज्जुनके मारे हुए वीर अर्ज्जुनके मारे हुए वीरोंके समान पृथ्वीमें गिर गये; शत्रुओंके शिर अर्ज्जुनके वाणोंसे कटकर इस प्रकार पृथ्वीमें गिरने लगे, जैसे वृक्षोंके फल। अर्ज्जुनके भयसे सब शत्रुओंका वीर्य्यबल नष्ट होगया। अर्ज्जुन रूपी वायुसे प्रचालित होकर सेना रूपी मेघने रुधिरकी जलधारासे पृथ्वीकोभी दिया। रुधिर भरी धूलको लेकर वायुने सूर्य्यकी किरणोंको लालकर दिया। सूर्य्य आकाशके सहित ऐसा लाल हो गया, जैसा सन्ध्याके समय हो जाता है, सूर्य्य अन्त होनेको प्राप्त हुए, परन्तु अर्ज्जुनने लौटनेकी इच्छा न करी। महा पराक्रमी अर्ज्जुनने युद्ध करनेको खड़े सब धनुषधारी वीरोंके शरीरमें वाण मारे। द्रोणाचार्य्यके सत्तर, दुःसहके दश, अश्वत्थामाके आठ, दुःशासनके बारह, कृपाचार्य्यके तीन शान्तनुपुत्र भीष्मके साठ, राजा दुर्य्योधनको सौ और शत्रुनाशन कर्णके कानमें एक वाण मारा। सब धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ सब शस्त्रविद्याके जाननेवाले कर्णके शरीरमें वाण लगते ही और उनके रथ घोड़े तथा सारथी नाश होनेसे सब सेना भागने लगी। सेनाको भागते और

युद्ध में खड़े अर्ज्जुनका अभिप्राय जानकर उत्तर बोले, हे अर्ज्जुन! मुझ सारथीके सहित कौनसी सेनासे युद्ध करना चाहते हो, सो कहो, मैं उधर ही रथको ले चलूं।

अर्ज्जुन बोले, हे उत्तर! यह उत्तम व्याघ्रके चमड़ेकी लाल ध्वजा जहां बन्धी है और जहां एक नीली पताका लगी है, सो कृपाचार्य्यकी सेना है, तुम मुझे वहीं ले चलो आज मैं महा धनुषधारी कृपाचार्य्यको अपनी धनुष विद्या दिखाऊंगा। जिनकी ध्वजापर सोनेका बना सुन्दर कमण्डल लगा है, येही सब धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ हमारे गुरु द्रोणाचार्य्य हैं; हमहोका नहीं, बरन ये सब शस्त्रधारियोंके मान्य हैं, इस लिये तुम महावीर प्रसन्न द्रोणाचार्य्यकी प्रदक्षिणा करो। हम उनसे युद्ध करनेको भी उपस्थित हैं परन्तु जब पहले ये वाण मारेंगे तब हम भी मारेंगे, क्योंकि यही सनातन धर्म्म है, ऐसा करनेसे गुरुकी क्रोध नहीं होगा। इनकी समीपही जिनकी ध्वजापर धनुष बना है यही हमारे गुरुपुत्र महारथ अश्वत्थामा हैं, ये हमारेही नहीं बरन सब शस्त्रधारियोंके पूज्य हैं, तुम, इनके रथके पास जाकर प्रदक्षिणा करो। ये जो सजे हुई तीसरी रथ सेनाके मुखमें खड़े है, जो उत्तम कवच पहने हैं जिनकी ध्वजापर सर्प बना है, यही राजा धृतराष्ट्रके पुत्र श्रीमान् महाराज दुर्य्योधन हैं। हे वीर तुम हमारे रथको शीघ्र इनके रथके आगे ले चलो, क्योंकि ये महाराक्रमी और महा योद्धा हैं। द्रोणाचार्य्यके सब शिष्योंमें इनके समान शीघ्र शस्त्र चलाने वाला कोई नहीं है। मैं भी आज युद्धमें इनका शस्त्रविद्या दिखाऊंगा। जिनकी ध्वजापर हाथीका चिन्ह बना है, यही विकर्त्तनपुत्र कर्ण्ण हैं, इनको तुम पहलेसे भी जानते हो, इस दुरात्मा राधापुत्रसे जब यह हो, तब तुम अत्यन्त सावधान रहना; क्योंकि यह सदा अपनेको मेरे समान समझता है। जिनकी नीली धुजा पर पांचतारे बने हैं, जो कवच पहन कर महावज्र सहित रथमें बैठे हैं, जिनके रथमें सूर्य्य और चन्द्रमाके सहित धुजा लगी हैं, जिनके शिर पर यह निर्मल सफेद छत्र लगा है, जो महारथ हाथी और पताकासे पूरित सेनाके मुखमें मेघोंके बीचमें सूर्य्यके समान खड़े हैं, जिनका सोनेका कवच चन्द्रमा और सूर्य्यके समान जगमगा रहा हैं, जिनके सोनेका शिरत्राण देखकर मेरा हृदय कांपा जाता है, यही लक्ष्मीसे भरे हुए दुर्य्योधनके वशवर्त्ती हम सबके पितामह शान्तनुपुत्र भीष्म हैं, तुम पीछे इनके पास चलना, क्योंकि ये हमारे युद्धमें बिघ्न नहीं करेंगे, परन्तु इनसे युद्ध करते समय तुम सावधान होकर घोड़े हांकना।

५४ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! उस समय महा धनुषधारी कौरवोंकी सेनाकी ऐसी शोभा बढ़ी, जैसे वर्षाकालमें मन्द वायुसे चले हुए मेघोंकी। सेनाकी दोनों ओर घोड़ोंपर चढ़े महावीर, मतवाले हाथी अंकुशयुक्त महावतोंके सहित और विचित्र कवचधारी वीरोंके सहित खड़े थे। उसी समय विमानपर चढ़कर इन्द्र युद्ध देखनेको गये। उनके सङ्ग अश्विनीकुमार, मरुत, देवता, यक्ष, गन्धर्व्व और नाग अपने अपने विमानोंपर बैठके आये। उन सबके विमानोंसे आकाशकी ऐसी शोभा बढ़ी, जैसे नक्षत्रोंके उदय होनेसे आकाशकी शोभा बढ़ती है। उस समय कृपाचार्य्य और अर्ज्जुनका घोर युद्ध होने लगा। वे लोग दिव्य अस्त्रोंका प्रयोग करने लगे और देवता देखने लगे। इन्द्रके विमानमें एक करोड़ सोनेके खम्भे लगे थे, और बीचमें एक मणिका खम्भा लगा था। उन्हीपर उस विमानका वस्त्र तना था। वह

इच्छानुसार चलनेवाला दिव्य मणियोंसे भूषित विमान आकाशमें तैंतीस देवता, इन्द्र, गन्धर्व्व, राक्षस, सर्प, पितर, महाऋषि, राजा वसुमना, बलाच, प्रतर्द्दन, अष्टक, शिवि, ययाति, नहुष, गय, मनु, पुरु, रघु, भानु, कृशाश्व, सगर और राजा नल भी थे। इसी प्रकार अग्नि, शिव, चन्द्रमा, वरुण, प्रजापति, धाता, विधाता कुबेर, यम, अलम्बुश, उग्रसेन और तुम्बुरु आदिके विमान भी आये थे। वे सब विमान अपने अपने क्रमके अनुसार आकाशमें खड़े हो गये। समस्त देवता, सिद्ध और महाऋषि इस युद्धको देखनेको आये। उस समय देवतोंकी दिव्य मालाकी सुगन्धि सब दिशाओंमें पूरित हो गई। हे जनमेजय! वह युद्ध-भूमि उस समय ऐसी शोभित हुई जैसा वसन्तमें बन। उस समय देवतोंके दिव्य चत्र, वस्त्र, माला, और पंखे अत्यन्त शोभित होने लगी। सब दिशाओंसे धूल शान्त हो गई और दिव्य गन्धभरी वायु वीरोंको सेवा करने लगी। उस समय देवतोंको मणियोंके प्रकाशसे आकाश निर्म्मल हो गया और देवतोंके विमानोंके सहित इन्द्रका विमान शोभित होने लगा। पद्ममालाधारी महातेजस्वी इन्द्र युद्धको देखकर तृप्त नहीं होते थे।

५५ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजा जनमेजय! कौरवोंकी सेनाके व्यूहको देखकर कुरुकुल श्रेष्ठ अर्ज्जुनने उत्तरसे कहा, हे उत्तर! जिसकी ध्वजापर सोनेकी वेदी बनी है, उससे दक्षिणको ओर होकर चलो, वहीं कृपाचार्य्य हैं।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, अर्ज्जुनके ऐसे वचन सुन विराटपुत्र उत्तरने चांदीके समान रङ्गवाले घोड़ोंको हांका और अत्यन्त वेगसे चलकर शीघ्रही कौरवोंकी सेनाके समीप पहुंच गये, वे चन्द्रमाके समान निर्म्मल घोड़े अत्यन्त वेगसे चलकर शीघ्रही कौरवोंकी सेनाके समीप पहुंच गये, वे चन्द्रमाके समान निर्म्मल घोड़े अत्यन्त वेगसे चलते हुए ऐसे दीखने लगे मानो क्रोध करके कहींको जाते हों। उत्तरने कुरुसेनाके आगे पहुंचकर फिर वायुके समान अपने घोड़ोंको लौटाया घोड़ोंकी विद्याके तत्वको जाननेवाले उत्तरने इस प्रकार रथ हांका कि उसको देखकर कौरवोंके सब सारथी मोहित होगये। उत्तरने रथको कभी सेनासे बांयें, कभी दहिने इतनी शीघ्रतासे घुमाया कि जिससे सबको आश्चर्य्य होने लगा। निर्भय बलवान विराटपुत्रने थोड़ेही समयमें अपने रथको कृपाचार्य्यके दहिनी ओर पहुंचा दिया और वहां जाकर रथको रोक दिया। तब अर्ज्जुनने अपना नाम सुनाकर महा शब्द करनेवाला देवदत्त शंख बजाया उस शङ्खका ऐसा घोर शब्द हुआ जैसा पर्व्वत फटनेसे होता है। तब सब कौरवोंने सेनाके सहित उस शब्दको बहुत प्रशंसा करी। वह शब्द इस प्रकार आकाशमें व्याप्त हो गया जैसे वज्रका शब्द। उसी समय महा पराक्रमी महावीर कृपाचार्य्यने क्रोध करके अर्ज्जुनसे युद्ध करनेको इच्छा करी। महारथ कृपाचार्य्यने भी अपने शङ्खको बजाया, उस शब्दसे तीनों लोक पूरित हो गये। तव द्रोणाचार्य्यने अपने धनुषपर टङ्कार दिया। वे दोनों रथ युद्धमें शरजालके मेघके समान शोभित होने लगे। उसी समय कृपाचार्य्यने शत्रु नाशन अर्ज्जुनके शरीरमें अत्यन्त तीक्ष्ण मर्म्मभेदी दस बाण मारे। अर्ज्जुनने भी जगत विख्यात गाण्डीव धनुषपर चढ़ाकर अनेक मर्म्मभेदी बाण चलाये। कृपाचार्य्यने उन मांस खानेवाले बाणोंको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे मार्गहीमें काट दिया। तब महारथ अर्ज्जुनने महाक्रोध करके अपने बाणोंसे सब दिशाओंको छा लिया, उनके बाणोंसे ऐसा दीखने लगा, जैसे नवीन आकाश बन जाता है। अर्ज्जुनने जब अपनी इस विचित्र

बाणविद्याको प्रकाशित किया और कृपाचार्य्य उन बाणोंसे ढक गयेतब कृपाचार्य्य को महाक्रोध हुआ और अग्निकी ज्वालाके समान सहस्रोंबाणोंसे अर्ज्जुनके बाणोंको काटकर महा तेजस्वी अर्ज्जुनकी ओर दस सहस्र बाण चलाने और गर्ज्जने लगे। महापराक्रमी अर्ज्जुनने भी गाण्डीवपर बाणोंको चढ़ाकर इतनी शीघ्रतासे बाण चालाये कि कृपाचार्य्यके सब बाण कट गये। फिर अर्ज्जुनने कृपाचार्य्यके घोड़ोंके चार बाण मारे उन सर्पोंके समान बाणोंके लगनेसे घोड़े कृपाचार्य्यको लेकर युद्धसे भाग गये। कृपाचार्य्यको युद्धसे भागते देख और अपना गुरु जान अर्ज्जुनने उन्हें छोड़ दिया। थोड़ी दूर जाकर कृपाचार्य्य फिर अपने रथको लौटाकर अर्ज्जुनके शरीरमें दस मर्म्मभेदी बाण मारे। तब अर्ज्जुनने एक तीक्ष्ण बाणसे कृपाचार्य्यका धनुष काट दिया और दश बाणोंसे उनका कवच काट दिया। फिर उनके शरीरमें बाण मारना आरम्भ किया ; कवच कटकर गिरते समय कृपाचार्य्य की ऐसी शोभा बढ़ी जैसे केंचुलीसे निकलते हुए सर्पकी। उसी समय कृपाचार्य्यने दूसरे धनुषको लेकर इतनी जलदी रोदा चढ़ाया कि सबको आश्चर्य्य होने लगा, अर्ज्जुनने अपने तीक्ष्ण बाणसे उस धनुषकोभी काट दिया। इस प्रकार कृपाचार्य्यने अनेक धनुष लिये और शत्रुनाशन अर्ज्जुनने सब काट दिये। जब प्रतापी कृपाचार्य्यके पास धनुष न रहे, तब वज्रके समान बरछी लेकर अर्ज्जुनकी ओर चलाई। अर्ज्जुनने उस बिजलीके समान सुवर्ण भूषित शक्तिको आते देख दस बाणोंसे उसे काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया। वह शक्ति दस टुकड़े होकर पृथ्वीमें गिर पड़ी। इतनेही समयमें कृपाचार्य्यने अपने दूसरे धनुषपर रोदा चढ़ा लिया था। तब कृपाचार्य्यने अर्ज्जुनके शरीरमें तीक्ष्ण दश बाण मारे। तब अर्ज्जुनने भी क्रोध करके अग्निके ज्वालाके समान प्रकाशित तेरह बाण कृपाचार्य्यके शरीरमें मारे। अर्ज्जुन एक बाणसे कृपाचार्य्यके रथके पहिये, चारसे चारों घोड़े और एकसे कृपाचार्य्यके सारथीको काट डाला। फिर कई बाणोंसे रथको काट दिया, एकसे उनको धनुष काटके गिरा दो। फिर इन्द्रतुल्य अर्ज्जुनने हंसकर एक वज्रतुल्य बाण कृपाचार्य्यके हृदयमें मारा। जब कृपाचार्य्यके रथ, सारथी, घोड़े और धनुष काटे गये, तब उन्होंने एक भारी गदा अर्ज्जुनकी ओर फेंकी, अर्ज्जुनने उस सुवर्णखचित गदाको मार्गहीमें बाणोंसे काट दिया। जब इस प्रकार कृपाचार्य्य और अर्ज्जुनका युद्ध होने लगा। तब अनेक योद्धा कृपाचार्य्यकी रक्षाके लिये आये और अर्ज्जुनके ऊपर बाण चलाने लगे। उसी समय विराटपुत्र उत्तरने अपने रथको बांयीं ओर घुमाकर सब योद्धाओंका मार्ग रोक दिया तब उन सब योद्धाओंने रथरहित कृपाचार्य्यको एक रथपर बिठलाकर कुन्तीपुत्र अर्ज्जुनके आगेसे हटा दिया।

५५ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! जब कृपाचार्य्य युद्धसे चले गये, तब अपराजित महापराक्रमी द्रोणाचार्य्य धनुषबाण लेकर अर्ज्जुनसे युद्ध करनेको आये। जब अर्ज्जुनने सोनेके रथमें बैठे हुए गुरु द्रोणाचार्य्यको युद्ध करनेके लिये आते देखा तब उत्तरसे यों कहने लगे।

अर्ज्जुन बोले, जिनको धजापर पताकाओंके सहित ऊंचे दण्डपर सोनेको वेदी बनी है, उन्होंके आगे तुम हमको ले चलो, वही द्रोणाचार्य्यकी सेना है, हम उन्हीसे युद्ध करेंगे। जिनके रथमें परम शिक्षित, सुन्दर, चिकने लम्बे और मूंगेके समान रंगवाले बड़े बडे घोड़े लगे हैं, वेही महाबाहु, महातेजस्वी, रूप और बलसे भरे सर्व्वलोक विख्यात प्रतापो

द्रोणाचार्य्य हैं। यह बुद्धिमें शुक्रकी तुल्य, तथा नीति, बुद्धि, वेद-विद्या और ब्रह्मचर्य्यमें बृहस्पतिकी तुल्य हैं। हे शत्रुनाशन! यह समस्त धनुर्वेद और वाणविद्याको विधिपूर्व्वक जानते हैं। इनमें क्षमा, दम (इन्द्रियोंको वशमें करना) सत्य, अनृशंस (सबसे यथा योग्य विद्यापूर्व्वक व्यवहार करना) और कोमलता आदि धर्म्मके दसो लक्षण बसते हैं। इन्हीं महाभाग द्रोणाचार्य्यके सङ्ग हम युद्ध करना चाहते हैं, इस लिये हमारे रथको शीघ्र उनके आगे ले चलो।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, अर्ज्जुनके ऐसे वचन सुन उत्तरने सुवर्ण भूषित घोड़ोंको द्रोणाचार्य्यके रथकी ओर हांका। जब द्रोणाचार्य्यने महारथ अर्ज्जुनको अपनी ओर आते देखा, तब वे भी उनकी ओर इस प्रकार दौड़े जैसे मतवाला हाथी मतवाले हाथीकी ओर जाता है। तब द्रोणाचार्य्य ने अपने अनेक भेरीके समान शङ्खको बजाया उस समुद्रके समान शब्दको सुनकर सब लोग कांपने लगे। जब सब सेनावालोंने अर्ज्जुन और द्रोणाचार्य्यको भिड़ते देखा, तब आश्चर्य्य करने लगे। दोनो महापराक्रमी, शस्त्रविद्याके जाननेवाले, मनस्वी अजेय गुरु चेलोंको युद्धमें भिड़ते देख कौरवोंकी सेना कांपने लगी। जब महारथ अर्ज्जुनका रथ द्रोणाचार्य्यके रथके समीप पहुंचा, तब महाबलवान और महाबाहु अर्ज्जुनने शान्ति पूर्व्वक गुरुको प्रणाम किया और मीठे वचनसे कहने लगे, हे आचार्य्य! हम लोगोंने बहुत दिनतक शत्रुओंका नाश करनेके लिये बनमें वास किया है, इस लिये आपको हमारे ऊपर क्रोध करना उचित नहीं है, हे पापरहित! आपको युद्धमें कोई नहीं जीत सकता और हमारा यह भी निश्चय है कि हम पहले आपपर शस्त्र नहीं चलावेंगे। इस लिये आपही हमारे ऊपर पहले वाण छोड़िये।

अर्ज्जुनके ऐसे वचन सुन, द्रोणाचार्य्यने अर्ज्जुनके बीसवाण मारे। अर्ज्जुनने उनको मार्गहीमें काट दिया। तब द्रोणाचार्य्यने शीघ्रतासे अर्ज्जुनके रथको सहस्रों वाणोंसे छा लिया और उनके सफेद घोड़ोंको भी शिला पर घिसे हुए तीक्ष्णवाणोंसे व्याकुल कर दिया। द्रोणाचार्य्य इस प्रकार वाण छोड़ते थे, मानो अर्ज्जुनको क्रोध करानेके लिये छोड़ते हैं। तब द्रोणाचार्य्य और अर्ज्जुनका युद्ध होने लगा। तब दोनो समान वाण छोड़ते लगे; वे दोनों दिव्य वाणोंके जाननेवाले वायुके समान वेगवान महातेजस्वी जगत् विख्यात वीर अपने वाणोंके जालसे राजोंको मोहित करने लगे। वहां जो योद्धा खड़े थे, वे सब विस्मित होकर साधु साधु कहने लगे, और कहने लगे कि अर्ज्जुनको छोड़कर द्रोणाचार्य्यसे और कौन युद्ध कर सकता है? क्षत्रिय धर्म्म बड़ा कठिन है, जहां गुरु और शिष्यका भी युद्ध होने लगा। वे दोनों वीर महाबाहु अपराजित द्रोणाचार्य्य और अर्ज्जुन परस्पर वाण छोड़ने लगे, तब महा पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने क्रोध करके सोनेसे चित्रित घोर धनुषको खींचकर अर्ज्जुनके शरीरमें वाण मारे। द्रोणाचार्य्यने शिलापर घिसे हुए महा तेजस्वी शीघ्र चलनेवाले वाण अर्ज्जुनके शरीरमें मारे। इसी प्रकार अर्ज्जुनने भी दिव्य गाण्डीव धनुषपर चढ़ाकर शत्रुनाशन युद्ध करनेके योग्य विचित्र वाण छोड़कर द्रोणाचार्य्यके सब वाणोंको काट दिया। अर्ज्जुनको इतने शीघ्र वाणोंको चलाते देख सबको आश्चर्य्य होने लगा। उस समय अर्ज्जुन सब दिशाओंमें वाणोंकी वर्षा करते हुए घूमने लगे। उनके वाण सब आकाशमें छा गये और द्रोणाचार्य्य इस प्रकार छिप गये, जैसे कुहासेमें सूर्य्य छिप जाते हैं। उस समय द्रोणाचार्य्यकी ऐसी शोभा बढ़ी, जैसे सब ओरसे जलते हुए पर्व्वतकी। महा पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने अपने

वज्रके समान धनुगपर टङ्कार देकर अग्निके समान वाणोंसे अर्ज्जुनके सब वाण काट दिये। तब उस युद्धमें ऐसा घोर शब्द हुआ, जेसा बांसोंके जलनेसे होता है। द्रोणाचार्य्यके धनुषसे छूटे हुए वाणोंसे सब दिशा और सूर्य्यका तेज छिप गया। उस समय सोनेके पंखवाले विचित्र वाणोंके अनेक समूह आकाशमें दीखने लगे, द्रोणाचार्य्यने एक वाणमें दूसरा वाण बेध दिया, इससे आकाशमें एक बड़े दण्डके समान वाण दीखने लगा, इस प्रकार वे दोनो शूर वीर सुवर्ण चित्रित वाणोंको छोड़ने लगे, उनके वाणोंसे आकाश इस प्रकार छा गया। जैसे आकाश बिजलियोंसे छा जाता है। उन दोनोंके विचित्र वाण आकाशमें इस प्रकार घूमने लगे, जैसे शीत कालमें हंस घूमते हैं। इन दोनों महात्माओंका ऐसा घोर युद्ध हुआ, जैसे पहले समयमें वृत्रासुर और इन्द्रका हुआ था। ये दोनों मतवाले हाथियोंके समान वाणरूपी युद्ध करने लगे। तब दोनों वीरोंने युद्धमें दिव्य अस्त्रोंका प्रयोग करना आरम्भ किया। जब द्रोणाचार्य्यने दिव्य अस्त्र चलाने आरम्भ किये तब विजय; करनेवालोंमे श्रेष्ठ अर्ज्जुनने उन सबको काट दिया। महा पराक्रमी अर्ज्जुनने अपने पराक्रमको दिखलाकर आकाशको वाणोंसे छा लिया, जब द्रोणाचार्य्यने देखा कि पुरुषसिंह महा तेजस्वी अर्ज्जुन हमारे ऊपर वाण छोड़ रहा है, तब वे भी विचित्र शस्त्रोंसे अर्ज्जुनके सङ्ग खेलने लगे। तब अर्ज्जुनने दिव्य अस्त्र चलाये, तब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने भी उनको दिव्य अस्त्रोंसे काट दिया। उन दोनोंका ऐसा घोर युद्ध हुआ जैसा देवता और दानवोंका होता है। इन्द्र वायु और अग्निके अस्त्रभी अर्ज्जुनने चलाये, द्रोणाचार्य्यने उनको भी काट दिया। इन दोनोंके वीरोंके तीक्ष्ण वाणोंसे; आकाश पूरित हो गया, अर्ज्जनके धनुषसे छूटे हुए वाणोंका वज्रके समान शब्द होने लगा; उस समय हाथी, घोड़े और मनुष्य रुधिरसे भीगकर ऐसे दीखने लगे, जैसे फूले टेसू। अनेक विचित्र बाजूबन्दयुक्त महारथोंके हाथ कटकर पृथ्वीमें गिर गये। अनेक सोनेको कवच और ध्वजा पृथ्वीमें गिर गईं। अर्ज्जुनके वाणोंसे अनेक योद्धा पीड़ित होकर पृथ्वीमें गिर गये। द्रोणाचार्य्य और अर्ज्जुन दृढ़ धनुषोंपर टङ्कार देते हुए परस्पर वाण चलाने लगे, और एक दूसरेके वाणोंको काटनेकी इच्छासे क्रोध करने लगे। उन दोनोंका घोर युद्ध बलि और इन्द्रके युद्धके समान हुआ। उन दोनोंने इस घोर युद्धमें अपने प्राणोंको छोड़नेकी इच्छासे तीक्ष्ण वाण चलाना आरम्भ किया। उसी समय आकाशवाणी हुई कि द्रोणाचार्य्य को धन्य है, जो अर्ज्जुनसे युद्ध कर रहे हैं। शत्रुनाशन महा पराक्रमी, दृढ़हस्त, दैत्यादिक शत्रुओंको जीतनेवाले महारथ अर्ज्जुनके घोर, तीक्ष्ण शीघ्र और दूर वाण चलानेको देखकर द्रोणाचार्य्य आश्चर्य्यित हो गये। अनन्तर अर्ज्जुनने दिव्य गाण्डीव धनुषको खींचकर पुनः वाण चलाना आरम्भ किया। अर्ज्जुनने इस प्रकार वाण वर्षाये जैसे वृक्षोंपर छोटे कीड़े गिरते हैं। उनकी शीघ्रताको देख सब लोग साधु साधु कहने लगे। अर्ज्जुनके वाणोंके बीचमें जानेकी वायुकी भी शक्ति न हुई। अर्ज्जुन कब वाण निकालते हैं, कब चढ़ाते हैं, और कब छोड़ते हैं, इसको कोई न जान सका। उस घोर युद्धमें अर्ज्जुनने अत्यन्त शीघ्रवाण चलाये। उसी समय अर्ज्जुनके एक सहस्र वाण एक बार द्रोणाचार्य्यके रथपर गिरे। जिस समय अर्ज्जुनके वाणोंसे द्रोणाचार्य्य व्याकुल हुए, तब कौरवोंकी सेनामें हाहाकार होने लगा। अर्ज्जनकी इस शीघ्रताको देख अप्सरा, गन्धर्व्व, और इन्द्र भी उनकी प्रशंसा करने लगे। उसी समय द्रोणाचार्य्यके पुत्र अश्वत्थामा

रथ और सेनाके सहित द्रोणाचार्य्यकी रक्षा करनेको और अर्ज्जुनको निवारण करनेको आये। अश्वत्थामा भी अपने हृदयसे महात्मा अर्ज्जुनके वाणोंकी प्रशंसा करने लगे, पर महाक्रोध करके अर्ज्जुनके ऊपर इस प्रकार वाण वर्षाने लगे जैसे मेघ जल बर्षाता है। उसी समय अर्ज्जुनने द्रोणाचार्य्यको जानेका समय देकर अपने रथको अश्वत्थामाकी ओर चलाया। तब द्रोणाचार्य्य इस समयको पाकर युद्धसे छूट गये परन्तु उनको धूजा और कवच कट गये थे, तथा शरीरमें भी बहुत घाव लगे थे।

५६ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! जब अश्वत्थामा अर्ज्जुनसे युद्ध करनेको उपस्थित हुए तब अर्ज्जुनने भी उनसे युद्ध करनेकी इच्छा करी। अर्ज्जुनने इस प्रकार अश्वत्थामाको रोका, जैसे बर्षते हुए मेघको वायु। इन दोनोंका युद्ध देवता और राक्षसोंके समान हुआ। इस युद्धमें ऐसे वाण चले, जैसे इन्द्र और वृत्रासुरके युद्धमें चले थे। उस समय सूर्य्य छिप गये और वायु चलनेसे रुक गया, सब आकाश वाणोंसे पूरित हो गया। वाणोंके परस्पर भिड़नेसे ऐसा चट चट शब्द होने लगा जैसे जलते हुए वासोंका होता है। अर्ज्जुनने अपने वाणोंसे अश्वत्थामाके घोड़ोंको नाशकर दिया, उनको कोई दिशा न दीखने लगी। तब महाक्रमी अश्वत्थामाने अर्ज्जुनके सूक्ष्म छिद्रको पाकर अपने वाणोंसे उनको धनुषका रोदा काट दिया। अश्वत्थामाका यह अमानुष कर्म देखकर सब देवता उनको प्रशंसा करने लगे। द्रोणाचार्य्य, महारथ कृपाचार्य्य, भीष्म और कर्णादि सब वीर उनको साधु साधु कहने लगे। तब अश्वत्थामाने अपने श्रेष्ठ धनुषको खींचकर अर्ज्जुनके हृदयमें अनेक वाण मारे। तब अर्ज्जुनने हंसकर अपने धनुषपर शीघ्र दूसरा रोदा चढ़ाया, तब अर्ज्जुनने अपने माथेके पसीनेसे उस रोदेको भिगोकर इस प्रकार युद्ध करना आरम्भ किया, जैसे मतवाला हाथी मतवाले हाथीसे लड़ता है इन दोनों जगत विख्यात महावीरोंका ऐसा घोर युद्ध हुआ, कि उसको देखनेसे वीरोंके रोंवे खड़े होने लगे। इन दोनों वीरोंका युद्ध देखकर कौरव लोग आश्चर्य्य करने लगे। ये दोनों परस्पर जलती हुई अग्नि और बिढैले सर्पके समान वाण चलाने लगे। अर्ज्जुनके दोनों तूणीर अक्षय थे, अर्थात उनके वाण कभी नहीं घटते थे, इसीसे अर्ज्जुन पर्व्वतके समान अचल होकर युद्ध करने लगे। शीघ्र चलानेके कारण अश्वत्थामाके सब वाण समाप्त होगये, इसीसे अर्ज्जुन युद्धमें अधिक रहे। उसी समय कर्ण धनुष खींचकर अर्ज्जुनके आगे युद्ध करनेको आये। अश्वत्थामाको हटते देख कौरवोंकी सेनामें हाहाकार शब्द होने लगा। जब अर्ज्जुनने उस धनुषको ठङ्कारको ओर देखा, तो कर्णको देख महाक्रोधसे पूरित हो गये। अर्ज्जुनने अपने नेत्रोंको फैलाकर कर्णकी ओर इस प्रकार देखा मानो ये उसको भस्म कर देंगे। जब अर्ज्जुन युद्धसे विमुख हुए अर्थात अश्वत्थामाको छोड़ कर्णसे युद्ध करनेको चले, तब सब लोग प्रसन्न हुए। शत्रुनाशन महाबाहु अर्ज्जुन द्रोणपुत्र अश्वत्थामाको छोड़ कर्णकी ओर वेगसे दौड़े, उस समय क्रोधके मारे अर्ज्जुनके नेत्र लाल हो गये थे। तब अर्ज्जुनने कर्णसे युद्ध करनेकी इच्छासे ऐसा कहा।

५७ अध्याय समाप्त।

अर्ज्जुन बोले, हे कर्ण! तुमने जो सभामें अपनी बहुत प्रशंसा करी थी कि युद्धमें

हमारे समान कोई नहीं है, सो दिन आज आगया। आज तुम हमसे युद्ध करके जानोगे, कि हम बहुत निर्ब्बल हैं, और फिर किसीका निरादर नहीं करोगे। तुमने जो केवल वचनसे अपनी प्रशंसा करी थी, और धर्म्मको छोड़ दिया था, सो कर्म्म करना आज बहुत कठिन होगा। हे राधापुत्र! तुमने जो मेरे पोछे कहा था, सो कर्म्म आज कौरवोंके बीचमें करके दिखाओ। सभामें दुष्ट लोगोंने द्रौपदीको जो दुःख दिया था, आज उसका फल तुमको प्राप्त होगा। मैंने जो धर्म्मके वशमें होकर पहले तुम्हारे ऊपर क्षमा करी थी, उस क्रोधका फल आज प्रगट करूंगा। हमने जो बारहवर्ष वनमें बिताये हैं, उन सबका फल आज तुम पाओगे। हे दुर्बुद्धे! हे कर्ण! आओ, आज तुम हमारे सङ्ग युद्ध करो और ये सब कौरव लोग देखें।

कर्ण बोले, हे कुन्तीपुत्र! तुम जो कुछ वचनसे कहते हो, सो कर्म्मसे करके दिखाओ। हमें जान पड़ता है, कि तुम खाली वचनहीसे कहते हो, कर्म्मसे नहीं कर सकते। तुमने जो पहले क्षमा करी थी, सो असमर्थोंको ऐसाही करना चाहिये; आज हम तुम्हारे पराक्रमको युद्धमें देखेंगे। तुम जैसे क्षमा करनेके समय धर्म्ममें बन्धे थे, वैसेही अबभी बन्धे हो। परन्तु तुम अपनेको छूटा हुआ मानते हो। यदि तुमने अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार बनवास किया, तो तुम निश्चय धर्म्म और अर्थके जाननेवाले हो; तथा उसी क्लेशको स्मरण करके हमसे युद्ध करना चाहते हो। हे अर्ज्जुन! यदि साक्षात इन्द्र भी तुम्हारी ओर होकर हमसे युद्ध करें तौभी हम कुछ भय नहीं करते। हे कुन्तीपुत्र! तुम्हारी बहुत दिनसे इच्छा थी कि हम कर्णसे युद्ध करें, सो आज हमारा पराक्रम देखो।

अर्ज्जुन बोले, हे राधापुत्र! तुम अभी हमारे आगेसे युद्ध छोड़कर भाग गये थे, इसीसे अभी तक जीते बचे हो। तुम्हारे भाईको हमने युद्धमें मार डाला, जगतमें अपने निमित्त भाईको नाश कराकर तुम्हारे सिवा और कौन गर्ज्ज सकता है?

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! अपराजित अर्ज्जुनने कर्णसे ऐसा कहकर अपने धनुषपर वाण चढ़ाकर कर्णके शरीरमें मारने आरम्भ किये। महारथ कर्ण भी प्रसन्न होकर उनको ग्रहण करने लगे, और अर्ज्जुनके ऊपर इस प्रकार वाण बर्षाने लगे जैसे महामेघ जल बर्षाता है। कर्णके वाणोंके जाल सब ओर छा गये और अर्ज्जुनके घोड़े वाणोंसे व्याकुल हो गये। तब अर्ज्जुनने क्रोध करके कर्णके तूणीरके सूतको तीक्ष्ण वाणसे काट दिया। तब कर्णने दूसरा वाण निकालकर अर्ज्जुनके हाथमें मारा, उस वाणके लगनेसे अर्ज्जुनकी मुट्ठी शिथिल हो गई। अनन्तर अर्ज्जुनने कर्णके धनुषको काट दिया। तब कर्णने अर्ज्जुनके मारनेको शक्ति चलाई। अर्ज्जुनने उसको भी वाणोंसे काटडाला। अनन्तर अर्ज्जुनने अपने तीक्ष्ण और दृढ़ वाणोंसे कर्णके घोड़ोंको मारकर पृथ्वीमें गिरा दिया और एक महातेजस्वी तीक्ष्ण वाण कर्णके हृदयमें मारा, वह वाण कर्णके कवचको काटकर उनके हृदयमें लगा। उसके लगनेसे कर्णको ऐसी मूर्छा हुई कि उन्हें कुछ ज्ञान न रहा। वह वाण फिर कर्णके हृदयमेंसे निकल कर अर्ज्जुनके पास आ गया। कर्णको मूर्च्छित देख अर्ज्जुन और महारथ उत्तर गर्ज्जने लगे।

५८ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! जब अर्ज्जुनने विकर्तनपुत्र कर्णको जीत लिया, तब उत्तरसे बोले, हे उत्तर! तुम हमारे

रथको उस सेनाके आगे ले चलो जिसमें सोनेका ताड़ दीखता है उसी सेनामें हमारे पितामह शान्तनुपुत्र भीष्म हैं; वे हमसे युद्ध करनेकी इच्छा करते हैं। उस रथ हाथी, घोड़े और रथोंसे भरी हुई, भीष्मकी सेनाको देख उत्तरने हंसकर अर्ज्जुनसे कहा, हे वीर! मैं बाणोंके घावसे व्याकुल हो रहा हूं, मेरा शरीर कांपता है, मन डरता है, इस लिये अब घोड़ोंको नहीं हांक सकता हूं; तुम्हारे और कौरवोंके दिव्य अस्त्रोंके प्रभावसे मुझे सब दिशा चलायमानही दीखती हैं; मैं मांस, रुधिर और चर्बीकी गंधसे मूर्च्छित हुआ जाता हूं, युद्ध देखते देखते मेरा मन घबड़ा गया है; मैंने कभी पहले ऐसा घोर युद्ध नहीं देखा था; गदा, शङ्ख, वीर, हाथी और वज्रके समान तुम्हारे धनुषका शब्द सुनकर मेरे मन और कायाकी शक्ति नष्ट हो गयी है; मेरा मन मूर्खोंके समान हुआ जाता है, हे वीर! चक्रके समान खिंचते हुए, तुम्हारे धनुषको देखकर दृष्टि नष्ट हुई जाती है, और हृदय फटा जाता है, युद्धमें क्रोधी सिंहके समान शरीर देखकर मुझे भय लगता है; हमको यह नहीं जान पड़ता है कि तुम कब धनुषपर बाण चढ़ाते हो, कब छोड़ते हो; मेरे प्राण कांप जाते हैं, पृथ्वी घूमतीसी दीखती है; मैं कोड़ा और लगाम कोभी नहीं सम्हाल सकता हूं।

अर्ज्जुन बोले, हे पुरुषश्रेष्ठ! तुम कुछ मत डरो और मनको वशमें रक्खो; क्षत्रीलोग अनेक आश्चर्य्य-युक्त कर्म्म करते हैं, हे राजपुत्र! तुम जगतविख्यात शत्रुनाशक विराट-वंशमें उत्पन्न हुए हो, इस लिये डरो मत। हे राज-पुत्र! तुम अपनी बुद्धिको थिर करके युद्धमें हमारे घोड़ोंको हांको तो हम युद्ध करेंगे।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, पुरुषश्रेष्ठ महारथ अर्ज्जुन विराटपुत्रसे ऐसा कह, फिर बोले, तुम शीघ्र हमारे रथको भीष्मके आगे ले चलो; हम उनके धनुष और रोदेको काटेंगे, मैं जब दिव्य बाणोंसे इनके बाणोंको काटूंगा तब मेरे बाणोंकी ऐसी शोभा होगी, जैसे आकाशमें बिजलीकी होती है; सुवर्णसे खिंचे हुए मेरे गाण्डीव धनुषको कौरव लोग कभी दहने कभी बाये हाथोंमें देख और मुझे अकेला देखके अनेक प्रकारसे विचार कर रहे हैं; मैं अभी मरे हुए हाथी रूपी जलजन्तुओंसे भरी परलोककी ओर रहनेवाली रुधिरकी नदी बहा दूंगा; मैं अपने तीक्ष्णबाणोंसे हाथ पैर शिर और कण्ठरूप शाखा-युक्त कौरव रूपी वंशको काटूंगा; जिस समय मैं धनुष धारण करके कौरवोंकी सेना नाश करूंगा उस समय मुझे सैकड़ों मार्ग इस प्रकार मिलने लगेंगे, जैसे वनमें अग्निको मिलता है। सब सेनाको तुम मेरे बाणोंसे पीड़ित हुई देखोगे; मैं अपनी शस्त्रविद्याको तुम्हे दिखाना चाहता हूं। तुम कठिन और साधा-रण स्थानोंमें सावधान होकर रथको हांको; मैं आकाशमें उड़ते हुए, पर्व्वतोंको भी अपने बाणोंसे काट सकता हूं; मैंने इन्द्रकी आज्ञासे एक लाख पौलोम और कालखञ्ज नामा राक्ष-सोंको मारा था; मैंने इन्द्रसे दृढ़मुट्ठी और ब्रह्मासे शीघ्र बाण चलानेकी विद्या शीघ्र प्राप्त करी है; मैं घोर सङ्कटमें भी युद्ध कर सकता हूं, मैंने समुद्रके पार जाकर हिरण्यपुरवासी महा धनुषधारी साठ हजार दैत्योंको जीता था; तुम मेरे बाणोंसे व्याकुल होकर गिरते हुए, कौरवोंके समूह देखो; जैसे घोर वायु लगनेसे नदीके किनारे कटते हैं, वैसे ध्वजारूपी वृक्ष पदाति रूपी तिनके और रथरूपी सिंहसे भरे हुए, कौरवरूपी बनको अपनी अस्त्र अग्निसे जलाऊंगा; मैं अकेलाही रथमें बैठे हुए महा-बलवान कौरवोंके वीरोंको इस प्रकार गिरा-ऊंगा जैसे वज्रधारी इन्द्र राक्षसोंको गिराते हैं; मैंने शिवसे रुद्रास्त्र, वरुणसे वारुणास्त्र, अग्निसे आग्नेयास्त्र और वज्र आदि सब शस्त्र

इन्द्रसे सीखे हैं; मैं मनुष्यरूपी सिंहोंसे रचित धृतराष्ट्रपुत्ररूपी नावको काट दूंगा; तुम अपने भयको दूर करो।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, जब अर्जुनने विराट-पुत्र उत्तरको इस प्रकार धैर्य्य दिया तब उसने भीष्मकी सेनाकी ओर रथ चलाया। जब गङ्गापुत्र भीष्मने देखा कि कौरवांको जीतता हुआ, अर्जुन मेरी ओर चला आता है, तब उन्होंने अपने वाणोंसे अर्जुनको रोका। उसी समयमें अर्जुनने अपने वाणोंसे उनके वाण काटकर भीष्मकी ध्वजाको पृथ्वीमें गिरा दिया। उसी समय महाबाहु अर्जुनसे युद्ध करनेको महारथ महाधनुषधारी दुःशासन, विकर्ण, दुःसह और विविंशति आये। उन्होंने महा धनुषधारी अर्जुनको अपने वाणोंसे रोका। अर्जुनने भी अपने वाणोंसे चारोंको निवारण कर दिया। उसी समय दुःशासनने विराट-पुत्र उत्तरके शरीरमें एक वाण मारा और दूसरा वाण अर्जुनके हृदयमें मारा; तब अर्जुनने भी शीघ्रतासे दुःशासनका सोनेसे खिंचा हुआ धनुष काट दिया; फिर पांच वाण दुःशासनके हृदयमें मारे। तब दुःशासन अर्जुनके वाणसे पीड़ित होकर युद्धको छोड़कर भाग गया। तब धृतराष्ट्र-पुत्र विकर्ण शत्रुनाशन अर्जुनके ऊपर तीक्ष्ण वाण चलाने लगे; तब कुन्तीपुत्र अर्जुनने भी अपना एक वाण विकर्णके शरीरमें मारा। विकर्ण उस वाणके लगतेही पृथ्वीमें गिर पड़ा; उसी समय दुःसह और विविंशति अर्जुनकी ओर दौड़े। उसी समय वे दोनों अर्जुनके ऊपर तीक्ष्ण वाण वर्षाने लगे। उसी समय अर्ज्जुनने एकही वार दोनोंको व्याकुल कर दिया। जब दोनों राजपुत्रोंके घोड़े मर गये, तब वे दोनों दूसरे रथोंपर चढ़कर युद्धसे भाग गये। उसी समय अपराजित अर्ज्जुन घूमकर सब ओर युद्ध करने लगे।

५६ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! जनमेजय! अनन्तर कुरुसेनाके सब महारथ इकट्ठे होकर अर्ज्जुनसे युद्ध करनेको आये। उस समय अर्ज्जुनने अपने वाणोंसे सब वीरोंको इस प्रकार छा लिया जैसे कुहासेसे पर्व्वत छा जाते हैं। हाथी, घोड़े, भेर, और रथोंका शब्द युद्धमें होने लगा। अर्ज्जुनके वाणोंके सङ्ग वीरोंके शरीरसे लोहेके कवच गिरने लगे। उसी समय तीक्ष्ण वाण चलाते हुवे अर्ज्जुनकी ऐसी शोभा बढ़ी जैसे शरदऋतुमें दोपहरके सूर्य्यकी बढ़ती है। तब अनेक वीर रथ और घोड़ोंपर चढ़े और वीर तथा पदाती इधर उधर घूमने लगे। उस युद्धमें अर्ज्जुनके वाणोंसे कटते हुवे वीरोंके चांदी सोने लोहेके, कवचोंके घोर शब्द होने लगे। समस्त युद्धभूमि, घोड़े हाथी और मरे हुए पुरुषोंसे भर गई; अनेक वीर रथोंसे पृथ्वीपर गिरने लगे। उस समय धनुषधारी अर्ज्जुनकी ऐसी शोभा दीखती थी, जैसे नाचते हुए नटकी दीखती है; वज्रके समान अर्ज्जुनके धनुषका शब्द सुनकर सब सेना इधर उधर भागने लगी; युद्धभूमि कुण्डल पगड़ी और सुवर्णमाला धारी शिरोंसे भर गई। वाणोंसे कटे शरीर, धनुष और आभूषण सहित हाथ चारों ओर दीखने लगे। वीरोंके शिर इस प्रकार पृथ्वीपर गिरने लगे जैसे आकाशसे ओले बरसते हैं। महापराक्रमी अर्ज्जुनने जो बारह बरसतक बनमें रहकर क्रोधको रोका था सो उसी क्रोधको इस युद्धमें प्रकाशित किया। इस प्रकार अपनी सेनाको जलते हुए, और अर्ज्जुनके पराक्रमको देख सब योद्धा दुर्य्योधनके आगेही शान्त हो गये। उस सेनाको घबड़ाकर और महारथोंको जीतकर महापराक्रमी अर्ज्जुन युद्ध-भूमिमें घूमने लगे। उस समय रुधिरकी महा नदी बहने लगी। उसमें हड्डी सिवार हो गई। यह नदी इस प्रकारसे बही, जैसे प्रलयकालमें बहती है।

उसमें वाण धनुष जलजन्तु हो गये; कवच और पगड़ी जल-छायोंके समान घूमने लगे, चर्बीमेदा फेन उठने लगी। उसको देख-कर बड़े बड़े वीरोंको डर लगने लगा। वह नदी महा भयानक घोर वेगसे बहने लगी; उसके तटोंपर अनेक मांस खानेवाले सियार और पची बोलने लगे, खड्ग आदि अनेक शस्त्र मकरोंके समान दीखने लगे, मोतियोंके हार तरङ्गके समान बहने लगे, विचित्र आभूषण बुलबुलोंके समान उठने लगे, वाण मोरके समान घूमने लगे, हाथी नाकेके समान घूमने लगे; रथ टोपके समान दीखने लगे, अनेक नगारे बड़े घोर शब्दसे बजने लगे। उस नदीको अर्ज्जुनने बहा दिया। उस समय कोई नहीं जान सका कि अर्ज्जुन कब वाण चढ़ाते हैं, कब निकालते हैं, और छोड़ देते हैं।

६० अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पाय मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! जब अर्ज्जुनने अपने पराक्रमसे सब सेनाको जीत लिया तब राजा दुर्य्योधनको आगेकर दुःशासन, विविंशति महारथ कृपाचार्य्य, द्रोणाचार्य्य और अश्वत्थामा मिलकर अर्ज्जुनको मारने आये। ये सब लोग अपने अपने धनुषोंपर टङ्कार देने लगे। तब अर्ज्जुन ऊंचीपताका वाले, सूर्य्यके समान रथपर बैठकर उन सबसे युद्ध करनेको चले। उस समय महाबल अर्ज्जुनको चारों ओरसे घेर-कर कृपाचार्य्य, कर्ण और महारथ द्रोणाचार्य्य इस प्रकार वाण वर्षाने लगे जैसे वर्षाकालमें मेघ जल वर्षाते हैं। वे सब अर्ज्जुनके पास आकर तीक्ष्णवाण मारने लगे उस समय उनके दिव्य अस्त्रोंसे अर्ज्जुनका रथ एक अंगुल भी खाली न रहा। तब महारथ अर्ज्जुनने हंस-कर सूर्य्यके समान प्रकाशित इन्द्रवाणको धनुषपर चढ़ाया। उस समय कुन्तीपुत्र किरीटधारी अर्ज्जुनका तेज ऐसा बढ़ा जैसे महातेज सूर्य्यका होता है। अर्ज्जुनने अपने वाणोंसे सब कौरवोंको छा लिया और अपने धनुषपर इन्द्र वाण चढ़ाया। उस वाणके चढ़तेही धनुषकी ऐसी शोभा भई जैसी बिजलीयुक्त आकाशकी और अग्नियुक्त शिलाकी, होती है। जैसे बरसता हुआ मेघ आकाशमें शोभा देता है, ऐसेही अर्ज्जुन युद्धमें शोभित होने लगे। उनके तेजसे सब दिशा प्रकाशित होने लगीं; उस वाणके छूटतेही हाथी और रथोंपर चढ़े वीर मोहित होगये और सब सेना निराश होकर भागने लगी, कोई वीर सावधान न रहा, सबके चित्त युद्धसे हट गये। जब इस प्रकार सब सेना युद्धसे भाग गई तब अर्ज्जुन सावधान हुए।

६१ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! उनके पश्चात सब कौरवोंके पितामह शान्तनुपुत्र भीष्म अपनी विचित्र धनुषपर टङ्कार देते हुए और तीक्ष्ण वाणोंको चलाते हुए अर्ज्जुनसे युद्ध करनेको आये। सफेद छत्रको धारण करके भीष्म ऐसे शोभित हुए जैसे सूर्य्यके उदय होनेसे पर्व्वत शोभित होता है। गङ्गापुत्र भीष्मने धृतराष्ट्रपुत्रोंको प्रसन्न करनेके लिये अपना शङ्ख बजाया और अर्ज्जुनके दाहनी ओर होकर युद्ध करने लगे जब शत्रुनाशन अर्ज्जुनने देखा कि भीष्म हमसे युद्ध करनेको आये तब उनके वाणोंको ऐसे ग्रहण करने लगे जैसे मेघकी वर्षाको पर्व्वत ग्रहण करता है। भीष्मने आठ वाण अर्ज्जुनकी धुजामें मारे; वे महावेग बलवान वाण इस प्रकार चले, जैसे सांसलेते हुए सर्प चलते हैं। वे वाण धुजामें लगकर ध्वजामें स्थित हनुमानको और सब धजावासी भूतोंको दुःख

देने लगी। तब अर्ज्जुनने अपने एक तीच्ण बाणसे भीष्मके छत्रको काटकर पृथ्वीपर गिरा दिया और धुजाको भी काटके गिरा दिया और शीघ्रतासे भीष्मके घोड़े सारथी तथा दोनो रक्षा करनेवालोंको मारडाला। यद्यपि भीष्म अर्ज्जुनके पराक्रमको जानते थे; तौभी अर्ज्जुनके ऊपर दिव्य अस्त्र चलाने लगे। अर्ज्जुन भी दिव्य वाण चलाने लगे। भीष्म अर्ज्जुनके ऐसे वाणोको ग्रहण करने लगे जैसे मेघकी वर्षाको पर्व्वत ग्रहण करता है। उन दोनोका ऐसा घोर युद्ध हुआ जैसे इन्द्र और वलीका हुआ था। उस युद्धको देखनेसे बड़े बड़े वीरोंके रोवें खड़े होते थे? उस युद्धको और अर्ज्जुन तथा भीष्मकी वाण वर्षाको सब कौरव और सेनाके लोग दूरसे देखने लगे। उनके वाण इस प्रकार आकाशमें चमकने लगे जैसे वर्षा ऋतुमें जुगनू चमकते हैं। उस समय दाहनी और बाई ओरको वाण छोड़नेसे अर्ज्जुनका धनुष अग्निचक्रके समान दीखने लगा। फिर अर्ज्जुनने अपने सहस्त्रों वाणोंसे भीष्मको इस प्रकार छा लिया जैसे बड़ा मेघ अपनी धाराओंसे पर्व्वतको छा लेता है। उस महावाण वर्षाको देख भीष्मने अपने वाणोंसे काट दिया और अर्ज्जुनके ऊपर वाण चलाने लगे। फिर अर्ज्जुनने सोनेके पंखवाले वाणोंको भीष्मके ऊपर चलाना आरम्भ किया। तब भीष्मने अर्ज्जुनके वाणोंकोभी काट दिया। तब सब कौरव लोग भीष्मकी प्रशंसा करके कहने लगे कि भीष्मने अर्ज्जुनसे घोर युद्ध किया, इससे भीष्मको धन्य है; अर्ज्जुन बलवान तरुण और वाण-विद्या जाननेवाला है, युद्धमें उसके आगे भीष्मको छोड़कर और कौन ठहर सकता है? अर्ज्जुनसे शान्तनुपुत्र भीष्म, देवकी पुत्र कृष्ण, और भरद्दाज पुत्र महा बलवान द्रोणाचार्य्य हो युद्ध सकते हैं। वे दोनों महाबलवान कुरुकुल सिंह भीष्म और अर्ज्जुन शस्त्र और अस्त्रोंसे युद्ध करतेहुए, सब वीरोंको मोहित करने लगे, वे कभी प्रजापति, कभी इन्द्र, कभी अग्नि, कभी शिव, कभी वरुण, कभी कुवेर, कभी वायु और कभी यमके वाण चलाने लगे; ऐसा देख सब वीर कहने लगे कि जैसा भीष्म और अर्ज्जुनका युद्ध हो रहा है ऐसा मनुष्योंका नहीं होता है। देवता लोग प्रसन्न होकर कभी भीष्म और कभी अर्ज्जुनको धन्यवाद देने लगे।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! जब शस्त्र विद्याके जाननेवाले भीष्म और अर्ज्जुन शस्त्रयुद्ध कर चुके, तब उन दोनोंका वाणयुद्ध होने लगा, उसी समय अर्ज्जुनने अपने धनुषको खींचकर तीच्ण वाणसे भीष्मका सुवर्ण- चित्रित धनुष काट दिया; उसी समय महाबाहु महारथ भीष्मने शीघ्रतासे दूसरे धनुषपर रोदा चढ़ा लिया और क्रोध करके अर्ज्जुनके ऊपर वाण चलाने लगे, उसी प्रकार महा तेजस्वी अर्ज्जुन भी भीष्मकी ओर अनेक वाण छोड़ने लगे और भीष्म भी अर्ज्जुनके ऊपर तीच्ण वाण चलाने लगे; इस प्रकार दोनो शस्त्रविद्याके पण्डित परस्पर युद्ध करने लगे। उस समय इन दोनोंमेंसे कोई बढ़ न सका अर्थात दोनो समानही रहे; तब महारथ अर्ज्जुनने और महा बलवान शान्तनुपुत्र भीष्मने अपने वाणोंसे दसों दिशाओंको पूरित कर दिया; भीष्म अर्ज्जुन पर और अर्ज्जुन भीष्मपर घोर वाण वर्षाने लगे, इससे सब वीर आश्चर्य करने लगे। उसी समय अर्ज्जुनने अपने वाणोंसे भीष्मके रथकी रक्षा करनेवाले वीरोंको मारडाला। वे मरकर अर्ज्जुनके रथके चारों ओर गिर गये। उसी समय अर्ज्जुनके धनुषसे छूटकर अनेक वाण शत्रुओंको नाश करने लगे और युद्धमें घूमने लगे, वे सोनेके पङ्खवाले वाण अर्ज्जुनके रथसे निकलकर आकाशमें हंसके समान घूमने लगे। अर्ज्जुनके तेज वाणको

आकाशमें खड़े हुए इन्द्रादिक देवता देखने लगे; उनको देखकर गन्धर्व्वराज चित्रसेन बहुत प्रसन्न होकर इन्द्रसे कहने लगे; हे इन्द्र! आप अर्ज्जुनके अद्भुत कर्म्मको देखिये; ये कैसी शीघ्रतासे दिव्य अस्त्र चलाते हैं; जैसे अर्ज्जुन वाण चलाते हैं, ऐसे कोई मनुष्य नहीं चला सकता है और इस वाण विद्याको भी कोई मनुष्य नहीं जानता, अर्ज्जुन दिव्य वाणोंको चलाते हैं; अर्ज्जुन किस समय वाण चढ़ाते है, किस समय खींचते हैं, और किस समय छोड़ते हैं, सो नहीं जान पड़ता है। अर्ज्जुनको और कोई वीर दोपहरके सूर्य्यकी तरह नहीं देख सकता और इसी प्रकार गङ्गापुत्र भीष्मके भी ओर नहीं देख सकता; दोनो जगत-बिख्यात, महापराक्रमी, दोनो समान योद्धा और दोनोही महा बलवान हैं। चित्रसेनके ऐसे वचन सुन देवराज इन्द्र बहुत प्रसन्न होकर भीष्म और अर्ज्जुनके ऊपर फूल वर्षाने लगे। उसी समय शान्तनुपुत्र भीष्मने सब वीरोंके बीचमें वाण चलाते अर्ज्जुनकी वाईं ओर वाण चलाने आरम्भ किये। तब अर्ज्जुनने हंसकर एक तेज वाणसे सूर्य्यके समान तेजस्वी भीष्मका धनुष काट दिया और बहुत शीघ्रतासे भीष्मकी छातीमें दस वाण मारे, तब महा बलवान महा तेजस्वी भीष्मने घबड़ाकर रथका डण्डा पकड़ लिया और मूर्च्छित होकर बैठ गये। भीष्मको मूर्च्छित देख भीष्मके सारथीने अपना धर्म्म स्मरण करके भीष्मकी रक्षाके निमित्त रथको युद्धसे हटा दिया।

६२ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! जिस समय महा बलवान शान्तनुपुत्र भीष्म युद्ध छोड़ कर चले गये, तब महा बलवान युद्ध जीतनेवाले महा पराक्रमी धृतराष्ट्रपुत्र दुर्य्योधन अपने रथकी धूजा उड़ा कर गर्ज्जते हुए धनुष धारण करके अर्ज्जुनसे युद्ध करनेको आये। दुर्य्योधन महापराक्रमी शत्रु-नाशन अर्ज्जुनको अपनी सेनामें घूमते हुए देख कानतक खींचके वाण मारने लगे; उन वाणोंमेंसे अर्ज्जुनके माथेमें आकर एक लगा, उस वाणसे अर्ज्जुन ऐसे शोभित हुए जैसे एक शृङ्गवाले शिखरसे पर्व्वत, महा पराक्रमी उत्तम कर्म्म करनेवाले अर्ज्जुनको उस समयमें बहुत शोभा बढ़ी। उस वाणके लगनेसे अर्ज्जुनके माथेसे गरम रुधिर निकलने लगा सोनेके पङ्खवाला वाण अर्ज्जुनके माथेमें शोभित होने लगा; महा धनुषधारी दुर्य्योधन और महापराक्रमी अर्ज्जुन परस्पर घोर युद्ध करने लगे। ये दोनो महावीर परस्पर समान युद्ध करने लगे, उसी समय पर्व्वतके समान मतवाले हाथीपर चढ़कर चार वीरोंके सहित विकर्ण पुनः कुन्तीपुत्र अर्ज्जुनसे युद्ध करनेको आया; उसी समय अर्ज्जुनने उस मतवाले हाथीके कुम्भके बीचमें महातेज वाण मारा, वह तेज वाण हाथीके शिरमें घुस गया। उस समय वाणसे वह हाथी ऐसे गिरा जैसे वज्र लगनेसे पर्व्वत गिरता है। उस वाणके लगनेसे हाथीका शरीर कांपने लगा और जीव डरने लगा। वह हाथी इस प्रकार चिल्लाकर पृथ्वीपर गिरा जैसे वज्रके लगनेसे पर्व्वत गिरता है। जब विकर्णका हाथी पृथ्वीपर गिरा तब वह विविंशतिके रथपर चढ़कर अर्ज्जुनसे युद्ध करने आये। जब विकर्ण विविंशतिके रथपर चढ़कर अर्ज्जुनसे युद्ध करनेको आये, तब अर्ज्जुन अपने तीक्ष्ण वाणोंसे दुर्य्योधनसे युद्ध करने लगे। जिस समय विकर्ण युद्धको छोड़के भागे और हाथी मारा गया तथा राजा दुर्य्योधन हार गये, तब अर्ज्जुनके वाणोंसे पीड़ित होकर सब वीर भाग गये। जब राजा दुर्य्योधनने सुना कि हाथी मारा गया; और विकर्ण युद्धको छोड़कर भाग गये, तब राजा दुर्य्योधन ऐसे स्थानमें भाग गये जहां

अर्ज्जुन न देखसके। जब राजा दुर्य्योधन युद्धसे भाग गये और अर्ज्जुन ने पराक्रमी दुर्य्योधनको युद्धसे भागते हुए तथा उनके मुखसे रुधिर निकालते हुए देखा। तब युद्धकी इच्छा करनेवाले अर्ज्जुन ताली बजाकर दुर्य्योधनकी ओर आये। अर्ज्जुन बोले, हे दुर्य्योधन! तुम कातरसे युद्ध छोड़कर क्यों भागे जाते हो, तुम अपने युद्धके बाजोंको क्यों नहीं बजाते हो? अभी तुम्हें राज्यपर बैठे बहुत दिन भी नहीं हुए, अभी से युद्ध छोड़ने लगे? मैं राजा युधिष्ठिरका आज्ञाकारी तीसरा पाण्डव युद्ध करनेको खड़ा हूं। हे धृतराष्ट्रपुत्र! तुम क्षत्रियोंके धर्म्मको मान करके हमारे आगे युद्ध करनेको आओ; इस जगतमें तुम्हारा दुर्य्योधन नाम प्रसिद्ध है; दुर्य्योधनका अर्थ महायोद्धा है; जब तुम युद्ध छोड़कर भागे तो दुर्य्योधन कैसे बने? हे दुर्य्योधन! मैं तेरे आगे पीछे कोई रक्षा करनेवाला नहीं देखता हूं, आज क्या तू पाण्डवोंसे अपना प्राण बचाकर भागना चहता है?

६२ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! जब राजा दुर्य्योधनने अर्ज्जुनको कठोर वाणी सुनी, तब इस प्रकार युद्ध करनेको लौटे जैसे मतवाला हाथी अंकुश लगनेसे लौटता है। महावेगवान महारथ दुर्य्योधन अर्ज्जुनसे इस प्रकार युद्ध करनेको आया, जैसे लात लगनेसे विषैला सांप दौड़ता है। दुर्य्योधनको लौटता हुआ देख महावीर कर्ण अर्ज्जुनसे युद्ध करनेको आये; उस समय दुर्य्योधनके शरीरमें इतने घाव लगे थे कि वे युद्ध नहीं कर सकते थे; उनको लौटते देख शान्तनुपुत्र भीष्म भी धनुष लेकर दुर्य्योधनको दहनी ओर आगये और अर्ज्जुनके वाणोंसे उनकी रक्षा करने लगे। उसी समय कृपाचार्य्य, द्रोणाचार्य्य, विविंशति और दुःशासनादि वीरोंने राजा दुर्य्योधनको चारों ओरसे घेर लिया। जब अर्ज्जुनने उस भरे हुए, समुद्रके समान सेनाको लौटते देखा तब उसकी ओर इस प्रकार दौड़े जैसे मेघकी ओर हंस दौड़ता है। उन सबने चारों ओरसे अर्ज्जुनको घेरकर वाण चलाने आरम्भ किये। वे लोग इस प्रकार अर्ज्जुनके ऊपर वाण छोड़ने लगे जैसे मेघ पर्व्वतके ऊपर जल बर्षाता है। अर्ज्जुनने उन सब कौरवोंके वाणोंको काटकर सम्मोहन नामक वाण चलाया। अर्ज्जुनने अपने वाणोंसे दिशा और कोनोको पूराकर दिया तथा अपने धनुषके टङ्कारसे वीरोंको बहरा कर दिया। उस समय सब कौरव कांपने लगे। तब अर्ज्जुनने अपने हाथमें लेकर घोर शब्दवाला शंख बजाया। उसके शब्दसे सब दिशा आकाश और पृथ्वी पूरित हो गई। उस शब्दको सुनकर सब कौरव लोग वाणके बलसे मोहित हो गये, सब अपने अपने धनुषोंको रखकर बैठ गये। जब सब कौरव शान्त हो गये, तब वन आनेके समय उत्तराकी कही हुई बातको अर्ज्जुनने स्मरण करके उत्तरसे कहा, हे उत्तर! जबतक कौरव लोग मूर्च्छित हैं, तबतक तुम द्रोणाचार्य्य और कृपाचार्य्यके सफेद, कर्णके सुन्दर, अश्वत्थामा और दुर्य्योधनके नीलेवस्त्र उतारकर शीघ्र ले आओ; मैं जानता हूं कि भीष्म मूर्च्छित नहीं भये क्योंकि ये इस वाणको काटना जानते हैं; तुम उनके रथके आगे मत जाना। महात्मा। उत्तर घोड़ोंको लगाम छोड़कर रथसे नीचे उतरे और सब वीरोंके वस्त्र उतारकर फिर अपने रथपर आय बैठे। चतुर विराटपुत्र उत्तर अपने रथपर आकर अपने घोड़ोंको हांकने लगे। उसी समय वे घोड़े क्षणमात्रमें सेनासे बाहर आगये; जब पुरुषसिंह अर्ज्जुन युद्धको जीतकर चलने लगे, तब तेजस्वी वीर भीष्मके घोड़ोंको दस वाणसे

मारडाला। उसी समय अर्जुनने भीष्मको छोड़कर सारथीके शरीरमें वाण मारा और सेनासे निकल कर ऐसे खड़े हो गये जैसे मेघोंसे निकलकर सूर्य्य दीखते हैं। उसी समय सब कौरवोंकी मूर्च्छा खुली और सबने इन्द्रके समान अर्जुनको खड़े हुए देखा। उसी समय राजा दुर्य्योधनने क्रोध करके कहा तुम लोगोंने अर्जुनको क्यों छोड़ दिया? शीघ्र इसको पकड़नेका उपाय करो। उसी समय शान्तनुपुत्र भीष्म हंसकर बोले, अभी तेरी बुद्धि और बल कहां चले गये थे? अभी तुम धनुष-वाण रखकर क्यों शान्त हो गये थे? अर्जुन पापी नहीं है, इस लिये उसे कोई नहीं जीत सकता है। वह तीनों लोकके राज्यके लोभसे भी धर्म्मको नहीं छोड़ेगा; इस लिये तुम शीघ्र हस्तिनापुरको लौट जाओ और अर्जुन भी गौवोंको जीतकर विराट नगरको लौट जाय; तुम अपनी भूलसे धर्म्मको मत छोड़ो ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, भीष्म पितामहके ऐसे बचन सुन राजा दुर्य्योधन अपना कल्याण जानकर चुप हो रहे; सब वीरोंने भीष्मके बचनको अपना हित समझा और अर्जुन रूपी अग्निसे दुर्य्योधनकी रक्षा करनेके निमित्त लौटनेकी इच्छा करी; जब अर्जुनने देखा कि ये सब लौटे जाते हैं; तब नम्र होकर सबको प्रणाम करने लगे। शान्तनुपुत्र पितामह भीष्म, बूढ़े द्रोणाचार्य्य, द्रोणपुत्र अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य और सब बूढ़ोंको शिरसे प्रणाम किया; फिर सबके एक एक वाण मारा और दुर्य्योधनका रत्नजटित मुकुट काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया, और सब वीरोंको निमन्त्रण देकर सब बूढ़ोंको प्रणाम किया; फिर धनुषपर टङ्कार दिया। फिर देवदत्त शंखको बजाकर सब शत्रुओंको कंपा दिया, सब शत्रुओंको जीतकर तथा, कौरवोंको प्रसन्न करके उत्तरसे बोले, हे उत्तर! तुम अब रथको लौटाओ, तुमने गौवोंको जीत लिया; अब प्रसन्न होकर अपने नगरको लौटो। अर्जुन और कौरवोंका अद्भुत युद्ध देखकर देवता बहुत प्रसन्न हुए, और अर्जुनके कर्म्म वर्णन करते हुए, अपने अपने लोकोंको गये।

६४ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! जब विशालनेत्र अर्जुन इस प्रकारसे सब कौरवोंको जीत चुके और विराटका धन छीन चुके तब अपने नगरको लौटे। जब धृतराष्ट्रपुत्र हारकर लौट गए; तब छिपे हुए, कौरवोंकी सेनाके लोग अनेक बनसे निकले। ये सब डरसे कांपते हुए, इधर उधरको भागने लगे। कोई बाल खोलकर हाथ जोड़कर अर्जुनके पास आये; वे सब परदेशी भूख प्याससे व्याकुल, चेतना रहित हाथ जोड़कर अर्जुनसे बोले, हे अर्जुन! हम तुम्हारे दास हैं, कहो क्या करें?

अर्जुन बोले, तुम लोगोंका कल्याण हो, सुखसे अपने अपने घरको चले जाओ; हम निश्चय कहते हैं, कि हम डरे हुए, मनुष्योंको नहीं मारते। अर्जुनके ऐसे बचन सुन सब योद्धा उन्हें आशीर्व्वाद देने लगे। तब मतवाले हाथीके समान बलवान अर्जुनको विराट नगरको ओर लौटते देख कोई कौरव उनके मुखको न देख सके। जब शत्रुनाशन अर्जुन सब कौरवोंकी सेनाको जीतकर लौटे, तब उन्होंने विराटपुत्र उत्तरसे कहा, हे तात! तुम्हारे पिताके यहां पांचो पाण्डव रहते हैं, इस बातको तुम्हीने जाना है, तुम नगरमें जाकर यह समाचार किसीसे मत कहना, क्योंकि इसको सुनतेही राजा विराट डरकर छिप जायंगे, तुम जाकर कहना कि हमने सब कौरवोंको जीतकर गौ छीन ली।

उत्तर बोले, हे अर्जुन! तुमने जो महाकर्म्म

किया है उसके करनेकी मेरी शक्ति नहीं है। परन्तु जबतक तुम कहोगे, तब तक मैं अपने पितासे इस समाचारको नहीं कहूंगा।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, उस प्रकार सब कौरवोंको जीतकर और उनका धन छीनकर अर्जुन पुन: उसी शमी वृक्षके नीचे आकर खड़े हुए। उस समय अर्जुनके शरीरमें अनेक घाव लगे थे। उसी समय अग्निके समान तेजस्वी हनुमान आकाशको चले गये। ध्वजा भी उड़ गई। और रथपर उत्तरकी ध्वजा आलगी; उत्तरने महात्मा पाण्डवोंके शस्त्र फिर वैसेही शमी वृक्षपर रख दिये, फिर महात्मा अर्जुनको सारथी बनाकर नगरको चले। शत्रुनाशन अर्जुनने इस महा कर्म्मको करके और शत्रुओं-को मार कर फिर अपने बालोंको वैसेही बांधा और उत्तरके घोड़े हांकने लगे, और प्रसन्न हो नपुंसकका वेष बना नगरको चले।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, कौरव लोग भी अर्जुनसे हारकर दीन मन हो हस्तिनापुरको चले गये। अर्जुनने मार्गमें उत्तरसे कहा, हे राजपुत्र! हे महाबाहो! देखो ये सब गौ और ग्वालियोंको हमने जीत लिया; अब हम दूसरे पहरमें विराट नगरको चलेंगे। अभी घोड़ोंको टहलाकर पानी पिलाना चाहिये! इतनेमें तुम अहीरोंको नगरमें भेजो, ये जाकर नगरमें तुम्हारी विजयका समाचार कहेंगे।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, उत्तरने अर्जुनके वचन सुन, अहीरोंसे कहा तुम लोग शीघ्र नगरमें जाकर महाराजके विजयका समाचार कहो और यह भी कहो कि हमने सब गौओं-को जीत लिया। इस प्रकार उत्तर और अर्जुन सम्मति करके शमी वृक्षके पास गये, और विजयसे प्रसन्न होकर दोनोंने अपने अपने वेष धारण किये। महावीर विराटपुत्र सब शत्रुओंको जीत उनका धन छीन और अर्जुन-को सारथी बना अपने नगरमें आया।

६५ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमे-जय! इस प्रकार राजा विराट राजा सुशर्म्माको जीत युधिष्ठिर, भीम, नकुल और सहदेवके सहित अपने नगरमें आये। सुशर्म्माको जीत गौओंको जीत राजा बिराट पाण्डवोंके सहित अपनी सभामें बैठे। सुख देनेवाले महातेजस्वी राजा विराट जब अपनी सभामें बैठे तब पाण्डव आदि सब सभासद उनकी प्रशंसा करने लगे। उसी समय उनका पुरोहित ब्राह्मणोंके सहित आकर आशीर्व्वाद देने लगा, सेनाके वीर गर्जने लगे। राजा बिराटने अपनी सभाको विसर्जन किया, और पूछा कि उत्तर कहां गया? उसी समय कन्या, स्त्री और अन्त:पुरके रहनेवालोंने कहा कि कौरवोंने गौ छीन लीथी उनसे लड़नेको उत्तर अकेला गया है, केवल वृहन्नलाही उसका सहायक है; कौरवोंके सङ्ग महारथ भीष्म, कृपाचार्य्य, द्रोणाचार्य्य, दुर्य्योधन, कर्ण और अश्वत्थामा ये छै महारथ हैं।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, जब राजा बिरा-टने सुना कि हमारा पुत्र वृहन्नलाको सङ्ग लेकर अकेलाहो युद्ध करनेको चला गया है, तब घबड़ाकर मन्त्रियोंसे कहने लगे कि हमको निश्चय होता है कि राजा सुशर्म्माको भागा हुआ सुनकर सब राजा और कौरव लोग शान्त नहीं बैठेंगे। इस लिये जो हमारी सेना सुशर्म्माके सङ्ग युद्ध करनेसे मारी नहीं गई सो उत्तरको रक्षाके लिये जाय! राजाकी आज्ञा सुनतेही हाथी, घोड़े, रथ और पदा-तियोंके झुण्ड अनेक शस्त्र धारण करके उत्तरको रक्षाको चले; इस प्रकार राजा विराटने अपनी सेनाको आज्ञा देकर कहा

कि देखो हमारा पुत्र जीता है कि मर गया, नपुंसक जिसका सारथी बनकर गया है, वह उत्तर अवश्य मर गया होगा।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, राजा विराटके ऐसे वचन सुन, धर्म्मराज युधिष्ठिर बोले, हे नरनाथ! जिसका बृहन्नला सारथी हो वह राजपुत्र अवश्य सब कौरवोंको जीतेगा। आपके पुत्र बृहन्नला सारथीकी सहायतासे सब राजा कौरव, देवता, यक्ष, और राक्षसोंको जीत सकते हैं।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, उसी समय उत्तरके भेजे हुए, दूत राजा विराटकी सभामें पहुंचे और कहने लगे कि उत्तरको विजय है। उसी समय मन्त्रीने आकर राजासे निवेदन किया कि सब कौरव लोग उत्तरसे हारकर भाग गये; शत्रुनाशन उत्तर कौरवोंको जीतकर और गौओंको छीनकर अपने सारथीके सहित कुशलसे हैं।

महाराज युधिष्ठिर बोले, हे राजन् विराट! प्रारब्धसे आपके पुत्रने कौरवोंको जीतकर गौ छीन लो, जिसका बृहन्नला सारथी हो उसकी विजय निश्चय होय।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, जब राजा विराटने प्रसन्न होकर महा पराक्रमी उत्तरको विजय सुनी, तब दूतोंको वस्त्र और आभूषण देकर विदा किया और आज्ञा दी कि हमारे राजमार्गोंमें पताका लगाई जायं; पुष्पादिकोंसे सब देवतोंकी पूजा होय; राजकुमार, सेनापति और वेश्या अपने अपने आभूषण पहिरकर उत्तरके पास जायं; नगरमें चारों ओर बाजे बजाये जांय; एक दूत मतवाले हाथीपर बैठकर सब चौराहोंमें घण्टा बजाकर हमारी विजयका समाचार कह आवै; उत्तरा कन्याओंके सहित नाचनेवालियोंका रूप बनाकर उत्तरके पास जाय।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, राजाकी आज्ञा सुनतेही सब नगरमें शांति कर्म्म होने लगे। भेर, शंख और नगारे बजने लगे, वेश्या शृंगार करके नाचने लगीं और महाबलवान उत्तरके पास अनेक सूत मागध और बंदी जाकर स्तुति गाने लगे।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, सेना और कन्याओंको अपने पुत्रके पास भेजकर राजा विराट प्रसन्न होकर बोले; हे सैरिन्ध्री! पासे लेआ, हे कङ्क! जुवा खेलो। राजाके ऐसे वचन सुन महाराज युधिष्ठिर बोले, हे पृथ्वीनाथ! हमने सुना है कि प्रसन्न पुरुषको जुवा नहीं खेलना चाहिये, इस लिये हम आज आपसे जुवा नहीं खेल सकते हैं; परन्तु आपकी आज्ञा भी नहीं टाल सकते; आपकी आज्ञा होय तो जुवा खेलें। राजा विराट बोले, हम जुवाके आगे गौ, स्त्री, धन और सुखको कुछ नहीं समझते हैं। कङ्क बोले, हे पृथ्वीनाथ! जूवेमें अनेक दोष हैं इस लिये आपको जुवा नहीं खेलना चाहिये; आपने कभी राजा युधिष्ठिरको देखा होगा या सुना होगा, वे अपने सब राजको हार कर भाइयोंको भी हार गये, इस लिये हमको जुवा अच्छा नहीं लगता, परन्तु आपकी आज्ञा होय तो खेलें।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, जब जुवा होने लगा, तब राजा विराटने महाराज युधिष्ठिरसे कहा हे कङ्क! देखो मेरे पुत्रने कैसे वीर कौरवोंको जीत लिया? राजाके वचन सुनके राजा युधिष्ठिर बोले, हे महाराज! जिसका सारथी साक्षात बृहन्नला हो वह युद्धमें क्यों न जीते? युधिष्ठिरके वचन सुनके राजा विराट क्रोध करके बोले, रे ब्राह्मणाधम! मेरे पुत्रके समान नपुंसक बृहन्नलाको बताता है? तू कहन न कहन योग्य बातको नहीं जानता है; बार बार हमारा निरादर किये जाता है, क्या हमारा पुत्र भीष्म और द्रोणाचार्य्यको नहीं जीत सकता? मैं ब्राह्मण जानकर तेरा

अपराध क्षमा करता हूं; यदि जीनेकी इच्छा रखता है तो फिर कभी ऐसा वचन मत कहना। महाराज युधिष्ठिर बोले, प्रारब्धसे कौरवलोग भाग गये, प्रारब्धसे तुम्हें गौ मिलगई; जिसका सारथी बृहन्नला हो उसकी विजय क्यों नहीं होय? जहां महापराक्रमी द्रोणाचार्य्य, भीष्म, अश्वत्थामा सूतपुत्र कर्ण, कृपाचार्य्य और साक्षात दुर्य्योधनही महारथ होयं, जहां साक्षात इन्द्र देवतोंके-सहित युद्ध करतेहों तहां बृहन्नलाको छोड़ और कौन युद्ध कर सक्ता है? जिसके समान न कोई बलवान हुआ न होगा, जो युद्धको देख कर बहुत प्रसन्न होता है, जिसने अकेले देवता राक्षस और मनुष्योंको जीत लिया ऐसे सारथीकी सहायतासे उत्तरकी विजय क्यों नही हो?

विराट बोले, हमने तुम्हे कई बार मना किया, परन्तु तू अपने बचनोंको बशमें नहीं रखता; यदि आज्ञा करनेवाला नहो तो जगतमें कोई मनुष्य धर्म्म करे?

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, अनन्तर राजाने क्रोध करके युधिष्ठिरके मुखमें पासा मारा और डपटके कहा कि अबसे ऐसा न कहना। पासा लगनेसे राजा युधिष्ठिरको नाकसे रुधिर बहने लगा। पर महाराजने पृथ्वीपर न गिरने दिया, रुधिरको अपने हाथमें ले लिया। फिर धर्म्मात्मा युधिष्ठिरने पासखड़ी द्रौपदीको ओर देखा। पतिव्रता द्रौपदी उनका अभिप्राय जानकर सोनेके बरतनमें पानी ले आई और उसीमें रुधिरको लेलिया। उसी समय उत्तर अनेक माला और फूलोंको ग्रहण करते हुए प्रसन्नता पूर्व्वक सभाके द्वार पर पहुंचे वहां आकर उत्तरने अपने आनेका समाचार अपने पितासे कहला भेजा। द्वारपालने जाकर राजासे कहा कि बृहन्नलाके सहित उत्तर द्वारपर खड़े हैं; राजाने प्रसन्न होकर आज्ञादी कि उन दोनोको शीघ्र लेआओ; हम देखना चाहते हैं। उसी समय महाराज युधिष्ठिरने धीरेसे जानेवाले पुरुषसे कह दिया कि केवल उत्तरको भेज दो, बृहन्नला आने न पावे। महाराजने सोचा कि अर्ज्जुनकी यह प्रतिज्ञा है कि जो महाराजके शरीरमें घाव करेगा या रुधिर निकालेगा उसको हम उसी समय मार डालेंगे; परन्तु यह प्रतिज्ञा युद्धसे भिन्न है अर्थात युद्धमें जो ऐसा करेगा उसके लिये प्रतिज्ञा नहीं है; जब वे मेरे शरीरसे रुधिर निकलता देखेंगे तब क्षमा नहीं करेंगे, उसी समय बल और वाहनोंके सहित राजा विराटका नाश हो जायगा।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, उसी समय राजा विराटका बड़ा पुत्र उत्तर सभामें आया और अपने पिताको प्रणाम करके कंकके पास गया; महाराज युधिष्ठिरको रुधिरमें भींगे घबराये हुए और द्रौपदीके सहित एकान्तमें बैठे देख कहने कि लगे इन महा पण्डित ब्राह्मणको किसने मारा है? यह महापाप किसने किया है? विराट बोले, इस पापीको हमने मारा है, ये ब्राह्मण पूजा करने योग्य नहीं है, मैं तुम्हारी प्रशंसा करता था तब ये तुम्हारी निन्दा करने लगा और नपुंसक बृहन्नलाकी प्रशंसा करने लगा, तब मैंने इसको मारा है। उत्तर बोला हे राजन्! आपने बहुत बुरा काम किया, आप शीघ्र इनको प्रसन्न करें, आपको पुत्र और वाहनोंके सहित घोर ब्राह्मण बिनाश न कर दे—ऐसाही उपाय करें।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! राजा अपने पुत्रके ऐसे बचन सुन राखमें छिपी हुई अग्निके समान युधिष्ठिरसे क्षमा मांगने लगे। तब राजा युधिष्ठिरने राजा विराटसे कहा हे राजन्! मैं पहिलेही क्षमा कर चुका हूं, मुझे अब कुछ क्रोध शेष नही है, यदि मेरा रुधिर पृथ्वीमें गिर जाता तो आपका

राज्यके सहित नाश होजाता, इसमें कुछ सन्देह नहीं है। हम आपके बचनकी निन्दा नहीं करते हैं, क्योंकि आपने हमारा कोई अपराध नहीं किया। बलवान राजाकी निन्दा करनेसे अवश्य दण्ड मिलता है।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, जब महाराज युधिष्ठिरका रुधिर सूख गया तब बृहन्नला राज सभामें आया। उसने राजा विराटको प्रणाम करके पीछे राजा युधिष्ठिरको प्रणाम किया। उसी समय राजा विराटने बृहन्नलाकी बहुत प्रशंसा करी और उत्तरकी प्रशंसा करने लगे। राजा बोले, हे कैकेयीपुत्र! तुम्हारे जन्म लेनेसे मैं पुत्रवान हुआ तुम्हारे समान मेरा पुत्र कोई नहीं है, और न कोई होगा। जो एक चरणभी पिताका अपराध नहीं करता उसके समान अच्छा पुत्र कौन होगा? जो कभी अपने पिताका अपराध नहीं करता उस कर्णसे तुमने कैसे युद्ध किया? जो समस्त मनुष्य लोकमें अपने तुल्य वीर नहीं रखते उन भीष्मसे तुमने कैसे युद्ध किया? जो द्रोणाचार्य्य सब कौरव और सब क्षत्रियोंके गुरु हैं, उनसे तुमने किस प्रकार युद्ध किया? जो सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ महा पराक्रमी अश्वत्थामा हैं, उनसे तुम्हारा युद्ध कैसे हुआ? हे तात! जिनको देखकर क्षत्रीलोग धनलुटे बनियोंके समान युद्ध छोड़ भागते हैं, उन कृपाचार्य्यसे तुम्हारा युद्ध कैसे हुआ? जो राजपुत्र क्रोध करके अपने बाणोसे पर्व्वतोको तोड़ सकते हैं, उन दुर्य्योधनके सङ्ग तुम्हारा युद्ध कैसे हुआ? तुमने सब शत्रुओंको जीत लिया और गौ कौरवोंसे छीन लिया, इसीसे हमको वायु अच्छा लगता है; महापराक्रमी कौरवोंको तुमने डराकर भगा दिया, और उनसे इस प्रकार गौ छीन लिया जैसे पक्षी पक्षीसे मांस छीन लेता है!

६६ अध्याय समाप्त।

उत्तर बोले, मैंने गौओंको नहीं जीता, मैंने कौरवोंसे युद्ध नहीं किया; ये सब कर्म्म किसी देवपुत्रने किया है। जब मैं युद्धसे डरकर भागने लगा, तब उस तरुण देवपुत्रने रथपर बैठ कर मुझे लौटाया, उसीने कौरवोंको जीतकर गौ छीन ली, उसीने युद्ध किया, उसी बीरने अपने बाणोंसे कृपाचार्य्य, द्रोणाचार्य्य, अश्वत्थामा, कर्ण और भीष्मको हरा दिया। जिस समय उसके आगेसे मतवाले हाथीके समान दुर्य्योधन और महाबलवान विकर्ण डर कर भागे, तब उसने कहा कि तुम हस्तिनापुरमें रहकर भी हमसे जीते नहीं बचोगे; इस लिये सब देशोंमें घूमकर अपने प्राणोंकी रक्षा करो; हे राजन्! तुम भागकर जीते नहीं बचोगे, इस लिये युद्ध करो; यदि हमको जीत लोगे तो पृथ्वीका राज्य करोगे और जो मर जाओगे तो स्वर्ग पाओगे। परन्तु राजा दुर्य्योधन उनके बचन सुनकर विषैले सांपके समान सांस लेते हुए और बज्रके समान बाण छोड़ते हुए मन्त्रियोंके सहित युद्धसे भाग गये। हे शत्रुनाशन! उस देवपुत्रके देखनेसे मेरे रोवें खड़े हो गये। फिर उस देवपुत्रने अपने बाणोंसे उस महा सेनाको व्याकुल कर दिया। सिंहके समान बलवान देवपुत्रने सेनाको जीतकर हंसते हंसते कौरवोंके वस्त्र उतार लिये! उस एक वीरने छः महारथोंको इस प्रकार जीत लिया, जैसे मतवाला शार्दूल बनवासी हरिणोंको जीत लेता है।

महाराज विराट बोले, हे पुत्र! जिस महात्माने कौरवोंसे हमारा धन छुड़ाया है वह महा यशस्वी महाबाहु देवपुत्र कहां है? मैं उस महापराक्रमी देवपुत्रको देखना चाहता हूं, क्योंकि उसीने तुम्हारी और गौओंकी रक्षा करी है!

उत्तर बोले, युद्धके पश्चात वह महाबली देवपुत्र अन्तर्द्धान हो गया; हमें

निश्चय है कि कल या परसों वह प्रत्यक्ष होगा।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, उत्तरके ऐसे वचन सुनकर भी राजा विराटने छिपे हुए पाण्डवोंको न जाना! तब अर्जुनने राजाकी आज्ञा पाकर वे सब वस्त्र उत्तराको दे दिये। उत्तरा नवीन और महामूल्य वस्त्रोंको पाकर बहुत प्रसन्न हुई। अनन्तर अर्जुनने उत्तरसे सम्मति करके राजा युधिष्ठिरके निमित्त सब प्रबन्ध कर लिया।

६७ अध्याय गौ हरण पर्व्व समाप्त।

अथ वैवाहिक पर्व्व।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, तीसरे दिन पांचो पाण्डवोंने अपने समयको समाप्त जानकर स्नान किया और सफेद वस्त्र पहनकर मतवारे हाथीके समान तेजस्वी प्रकाशित होते हुए, राजा विराटकी सभाको चले। सभामें आकर महाराज युधिष्ठिर राजाके सिंहासनपर बैठ गये; और चारों पाण्डव यथा योग्य आसनों-पर बैठे। उस समय पाण्डववोंकी ऐसी शोभा बढ़ी, जैसी जलती हुई अग्निकी होती है। उसी समय राजा विराट भी अपने कार्य्य करनेको सभामें आये। वहां जलती हुई अग्निके समान पाण्डवोंको बैठे देख कुछ समयतक चुप हो रहे। उस समय अपने भाइयोंके सहित बैठे हुए महाराज युधिष्ठिरकी ऐसी शोभा हो रही थी, जैसे देवतोंके सहित इन्द्र की। फिर क्रोध करके राजा विराट युधिष्ठिरसे बोले।

विराट बोले, हे कङ्क! हमने तुमको जुवा खिलानेके लिये अपना सभासद बनाया था, आज तुम राजाके वस्त्र पहनकर हमारे सिंहा-सनपर क्यों बैठे हो?

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, राजा विराटके ऐसे वचन सुन अर्ज्जुन हंसके बोले, हे राजन्! ये इन्द्रके भी आधे आसनपर बैठ सकते हैं; ये ब्राह्मणोंके भक्त, पण्डित, त्यागी, योग्य तप करनेवाले, महाव्रतधारी, साक्षात धर्म्मके स्वरूप, सब वीरोंमें श्रेष्ठ, बुद्धिसे भरे और महा तपस्वी हैं। ये तीनो लोकमें सबसे अधिक वाण विद्याके जाननेवाले हैं, जैसी वाणविद्या ये जानते हैं; ऐसी कोई नहीं जानता और न जानेगा; कोई इनके समान बलवान देवता, राक्षस, किन्नर, मनुष्य, गन्धर्व्व, यक्ष, और सर्प भी नहीं हैं। ये दूरदर्शी, महा तेजस्वी, इन्द्रीजित, पाण्डवोंमें श्रेष्ठ और यज्ञ धर्म्मके करनेवाले हैं। ये राजोंमें महाऋषियोंके तुल्य हैं; इनका बल सब लोकोंमें विख्यात है। इनके समान कोई बलवान, बुद्धिमान और जितेन्द्रिय नहीं है। ये धन और पराक्रममें इन्द्र और कुवेरके तुल्य हैं, जैसे महा तेजस्वी इन्द्र लोकोंकी रक्षा करते हैं, ऐसी ये भी प्रजाकी रक्षा करते हैं। येही कुरुकुल-सिंह साक्षात राजा युधिष्ठिर हैं। इनका यश लोकमें सूर्य्यके तेजके समान फैला है, इनके यशकी किरण जगतमें इस प्रकार फैल रही है, जैसे उदय होते हुए सूर्य्यकी किरण फैलती है। इनके पीछे इन्द्रप्रस्थमें दश सहस्र मतवाले हाथी, दश सहस्र सुवर्ण मालाधारी घोड़ेसे युक्त रथ चलते थे; इनको स्तुति मणि कुण्डलधारी आठ सौ सूत और मागध इस प्रकार करते थे, जैसे ऋषि इन्द्रको स्तुति करते हैं; सब कौरव इनके दासके समान रहते थे, सब राजा इनकी इस प्रकार सेवा करते थे, जैसे देवता इन्द्रकी सेवा करते हैं। इन्होंने स्वतन्त्र राजोंसे कर लेकर उनको बनियोंके समान बना दिया है। इन महा व्रतधारीके घरमें प्रति दिन अठासी सहस्र महात्मा वेदपाठी ब्राह्मण भोजन करते थे, ये महाराज बूढ़े, अनाथ और अन्धे मनुष्योंको पुत्रके समान पालते थे, ये धर्म्मात्मा, इन्द्रीजित हैं; क्रोधसे भी अपने धर्म्मको नहीं छोड़ते, ये शीघ्र प्रसन्न होते हैं; ये ब्राह्मणोंके भक्त और

सत्यवादी हैं, इन्हीके भयसे राजा दुर्य्योधन, कर्ण शकुनी और मन्त्रियोंके सहित कांपता रहता है ; इनके गुण वर्णन करनेकी हमारी शक्ति नहीं है यही साक्षात पाण्डुपुत्र महाराज युधिष्ठिर हैं ; ये राजसिंह युधिष्ठिर राजाके आसनपर क्यों नही बैठ सकते हैं ?

६८ अध्याय समाप्त।

राजा विराट बोले, यदि येही कुरुकुलश्रेष्ठ कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर हैं, तो इनके भाई अर्ज्जुन, बलवान भीम, नकुल, सहदेव और यशस्विनी द्रौपदी कहां है ? जब से पाण्डव जुवेमें हार गये हैं, तबसे न जाने किधर गये। अर्ज्जुन बोले, हे राजन् ! तुम्हारे यहां ये जो वल्लव नामक रसोइया हैं, वही महापराक्रमी भीमसेन हैं, इन्होंने क्रोधके वशमें होकर अनेक राक्षसोंको मारकर द्रौपदीके लिये गन्धमादन पर्व्वतपर कमलके फूल छीन लिये थे। इन्होंने गन्धर्व्व रूप धारण करके दुरात्मा कीचकोंका नाश किया है। इन्होंने तुम्हारी स्त्रीके आगे अनेक सिंह, असुर और राक्षसोंको मारा था। ये जो तुम्हारे यहां घोड़ोंकी रक्षा करते हैं, येही शत्रुनाशन नकुल हैं। जो तुम्हारी गौओंकी गिनती हैं येही माद्रीपुत्र सहदेव हैं। ये दोनों महा यशस्वी, महा सुन्दर, शृङ्गारधारी, वीर एक सहस्र महारथोंसे युद्ध कर सकते हैं। हे राजन् ! ये कमलनयनी पतली कमरवाली सुन्दरी सैरन्ध्रीही द्रौपदी है। हे महाराज ! आप जिसका नाम सुनते थे, सो अर्ज्जुन मैंही हूं, मैं भीमसेनसे छोटा तथा नकुल और सहदेवसे बड़ा पाण्डुपुत्र हूं। हे महाराज ! हम लोग आपके घरमें इस प्रकार छिपकर रहे हैं, जैसे पुत्र गर्भमें रहता है।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, जब अर्ज्जुन कहकर चुप हो गये, तब उत्तर कहने लगे।

उत्तर बोले, ये जो शुद्ध सोनेके समान गोरे शरीरवाले, सुन्दर बड़े और लाल नेत्रवाले हैं, सोही कुरुराज महाराज युधिष्ठिर हैं। उनके पास जो शुद्ध सोनेके समान गोरे, मतवाले, हाथीके समान चलनेवाले, ऊंची छातीवाले और लम्बे हाथवाले श्रेष्ठ पुरुष हैं, सोही भीमसेन हैं। इनके पासमें जो श्याम रङ्गवाले, महा धनुषधारी, ऊंचे कन्धे और कमलके समान नेत्रवाले पुरुष खड़े हैं, वही वीर अर्ज्जुन हैं। राजाके दूसरी ओर जो इन्द्र और विष्णुके समान दो मनुष्य खडे हैं सो नकुल और सहदेव हैं, इनके समान इस लोकमें कोई बलवान, रूपवान और शीलवान नहीं है। इन दोनोंके पास जो सोनेके समान अङ्गवाली, साक्षात मूर्त्तिधारिणी पार्व्वतीके समान सुन्दरी, नील कमलके समान रूपवाली लक्ष्मीके समान स्त्री खड़ी है, वही द्रौपदी है। इस प्रकार पांचो पाण्डवोंका वर्णन करके उत्तरने राजासे अर्ज्जुनका पराक्रम कहना आरम्भ किया।

उत्तर बोले, इन्होंने उस कौरवोंकी सेनाको इस प्रकार नाश किया था, जैसे सिंह हरिणोंका नाश करता है। येही शत्रुनाशन अर्ज्जुन उस सेनामें रथपर चढ़कर घूमते थे ; इनके एकही बाण लगनेसे मतवाला हाथी मरकर पृथ्वीमें गिर गया था, इन्होंने कौरवोंको जीतकर गौओंको छीना है। इनके शंखके शब्दको सुनकर कान बहरे हो गये थे।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, उत्तरके ऐसे बचन सुन प्रतापवान राजा विराट उत्तरसे बोले, हमने राजा युधिष्ठिरका बहुत अपराध किया है, इस लिये पाण्डवोंको प्रसन्न करना चाहिये। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो मैं अर्ज्जुनके सङ्ग उत्तराका विवाह कर दूं। उत्तर बोले, मेरी बुद्धिमें पाण्डव लोग महात्मा, पूजा करनेके योग्य और माननीय हैं। आप इनकी जैसे चाहें तैसेही प्रसन्न कर लीजिये।

राजा विराट बोले, मुझे भी युद्धमें शत्रुओंने

पकड़ लिया था, परन्तु भीमसेनने छुड़ा लिया और उनसे गौओंको भी छीन लिया। इन्हींके बाहुबलसे युद्धमें हमारी विजय भई है। इस प्रकार सब मन्त्रियोंके सहित राजा विराट युधिष्ठिरको भाइयोंके सहित प्रसन्न करके उनसे कहने लगे, हमने जो कुछ बिना जाने आपका अपराध किया हो सो आप चमा कीजिये, क्योंकि आप धर्म्मात्मा हैं।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, महात्मा बिराटने ऐसा कह कर धन और नीतिके सहित अपना सब राज्य महाराज युधिष्ठिरको दे दिया। अनन्तर महात्मा विराटने अर्ज्जुनके सहित सब पाण्डवोंको धन्यवाद दिया; फिर राजा विराटने युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्ज्जुन, नकुल और सहदेवसे मिलकर उनका माथा सूंघा और उनके दर्शनसे तृप्त न हुए। अनन्तर राजा विराट प्रसन्न होकर महाराज युधिष्ठिरसे बोले, आप सब लोग प्रारब्धसे बनवाससे छुटे, प्रारब्धहोसे उन दुष्टोंसे छिपकर आपने यहां निवास किया; मेरा राज्य और धन सब आपहोका है। आप निःसन्देह होकर निवास कोजिये और अर्ज्जुनके सङ्ग उत्तराका बिवाह कोजिये, क्योंकि ये उत्तराको समान पति होंगे। विराटके ऐसे बचन सुन महाराजने अर्ज्जुनकी ओर देखा। महाराजके देखते ही, अर्ज्जुन विराटसे बोले, हे राजन्! आपका और महाराजका सम्बन्ध होनाही उचित है, क्योंकि आप मत्स्य और महाराज भरतवंशी हैं; हम आपकी पुत्रीका विवाह अपने पुत्र अभिमन्युके सङ्ग करेंगे।

६८ अध्याय समाप्त।

विराट बोले, हे अर्ज्जुन! हम अपनी कन्या देते हैं, तुम उसे क्यों नहीं ग्रहण करते? अर्ज्जुन बोले, हे राजन्! हम तुम्हारी रनवासमें एक वर्षतक रहे हैं, तुम्हारी पुत्रीके सब प्रगट और गुप्त भावोंको जानते हैं, और वहभी हमारा पिताके समान विश्वास करती है; हमने गुरु होकर उसको नाचना और गाना सिखाया है; वह हमको बहुत मानती है; हम उसके संग एक वर्षतक रहे, हैं, इस लिये उससे दूसरा व्यवहार करनेमें हमको बहुत शंका होती है। आपकोभी इस स्थानमें शङ्का करनी चाहिये। ऐसा करनेसे हमारा ब्रह्मचर्य्य पूरा होगा; आप अपनी पुत्रीका विवाह हमारे पुत्रके सङ्ग कर दीजिये ऐसा करनेसे हम और आप पवित्र होंगे, इसमें आप कुछ शंका मत कोजिये; पुत्र और पितामें कुछ भेद नहीं होता! हे शत्रुनाशन! दुर्नामसे बहुत डरता हूं, इस लिये आप अपनी पुत्रीका विवाह हमारे पुत्रके सङ्ग कर दीजिये, मेरा पुत्र साक्षात कृष्णका भानजा है, और कृष्णका बहुत प्यारा तथा सब शस्त्रोंको जाननेवाला है, हमारा अभिमन्यु नामक पुत्र तुम्हारा दामाद और उत्तराका पति होने योग्य है। विराट बोले, आप सब धर्म्म जानने वाले, ज्ञानी, कुरुश्रेष्ठ, आपकी आज्ञाको सब मानते हैं, जैसे आपकी इच्छाहो वैसेही कोजिये, अर्ज्जुनके समधी होनेसे मेरे सब कार्य्य ठीक होंगे।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, अर्ज्जुन और राजा विराटके ऐसे बचन सुन महाराज युधिष्ठिरनेभी इस बिवाहको स्वीकार कर लिया। उसी समय विराट और धर्म्मराज युधिष्ठिरने श्रीकृष्ण और अपने सम्बधियोंके पास दूत भेजे; और पाण्डवलोग द्रौपदीके सहित बिराट नगरके समीप ही उपप्लव नाम नगरमें रहने लगे। अनन्तर पाण्डवोंने अभिमन्यु और श्रीकृष्णके सहित सब यादवोंको द्वारिकासे बुला भेजा। वे लोग सुनतेही विराट नगरमें पहुंच गये। इस समाचारके सुनतेही काशोके राजा और राजा शैव्य एक एक अक्षौहिणी सेना लेकर महाराज युधिष्ठिरको प्रसन्न करनेको आये। उसी समय महावीर द्रौपदीके पाचों पुत्र और महा

पराक्रमी शिखण्डीको लेकर एक अक्षौहिणी सेनाके सङ्ग महा पराक्रमी धृष्टद्युम्न विराट नगरमें पहुंचे। सब शस्त्र जानने वालोंमें श्रेष्ठ महावीर धृष्टद्युम्नके सङ्ग अनेक वेदपाठी महा सूरवीर युद्धमें मरनेकी इच्छा वाले दानी अनेक सेनापति क्षत्रीयभी आये, उनको देखकर धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ राजा विराटने वाहन और सेनाके सहित सबकी पूजा करी। विवाहसे राजा विराट बहुत प्रसन्न हुए। जब सब राजा लोग अपने अपने डेरामें चले गये। तब महाराज युधिष्ठिरसे मिलनेको अभिमन्यु और सुभद्राके सहित वसुदेवपुत्र बलदेव, श्रीकृष्ण, कृतवर्म्मा, हार्दिक्य युयुधान, सात्यकी अनाधृष्टि अक्रूर, साम्ब और निष्ट आदि यादव आये। उसी समय इन्द्रसेन आदि पाण्डवोंके पाचों सारथी रथ लेकर विराट नगरमें पहुंचे। श्रीकृष्णके सङ्ग दश सहस्र हाथी एकलाख घोड़े दस सहस्र रथ और एकखर्व्व पैदल थे। महातेजस्वी श्रीकृष्णके सङ्ग अनेक वृष्णि, अन्धक और भोजवंशी क्षत्रीभी आये थे श्रीकृष्णने पाण्डवोंको हस्ती रत्न और उत्तम उत्तम वस्त्र दिये। तब राजा बिराटने अपनी पुत्रीके विवाहका आरम्भ किया। उसी समय महाराज युधिष्ठिर और राजा विराटके घरमें शंख,भेर, नगारे बजने लगे। भोजन बनानेवाले अनेक प्रकारके हरिन आदि खाने योग्य पशुओंका मांस पकाने लगे। राजा विराटने सब राजोंके डेरोंमें, अनेक प्रकारकी मदिरा भेज दी। इस विवाहका समाचार सुनकर अनेक देशोंसे नाचने और गानेवाले आये। राजा विराटकी सब स्त्रियां कुण्डल आदि आभूषण पहरके सुदेष्णाके सहित उस स्थानोंमें बैठीं, जहां विवाह हो रहा था। उन सब रूप और यौवनमती स्त्रियोंको द्रौपदीने रूप, यश और तेजसे जीत लिया। वे सब स्त्रियां इन्द्रकी पुत्रीके समान उत्तराको आभूषण पहनाके ले आईं। कुन्तीपुत्र अर्ज्जुनने अपने पुत्रसे विराटपुत्रीका विवाह किया। उन सब राजोंके बीचमें महाराज युधिष्ठिरने इन्द्रके समान बैठकर उत्तरा और अभिमन्युका विवाह किया। महाराज युधिष्ठिरने श्रीकृष्णकी सम्मतिसे सुभद्रापुत्र महात्मा अभिमन्युका विवाह किया। इस विवाहमें राजा विराटने महाराज युधिष्ठिरको वायुके समान शीघ्र चलनेवाले सात सहस्र घोड़े, दो सौ मतवारे हाथी और बहुत धन दिया। फिर अग्निमें होम करके ब्राह्मणोंकी पूजा करी। अनन्तर महाराज युधिष्ठरको अपना सब राज, सेना, धन और शरीर भी दे दिया। जो धन श्रीकृष्ण लाये थे, विवाह होनेके पश्चात महाराज युधिष्ठिरने वह सब ब्राह्मणोंको दे दिया; महाराजने सहस्र गौ, अनेक प्रकारके वस्त्र, रत्न, भूषण, स्वादु भोजन और अनेक प्रकारकी पीनेकी वस्तु दान करी। इस विवाहके होनेसे उन सबसे वहां नगरनिवासी प्रसन्न हुए और नगरकी भी शोभा बहुत बढ़ी।

७० अध्याय विराटपर्व्व समाप्त।

जो मनुष्य इस विराट पर्व्वको सुनकर अपनी शक्तिके अनुसार ब्राह्मणको वस्त्र, अन्न और सुवर्ण देता है, उससे सब देवता प्रसन्न होते हैं, महाभारत बांचनेवाला ब्राह्मण जिससे प्रसन्न होता है, उस मनुष्यपर सब देवता कृपा करते हैं,विराटपर्व्व सुननेके पश्चात अपनी शक्तिके अनुसार दूध, घी; और चीनीसे ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये, ऐसा करनेसे प्रफल होता है।

इति श्रीभाषा महाभारत में विराटपर्व्वमें माहात्म्य समाप्त।

विराटपर्व्व सम्पूर्ण।

महाभारत।

उद्योगपर्व्व।

श्रीगणेशाय नमः।

"दोहा"

नर, नारायण, व्यास अरु
बन्दि सरस्वति पाय।
भारतको भाषा करौं,
सुजननको सुखदाय॥

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन जनमेजय! इस प्रकार कुरुकुल श्रेष्ठ पाण्डवोंने अपने सङ्गियोंके सहित प्रसन्न होकर अभिमन्युका विवाह किया, फिर रात्रिभर सुखसे अपने घरमें रहे और प्रातःकाल होतेही राजा विराटकी सभामें आये। वह राजा विराटकी सभा मणियोंसे खिची हुई, फूलोंकी मालाओंसे सुशोभित और सुगन्धित जलसे छिड़की थी। उसीमें सब राजोंमें श्रेष्ठ पाण्डव लोग आकर बैठे। उनके बैठतेही सब राजोंसे पूजित बूढ़े महाराज विराट और द्रुपद आसनोंपर बैठे। उनके पश्चात श्रीकृष्ण बैठे। महाराज द्रुपदके पास कृतवर्म्मा और बलदेव बैठे, राजा विराटके पास महाराज युधिष्ठिर और श्रीकृष्ण बैठे। राजा द्रुपदके सब पुत्र, भीमसेन, अर्ज्जुन, नकुल, सहदेव, प्रद्युम्न, साम्ब, अभिमन्यु और राजा विराटके महावीर पुत्र ये सब एकस्थान पर बैठे। पाण्डवोंके तुल्य रूपवान और पराक्रमी द्रौपदीके पांच महावीर पुत्र मणिजटित सोनेके सिंहासनों पर बैठे। जब उत्तम वस्त्र और आभूषणधारी राजा लोग अपने अपने योग्य आसनों पर बैठे चुके, तब वह राजोंसे भरी सभा ऐसी शोभित हुई जैसे निर्म्मल तारोंसे भरा आकाश शोभित होता है। सब पुरुषसिंह राजोंने परस्पर कुशल प्रश्न किया, फिर आनन्द की बात करके सब चुप होगये, और श्रीकृष्णको ओर देखने लगे। सबकी यह इच्छा हुई, कि हम सबको श्रीकृष्णने पाण्डवोंके निमित्त यहां बुलाया है, इस लिये सबसे पहले यही कुछ कहें। पुरुषसिंह राजोंकी इच्छाको जानकर कृष्ण कहने लगे।

श्रीकृष्ण बोले, हे राजसिंह! आप सब लोगोंको विदित है, कि सुबलपुत्र छली शकुनीने महाराज युधिष्ठिरको किस प्रकार जुवेमें जीता था? किस प्रकार राज्य इनका छीना है? और किस प्रकार बनमें रहनेकी प्रतिज्ञा करायी थी? यद्यपि पाण्डवलोग अपने बलसे समस्त पृथ्वीको जीत सकते हैं, तथापि उन्होंने सत्यको ग्रहण करके मुनियोंका वेष धारण किया और तेरह वर्ष बनमें बिताये। आप लोग जानते हैं, कि इस तेरहवें वर्षमें राजा विराटके यहां छिप कर रहनेसे महात्मा पाण्डवोंने कैसे कैसे न सहने योग्य दुःखोंको सहा है? परन्तु किसी प्रकार इस दुस्तर व्रतसेभी ये लोग पार हुए हैं। यहभी निश्चय है कि, महाराज युधिष्ठिर अपने कुलके राज्यकी इच्छा करते हैं। परन्तु इसके लिये किसी दूसरेको दूत बनाना चाहते हैं; सो हमारी इच्छा यह है कि इस राज्य-प्राप्तिमें राजा

दुर्य्योधनको भी हानि न हो, संगही पुरुषसिंह पाण्डवोंका धर्म्म और यशभी बढ़े, क्योंकि धर्म्म-राज अधर्म्मसे इन्द्रकी राज्य कीभी इच्छा नहीं करते, और धर्म्मसे एक गांवका स्वामी होनाभी अच्छा समझते हैं। और यहभी आप लोगों पर विदित है, कि यह राज्य पाण्डवोंके पुरु-षोंका है, उसको छलसे कौरवोंने छीन लिया है। आप लोग जानते हैं, कि धृतराष्ट्रके पुत्रने कभी किसी युद्धमें महाराज युधिष्ठिरको नहीं जीता, और यहभी प्रत्यक्षही है कि इन्होंने छलके वशमें होकर कैसे न सहने योग्य दुःख सहे हैं; तथापि महाराज युधिष्ठिर अपने मित्रोंके सहित धृतराष्ट्र पुत्रोंका कल्याणही चाहते हैं। महावीर पाण्डव लोग अपने उस धन और राज्यकी इच्छा करते हैं, जो उन्होंने स्वयम राजोंको जीतकर उत्पन्न किया है। यह भी आप लोगोंको विदित है कि धृतराष्ट्रके पुत्रोंने इनके मारनेके लिये बालकपनसे कितने यत्न किये थे? वे लोग राज्य लेनेके लिये कितनी मूर्खता और दुष्टता करते हैं सो भी आप लोगोंसे छिपा नहीं है। महाराज युधि-ष्ठिरका धर्म्म और दुर्य्योधनके लोभके कहनेको भी कुछ आवश्यकता नहीं है। महाराज युधिष्ठिर और दुर्य्योधनके सम्बन्धको भी आप लोग जानते हो हैं। इन सब बातोंको बिचार कर जो कुछ करने योग्य काम हो, उसको सम्मति कीजिये। ये पांचो अपनी प्रतिज्ञा पालन करके सत्यका पालन कर रहे हैं। नहीं तो आज तक धृतराष्ट्र पुत्रोंका नाश कर देते। यही विचारकर इनके सब मित्र इनकी सहायताको आये हैं। यद्यपि ये पांचोही अपने शत्रुओंके मारनेमें समर्थ हैं, क्योंकि राज्यप्राप्तिमें सब यत्न करते हैं, तथापि आप लोग इनको निर्बल जानकर इनके पास आये हैं। इस लिये हमारी सम्मतिमें एक पवित्र धर्म्मात्मा, कुलीन, पण्डित पुरुष दूत होकर दुर्य्योधनके पास जाय। वहां जाकर वह शान्ति पूर्ब्बक युधिष्ठिरका राज्य मांगे।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! श्रीकृ-ष्णके धर्म्म और अर्थसे भरे मीठे बचन सुन कृष्णके बचनोंकी प्रशंसा करके श्रीबलदेवजी बोले।

१ अध्याय समाप्त।

श्रीबलदेवजी बोले, आप लोगोंने कृष्णके बचन सुने, ये बचन धर्म्म और अर्थसे भरे तथा महाराज युधिष्ठिर और राजा दुर्य्योधन दोनोंहीको सुख देनेवाले हैं। महाराज युधि-ष्ठिरने पहले ही दुर्य्योधनको आधा राज्य बांट दिया था, उसीको अब फिर चाहते हैं। आधा राज्य देकर राजा दुर्य्योधन इन लोगोंके सङ्ग सुखसे रहैं, और पुरुषवीर पाण्डव लोग भी आधा राज्य पाकर शान्ति पूर्ब्बक प्रजाको सुख दें। राजा दुर्य्योधनकी सम्मतिको जान-नेके लिये और महाराज युधिष्ठिरके बचन कहनेके लिये एक दूत शान्ति करनेको हस्तिनापुर जाय! वह दूत कुरुकुल श्रेष्ठ महानुभाव भीष्म, धृतराष्ट्र, द्रोणाचार्य्य, अश्व-त्थामा, विदुर, कृपाचार्य्य, शकुनि और कर्ण आदि प्रधान, सेनापति, और धृतराष्ट्रके पुत्र आदि वीर धर्म्मात्मा, बुद्धिमान, बूढ़े, नगर निवासियोंके बीचमें महाराज युधिष्ठिरके बचन सुनावे; परन्तु वे बचन ऐसे होने चाहिये जिसमें युधिष्ठिरका कल्याण हो! दूत कहे कि, "आप लोग किसी अवस्थासे भी पाण्डवोंको क्रोधित मत कीजिये, क्योंकि वे बनवास रूपी प्रतिज्ञासे पार हो गये और अब बहुत बलवान भी हो गये हैं, आप लोगोंने राजा युधिष्ठिरका राज्य जुवेमें छीना है, सो भी छलसे; क्योंकि कुरुकुल वीर युधि-ष्ठिरको सब मित्रोंने जुवा खेलनेसे रोका था, तथापि उन्होंने जुवा खेला; वे जुवेकी

विद्याको भी नहीं जानते थे और शकुनि जुवेका पण्डित था, उसने छलसे इनको जीत लिया। राजा धृतराष्ट्रने कर्ण और दुर्य्योधनको नहीं छोड़कर युधिष्ठिरको जुवा खेलनेको बुलाया था, परन्तु सभामें सहस्रों अधर्म्मी इकट्ठे कर लिये थे। उन सबको महाराज युधिष्ठिर अपने बलसे जीत सकते थे, परन्तु उन सबको छोड़कर इन्होंने शकुनिहीसे जुवा खेला। उसने इनको जीत लिया। वह सदा जुवा खेलता रहता है, और ये सदा जुवेसे विमुख रहते हैं। यह जुवा हठसे हुआ था, इस लिये शकुनिका कुछ अपराध नहीं है।

दूत राजा धृतराष्ट्रको प्रणाम करके ऐसेही ऐसे शान्ति भरे वचन कहे। ऐसा करनेहीसे दुर्य्योधन दूतके वचनोंको मानेगा। आप लोग पाण्डव और कौरवोंमें युद्ध करानेका यत्न मत कीजिये, शान्तिहीसे दुर्य्योधनको प्रसन्न कर लीजिये। शान्तिसे जो काम होता है, सो उत्तम है, युद्धमें अन्याय हो जाता है, इस लिये युद्ध अच्छा नहीं।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, यदुकुलवीर श्रीबलदेवजीके ऐसे वचन सुन सात्यकी क्रोधमें भरके खड़े हुए, और श्रीबलदेवजीके वचनोंका खण्डन करके इस प्रकार कहने लगे।

२ अध्याय समाप्त।

सात्यकी बोले, हे बलदेव! पुरुष अपने आत्माके अनुसारही वचन कहता है, अर्थात पुरुषकी जैसी आत्मा है, वैसेही वचन उसके मुखसे निकलते हैं। आपकी जैसी आत्मा है, वैसेही आपने वचनभी कहे। जगतमें वीर और कादर दोनों ही होते हैं, और पक्षभी दोनोंहीका प्रबल दीखता है। एकही कुलमें वीर और कादर दोनों उत्पन्न होते हैं, जैसे एकही वृक्षकी दो डालियां होती हैं, एक पर फल लगता है, दूसरी पर नहीं लगता। हे बलभद्र! "इस कर्म्ममें शकुनिका कुछ अपराध नहीं" आपके इस वचनकी मैं निन्दा नहीं करता, परन्तु जिन्होंने इन वचनोंको सुनकर क्षमा करी उन्होंकी निन्दा करता हूं। धर्म्मराजको थोड़ा दोष लगा करभी आप किस प्रकार निर्भय होकर सभामें प्रतिष्ठा चाहते हैं? जुवेकी विद्या न जानने वाले महात्मा धर्म्मराजको बुलाकर जुवेके जानने वाले शकुनिने अधर्म्मसे जीत लिया, क्या आप इसीको धर्म्म समझते हैं? यदि भाइयोंके सहित घरमें बैठे महाराज युधिष्ठिरको कोई जीत लेता तबतो धर्म्म होता। क्षत्रियोंके धर्म्मको माननेवाले युधिष्ठिरको घरमें बुलाकर अधर्म्मसे जीत लिया, इसे धर्म्म कौन कह सकता है? इतने परभी धर्म्मराज युधिष्ठिर क्यों विनयसे राज्य मांगेंगे। वनवाससे छूटकर युधिष्ठिर अपने पिताके राज्यके अधिकारी होचुके, तथापि ये पापके धनको लेनेकी इच्छा नहीं करते, ये कदापि दुर्य्योधनसे राज्य नहीं मांग सकेंगे। वे लोग कैसे धर्म्मात्मा हैं? उनका धर्म्मतो इसीसे प्रकट है, कि वनवासका समय बीतने परभी युधिष्ठिरको राज्य नहीं देते और कहते हैं, कि हम द्रोणाचार्य्य, भीष्म और विदुरकी आज्ञामें चलते हैं। भला वे अबभी पाण्डवोंका धन क्यों नहीं देते? हम प्रतिज्ञा करते हैं, कि उनको अपने तेज वाणोंसे जीतकर महात्मा युधिष्ठिरके पैरों पर गिरा देंगे। यदि वे लोग महात्मा युधिष्ठिरको प्रणाम न करेंगे तो अवश्यही मन्त्रियोंके सहित यमराजका दर्शन करेंगे। क्या उनकी यह शक्ति है, कि युद्ध करते हुए सात्यकीके वाणोंको सह सकें? हमें निश्चय है कि हमारे वाणोंसे वे लोग नष्ट हो जायंगे जैसे वर्षासे पर्व्वत नष्ट होता है। कौन ऐसा वीर है, जो अर्ज्जुन, कृष्ण, सात्यकी, बलवान भीम, महा धनुषधारी यमराज और

कालके समान क्रोधी नकुल सहदेव, विराट और महाराज द्रुपदको युद्धमें देख सके? कौन ऐसा बलवान है, जो युद्धमें पराक्रमी धृष्टद्युम्नसे जीता बच जाय? कौन वीर पाण्डवोंके तुल्य पराक्रमी द्रौपदीपुत्र, देवतोंको भी जीतनेवाले सुभद्रापुत्र अभिमन्यु, काल सूर्य्य और अग्निके समान तेजस्वी साम्ब, गद और प्रद्युम्नसे युद्ध कर सकता है? सो हम सब लोग धृतराष्ट्रपुत्रोंके सहित शकुनि और कर्णको मारकर युधिष्ठिरको राज्य देंगे। दुष्ट शत्रुओंके मारनेमें कुछ अधर्म्म नहीं है, परन्तु शत्रुसे भीख मांगना अधर्म्म और अयशको बढ़ाता है। अब आप लोग आलस्यको छोड़कर युधिष्ठिरके कल्याणका यत्न कीजिये। हम प्रतिज्ञा करते हैं कि धृतराष्ट्रको युधिष्ठिरको राजा बनानाही होगा। यातो युधिष्ठिर राजा होंगे, या सब दुर्य्योधनादिक मरके पृथ्वीमें गिरेंगे।

३ अध्याय समाप्त।

महाराज द्रुपद बोले, हे महाबाहो! तुमने जो कुछ कहा सो सब ऐसेही होगा; क्योंकि दुर्य्योधन शान्तिसे राज्य नहीं देगा। राजा धृतराष्ट्र पुत्रके प्रेमसे, भीष्म और द्रोणाचार्य्य उनका अन्न खानेसे, तथा शकुनि और कर्ण मूर्खतासे दुर्य्योधनके सङ्गी होंगे। यद्यपि पहले शान्ति चाहनेवाले; पुरुषको श्रीबलदेवजीके कहनेके अनुसार ही चलना चाहिये; तथापि उनके बचन मुझे अच्छे नहीं लगते, क्योंकि दुर्य्योधन मीठे बचन कहनेके योग्य नहीं है वह महापापी और दुष्टबुद्धि है। जो पापी दुर्य्योधनसे मीठे बचन कहे, उसको वैसेही भूल है, जैसे गधेकी रक्षा और गऊकी हत्या करनेवालेकी। वह दुष्ट मीठे बचन सुनकर हमारे पक्षको दुर्ब्बल समझेगा। मूर्ख लोग कोमलतासे शत्रुको अपने वशमें समझ लेते हैं। हम तुम्हारे कहनेके अनुसारही करेंगे; अब हम अपने मित्रोंको बुलानेके लिये दूत भेजते हैं, और सेनाका उद्योग करते हैं। शीघ्र चलनेवाले दूत इसी समय हमारी आज्ञासे शल्य, धृष्टकेतु, जयत्सेन और केकय देशके राजोंके पास जायं, क्योंकि निःसन्देह दुर्य्योधनभी सब राजोंके पास अपने दूत भेजेगा, और लोग पहली बातको मानेंगे, इस लिये शीघ्रही राजोंके पास दूत भेजने चाहियें; क्योंकि बड़ा भारी काम करना है। राजा शल्यके पास पहले दूत जायं। वे अपने सङ्गी राजोंके सहित युद्ध करनेको आवें। पूर्व्व समुद्र निवासी भगदत्त, अमितौजा, हार्दिक्य, उग्र, अन्धक, दीर्घप्रज्ञ, सूर, रोचमान, बृहन्त, सेनाबिन्दु, सेनजित, प्रतिविन्ध्य चित्रवर्म्मा, सुवास्तुक, बाल्हीक, मुञ्जकेश, चैद्याधिपति, सुपार्श्व, सुबाहु, महारथ कौरव, शाक, पल्हव, दरद, सुरारि, नदीज, कर्णवेष्ट, नील, वीरधर्म्मा, महाबलवान महायोद्धा दन्तवक्र, रुक्मी, जनमेजय, आषाढ़, बायुवेग, पर्व्वपाली, भूरितेजा, देवक, पुत्रोंके सहित एकलव्य, कारुषक देशके राजा, बलवान क्षेमधूर्ति, काम्बोज, ऋषीक, और द्वीपोंके राजा, जयत्सेन, काशिराज, पञ्चावके सब राजा, क्राथपुत्र, दुर्धर्ष, सब पर्व्वती राजा, जानकी, सुशर्म्मा, मणिमान्य, अतिमत्सक, पांड्यदेशके राजा, बलवान धृतकेतु, तुण्ड, दण्डधार, बलवान बृहत्सेन, अपराजित, निषाद, श्रेणिमान, बसुमान बृहद्बल, बाहु, महौजा, परपुरञ्जय, बलवान पुत्रोंके सहित राजा समुद्रसेन, उद्धव, क्षेमक, राजा वाटधान, श्रुतायु, दृढ़ायु, बलवान शाल्वपुत्र और महायोद्धा कलिङ्ग देशके राजाके पास हमारे दूत जायं और हमारा बुद्धिमान पुरोहित दुर्य्योधनके पास जायं। जो कुछ दुर्य्योधन, भीष्म, धृतराष्ट्रपुत्र और महारथ द्रोणाचार्य्यसे कहना हो, सो उनसे कह दिया जाय। ये बहुत बुद्धिमान और पण्डित हैं।

४ अध्याय समाप्त।

श्रीकृष्ण बोले, महाराज द्रुपदने जो कुछ कहा वह सब बहुत उचित है, ऐसाही करनेसे महातेजस्वी युधिष्ठिरके कार्य्य सिद्ध होंगे। शान्तिकी इच्छा करनेवाले हम लोगोंको पहले ऐसाही करना चाहिये, नहीं तो हम लोग मूर्खके समान बैठेही रह जायंगे। परन्तु हम लोगोंका दुर्य्योधन और पाण्डवोंसे समानही सम्बन्ध है, इस लिये हम लोग किसीकी ओर होकर कोई काम नहींकर सकते। इसके अतिरिक्त एक बात और भी है कि हम सब लोग अभिमन्युके विवाहके नेवतेमें यहां आये हैं, तब विवाह बीत गया अब यहां रहनेका क्या काम है? अब प्रसन्न होकर हम लोग बिदा होते हैं, परन्तु आप हम सब लोगोंमें बूढ़े हैं, और पण्डितभी हैं, इस लिये हम सब लोग आपके शिष्योंके समान हैं; और महाराज धृतराष्ट्र आपको बहुत मानते हैं। इसके अतिरिक्त आप कृपाचार्य्य और द्रोणाचार्य्यके मित्रभी हैं। इस लिये आपही अपनी ओरसे पाण्डवोंकी सन्धिके लिये एक दूत भेजिये। आप जो कुछ कह देंगे, सोई हम लोग सब मान लेंगे। यदि महाराज धृतराष्ट्र न्यायसे शान्त हो जायं तो कौरव और पाण्डवोंका युद्ध नहीं होगा, इससे सब भाइयोंमें प्रेम बना रहेगा। यदि महामानी धृतराष्ट्रपुत्र लोभ और भूलके वशमें होकर सन्धि न करे तो सब राजोंको बुलानेके पीछे हम लोगोंको बुलाइयेगा। उस समय मूर्ख दुर्य्योधन भाई, बन्धु और मन्त्रियोंके सहित क्रोधी अर्जुनके बाणोंसे मरकर पृथ्वीमें गिर जायगा।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, उसी समय महाराज विराटने श्रीकृष्णको भाई और बान्धवोंके सहित प्रसन्न करके बिदा किया। जब श्रीकृष्ण द्वारिकाको चले गये, तब महाराज युधिष्ठिरने राजा बिराटको सहायतासे युद्धकी सामग्री इकट्ठी करनी आरम्भ करी। फिर महाराज द्रुपदने और राजा विराटने सब राजोंके यहां बान्धवोंके सहित बुलानेको निमन्त्रण भेजे। कुरु कुलश्रेष्ठ पाण्डव, विराट और महाराज द्रुपदकी आज्ञासे अनेक महा बलवान राजालोग प्रसन्न होकर विराट नगरमें आये। राजा युधिष्ठिरको महासेना इकट्ठी करते सुन धृतराष्ट्रपुत्रनेभी माननीय राजोंको बुलाना आरम्भ किया। हे राजन्! उस समय राजोंसे सब पृथ्वी भरगई। समस्त पृथ्वीमें राजोंकी सेनाही दीखने लगी। हाथी घोड़े, रथ और, पैदलही चारो ओर दीखते थे! उस समय, समस्त पृथ्वी, पर्व्वत और नदियोंके समेत हिलने लगी। उस समय महाराज द्रुपदने बुद्धि और अवस्थामें बूढ़े अपने पुरोहितको कौरवोंके पास भेजा।

५ अध्याय समाप्त।

महाराज द्रुपद बोले, सब जगतको वस्तुओंमें प्राणी श्रेष्ठ हैं, और प्राणियोंमें बुद्धिसे जीनेवाले श्रेष्ठ हैं, बुद्धिसे जीने वालोंमें मनुष्य श्रेष्ठ हैं, मनुष्योंमें ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं, ब्राह्मणोंमें वैद्य श्रेष्ठ हैं, वैद्योंमें बुद्धिमान श्रेष्ठ हैं, बुद्धिमानोंमें चिकित्सा करनेवाले और चिकित्सकोंमें वेद जानने वाले श्रेष्ठ हैं। हमारी बुद्धिमें आता है कि आप सब बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ हैं, हमारी सम्मतिमें आप कुल, अवस्था और विद्यामें सबसे श्रेष्ठ हैं, आप बुद्धिमें आङ्गिरापुत्र शुक्रके समान हैं, ऐसी कोई विद्या नहीं जिसको आप नहीं जानते; आप महाराज धृतराष्ट्रके स्वभावकोभी अच्छी तरह जानते हैं; और कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरके स्वभावकोभी आप जानते हैं। धृतराष्ट्रके पुत्रोंने छलसे युधिष्ठिरको जीता है, यहभी आप जानतेही हैं; यद्यपि विदुर उनको बहुत समझाते हैं, तौभी वे अपने पुत्रहीकी सम्मति मानते हैं; शकुनिने युधिष्ठिरको बुलाकर जुवेमें जीता था; महाराज युधिष्ठिर जुवा नहीं

जानते और शकुनि जुवामें निपुण है, महाराज युधिष्ठिर बहुत पवित्र और सच्चे हैं, इसीसे शकुनिसे हार गये। उन्होंने छलसे युधिष्ठिरको जीता है, इससे हमें निश्चय होता है कि इनको वे लोग कदापि अपनी इच्छासे राज्य नहीं देंगे। आप धृतराष्ट्रके पास जाकर धर्म्मके सहित वचन सुनाइये जिससे उनके योद्धाओंके चित्त फिर जायं, आपके वचनमें विदुरभी सहायता देंगे। वे भीष्म, द्रोणाचार्य्य और कृपाचार्य्य आदि वीरोंमें भेद करा देंगे। जब मन्त्रियोंमें भेद और योद्धाओंमें द्वेष हो जायगा, तब वे लोग उनको एकमें मिलानेकी चेष्टा करेंगे। इतनेही समयमें पाण्डव लोग सुख पूर्व्वक धन और सेनाका प्रबन्ध कर सकेंगे। जिस समय उनके सब वीरोंमें मेल रहेगा, और आपके जानेमें विलम्ब होगा तब वेलोग अपना सब प्रबन्ध ठीक कर लेंगे और सेना भी बहुतसी इकट्ठी कर लेंगे! इसी लिये विशेषकर आप भेजे जाते हैं; आपके जानेसे राजा धृतराष्ट्र आपके धर्म्मयुक्त वचनोंको मानेंगे। आप बहुत धर्म्मात्मा हैं, जब उनसे धर्म्म सहित वचन कहियेगा, तब सब कार्य्य सिद्ध हो जायंगे। महाराज धृतराष्ट्रसे आप कहियेगा कि, पाण्डव लोग बहुत दुःख रुह चुके हैं, और वे लोग आपकी कृपा चाहते हैं, आप वंशमें बूढ़े हैं, इस लिये आप धर्म्म सहित रहिये। ऐसी ऐसी वचन कहकर आप उनके मनको निःसन्देह अपने वशमें कर लेंगे। आपको उन लोगोंसे कुछ भय भी नहीं हैं, क्योंकि आप वेद जाननेवाले ब्राह्मण हैं और दूत कर्म्मको जानते हैं, विशेषकर बूढ़े हैं। इस लिये आप पुष्य नक्षत्र और जय मूहूर्त्तमें हस्तिनापुरकी यात्रा कीजिये। आपके जानेसे युधिष्ठिरको कार्य्य सिद्धि होगी।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, महात्मा द्रुपदकी आज्ञा सुन बूढ़े पुरोहित हस्तिनापुरको चले। वे नीतिशास्त्रके जाननेवाले महात्मा अपने शिष्योंके सहित हस्तिनापुरको चले।

६ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! पाण्डवोंने पुरोहितको दूत भेजकर और राजोंके पास दूत भेजा। पश्चात स्वयम पुरुषसिंह अर्ज्जुन श्रीकृष्णके बुलानेको द्वारिका गये।

जिन दिन बलदेव और श्रीकृष्ण विष्णि और अन्धक तथा भोज वंशियोंके सहित द्वारिकाको चले गये थे, उसी दिन धृतराष्ट्रपुत्र दुर्य्योधनने इन सब समाचारोंको गुप्त दूतोंके द्वारा जान लिया था। जब उन्होंने सुना कि श्रीकृष्ण तेज घोड़ोंके रथपर बैठकर द्वारकाको चले गये, तभी राजा दुर्य्योधन तेज घोड़ोंके रथपर बैठकर बहुत सेनाके सहित द्वारिकाको चले। जिस दिन दुर्य्योधन द्वारिकाको चले, उसी दिन अर्ज्जुन भी द्वारिकाको चले। वे दोनों पुरुषसिंह कुरुकुल श्रेष्ठ वीर एकही दिन रमणीय द्वारिकापुरीमें पहुंचे; परन्तु पहले दुर्य्योधन पहुंचे, और एक अच्छे आसपर कृष्णके शिरकी ओर बैठ गये। उनके पीछे अर्ज्जुन पहुंचे, वे हाथ जोड़कर कृष्णके पैताने खड़े हो गये। उसी समय कृष्णकी निद्रा खुली; उन्होंने मुंह खोलतेही आगे खड़े अर्ज्जुनको पहले देखा और पीछे शिरहाने बैठे, दुर्य्योधनको देखा। कृष्णने दोनोंकी उचित पूजा करी और दोनोंका सत्कार किया, फिर दोनोंसे आनेका कारण पूछा। उसी समय दुर्य्योधनने हंसकर कृष्णसे कहा, आप इस युद्धमें हमारी सहायता कीजिये, आप हमसे और अर्ज्जुनसे समानही प्रीति रखते हैं, और हमसे और अर्ज्जुनसे आपका सम्बन्ध भी समानही है; इसके अतिरिक्त हम आपके यहां पहले आये हैं, और यह नियम है कि महात्मा लोग पहले आये मनुष्यको मानते

हैं। हे कृष्ण! आप इस समय सब जगतके विद्वानोंमें श्रेष्ठ हैं, आपका सब कोई सम्मान करते हैं, इस लिये आप महात्माओंके अनुसार हमारी सहायता कीजिये।

श्रीकृष्ण बोले, हे राजन्! इसमें कुछ सन्देह नहीं कि आपही हमारे यहां पहले आये हैं; परन्तु हमने पहले कुन्तीपुत्र अर्जुनहीको देखा है। हे दुर्य्योधन! आप पहले आये और अर्जुनको पहले देखा इस लिये हम दोनोंकी सहायता करेंगे। हमने ऐसा सुना है कि लड़कोंका कार्य्य सिद्ध करना चाहिये, इस लिये अर्जुनहीको सहायता देना उचित है। हमारे समान युद्ध करनेवाले एक अर्बुद ग्वालिये हमारे यहां रहते हैं, वे नारायणके नामसे प्रसिद्ध हैं और महायोद्धा हैं; हम एक ओर उनको रखते हैं, और एक ओर आप होते हैं वे लोग युद्ध करेंगे और हम युद्धमें शस्त्रभी नहीं छुवेंगे। हम दोनोंमेंसे जिसको जिसे लेनेकी इच्छा हो उसी ले; परन्तु पहले अर्जुनकी मांगना चाहिये क्योंकि धर्म्मसे यही प्रथम मांगनेके अधिकारी हैं।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, तब अर्जुनने कृष्णहीको मांगा; क्योंकि कृष्ण शत्रुओंके नाश करनेवाले, मायाविग्रधारी तथा देव, दानव और मनुष्योंके जीतनेवाले थे। हे जनमेजय! राजा दुर्य्योधनने पहले कही एक अर्बुद नारायणी सेनाको मांगा। क्योंकि उसने जान लिया कि कृष्ण हमारी ओर नहीं जायंगे। उस सब सेनाको लेकर राजा दुर्य्योधन महापराक्रमी बलदेवके पास गए और उनसे अपने आनेका प्रयोजन कह सुनाया। तब श्रीबलदेवजीने दुर्य्योधनसे कहा।

श्रीबलदेवजी बोले, हे पुरुषसिंह। हे कुरुनन्दन। हम इन सब विषयोंको पहलेहीसे जानते थे, और अभिमन्युके बिवाहके समय राजा विराटकी सभामें हमने तुम्हारे लिये कृष्णसे बहुत कहा भी था। हे राजन्! हमने यह भी दिखलाया था कि दुर्य्योधन और युधिष्ठिरसे सम्बन्ध भी तुल्यही है, परन्तु कृष्णने हमारे बचनोंको नहीं माना और हम कृष्णके बिना क्षणमात्र भी कहीं नहीं रह सकते, इस लिये हम दोनोंमेंसे किसीकी भी सहायता नहीं करेंगे। तुम सब राजोंमें श्रेष्ठ भरत वंशमें उत्पन्न हुए हो, सो जाकर क्षत्रियोंके धर्म्मके अनुसार युद्ध करो, हम किसी ओर भी नहीं जायंगे।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, बलदेवजीको निश्चय बुद्धि जान उनको प्रणामकर और कृष्णको दूसरीओर समुझ राजा दुर्य्योधनने अपनी विजयका निश्चय किया, और कृतबर्म्माके पास गए। कृतबर्म्माने एक अक्षौहिणी सेना महाराज दुर्य्योधनको दी। इन सब सेनाओंको लेकर महाराज दुर्य्योधन बहुत प्रसन्नता पूर्व्वक हस्तिनापुरको लौटे।

दुर्य्योधनके जानेके पश्चात पीताम्बरधारी जगतकर्त्ता श्रीकृष्णजीने अर्जुनसे कहा, तुमने सब सेनाको छोड़ कर अकेले हमको क्यों मांगा?

अर्जुन बोले, हे कृष्ण! आप अकेलेही उन सबको मार सकते हैं और मैं भी अकेलाही उन सबको मार सकता हूं; जगतमें आपकी कीर्त्ति बहुत है; आपके हमारी ओर चलनेसे हमारा यश होगा और हम यशहीको इच्छा करते हैं। इसके अतिरिक्त बहुत दिनसे हमारी यह इच्छा है कि आप हमारा रथ हांकें; सो अब आपको रथ हांकना होगा।

श्रीकृष्णजी बोले, हे अर्जुन! तुमने जो कहा सो सब सत्यही है, हम अवश्य तुम्हारा सारथी बनेंगे।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, इस प्रकार कृष्णके सहित प्रसन्न हो अनेक उत्तम यदुवंशियोंको

सङ्ग लेकर अर्जुन फिर महाराज युधिष्ठिरके पास आये।

७ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, राजा शल्य दूतोंके आतेही बहुत सेना और महारथ पुत्रोंके सहित पाण्डवोंकी सहायताको चले। यह सेना मार्गमें दो कोसतक ठहरती थी। महा पराक्रमी शल्यके सङ्ग एक अक्षौहिणी सेना थी। उसमें विचित्र आभूषण, विचित्र रथ, घोड़े, माला, वस्त्र, कवच, ध्वजा और धनुषधारी अनेक वीर थे, वे सब लोग अपने देशके अनुसार आभूषण धारण किये थे। उसके सेनापति भी महा पराक्रमी और महाशूर वीर थे। वे लोग अपनी सेनाको धीरे धीरे चलाते पृथ्वीको कंपाते और सब प्राणियोंको डराते महाराज युधिष्ठिरके पास चले। जब राजा दुर्य्योधनने सुना कि महारथ शल्य बहुत सेनाके सहित महाराज युधिष्ठिरकी सहायताको जाते हैं, तब उन्होंने आपही मार्गमें आकर राजा शल्यसे भेंट करी। राजा दुर्य्योधनने उनके मार्गमें अनेक रत्नोंसे चित्रित विचित्र सभा बनवाई; रमणीय देशोंमें अनेक शिल्पकारोंको भेजकर अनेक उत्तम स्थान बनवाये; उनमें माला, खानेके योग्य मांस और अनेक पोनेकी वस्तु रखवा दीं। मार्गमें अनेक सुन्दर कूंए, अनेक प्रकारकी बावड़ियां और जलके स्थान भी बनवाये। उन सब सभाओंमें ठहरते हुए और दुर्य्योधनके मान्त्रयोंसे देवतोंके समान पूजा पाते हुए राजा शल्य चलने लगे। एक दिन राजा शल्य देवतोंके स्थानके समान बनी हुई उत्तम सभामें पहुंचे। उसको देखकर उन्होंने जाना कि यह मनुष्योंका बनाया हुआ स्थान नहीं है, और उन्होंने अपनको इन्द्रके समान माना; परन्तु वे अभीतक यही जानते थे कि हमारा यह सब सत्कार युधिष्ठिरहीकी ओरसे होरहा है। उस दिन उन्होंने प्रसन्न होकर सेवकोंसे पूछा, युधिष्ठिरके कौनसे सेवकोंने इस सभाको बनाया है? उनको शीघ्र हमारे पास बुला लावो, हम प्रसन्न होकर उन्हें पारितोषिक देना चाहते हैं; राजा युधिष्ठिर हमारे इस परितोषिक देनेसे प्रसन्न होंगे। राजा दुर्य्योधनके दूतोंने उसी समय जाकर दुर्य्योधनसे कह दिया। जब राजा दुर्य्योधनने जाना कि अब राजा शल्य अपना प्राणतकभी देनेको उपस्थित हैं, तब छिपकर उनके पास गये, राजा शल्यने उनको देखतेही जान लिया कि इसीका यह सब यत्न है। तब प्रसन्न होकर कहा कि जो तुम्हारी इच्छा हो सो मांगो।

दुर्य्योधन, बोले, आप अपने वचनको सत्य कीजिये, और हमारे सेनापति हूजिये। श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, दुर्य्योधनके वचन सुन शल्य बोले, जो तुमने कहा सो वैसेही होगा और जो कहनाहो सो कहो?

दुर्य्योधनने कहा आपने सब कुछ किया!

शल्य बोले, हे पुरुषसिंह दुर्य्योधन! तुम हस्तिनापुरको चले, जावो, मैं शत्रुनाशन युधिष्ठिरको देखने जाता हूं, क्योंकि पुरुषसिंह युधिष्ठिरको देखनेकी मेरी बहुत इच्छा है। दुर्य्योधन बोले कि आप वहांसे शीघ्र लौटें, क्योंकि हम आपहीके आधीन हैं, और अपने वरदानकाभी ध्यान रखना।

शल्य बोले, हे राजन्! हम बहुत शीघ्र लौटेंगे। परस्पर ऐसे बातकर दोनों चल दिये। राजा दुर्य्योधन हस्तिनापुरको गये और महाराज शल्य यह सब समाचार कहनेको पाण्डवोंके यहां गये। उनके नगरमें जाकर राजा युधिष्ठिरको छावनीमें गये! वहां जाकर राजा शल्यने सब पाण्डवोंको बैठे देखा। राजा शल्यको देखतेही पाण्डव-लोग खड़े हो गये और पाद्य, अर्घ तथा गऊसे पूजा करी। फिर शत्रुनाशन महाराज शल्यने प्रेमसे भरके राजा

युधिष्ठिरको अपनी छातीसे लगाया। इसी प्रकार भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव और कृष्णासेभी मिले। फिर आसनपर बैठकर युधिष्ठिरसे बोले, हे राजशार्दूल। हे जीतने वालोंमें श्रेष्ठ! हे कुरुनन्दन! कहो तुम कुशलसे तो हो! हे राजेन्द्र! हे कुरुनन्दन! तुम अपने भाई और द्रौपदीके सहित प्रारब्धहीसे छूटे। हे राजन्! तुमने बहुत भारी काम किया, जो बारह वर्ष निर्जन बनमें रहे और एक बर्ष छिप कर रहे। राज्यभ्रष्टकी सुख कहां है! इसी लिये तुमने ये सब दुःख भोगे। इस दुर्य्योधनके दिये हुए दुःखसे तुम शीघ्रही पार होगे और सब शत्रुओंको मारकर शीघ्रही राज पाओगे। हे महाराज! तुम जगतकी सब बातोंको जाननेहारे! हे प्यारे युधिष्ठिर! तुम पुराने राजोंके समान धर्म्म करतेहो। तुम दान, तप, चमा, इन्द्रियजीतना, सत्य और अहिंसामें तत्पर हो। यह सब जगत तुम्हारीही शक्तिसे स्थिर है। हे राजेन्द्र! तुम कोमल वाणीवाले ब्राह्मणोंके भक्त दाता और धार्म्मिक हो। तुम्हारे गुण जगतमें विदित हैं। हे प्यारे युधिष्ठिर! तुम इस सब जगतको जानते हो, तुम प्रारब्धसे इस ब्रतके पार होगये। हे पृथ्वीनाथ! हम प्रारब्धहीसे आपको भाइयोंके सहित सब दुःखसे पार हुए देखते हैं।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, तब राजा शल्यने दुर्य्योधनके मिलनेका सब समाचार युधिष्ठिरसे कह दिया।

महाराज युधिष्ठिर बोले; हे राजन्! हम प्रसन्न होकर कहते हैं कि आपने जो दुर्य्योधनको बरदान दिया सो बहुत अच्छा किया, हे वीर! हमभी एक बरदान आपसे मांगना चाहते हैं, सो न करनेके योग्य काम भी आपको हमारे लिये करना होगा। आप कृष्णके समान योद्धा हैं, इस लिये यह बरदान आपसे मांगता हूं। हे राजसिंह! जिस समय कर्ण और अर्जुनमें युद्ध होगा, उस समय आप अवश्य कर्णके सारथी बनेंगे; तब आपको अर्जुनकी रचा करनी होगी; यदि आप हमारे प्यारे मामा हैं, तो यह बरदान देनाही होगा। इसके अतिरिक्त उस युद्धमें आप कर्णके बलको घटाइयेगा, इससे हमारी विजय होगी। हे मांमा! यद्यपि यह कर्म्म आपके योग्य नहीं है, तथापि आपको हमारे प्रेमसे करना होगा।

शल्य बोले, हे पाण्डव! तुम्हारा कल्याण हो, तुम जो हमसे कर्ण और अर्जुनके युद्धका बरदान मांगते हो, सो हम निश्चय कर्णके सारथी बनेंगे। तुम जो हमको कृष्णके समान योद्धा कहते हो; इसका उत्तर हम युद्धमें देंगे; क्योंकि ऐसा कहनेको यहां कोई आवश्यकता नहीं थी। हम प्रतिज्ञा करते हैं कि, हम ऐसा यत्न करेंगे कि जिसमें कर्णका बल घटे। हे प्यारे। तुमने जो कुछ कहा हम सब वैसेही करेंगे, और भी जहां तक हमारी शक्ति होगी तुम्हारा कल्याण हम करेंगे। तुमने जो द्रौपदीके सहित जवमें दुःख पाया है, कर्णने जो कठोर बचन तुमसे कहे हैं, जटासुर और कीचकने जो कुछ द्रौपदीको दुःख दिये हैं, उन सबका नाश होकर तुम्हें सुख मिलेगा। हे वीर! हे महातेजस्वी! इन सबमें तुम्हें कुछ शोक नहीं करना चाहिये! प्रारब्ध बड़ा बलवान है, महात्माओंको दुःख होतेही हैं; देवता लोगोंको भी दुःख सहन होते हैं। हमने सुना है कि अपनी स्त्रीके सहित देवराज इन्द्रने भी बहुत दुःख सहे थे।

८ अध्याय समाप्त!

युधिष्ठिर बोले, हे राजेन्द्र! महात्मा इन्द्रने इन्द्राणीके सहित कब घोर दुःख सहा था?

इसको हम सुननेको इच्छा करते हैं, आप कहिये ।

शल्य बोले, हे राजेन्द्र ! जिस प्रकार इन्द्रने इन्द्राणीके सहित घोर दुःख सहा था, सो पुराना इतिहास हम तुमसे कहते हैं, सुनो ।

पहले समयमें महातपस्वी देवश्रेष्ठ त्वष्टा प्रजापति थे । उन्होंने इन्द्रको शत्रुतासे त्रिशिरा नामक पुत्रको उत्पन्न किया । उस महातेजस्वी तीन शिरवाले विश्वरूपने इन्द्रासन छीननेकी इच्छा करी । उसके तीनों शिर चन्द्रमा, सूर्य्य और अग्निके समान थे, वह एक मुखसे वेद पढ़ता था, एकसे मद्य पीता था, और एकसे सब ओर इस प्रकार देखता था, मानो सबको खा जायगा । हे शत्रुनाशन ! वह तपस्वी शान्त इन्द्रियजित तथा धर्म्म और तपको करनेवाले थे, उन्होंने घोर तप किया । उस महातेजस्वीके तप और सत्यको देखकर इन्द्रको शङ्का हुई कि यह इन्द्र न हो जाय । इन्द्रने विचारा कि इसका तप किस प्रकार नष्ट होय, और यह किस प्रकार भोगोंकी इच्छा करे ; क्योंकि इसकी वृद्धि होनेसे सब लोकका नाश हो जायगा । बुद्धिमान इन्द्रने बहुत विचारकर उसके तप नाश करनेके लिये अप्सराओंको आज्ञा दई । इन्द्रने अप्सराओंसे कहा तुम लोग शीघ्र त्रिशिराके पास जाकर ऐसा उपाय करो जिसमें वह कामदेवके वशमें होय ; तुम लोग शृङ्गार करके बाल गूथकर मनोहर हार पहनकर अपना रूप सुन्दर बनाकर हाव भावसे विश्वरूपको अपने वशमें करो, क्योंकि उसका तप देखकर मैं बहुत असावधान हो रहा हूं, मुझको उससे बहुत भय है, तुम लोग इस भयको दूर करो ।

अप्सरा बोलीं, हे इन्द्र ! आपने जो कुछ कहा सो हम वैसाही यत्न करेंगी, आप विश्वरूपसे कुछ भय मत कीजिये ; यह जो अपने तेज भरे नेत्रों से जगतको जलाये देता है, उस विश्वरूपको हमलोग अपने वशमें करनेको जाती हैं । राजा शल्य बोले, इन्द्रकी आज्ञा सुन वे सब अप्सरा स्वर्गसे चलीं और जाकर विश्वरूपको अनेक भावोंसे मोहित करने लगीं । वे सब अपने सुन्दर शरीरोंको दिखाने लगीं ; परन्तु उनके देखनेसे महा तपस्वी विश्वरूपको कुछभी बिकार न हुआ । वे अपनी इन्द्रियोंको वशमें करके पूर्ण समुद्रके समान खड़े रहे । अप्सरा अनेक यत्न करके इन्द्रके पास लौट गईं । और जाकर हाथ जोड़ इन्द्रसे बोलीं, हे देवराज ! वह महातपस्वी हमारे वशमें होने योग्य नहीं हैं, अब जो आपकी आज्ञाहो सो हम करें । बुद्धिमान इन्द्रने उनकी प्रशंसा करके सबको बिदा किया । फिर उसके मारनेका विचार करने लगे । महा प्रतापी देवराज एकान्तमें बैठकर विश्वरूपके मारनेका उपाय सोचने लगे । बुद्धिमान इन्द्रने विश्वरूपके मारनेका उपाय निश्चय कर लिया, और विचारा कि मैं उसके शिरमें वज्र मारूंगा, उससे यह मर जायगा । इन्द्र ने शास्त्रके निश्चयसे विचारा कि बलवानकोभी यह उचित नहीं कि अपने दुर्ब्बल शत्रुको जीता छोड़े । अनन्तर इन्द्रने क्रोध करके अग्निके समान घोररूपी वज्रको त्रिशिराके शिरमें मारा ! उसके लगनेसे त्रिशिरा ऐसे मरकर पृथ्वीमें गिरा जैसे पर्व्वतका शिखर टूटकर गिरता है । उसे मरा हुआ और पर्व्वतके समान पृथ्वीमें गिरा हुआ देख करभी इन्द्र उसके तेजसे शान्त न हुए, अर्थात तब भी डरतेही रहे । वह मरा हुआ भी अपने तेजसे जीतेके समान प्रकाशित हो रहा था । उस मरे हुएके शिरभी जीते हुएके समान दीखते थे । तब इन्द्र भयसे व्याकुल और खड़े होकर सोचने लगे । इतनेहीमें फरसा लिये तक्ष आगये । जहां डरे हुए इन्द्र खड़े थे वहीं

तच पहुंचे। तब इन्द्रने तचसे कहा, कि तुम हमारी आज्ञासे शीघ्र इसके शिर काट दो। तच बोले, इसके शिर बहुत भारी हैं, मेरे काटनेसे नहीं कट सकते और मैं इस नीच कर्म्मको करना भी नहीं चाहता।

इन्द्र बोले, तुम कुछ भय मत करो और हमारी अज्ञाको पालन करो ; हमारी कृपासे तुम्हारा फरसा वज्रके तुल्य हो जायगा।

तच बोले, हम नहीं जानते कि, घोर कर्म्म करनेवाले तुम कौन हो ? तुम हमसे अपना समाचार कहो।

इन्द्र बोले, तुम हमको देवराज इन्द्र जानो, और बिना विचारे हमारी आज्ञाको पालन करो।

तच बोले, हे इन्द्र ! इस नीच कर्म्मको करके तुम्हें लज्जा क्यों नहीं होती ? क्या इस ऋषि-पुत्रके मारनेसे तुम्हें ब्रह्महत्याका भय नहीं है ? इन्द्र बोले, हमने इस महा पराक्रमी शत्रुको वज्रसे मारा है, इसके पीछे प्रायश्चित्त कर लेंगे। हे तच ! मैं अब भी इसके भयसे घबड़ा रहा हूं, तुम शीघ्र इसके शिर काटो, मैं तुम्हारे ऊपर बहुत कृपा करूंगा। आजसे मनुष्य जो यज्ञ किया करेंगे उसमें पशुओंका शिर तुम्हें मिला करेगा, यही कृपा हम तुम्हारे ऊपर करते हैं ; तुम शीघ्र इसके शिर काटो।

शल्य बोले, हे राजन् ! इन्द्रकी ऐसे वचन सुन तचने उसी समय फरसेसे त्रिशिराके शिर काट लिये। जब उसके शिर कट चुके तब उसके शरीरसे अनेक पची निकलने लगे, तीतर, सफेद तीतर और कलविङ्क आदि अनेक पची निकले। विश्वरूप जिस मुखसे सोम पीते थे, उससे सफेद तीतर निकले, जिससे सब ओर देखते थे, उस मुखसे तीतर निकले। हे पाण्डव ! हे पृथ्वीनाथ ! विश्वरूप जिस मुखसे मद्य पीते थे, उस मुखसे सफेद तीतर निकले, और उसी मुखसे बाज भी निकले। हे पुरुषसिंह ! विश्वरूपका शिर काटनेसे इन्द्र बहुत प्रसन्न हुए और प्रसन्न होकर स्वर्गको चले गए। उसी समय तच भी अपने घरको चले गये। दैत्यनाशक इन्द्र विश्वरूपको मारकर अपनेको कृतकृत्य जानने लगे। जब विश्वरूपके पिता त्वष्टा प्रजापतिने सुना कि मेरे पुत्र विश्वरूपको इन्द्रने मार डाला, तब क्रोधमें भरकर ऐसा कहने लगे।

त्वष्टा बोले, इन्द्रने चमावान, दयावान जितेन्द्रिय मेरे पुत्रको तप करते हुए बिना अपराध मार डाला, इस लिये मैं वृत्रासुरको उत्पन्न करता हूं। आज हमारे तपोबलको सब लोक देखें ; दुरात्मा पापी इन्द्र भी आज हमारी तपस्याके बलको देखे। ऐसा कहकर महायशस्वी और महातपस्वी त्वष्टाने शुद्ध जलको स्पर्श किया। उसके पश्चात अग्निमें हवन करके घोररूपी वृत्रासुरको उत्पन्न किया। फिर उससे बोले, हे इन्द्रके शत्रु ! तुम हमारे तपके बलसे बढ़ो त्वष्टाके वचन निकलतेही वृत्रासुर चन्द्रमा अग्नि और सूर्य्यके समान तेजस्वी होकर आकाशतक बढ़ गया। फिर त्वष्टासे बोला कि हम आपके दास हैं, कहिये क्या करें ?

त्वष्टा बोले, तुम इन्द्रको जीतो। उनके वचन सुनतेही वृत्रासुर स्वर्गको चला गया। तब वृत्रासुर और इन्द्रका घोर युद्ध हुआ। हे कौरव ! उस घोर युद्धमें वीर वृत्रासुरने यज्ञकर्त्ता इन्द्रको पकड़ लिया। फिर वृत्रासुरने इन्द्रको अपने मुखमें डाल लिया। फिर अपने मुखको बन्द कर लिया। जब इन्द्रको वृत्रासुर खा गया ! तब सब देवता घबड़ाये। उसी समय उन्होंने जमुहाईको उत्पन्न किया उस जमुहाईसेही वृत्रासुरका नाश हुआ, क्योंकि जमुहाई लेनेसे वृत्रासुरका मुह फैल गया। उसी समय अपने शरीरको छोटा बना

कर बल नाशक इन्द्र निकल गये। उसी दिनसे जमुहाई सब जगतमें फैल गई। इन्द्रको निकलते हुए देख सब देवता प्रसन्न हुए। फिर वृत्रासुर और इन्द्रका घोर युद्ध होने लगा। हे भरतकुल सिंह! यह युद्ध बहुत दिन तक होता रहा, जब त्वष्टाके तपोबलसे बृत्रासुरको बहुत वृद्धि हुई। तब इन्द्र युद्ध छोड़कर भाग गये। तब देवता बहुत घबड़ाये। त्वष्टाके तपोबलसे सब देवताओंकी बुद्धि नाश हो गई। तब देवतोंने मुनियोंके सङ्ग सम्मति करी। हे राजन्! देवता लोग कहने लगे कि अब क्या करना चाहिये? अनन्तर सब देवता भयसे व्याकुल होकर मन्दराचलके शिखरपर बैठे और अविनाशी विष्णुका ध्यान करके वृत्रासुरके नाशको इच्छासे लोग महात्मा विष्णुके पास चले, कि उन महात्माके पास चलनेसे बृत्रासुरके मारनेका उपाय जाना जायगा।

९ अध्याय समाप्त।

शल्य बोले, इन्द्रके, ऐसे वचन सुन सब देवता और ऋषि शरणागतपर कृपा करनेवाले विष्णुके पास गये। महा बलवान महात्मा विष्णुके पास जाकर देवता बोले, हे विष्णु! हम लोग बृत्रासुरके भयसे व्याकुल हो गये हैं, आपके तोनों गुणोंसे पहले तीनों लोक व्याप्त थे; आपने अपने बलसे दैत्योंसे अमृत छीना था और उनको युद्धमें माराभी था; आपने महा पराक्रमसे बलिको बांधकर इन्द्रको देवराज बनाया था; आप सब देवतोंके स्वामी हैं; आपसे तीनों लोक व्याप्त हैं; आप देवतोंके महादेव हैं, आपको सब लोक नमस्कार करते हैं; हे देवश्रेष्ठ! आप इन्द्रके सहित देवतोंको शरण दें, आप जगतके स्वामी हैं, हे दैत्यनाशक! इस समय तीनों लोकमें बृत्रासुर व्याप्त हो रहा है।

विष्णु बोले, हमको अवश्य आप लोगोंका कल्याण करना चाहिये, इस लिये हम बृत्रासुरके नाशका उपाय बताते हैं, आप सब देवता और ऋषि लोग उस विश्वरूपधारी राक्षसके पास जायं और सन्धि करलें; इसके पश्चात हमारे तेजसे इन्द्रकी विजय होगी, हम इन्द्रके उत्तम शस्त्र वज्रमें प्रवेश कर जायंगे, परन्तु हमें कोई नहीं देखेगा, हे देवतो! आप लोग ऋषि और गन्धर्वोंके सहित वृत्रासुरके पास जाकर इन्द्रकी सन्धि करा दें। इसमें विलम्ब मत करें।

शल्य बोले, विष्णुकी ऐसी आज्ञा सुन देवता और ऋषि इन्द्रको आगे कर वहांसे चल दिये। फिर बृत्रासुरके पास जाकर महा तेजस्वी देवतोंने अपने तेजसे दशोंदिशाओंको प्रकाशित करते हुए वृत्रासुरको देखा। उस समय बृत्रासुरका ऐसा तेज बढ़ा था, मानो वह तीनों लोकोंको खा जायगा। उसके दोनों नेत्र चन्द्रमा और सूर्य्यके समान प्रकाशित हो रहे थे। पहले बृत्रासुरके पास जाकर ऋषि लोग मीठे वचनसे बोले, हे दुःखसे जीतनेयोग्य! इस समय तीनों लोक तुम्हारे तेजसे भर गये हैं, हे बलियोंमें श्रेष्ठ! तुम बहुत दिनसे इन्द्रके सङ्ग युद्ध कर रहे हो, परन्तु उनको जीत नहीं सकते हो; तुम दोनोंके युद्धसे देवता, मनुष्य और राक्षसोंके सहित सब प्रजाको दुःख होता है, इस लिये तुम इन्द्रके सङ्ग मित्रता कर लो। महा पराक्रमी वृत्रासुर ऋषियोंके वचन सुन उनको प्रणाम कर कहने लगा, तुम सब लोग ऋषि और गन्धर्व्व हमसे जो कहते हो, सो हमने सुना। हे पाप-रहितो! हमकोभी जो कुछ कहना है, सो आप सुनें, हमारे और इन्द्रके सङ्ग मित्रता कैसे हो सकती है? क्योंकि हम दोनोंही महा पराक्रमी हैं?

ऋषि लोग बोले, मनुष्यको उचित है कि सदा महात्माओंको सङ्गति करे, फिर कल्याणही प्राप्त होता है। इस लिये महात्माओंको

सङ्गतिको नहीं छोड़ना चाहिये। महात्माओंकी मित्रता अचल होती है और आपत्तिके समयमें महात्मा लोग धर्म्मका उपदेश करते हैं, इस लिये सत्पुरुष पण्डितोंके सङ्गको न छोड़े। इन्द्र सब महात्माओंमें श्रेष्ठ हैं, और महात्माओंके सङ्गही रहना अच्छा है, और इन्द्र सत्यवादी, महात्मा, धर्म्मको जानने वाले और धर्म्मात्मा हैं, इस लिये इन्द्रके सङ्ग तुम्हारी सन्धि होनी चाहिये, यह सन्धि सदाके लिये रहेगी। इस प्रकार उसका विश्वास बढ़ाकर देवतोंने उसकी बुद्धिको अपने वशमें कर लिया।

शल्य बोले, हे राजन् युधिष्ठिर! महातेजस्वी बृत्रासुरने ऋषियोंके बचन सुन कहा कि हमको आप लोगोंके बचन अवश्य मानने चाहिये, परन्तु यदि आप लोग हमारे बचनको करें तो मैं आप लोगोंके सब बचनोंको मानूंगा। हे ब्राह्मण-ऋषियो! मैं सब देवतोंके सहित इन्द्रके हाथसे सूखे, गीले पत्थर, काठ, शस्त्र और अस्त्र सेभी न दिनमें और रातमें मारा जाऊंगा। ऐसा करनेसे मैं इन्द्रके सङ्ग सन्धि करूंगा। हे भरत-कुल-श्रेष्ठ युधिष्ठिर! बृत्रासुरके ऐसे बचन सुन ऋषियोंने कहा कि बहुत अच्छा ऐसेही होगा। फिर इन्द्र और बृत्रासुरकी सन्धि हो गई। इस सन्धिसे बृत्रासुर और इन्द्र दोनों प्रसन्न हुए, और सुखसे सङ्ग रहने लगे, परन्तु इन्द्र बृत्रासुरके मारनेका छिद्र देखने लगे और घबड़ाते हुए दिन काटने लगे। एक दिन सन्ध्या समय दारुण मुहूर्त्तमें इन्द्रने बृत्रासुरको समुद्रके तटपर घूमते देखा, उसी समय इन्द्रने महात्मा ऋषियोंके बरदानको स्मरण करके सोचा कि यह घोर सन्ध्याका समय है, अब न रात्रि है, अब न दिन है और यह बृत्रासुर हमारा सर्व्वनाश करनेवाला शत्रु है। इस लिये इसको अवश्य मारना चाहिये, यदि मैं इस समय छलकर बृत्रासुरको न मारूंगा तो मेरा कल्याण नहीं होगा; क्योंकि यह बड़ा बलवान और बड़े शरीरवाला है। ऐसा बिचारकर इन्द्रने विष्णुका ध्यान किया। उसी समय समुद्रमें एक पर्व्वतके समान फेन दिखाई दिया! उसको देखकर इन्द्रने बिचारा कि यह न सूखा, न गीला, न शस्त्र और न अस्त्र है! इस लिये इसीसे बृत्रासुरको मारना चाहिये, इसके लगतेही यह मर जायगा। उसी समय इन्द्रने बज्रमें फेन लगाकर बृत्रासुरके शिरमें मारा। उस बज्रमें विष्णुने भी प्रवेश किया था, उसके लगतेही बृत्रासुर मरकर पृथ्वीमें गिर गया। बृत्रासुरके मरतेही दिशा निर्म्मल हो गईं। शीतल वायु चलने लगा और प्रजा भी सुखी हो गई। उसी समय देवता, गन्धर्व्व, यक्ष, राक्षस, सर्प और ऋषि लोग अनेक प्रकारसे इन्द्रकी स्तुति करने लगे। अपने शत्रुको मारकर इन्द्र देवतोंके सहित प्रसन्न हुए और सबकी स्तुति सुनकर सबको शान्त करने लगे। फिर धर्म्म जाननेवाले इन्द्रने सब जगत श्रेष्ठ विष्णुकी पूजा करी। जब देवतोंको भय देनेवाला महा पराक्रमी बृत्रासुर मारा गया, तब इन्द्र इस विश्वासघात और पहले करी विश्वरूपकी ब्रह्महत्यासे बहुत घबड़ाये। अनन्तर एकान्तमें जाकर संज्ञाशून्य होकर बैठ रहे। उस समय पापोंके वशमें होनेसे इन्द्रको कुछ ज्ञान नहीं रहा; वे जलमें छिपकर सांपके समान रहने लगे। जिस समय ब्रह्महत्यासे डरकर इन्द्र भाग गये, उस समय बनोंके वृक्ष सूख गये, भूमि नष्ट हो गई, नदियोंके जल सूख गये, तलाव जल रहित हो गये, जल नहीं बरसा इससे सब प्रजा घबड़ा गई। देवता और ऋषि भी कांपने लगे; सब जगत उपद्रवोंसे भर गया। तब देवतोंने घबड़ाकर बिचारा कि हम किसे राजा बनावें। देव ऋषि भी घबड़ाये और नवीन इन्द्र बनानेकी सम्मति करने लगे।

१० अध्याय समाप्त।

शल्य बोले, हे राजन् युधिष्ठिर! जिस समय इन्द्र चले गये, तब सब देवता और ऋषि लोग सम्मति करके कहने लगे कि श्रीमान् महाराज नहुषको इन्द्र बनाना चाहिये, क्योंकि ये तेजस्वी, यशस्वी और धार्म्मिक हैं। ऐसा विचार कर सब देवता और ऋषि नहुषके पास जाकर कहने लगे, हे पृथ्वीनाथ! आप हम लोगोंके राजा हूजिये। ऐसा सुन राजा नहुष पितृ ऋषि और देवतोंसे बोले, हम बहुत दुर्ब्बल हैं, इस लिये आप लोगोंके राजा नहीं हो सकते; बलवानही राजा हो सकता है, और बल सदासे इन्द्रहीमें है। उनके वचन सुन ऋषि और देवता बोले, आप हम लोगोंके तपसे रक्षित होकर स्वर्गका राज्य कीजिये, क्योंकि बिना राजाके परस्पर द्वेष होनेका बहुत भय है, इस लिये आप स्वर्गके राजा हूजिये। इन्द्र होतेही आपमें देवता, दानव यक्ष, राक्षस, ऋषि, पितर और गन्धर्व्व आदि सब प्राणियोंका तेज आ जायगा, इस लिये आप धर्म्म रहित स्वर्गका राज्य कीजिये। आप इन्द्र होकर देवता ऋषि और ब्राह्मणोंकी रक्षा कीजिये। हे युधिष्ठिर! ऐसा कहकर सबने राजा नहुषको इन्द्र बनाया। वे भी धर्म्मसे तीनों लोकोंका राज्य करने लगे। इस दुर्लभ पदको पाकर धर्म्मात्मा नहुष इन्द्रका राज्य करने लगे। फिर अनेक देव कन्याओंको प्राप्त करके उनके सङ्ग अनेक प्रकारकी काम क्रीड़ा करने लगे। उत्तम कथा, मनोहर बाजे और मीठे स्वरवाली गीतोंको सुनते हुए आनन्द करने लगे। विश्वावसु, नारद, गन्धर्व्व अप्सरा और छहों ऋतु रूप धारण करके राजा नहुषके पास आने लगे। उनके सम्मुख उत्तम स्पर्शवाली सुगन्धयुक्त वायु चलने लगा। इस प्रकार राजा नहुष बहुत दिन तक आनन्द करते रहे। एक दिन उनने इन्द्रकी प्यारी स्त्री शचीको देखा; उसको देख नहुष सभासदोंसे बोले, इन्द्राणी हमारे पास क्यों नहीं आती? यह इन्द्रकी प्यारी स्त्री हमसे क्यों प्रेम नहीं करती? हम इन्द्र हैं, और तीनों लोकोंके स्वामी हैं, इस लिये शीघ्रही शची हमारे घरमें आवे। ऐसा सुनकर शची बहुत घबड़ाई, और बृहस्पतिकी शरण जाकर कहने लगी, हे ब्रह्मण! मैं, आपकी शरणागत हूं, आप हमको नहुषसे बचाइये; मैं सब लक्षणोंसे भरी और इन्द्रकी स्त्री हूं, सदासे सुख किया है; आपने पहले मुझको आशीर्व्वाद दिया था, कि तू विधवा नहीं होगी; एकही स्त्री और पतिव्रता रहेगी, सो हे ब्रह्मन! हे ईश्वर! आप अपने वचनोंको! सत्य कीजिये। आप कभी झूठ नहीं बोलते हैं, इस लिये आपके ये वचनभी सत्य होने चाहिये। भयसे व्याकुल इन्द्राणीसे बृहस्पति बोले, हे देवि! तुमने हमसे जो कुछ कहा सो सब सत्यही होगा, तुम शीघ्रही स्वर्गमें आये इन्द्रको देखोगी; इस लिये नहुषसे कुछ मत डरो। मैं तुमसे सत्य कहता हूं कि मैं शीघ्रही इन्द्रको बुलाऊंगा। इस समाचारको राजा नहुषने भी सुन लिया, सुनकर बृहस्पतिके ऊपर बहुत क्रोध किया।

११ अध्याय समाप्त।

शल्य बोले, जब देवता और ऋषियोंने नहुषको क्रोध किये देखा तब उनसे सब बोले, हे देवराज! हे जगतके स्वामी! आप क्रोध मत कीजिये, आपको क्रोध होनेसे देवता राक्षस, गन्धर्व्व, किन्नर और सांप आदि सब प्रजा डर रही है, हे महात्मन! आप इस क्रोधको छोड़ दीजिये क्योंकि आपके तुल्य मनुष्य क्रोध नहीं करते, हे देवराज! आप प्रसन्न हूजिये, शची दूसरेकी स्त्री है; आप इस पापसे अपने चित्तको फेरिये; दूसरेकी स्त्रीके

ऊपर दृष्टि करना महात्माओंका काम नहीं है, आप देवराज हैं, धर्म्मसे प्रजाका पालन कीजिये। ऋषियोंने अनेक बचन कहे, परन्तु काम मोहित नहुषने कुछ न सुना और कहने लगा कि इन्द्रने गौतमके जीतेही उसकी स्त्री अहिल्याको भ्रष्ट किया था, तुम लोगोंने उनको क्यों नहीं मना किया? शची हमारे पास आवे इसीमें उसका कल्याण होगा। देवता बोले, हे खगनाथ! आप क्रोधको दूर कीजिये, हम लोग यह सब समाचार कहनेको इन्द्राणीके पास जाते हैं।

शल्य बोले, इसके पश्चात् यह सब समाचार कहनेको देवता और ऋषि वृहस्पति और इन्द्राणीके पास गये और वृहस्पतिसे कहने लगे। हे देवऋषियोंमें श्रेष्ठ! हे ब्राह्मणोत्तम! हम लोग जानते हैं कि उस इन्द्राणीको अभय देकर आपने अपने स्थानमें रक्खा है। हे महातेजस्विन्! आपसे देवता और ऋषि इन्द्राणीको नहुषके लिये मांगते हैं, आप दीजिये। नहुष महातेजस्वी और देवराज हैं, इस लिये सुन्दरी शची उनको अपना पति बनावे।

देवताओंके बचन सुन शची रोकर वृहस्पतिसे कहने लगी, हे देव ऋषियोंमें श्रेष्ठ! मैं नहुषको अपना पति बनाना नहीं चाहती, आप इस भयसे मेरी रक्षा कीजिये।

वृहस्पति बोले, हे इन्द्राणी! मेरी यह प्रतिज्ञा है कि, हम शरणागतको नहीं छोड़ते, हे निन्दा रहित शची! तुम धर्म्म और सत्यसे भरी हो, इस लिये हम तुमको नहीं छोड़ेंगे; मैं ब्राह्मण हूं, इस लिये अधर्म्म नहीं करूंगा। मैं धर्म्म जानता हूं, शीलसे भरा हूं, इस लिये अधर्म्म नहीं करूंगा। हे देवतो! तुम लोग चले जाओ मैं इन्द्राणीको नहीं दूंगा; इस विषयमें ब्रह्माने जो कहा है सो सुनो,—"जो शरणागतको शत्रुको दे देता है, उसके बोये हुए खेतमें अन्न नहीं उत्पन्न होते, वह होनेपर भी समयपर जल नहीं बरसता और उसकी रक्षा करनेका फल भी नहीं मिलता; उसको अन्न बहुत नहीं मिलता, और वह मूर्ख स्वर्गलोकसे भी गिरा दिया जाता है। जो डरे हुए शरणागतको छोड़ देता है, उसकी आहुतिको देवता नहीं ग्रहण करते; उस राजाकी प्रजा नष्ट हो जाती है, उसके पितर नरकमें चले जाते हैं और इन्द्र सहित देवता उसके ऊपर बज्र गिराते हैं। हम इन सबको जानकर शचीको नहीं देंगे, क्योंकि यह जगतमें इन्द्रकी प्यारी स्त्री विख्यात है; जिसमें हमारा और इसका कल्याण हो, सोई काम आप लोगोंको करना चाहिये। हम शचीको नहीं देंगे।

शल्य बोले, वृहस्पतिके ऐसे बचन सुन सब देवता ऋषि और गन्धर्व्व कहने लगे, हे वृहस्पते! अब किस प्रकारसे कल्याण होगा सो कहो।

वृहस्पति बोले, कुछ समयके लिये नहुषसे इन्द्राणीको मांगना चाहिये, इसमें हमारा तुम्हारा और इन्द्राणीका कल्याण है। हे देवता! फिर कुछ और विघ्न पड़ जायगा, इस समय बलसे नहुष बहुत अभिमानी और बलवान हो गया है।

शल्य बोले, वृहस्पतिके बचन सुन सब देवता प्रसन्न हुए और कहने लगे कि, हे ब्रह्मन्! आपने बहुत ठीक कहा, ऐसा करनेसे सब देवतोंका कल्याण होगा, हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! ऐसाही करनेसे इन्द्राणीको प्रसन्न करना चाहिये। अनन्तर अग्नि आदिक देवता लोकके कल्याणके लिये इन्द्राणीसे कहने लगे। देवता बोले, हे देवि! तुम्हारे सत्यसे यह सब जगत स्थिर है, तुम पतिव्रता धर्म्मसे भरी हो, तुम नहुषके पास जाओ, वह इस समय देवराज इन्द्र है, तुमको प्राप्त करतेही उसका नाश हो जायगा। ऐसा निश्चय करके इन्द्राणी पापी नहुषके पास गई। नहुष भी उस सुन्दरी रूप-

वतीको देख कामसे मोहित होकर प्रसन्न हुए।

१२ अध्याय समाप्त।

शल्य बोले, हे राजन् युधिष्ठिर! शचीको देख देवराज नहुषने कहा, मैं तीनों लोकोंका इन्द्र हूं, हे सुन्दर हंसनेवाली! हे सुन्दरमुखी! हे उत्तम वर्णवाली! तुम हमारी स्त्री होवो।

पतिव्रता शची नहुषके ऐसे बचन सुन इस प्रकार कांपने लगी, जैसे केलेका वृक्ष कांपता है। फिर हाथ जोड़कर देवराज नहुषसे बोली, हे देवराज! आप थोड़ा समय हमको दीजिये, क्योंकि मैं यह नहीं जानती कि इन्द्र कहां गये और किस दशामें हैं? इस लिये मैं इस सबको जानकर आपकी स्त्री हूंगी।

इन्द्राणीके ऐसे बचन सुन नहुष प्रसन्न होकर कहने लगे। नहुष बोले, हे सुश्रोणि! तुम जो कहती हो सो ऐसेही होगा, तुम इन्द्रको सब बात जानकर हमारे पास आना, हमकोभी ऐसाही सत्य जान पड़ता है। ऐसा कह नहुषने इन्द्राणीको विदा किया! सुन्दरी यशस्विनी इन्द्राणी वहांसे चलकर बृहस्पतिके घर गई और सब देवतोंको नहुषके बचन कह सुनाये। अग्नि आदिक देवतोंने शचीके बचन सुन एकान्तमें बैठकर इन्द्रके बुलानेका विचार किया। फिर सब पण्डित देवता घबड़ाकर जगतके स्वामी देव देव विष्णुके पास गये और कहने लगे कि इन्द्र ब्रह्महत्यासे घबड़ाकर न जाने कहां भाग गये, अब आपही हम सबके स्वामी हैं, और हम लोग आपकी शरण हैं, आप जगतकी रक्षाके लिये विष्णु हुए है; आपके बलसे वृत्रासुरको मारकर ब्रह्महत्यासे घबड़ा कर इन्द्र भाग गये। अब आप उनके पवित्र होनेकी कथा बताइये।

देवतोंके बचन सुन विष्णु बोले, तुम लोग हमारी पूजा करो तो हम बज्रधारी इन्द्रको पवित्र कर देंगे। निर्भय इन्द्र फिर देवतोंके राजा होंगे और पापी नहुषका अपने कर्म्मोंसे नाश हो जायगा। हे देवतो! तुम लोग थोड़े दिन आलस रहित होकर समय बिताओ। विष्णुके ऐसे उत्तम बचन सुन देवतोंने इस वाणीको सत्य और अमृतके समान जाना। इसके पश्चात् सब देवता और ऋषि उस स्थानपर गये, जहां भयसे छिपे हुए इन्द्र बैठे थे। हे युधिष्ठिर! महात्मा इन्द्रने अपने पवित्र होनेके लिये उसी स्थानपर अश्वमेध यज्ञ किया। अनन्तर इन्द्रने उस ब्रह्महत्याको वृक्ष, नदी और स्त्रियोंको बांट दिया। देवराज इन्द्र इस प्रकार ब्रह्महत्या करनेसे पवित्र हुए और सुखी होकर सावधान होगये। अनन्तर बलनाशक इन्द्रने देखा कि नहुष बरदानके बलसे इन्द्रासनको नहीं छोड़ता और सब प्राणियोंके तेजका नाश करता है। तब इन्द्र फिर गुप्त होकर अपना अच्छा समय आनेकी आशासे जगतमें घूमने लगे। जब इन्द्र फिर गुप्त होगये तब पतिव्रता शची हाय इन्द्र! हाय इन्द्र! कहके रोने लगी।

शची बोली, यदि मैंने कुछ तप किया हो, यदि मैंने कुछ दान किया हो, यदि मैंने गुरुओंको प्रसन्न किया हो और यदि मुझमें कुछ भी सत्य हो, तो इन्द्रही मेरे पति हों। मैं उत्तरायण सूर्य्यकी पवित्र रात्रिको नमस्कार करती हूं। ये हमारे मनोरथको सिद्ध करें। ऐसा कहकर पतिव्रता शची अपना सन्देह नाश होनेके लिये तप करने लगी और सन्देहनाशिनी देवीसे बोली कि जहां इन्द्र हैं, उस स्थानको मुझे दिखाओ।

१३ अध्याय समाप्त।

शल्य बोले, इन्द्राणीके ध्यान करतेही सन्देहोंको निर्णय करनेवाली उपश्रुती नामक देवी उनके पास आई। सुन्दरी युवती उप-

श्रुतो देवीको देख इन्द्राणीने प्रसन्न होकर पूजा करी, और कहा कि हे सुन्दरमुखवाली! तुम कौन हो! हम तुम्हें जानना चाहती हैं।

उपश्रुति बोली, हे देवि! हे भामिनी मैं उपश्रुति नामक देवी हूं, मैं तुम्हें पतिव्रता और नियम युक्त जानकर तुम्हारे पास आई हूं, मैं वृत्रासुरनाशक इन्द्रको तुम्हें दिखाऊंगी, तुम हमारे सङ्ग चलो, देवश्रेष्ठ इन्द्रके दर्शन करोगी।

ऐसा सुनकर इन्द्राणी उनके सङ्ग चली। अनेक पर्व्वत, वन और हिमाचलके पार होकर उत्तरकोनेपर पहुंची। वहां जाकर अनेक योजन चौड़े समुद्रको देखा। उनके बीचमें अनेक वृक्ष और लतासे भरे हुए द्वीपमें पहुंची। उस द्वीपके बीचमें सौ योजन लम्बा अनेक देवस्थान युक्त, पक्षियोंसे भरे एक सुन्दर तालावको देखा। उसमें पांच वर्ण वाले सुन्दर कमलोंको देखा। उनपर अनेक भौंरे गूंज रहे थे। उस तालावके बीचमें सफेद और ऊंची डण्डीसे युक्त अनेक कमलिनी और कमल खिल रहे थे। अनन्तर उपश्रुति देवी शचीके सहित छोटारूप बनाकर कमलकी डण्डीमें घुस गई वहां जाकर सूतके समान सूक्ष्मरूप धारी इन्द्रको देख उपश्रुतिभी सूक्ष्म होगई। तब इन्द्राणीने इन्द्रको अपना कर्म्म सुनाकर प्रसन्न किया।

इन्द्र बोले, तुम हमारे पास क्यों आईहो! और तुमने हमको कैसे जाना।

तब इन्द्रसे शचीने नहुषका सब समाचार इस प्रकार कहा। हे इन्द्र! नहुष मुझसे कहता है कि मैं तीनों लोकोंका इन्द्र हूं, तुम हमारी स्त्री बनो। वह दुष्ट अभिमान और बलसे भरा है, मैंने उससे थोड़ा समय मांग लिया है, यदि तुम इस समयके बीचमें स्वर्गको नहीं जावोगे तो वह अवश्य मुझे अपने वशमें कर लेगा; इसी लिये मैं तुम्हारे पास शीघ्रता सहित आई हूं। हे महावाहो! पापी दुष्ट नहुषको जीतो। तुम अपने तेजको प्रकाश करो; हे दैत्य और दानवोंके मारने वाले! अब तुम इन्द्र बनकर प्रजाकी रक्षा करो।

१४ अध्याय समाप्त।

शल्य बोले, हे राजन् युधिष्ठिर! भगवान् इन्द्र शचीके ऐसे बचन सुन बोले, हे भामिनि! यह समय युद्ध करनेका नहीं है, क्योंकि नहुष बहुत बलवान है, उसे ऋषियोंने आहुति देकर बहुत बढ़ा दिया है, हे देवि! मैं एक नीति कहता हूं, तुम उसको करो, तुम इस गुप्त नीतिका किसीसे वर्णन मत करना, हे पतली-कमर वाली! तुम नहुषके पास जाकर एकान्तमें कहो कि तुम देवऋषियोंकी पालकी पर चढ़कर हमारे पास आवो, तब मैं तुमसे प्रसन्न हूंगी। इन्द्रके ऐसे बचन सुन कमल नयनी सुन्दर हंसन वाली शची बहुत अच्छा कहकर नहुषके पास गई। नहुष उसको देखकर बहुत प्रसन्न हुए और हंसकर कहने लगे, हे सुन्दर हंसने वाली! हे सुमुखि! हम तुम्हारा स्वागत करते हैं, कहो हम तुम्हारा कौनसा काम करें, हे कल्याणी! हे मनस्विनि! हम तुम्हारे दास हैं, तुम हमारी स्त्री बनो। हे कल्याणी! हे पतलीकमरवाली! तुम्हारी जो कुछ सेवा होगी सो हम करेंगे, तुम हमसे लज्जा मत करो और हमारा विश्वास करो, हम सत्य प्रतिज्ञा करते हैं, कि तुम्हारी आज्ञा पालन करेंगे, इन्द्राणी बोली, हे देवराज! मैंने जो तुम्हारे सङ्ग समयकी प्रतिज्ञा करी थी, सो अब पूरा होगया, यदि तुम मेरे पति होना चाहते हो तो हमारे मनमें जो कार्य्य है, सो सिद्ध करो। हे राजन्! हे देवराज! यदि तुम इसके करनेकी प्रतिज्ञा करो तो मैं तुमसे कहूं, हे देवराज! मैं तुमसे विनय पूर्व्वक प्रार्थना करती हूं, यदि तुम उसको पूरण करो

तो मैं तुम्हारी स्त्री हो जाऊंगी। इन्द्रके यहां हाथी और घोड़े आदि सब वाहन हैं, परन्तु आप मेरे यहां अपूर्व्व वाहनपर चढ़कर आइये, हे देवराज! आपका ऐसा वाहन होना चाहिये जो न इन्द्र न विष्णु और न शिवके यहां हो। हे पृथ्वीनाथ! आपकी पालकीमें महाभाग सप्त ऋषि लगें, यही हमारे मनकी इच्छा है, आप इसको पूर्ण कीजिये। क्योंकि आप देवता, असुर और राक्षसोंके समान हाने योग्य नहीं हैं। तुम अपने दर्शनसे सबके तेजको छीन लेते हो, तुम्हारे आगे इन्द्र भी नहीं ठहर सकते हैं; और सबको तो कथाही क्या है।

शल्य बोले, हे राजन् युधिष्ठिर! इन्द्राणीके ऐसे वचन सुन नहुष बहुत प्रसन्न हुए और इन्द्राणीसे बोले, हे अनिन्दिते! तुमने यह बड़ा अपूर्व्व वाहन बताया, मैं इस वाहनको बहुत अच्छा समझता हूं। हे वरानने! मैं जैसे तुमने कहा वैसेही करूंगा, क्या मैंनिर्ब्बल मुनियोंको वाहन नहीं बना सकता? मैं इस समय तीनों लोकका स्वामी हूं, इससे मुनियोंको वाहन बनाऊंगा, मुझे क्रोध आनेसे सब जगतका नाश कर सकता हूं। सब जगत मेरी शक्तिसे स्थिर है, हे सुन्दर हंसनेवाली! मुझे क्रोध आनेसे देवता, दानव, गन्धर्व्व, किन्नर सर्प और राक्षस भी नहीं बच सकते और न मेरे क्रोधको वे लोग सह सकते हैं। मैं जिसको अपने नेत्रसे देखता हूं उसका तेज नाश हो जाता है, इस लिये मैं तुम्हारे वचनको अवश्य करूंगा। सातो ऋषि और ब्रह्मऋषि हमसे कहते हैं कि तुम इन्द्र और हमारे राजा हो, हे सुन्दरवर्णवाली! तुम मेरी शक्तिको देखो।

शल्य बोले, सुन्दरी शचीसे ऐसा कह नहुषने उसे विदा किया, फिर साता ऋषियोंको अपनी पालकीमें जोड़कर चले, उस समय राजा नहुषने ब्राह्मणोंकी भक्ति छोड़ दी और बल तथा अभिमानसे भरकर नियममें रहनेवाले उन सप्त- ऋषियोंको पालकीमें लगा कर इन्द्राणीके यहां गये, उस समय दुष्टात्मा पापी नहुष कामके वशमें होकर सब भूल गये और ऋषियोंको पालकीमें लगा लिया, जिस समय शचीको बिदा किया था, उसी समय इन्द्राणी बृहस्पतिके पास गई और कहने लगी, मैंने जो नहुषके सङ्ग समयकी प्रतिज्ञा करी थी, सो उसमें अब बहुत थोड़ा समय शेष रह गया है, इस लिये अब आप कुछ उपाय कीजिये। और शीघ्र इन्द्रको ढूंढ़िये, क्योंकि मैं आपकी शरणागत और भक्त हूं, आप हमारी रक्षा किजिये। बृहस्पतिने कहा कि बहुत अच्छा, तुम कुछ भय मतकरो, नहुष महापापी और दुष्टात्मा है, वह इस स्थानपर नहीं रह सकता, वह महा अधर्म्मी है। इस लिये अवश्य सप्तऋषियोंके विमानपर चढ़कर आवेगा, तब हो उसके मारनेको मैं उपाय करूंगा और इन्द्रके ढूंढ़नेको भी उपाय करूंगा तुम कुछ भय मत करो, मैं अवश्य इन्द्रको लाऊंगा तुम घबड़ाओ मत, तुम्हारा कल्याण हो, ऐसा कहकर महातेजस्वी बृहस्पतिने अग्नि जलाकर आहुति दी, फिर महातेजस्वी बृहस्पतिने राजा इन्द्रको प्राप्तिके लिये कहा कि इन्द्रको ढूढ़ो क्योंकि बिना राजाके यह देश अच्छा नहीं लगता। बृहस्पतिके सामने अग्नि स्त्रीका वेष बनाके प्रत्यक्ष हुए और फिर उसी अग्नि कुण्डमें अन्तर्द्धान हो गये, महा बुद्धिमान अग्निने कुछ कालके पश्चात समस्त पृथ्वी, बन, उपबन, नदी और सब दिशाओंमें इन्द्रको ढूढ़ा परन्तु कहीं पता नहीं लगा, फिर वह स्त्री थोड़ही समयमें बृहस्पतिके पास आगई और कहने लगी कि, हे देवदेव! हम सब दिशाओंमें घूम आई परन्तु इन्द्रको कहीं नहीं पाया, जल नित्य है और हम जलमें प्रवेश नहीं कर सकती, इसीसे जलमें मेरी गति नहीं है। सो आप जो चाहें सो विचार कीजिये। बृहस्पतिने

कहा कि हे महातेजस्वी! तुम जलमें प्रवेश करो उसीमें इन्द्र मिलेंगे, जलसे अग्नि, ब्राह्मणसे चत्री और पत्थरसे लोहा उत्पन्न हुआ है, इन सबका तेज सर्व्वव्यापक है, परन्तु अपने स्थानमें जाकर शान्त हो जाते हैं।

१५ अध्याय समाप्त।

———

बृहस्पति बोले, हे अग्ने! तुम सब देवतोंके मुख हो हव्यको भक्षण करते हो, तुम सब प्राणियोंके अन्तःकरणमें साक्षी होकर घूमते हो, हे अग्ने महात्मा लोग तुम एकके तीन भेद कहते हैं, तुम्हारे छोड़नेसे सब जगत् नष्ट हो सकता है, तुमको नमस्कार करके ब्राह्मण लोग अपना कर्म्म करते हैं। उस कर्म्मके प्रभावसे स्त्री और पुत्रोंके सहित मोक्षको प्राप्त करते हैं, तुम अग्नि यज्ञमें आहुति भोजन करनेवाले और आहुति रूप हो, महात्मा लोग यज्ञमें तुम्हारीही पूजा करते हैं। हे अग्ने! तुम इस जगतको उत्पन्न करके प्रलयकालमें नाश कर देते हो, तुम इस जगतके उत्पन्न करनेवाले और पालन करनेवाले हो; तुमहीसे जगतकी प्रतिष्ठा होती है, तुम मेघ और बिजली-रूप हो, तुम्हीसे शस्त्र बनाकर मनुष्य चलाते है। तुम्हारी शक्तिसे जल और जगत स्थिर हैं, तीन लोकमें ऐसी कोई वस्तु नहीं है; जिसको तुम नहीं जानते; अपने उत्पत्ति स्थानमें सब जाते हैं। इस लिये तुम शङ्का रहित होकर जलमें प्रवेश करो, मैं सनातन वेदमन्त्रोंसे तुम्हारी वृद्धि करूंगा।

भगवान् अग्नि बृहस्पतिके वचन सुन प्रसन्न हुए और कहने लगे कि हम तुमसे सत्य कहते हैं कि, हम इन्द्रको तुम्हें दिखावेंगे।

शल्य बोले, इसके पश्चात अग्निने समुद्र और तलावोंके जलमें प्रवेश किया; पश्चात उस तलावमें भी पहुंचे, जहां छिपकर इन्द्र रहते थे, हे युधिष्ठिर! उस तालावमें जाकर अग्निने कमलोंके भीतर इन्द्रको ढूंढ़ा फिर एक कमल की डण्डीमें उनको पाया, फिर अग्निने उसी समय बृहस्पतिसे आकर सब समाचार कह दिया, कि देवराज इन्द्र सूक्ष्म रूप बनाकर अमुक तलावके कमलकी डण्डीमें रहते हैं। उसी समय वृहस्पति देवता, ऋषि और गन्धर्व्वों के सहित इन्द्रके पास जाकर उनकी स्तुति करने लगे।

वृहस्पति बोले, तुमने महाघोर नमुची नामक दैत्यको मारा था, तुमने महाबलवान सम्बर और बलको भी मारा था, हे सौ यज्ञ करनेवाले इन्द्र! तुम उठो और शत्रुओंका नाश करो। हे इन्द्र! तुम उठकर देखो ये देवता और ऋषि तुम्हारे दर्शनोंको खड़े हैं। हे जगतके स्वामी देवराज! तुमने अनेक दैत्योंको मारकर तीनों लोकोंकी रक्षा करी है, तुमने पहले समयमें विष्णुके तेजको सहायता और जलके फेनसे वृत्रासुरको मारा था, तुम सब जगतके पालनेवाले हो तुमको जगत प्रणाम करता है तुम्हारे समान कोई प्राणी नहीं हुआ और न है, तुम्हारी शक्तिसे सब जगत स्थिर है, और तुम्ही देवतोंकी महिमाको बढ़ाते हो। वृहस्पतिके ऐसे वचन सुन इन्द्रका धीरे धीरे बल बढ़ा और अपने रूपको धारण करके गुरु वृहस्पतिसे बोले, आप लोगोंका कौनसा कार्य्य शेष है, जिसको मैं करूं? मैंने महा शरीरवाले तीनों लोकोंके दुःख देनेवाले वृत्रासुरको भी मारा।

वृहस्पति बोले, मनुष्य नहुषको देवऋषि-योंने अपने तेजसे बढ़ाकर इन्द्र बनाया है, वह अब हम लोगोंको बहुत दुःख देता है।

इन्द्र बोले, हे वृहस्पते! नहुषने ऐसा कौन तप किया था, जिसके प्रभावसे वह दुर्लभ इन्द्र पदको प्राप्त हुआ? उसमें कितनी शक्ति है, सो आप हमसे कहिये।

वृहस्पति बोले, जिस समय तुमने इन्द्रासनको

छोड़ दिया, उस समय देवता लोग बहुत घबड़ाये, फिर देवता; पितर; ऋषि और मुख्यगन्धर्व्व मिलकर नहुषके पास गये और कहने लगे तुम हमारे राजा और जगत्को रक्षा करने वाले बनो।

नहुषने उनसे कहा कि हमारी शक्ति इन्द्र होनेकी नहीं है, तुम हमको तेज और तपसे बढ़ाओ। ऋषियोंने नहुषके वचन सुन सबने अपना तेज उसे दिया उससे वह बहुत बलवान होगया, तब सबने उसे इन्द्र बनाया, अब वह दुष्टात्मा ऋषियोंकी पालकीमें लगा कर लोकोंमें घूमता है, उसके आगे जो जाता है, उसीका तेज नष्ट होजाताहै, इस लिये तुमभी नहुषको मत देखना, कोई देवता कभी नहुषको नहीं देखता और छिपकर रहते हैं।

शल्य बोले, जहां अंगिरा वंशश्रेष्ठ वृहस्पति इन्द्रसे ऐसा कह रहे थे, तहां कुवेर सूर्य्यपुत्र यमराज, सनातन देवता चन्द्रमा और वरुण आये, वे आकर इन्द्रसे कहने लगे तुमने प्रारब्धहीसे त्वष्टापुत्र वृत्रासुरको मारा। हे इन्द्र! हम लोग प्रारब्धहीसे तुमको कुशलयुक्त और घाव रहित देखते हैं, इन्द्रभी लोकपालोंकी यथायोग्य पूजा करके प्रसन्न हुए और कहने लगे कि इस समय घोर रूपी नहुष देवतोंका राजा बना है, आप लोग उसको मारनेके लिये हमारी सहायता कीजिये।

लोकपाल बोले, हे देवराज! घोररूपी नहुषको दृष्टिमें विष है, इस लिये हमलोग उसके आगे जाते डरते हैं, तुम इन्द्रहो और सब बात जानतेहो इस लिये उसको जीतो, तब हम लोग यज्ञोंमें भाग पावेंगे।

इन्द्र बोले, हम कुवेर, यमराज और वरुणका अभिषेक करते हैं, आप लोग अपने अपने स्थानोंपर देवतोंके सहित जाइये, हम इस घोर दृष्टि वाले नहुष शत्रुको जीतेंगे। तब अग्निने इन्द्रसे कहा कि यदि तुम हमको यज्ञमें भाग दो, तो हमभी तुम्हारी सहायता करेंगे।

इन्द्रने कहा, आजसे बड़े बड़े यज्ञोंमें अग्निका एक एक भाग निकला करेगा।

शल्य बोले, बरदान देने वाले पाक नामक राक्षसके नाशक भगवान इन्द्रने यह सब विचार कर कुवेरको सब यक्ष और धनका स्वामी यमराजको पितरोंका स्वामी और वरुणको जलका राजा बनाया।

१६ अध्याय समाप्त।

शल्य बोले, हे राजन् युधिष्ठिर! जहां बुद्धिमान भगवान इन्द्र देवता और लोकपालोंके सहित नहुषके मारनेका उपाय सोच रहे थे, वहां तपस्वी भगवान अगस्त आये, उन्होंने इन्द्रकी प्रशंसा करके ऐसा कहा, हे देवराज! प्रारब्धहीसे आपको उन्नति हुई है, प्रारब्धहीसे आपने वृत्रासुर और विश्वरूपको मारा और प्रारब्धसे नहुष भी इन्द्रासनसे गिराये गये। हे बलनाशक! हम आपको प्रारब्धहीसे शत्रु रहित देखते हैं।

इन्द्र बोले, हे महाऋषि अगस्त्य! हम आपका स्वागत करते हैं, हम आपके दर्शनसे बहुत प्रसन्न हुए, आप पाद्य, अर्घ, आचमनीय और गौ ग्रहण कीजिये! जिस समय मुनि-श्रेष्ठ अगस्त्य सावधान होकर आसनपर बैठे, तब इन्द्रने प्रसन्न होकर उनसे पूछा, हे ब्राह्मण श्रेष्ठ! हे भगवन्! पापी नहुष किस प्रकार स्वर्गसे गिराया गया, सो कथा सुननेकी हमारी इच्छा है, आप हमसे कहिये। अगस्त्य मुनि बोले, हे इन्द्र! जिस प्रकार दुरात्मा नहुष स्वर्गसे गिराया गया सो उत्तम कथा हम आपसे कहते हैं, सुनिये।

पापी अभिमानी नहुष इस प्रकार स्वर्गसे नष्ट हुआ कि वह दुष्ट थके हुए महाभाग देवऋषि और ब्रह्मर्षियोंकी पालकीमें

चला जाता था, उसी समय ऋषियोंने उससे पूछा, हे जीतनेवालोंमें श्रेष्ठ। ब्रह्माने जो वेदमें गौकी स्नान करानेके मन्त्र लिखे हैं, उनका प्रमाण है वा नहो?

ऋषियोंके वचन सुन मूर्ख नहुष बोला कि नहीं।

ऋषियोंने कहा कि तुम महा अधर्म्मी हो, धर्म्मको नहीं जानते हमारे पहले ऋषियोंने उनको प्रमाण माना है।

अगस्त्य बोले, हे इन्द्र! अनन्तर वह अधर्म्मी ऋषियोंसे फिर बिवाद करने लगा। मेरे शिरमें लात मारी, इससे उसका सब तेज नष्ट हो गया, फिर मैंने दुःखित होकर उसको ऐसा शाप दिया, हे राजन्! तुम पहले ऋषियोंके कहे मन्त्रोंको नहीं मानते हो, बिना देखी वस्तुकी निन्दा करते हो, तुमने मेरे शिरमें लात मारी और ब्रह्माके तुल्य तेजस्वी ऋषियोंको पालकीमें लगाया, इससे तुम्हारा तेज नाश हो गया, इस लिये अब तुम स्वर्गसे पृथ्वीको चले जाओ, तुम दस सहस्र वर्षतक सांपका रूप धारण करके पृथ्वीमें रहोगे। हे शत्रुनाशन इन्द्र! इस प्रकार वह दुरात्मा नहुष स्वर्गसे भ्रष्ट हुआ और प्रारब्धसे तुम्हारी उन्नति हुई। अब आप स्वर्गमें चलके तीनों लोकोंकी रक्षा कीजिये, आप जितेन्द्रिय शत्रुओंको मारनेवाले हैं? महाऋषि भी आपकी स्तुति करते हैं।

शल्य बोले, अनन्तर महाऋषि, देवता, पितर, यक्ष, राक्षस सर्प, गन्धर्व्व, देवकन्या, सब अप्सरा, तलाव, नदी, पर्व्वत और समुद्र प्रसन्न होकर कहने लगे। हे शत्रुनाशन इन्द्र! प्रारब्धहीसे तुम्हारी उन्नति हुई है। प्रारब्धहीसे बुद्धिमान् अगस्त्यने पापी नहुषका नाश किया, प्रारब्धहीसे पापी नहुष सांप बनकर पृथ्वीमें गिरा।

१७ अध्याय समाप्त।

शल्य बोले, अनन्तर गन्धर्व्व और अप्सराओंसे स्तुति सुनते हुए, इन्द्र सब लक्षणोंसे भरे उत्तम ऐरावत हाथीपर चढ़कर स्वर्गको चले, तब नाशक इन्द्रके सङ्ग महा तेजस्वी अग्नि महाऋषि बृहस्पति, यमराज, वरुण, धनके स्वामी कुवेर, सब देवता और सब अप्सरा भी चलीं। सौ यज्ञ करनेवाले देवराज इन्द्र, स्वर्गमें जाकर प्रसन्नता सहित इन्द्राणीसे मिले फिर अपने राज्यका पालन करने लगे। उसी समय भगवान अङ्गिरा इन्द्रके पास आकर अथर्व्व वेदके मन्त्रोंसे स्तुति करने लगे। उसी समय भगवान इन्द्रने प्रसन्न होकर अङ्गिराको वरदान दिया। इन्द्र बोले, तुमने जिन मन्त्रोंसे हमारी स्तुति की है, उनका नाम अथर्वाङ्गिरस वेद होगा, तुमको आजसे यज्ञमें भाग मिलेगा।

हे महाराज! इस प्रकार अथर्वाङ्गिरा मुनिकी पूजा करके सौ यज्ञ करनेवाले इन्द्रने उनको बिदा किया, फिर सब ऋषियोंकी पूजा करके इन्द्र प्रसन्नता सहित प्रजाको पालने लगे। इन्द्रने अपनी स्त्रीके सहित इस प्रकार दुःख भोगा था, और इस प्रकार शत्रुओंको मारनेके लिये छिपकर रहे थे, तुमने जो द्रौपदी और अपने भाइयोंके सहित बनमें दुःख भोगे। उसका कुछ दुःख मत कीजिये; हे राजन्! हे भारत! हे कौरवनन्दन! जिस प्रकार इन्द्र वृत्रासुरको मारकर पुनः राजा हुए थे, ऐसेही तुम भी राजा होगे, जैसे पापी ब्राह्मण-द्रोही नहुष अगस्त्यके शापसे नष्ट हुआ था, ऐसेही तुम्हारे पापी शत्रु कर्ण और दुर्य्योधनादिका नाश होगा। हे शत्रुनाशन! हे वीर! उसके पश्चात तुम अपने भाई और द्रौपदीके सहित समुद्र पर्य्यन्त पृथ्वीका राज्य करोगे। हे जीतनेवालोंमें श्रेष्ठ! यह इन्द्रके विजयकी कथा वेदमें लिखी है, युद्धके समय विजय करनेकी इच्छावाले

राजाको अवश्य सुननी चाहिये, इसीसे मैंने तुमको सुनाई; इसके सुननेसे महात्माओंकी उन्नति होती है। हे युधिष्ठिर! यह घोर समय आगया है, अब दुर्य्योधनके अपराधसे तथा भीमसेन और अर्ज्जुनके बलसे महात्मा क्षत्रियोंका नाश होगा, हमारी कही इस इन्द्र विजयकी कथाको जो नियम करके प्रतिदिन पढ़े वह सब पापोंसे छूटकर इस लोक और परलोकमें सुख पाता है। इसके पढ़नेवाला अपुत्र और निर्धन नहीं रहता, इसके पढ़नेवालेको कुछ आपत्ति नहीं होती, और उसकी आयु भी बहुत होजाती है, इसको सुननेवाला सदा जीतता है कभी हारता नहीं।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे भरतकुल सिंह जनमेजय! शल्यकी ऐसी बचन सुन धर्म्मधारियोंमें श्रेष्ठ राजा युधिष्ठिर बहुत प्रसन्न हुए, और उन्होंने राजा शल्यकी पूजा करी, अनन्तर महा बलवान कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरने मद्रराज शल्यसे कहा, आप अवश्य कर्णके सारथी बनियेगा। उस समय कर्णका बल नाश कीजियेगा, और अर्ज्जुनके बलको बढ़ाइयेगा। शल्य बोले, तुम जैसा कहते हो, मैं अवश्य ऐसाही करूंगा, इसके अतिरिक्त और भी शक्तिके अनुसार तुम्हारा कल्याण करूंगा।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे शत्रुनाशन जनमेजय! अनन्तर श्रीमान् शल्य पाण्डवोंसे आज्ञा लेकर अपनी सेनाके सहित हस्तिनापुरको चले गये।

१८ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! उसके पश्चात् यदुवंशियोंमें श्रेष्ठ महारथ महावीर सात्यकी हाथी घोड़े रथ और पदातियोंसे भरी महासेनाके सहित महाराज युधिष्ठिरके पास आये। महावीर सात्यकीके सङ्ग अनेक देशके आये हुए महावीर महा योडा थे, वे सब अनेक शस्त्रोंकी चलानेवाले परस्पर भिन्दिपाल, शूल, तोमर, मुद्गर, परिघ, लाठी, फांसी, निर्म्मल खड्ग, विषमें बुझे प्रकाशमान बाण और धनुषको धारण करके शोभित होने लगे, उस महासेनामें सुवर्ण खचित धनुष इस प्रकार चमक रहे थे, जैसे मेघमें बिजली, वह अक्षौहिणी सेना युधिष्ठिरकी सेनामें आकर इस प्रकार मिल गई जैसे समुद्रमें नदी मिल जाती हैं। अनन्तर एक अक्षौहिणी सेना लेकर चेदि देशके राजा महा पराक्रमी धृष्टकेतु महाराज युधिष्ठिरके पास आये। महापराक्रमी जरासन्धपुत्र मगध देशके राजा जयत्सेन भी एक अक्षौहिणी सेना लेकर धर्म्मराजके पास पहुंचे। इसी प्रकार पांड्य देशका राजा अनेक द्वीपोंके राजोंके सहित युधिष्ठिरके पास आया, उस समय, वह युधिष्ठिरकी सेना देखने योग्य हुई थी, एक ओर राजा द्रुपदकी महा सेना अनेक देशके वीरोंके सहित महारथ और महावीर द्रुपद पुत्रोंसे रचित पड़ी थी। एक ओर पर्व्वतीय राजोंसे भरी महाराज विराटकी महा सेना ठहरी थी। इस प्रकार महात्मा युधिष्ठिरकी सात अक्षौहिणी सेना इकट्ठी होगई। इस सेनामें अनेक प्रकारकी ध्वजा लग गई। इसी प्रकार राजा दुर्य्योधनकी प्रसन्न करनेके लिये एक अक्षौहिनी सेना लेकर राजा भगदत्त आये, उनके सङ्गही चीन और किरात देशकी सेना भी आई एक एक अक्षौहिणी सेना लेकर हार्दिक्य और कृतवर्म्मा आये, उनके सङ्गही भोज, अन्धक और कुकुरवंशी क्षत्री आये; इन तीनो क्षत्रियोंकी एक अक्षौहिणी सेना थी। उस सेनाके आनेसे दुर्य्योधनकी सेना ऐसी शोभित हुई जैसा अगाध समुद्र। क्रीड़ा करते मतवारे हाथियोंके सहित पृथ्वीको कपाते हुए जयद्रथ आदि सिन्धु और सौवीर देशके राजा आये, उनके सङ्ग एक अक्षौहिनी सेना थी, फिर वायुसे

घूमते हुए, मेघके समान एक अक्षौहिणी सेना शक और यवनोंके सहित काम्बोज देशका सुदक्षिण राजा लाया, उसको सेना टीडीदलके समान शोभित होने लगी, वह सेना भी दुर्य्योधनकी सेनामें मिल गयी। इसके पश्चात् माहिष्मतीका नील नामक राजा दुर्य्योधनके पास आया। अनन्तर अनेक दक्षिणी राजोंके सहित उज्जैनके बिन्द और अनुबिन्द राजा आये इनके सङ्ग दो अक्षौहिणी सेना थी। फिर पांचो कैकय देशके राजा एक अक्षौहिणी सेना लेकर हस्तिनापुरको चले। इस प्रकार सब महात्मा राजा दुर्य्योधनके पास आये और दुर्य्योधनकी अपनी सेना भी तीन अक्षौहिणी थी, इस प्रकार ग्यारह अक्षौहिणी सेना दुर्य्योधनकी हुई। वह सेना युधिष्ठिरसे युद्ध करनेको इच्छा करने लगी। हे राजन्! उस समय हस्तिनापुरमें कोई स्थान सेनासे खाली न रह गया। दुर्य्योधनके मुख्य सेनापतियोंने अपनी अपनी सेनाको समस्त पञ्चाब, कुरुदेश, रोहितकारण्य, मारवाड़ अहिक्षेत्र, कालकूट, गङ्गातट, वारणावत, वाटधान और यामुन पर्व्वपर ठहराई उस सेनासे धन और अन्न पूर्ण था, उन सब देशोंमें ठहरी हुई सेनाको द्रुपदके उस पुरोहितने देखा जो कौरवोंके यहां जा रहा था।

उद्योग पर्व्वमें सेनाउद्योगपर्व्व और
१६ अध्याय समाप्त।

अथ सञ्जययान पर्व्व।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! इस प्रकार द्रुपदका पुरोहित सेनाको देखता हुआ हस्तिनापुर पहुंचा, वहां राजा धृतराष्ट्र, विदुर और भीष्मने उनका बहुत सम्मान किया। अनन्तर वह पुरोहित सबसे कुशल प्रश्न करके और अपना कुल कहकर सब सेनापतियोंके बीचमें कहने लगे, यद्यपि आप सब लोग सनातन राजधर्म्मको जानते हैं, तथापि वचनकी भूमिकाके लिये मैं कुछ कहना चाहता हूं।

आप सब लोग जानते हैं, कि धृतराष्ट्र और पाण्डु एकही पिताके पुत्र हैं, इस लिये पिताका धन दोनोंको समान बंटना चाहिये; परन्तु धृतराष्ट्रके पुत्रोंने पुरुषोंके धनको पाया तब पाण्डव क्यों नहीं पावेंगे? आप लोग जानते हैं, कि पाण्डव लोग किस प्रकार वनको गये थे? अब समय बीतने पर धृतराष्ट्र क्यों नहीं उनका धन देते? धृतराष्ट्रके पुत्रोंने पाण्डवोंके मारनेके अनेक यत्न किये, परन्तु मार नहीं सके, उन महात्माओंने फिर भी अपने बलसे अपने राज्यको बढ़ा लिया। परन्तु फिर भी धृतराष्ट्रके नीच पुत्रोंने शकुनिके सङ्ग उनका छल लिया, महात्मा युधिष्ठिरने उसको भी मान लिया उन्होंने तेरहवर्ष वनमें रहकर घोर दुःख उठाये। आप लोग यह भी जानते हैं कि धृतराष्ट्रके पुत्रोंने द्रौपदीके सहित पाण्डवोंको सभामें कैसा दुःख दिया था? फिर उन्होंने बारहवर्ष वनमें कैसे दुःख उठाये? फिर विराट नगरमें ऐसा वेष धारण किया मानो इनका जन्महो दूसरा हो गया, उन महात्माओंने साधारण पापियोंके समान दुःख उठाये। परन्तु महात्मा युधिष्ठिर उन सब दुःखोंको पीछे करके अपनाही राज्य मांगते हैं, उनकी इच्छा यह नहीं है कि क्षत्रियोंका नाश हो। महात्मा पाण्डव लोग युद्ध करना नहीं चाहते, आप सब लोग दुर्य्योधन और पाण्डवोंके दोष और गुणोंको देखकर दुर्य्योधनको समझाइये, क्योंकि आप लोग उनके मित्र कहाते हैं; महात्मा पाण्डव लोग कदापि युद्ध करनेकी इच्छा नहीं करते; वे लोग केवल अपने रज्यको मांगते हैं। राजा दुर्य्योधन जो युद्धमें हेतु बतलाते हैं, सो माननेके योग्य नहीं हैं, क्योंकि राजा युधिष्ठिर

उनसे निर्ब्बल नहीं हैं, क्योंकि उनके पास सात अचौहिणी सेना है, वह सब सेना उनकी आज्ञाका मार्ग देख रही है, इसके अतिरिक्त उनकी ओर एक एक बलवान अकेला सहस्र सहस्र अचौहिणीको जीत सकता है। वे वीर ये हैं ; सात्यकी, भीमसेन, महा बलवान नकुल और सहदेव! तुम्हारी ग्यारह अचौहिणी सेना एक ओर और अकेला महा पराक्रमी अर्ज्जुन एक ओर लड़ सकते हैं, जैसे बलवान अर्ज्जुन हैं, वैसेही कृष्ण भी पराक्रमी हैं। जिसके लिये युद्ध करने वाले अर्ज्जुन, सम्मति देनेवाले कृष्ण हैं, उस युधिष्ठिरको सेनासे कौन युद्ध कर सकता है? सो आप सब लोग धर्म्मके अनुसार पाण्डवोंका राज्य लौटा दीजिये, और इस समयको अपने हाथसे न जाने दीजिये।

२० अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! पुरोहितके ऐसे वचन सुन उनके वचनोंकी प्रशंसा कर, महा तेजस्वी और महा बुद्धिमान भीष्मजी बोले,—

हमारी प्रारब्धहीसे पाण्डव लोग कृष्णके सहित कुशलसे हैं, प्रारब्धहीसे उन लोगोंको सहायता मिली है, प्रारब्धहीसे पांचो पाण्डव धर्म्म करते हैं, प्रारब्धहीसे पाण्डव लोग सन्धि चाहते हैं ; प्रारब्धहीसे उनको भाइयोंके सहित युद्ध करनेकी इच्छा नहीं है, आपने भी जो कुछ कहा सो सत्यही है, परन्तु इतना कठोर कहना उचित नहीं था। हमारी बुद्धिमें ब्राह्मणत्वके अभिमानसे आप इतना कह गये। इसमें कुछ सन्देह नहीं, कि धृतराष्ट्रके पुत्रोंने पाण्डवोंको बनमें और यहां बहुत दुःख दिया ; इसमें भी सन्देह नहीं, कि पाण्डवोंको पिताका धन मिलना चाहिये ; और इसमें भी सन्देह नहीं, कि अर्ज्जुन महा बलवान शस्त्र जाननेवाला और महारथ है ; पाण्डुपुत्र अर्ज्जुनसे साक्षात वज्रधारी इन्द्र भी युद्ध नहीं कर सकते, और धनुषधारियोंको तो कथाही क्या है ; अकेला अर्ज्जुन तीनों लोकसे युद्ध कर सकता है।

भीष्मके ऐसे वचन कहते समय कर्णने क्रोध करके दुर्य्योधनको ओर देखा और भीष्मके कमरसे कमर कुकाकर बोले, हे ब्राह्मण। तुमने जो कहा, सो सब कोई जानता है, एकही बातको कई बार कहनेसे क्या होता है? दुर्य्योधनके लिये युधिष्ठिरको शकुनिने जुवेमें जीता था, और वे अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार बनको चले गये! अब समय पूरा होने पर वह अपने आधे राज्यकी इच्छा करते हुए मूर्खके समान द्रुपद और विराटको सहायतासे दुर्य्योधनके सङ्ग युद्ध करना चाहते हैं? आप निश्चय रखिये, कि दुर्य्योधन भयसे घबड़ाकर एक चरणभर भी पीठ नहीं देंगे ; परन्तु धर्म्मसे सब राज्यभी शत्रुको दे सकते हैं। यदि राजा युधिष्ठिर अपने पिताका राज्य लेना चाहते हैं, तो फिर तेरह वर्ष बनमें रहें और फिर दुर्य्योधनके वशमें होकर राज्य करें। पाण्डव लोग मूर्खतासे अधर्म्म न करें, यदि पाण्डव लोग अधर्म्महीसे युद्ध करना चाहते हैं, तो कौरवोंसे युद्ध करते समय हमारे वचनको याद करेंगे।

भीष्म बोले, हे राधापुत्र! तुम्हारे वचनसे क्या होगा? उस समयको याद करो, जब अकेले अर्ज्जुनने छः महारथोंको जीता था। हमने तुम्हारा बल उसी समय देख लिया था, यदि हम लोग इस ब्राह्मणके वचनोंको न मानेंगे, तो मरकर पृथ्वीमें सो जायंगे।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, अनन्तर राजा धृतराष्ट्रने भीष्मको प्रसन्न करके कर्णको फटकार दिया, और कहने लगे कि शान्तनुपुत्र भीष्मने हमारे कल्याणकी बात कही है, ऐसा करनेसे हमारा पाण्डवोंका और सब

जगतका कल्याण होगा। हम शीघ्रही पाण्डवोंके पास सञ्जयको भेजेंगे, आप विलम्ब मत कीजिये, पाण्डवोंके पास चले जाइये! ऐसा कहकर धृतराष्ट्रने व्राह्मणकी पूजा करी, और विदा कर दिया।

अनन्तर सञ्जयको सभामें बुलाकर ऐसा बचन बोले।

२१ अध्याय समाप्त।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! हमने सुना है कि पाण्डव विराट नगरके समीप रहते हैं; तुम उनके पास जाकर उनके सब समाचारको जान लो। तुम जाकर युधिष्ठिरसे कहना, आप प्रारब्धहीसे इस स्थानपर पहुंचे हैं। हे सञ्जय! तुम जाकर युधिष्ठिरसे कहना कि सब कौरव कुशलसे हैं, और यह भी कहना कि आप प्रारब्धहीसे बनवासके दुःखसे छूटे हैं। हे सञ्जय! मैं यह जानता हूं कि पाण्डव लोग हमारे सङ्ग सन्धि करना चाहते हैं, वे लोग महात्मा हैं, और सबका कल्याण चाहते हैं। हे सञ्जय! मैंने आज तक पाण्डवोंका कोई भी अन्याय नहीं देखा। पाण्डवोंने अपने बलसे बहुत धन प्राप्त करके मेरे आगे रख दिया था। मैं सदा उनके दोष देखनेकी इच्छा करता रहा; तौभी कोई दोष नहीं देख सका जिससे मैं उनको बुरा कहूं। वे सदा धर्म्म और अर्थसे काम करते हैं, परन्तु अपनी प्रसन्नताके लिये कोई काम नहीं करते। वे घाम, शीत, भूख, प्यास, निद्रा, जमुहाई, क्रोध प्रसन्नता और भूलका धर्म्मके वशमें होकर त्याग देते हैं। वे लोग धर्म्म, अर्थ, बुद्धि और विद्यासे भरे हैं, समयपर अपने मित्रोंको धन देते हैं। उनकी मित्रता दूर रहनेसे भी नहीं छूटती; पाण्डव सबके सङ्ग उचित व्यवहार करते हैं; उनसे द्वेष करनेसे हमारा कल्याण नहीं होगा। पापी मूर्ख दुर्य्योधन और महा नीच कर्णको छोड़के पाण्डवोंसे कौन द्वेष कर सकता है? यही दोनों महात्मा और दुःख सहनेवाले पाण्डवोंके क्रोधको बढ़ाते हैं। दुर्य्योधन नवीन बलवान और सुखी है, इस लिये यह युद्ध होनाही अच्छा समझता है। यह मूर्ख जीते हुए पाण्डवोंके भागको छीनना चाहता है। उस युधिष्ठिरके अर्ज्जुन, श्रीकृष्ण, भीमसेन, सात्यकी, नकुल, सहदेव और सृञ्जय बंशी क्षत्री सहायक हैं, इस लिये युद्धके पहलेही उनका राज्य लौटा देना चाहिये। केवल अर्ज्जुनही रथमें बैठकर और गाण्डीव धनुष धारण करके तीनों लोकोंका जीत सकता है। इसी प्रकार विजय करनेवाले श्रीकृष्णको भी तीनों लोकोंमें जीतनेवाला कोई नहीं है। जिसके धनुषसे मेघके समान शब्द होता है, जिसके बाण पतङ्गके समान शीघ्र चलते हैं, जिस अर्ज्जुनने अकेलेही समस्त उत्तर दिशाको जीत लिया था, उसके आगे कौन युद्धमें ठहर सकता है? जिसने अपने बलसे समस्त राजोंसे धन छीना था, उस अर्ज्जुनके सङ्ग कौन युद्ध कर सकता है। जिस अर्ज्जुनने खाण्डव बनमें अपने बाणोंसे देवतोंको तृप्त किया था, उससे कौन युद्ध कर सकता है? जिस अर्ज्जुनने खाण्डव बनमें इन्द्रादिक देवतोंको हराकर पाण्डवोंका यश बढ़ाया था, उससे कौन युद्ध कर सकता है? भीमके समान कोई गदा-युद्ध नहीं जानता उसके समान हाथीपर चढ़के लड़नेवाला भी कोई दूसरा नहीं है; रथमें बैठकर लड़नेमें भी यह अर्ज्जुनसे कम नहीं है; इसमें दस हजार हाथियोंका बल है; इसी बलवानसे मेरे नीच पुत्रोंने वैर किया है। वह अवश्य मेरे सब पुत्रोंको भस्म कर देगा। भीमसेन सदासे महाक्रोधी है; उसको युद्धमें इन्द्र भी नहीं जीत सकते। महा बलवान शीघ्र शस्त्र चलानेवाले नकुल और सहदेव भी अर्ज्जुनकी

समान योद्वा हैं। वे दोनों वाजपक्षीके समान विपक्षियोंका नाश करेंगे; ये सब महा पराक्रमी भी वीर हैं। हमें निश्चय होता है कि वे हमारी सब सेनाका नाश कर देंगे। उन सबके बीचमें धृष्टद्युम्न एकही बलवान है। हमने सुना है कि राजा द्रुपद अपने मन्त्रियोंके सहित युधिष्ठिरकी ओर हो गये हैं। जिनके साक्षात कृष्ण सहाय हैं, उन युधिष्ठिरसे कौन युद्ध कर सकता है? मत्स्य देशके राजा विराटने एकवर्ष तक पाण्डवोंको अपने घरमें रक्खा है, हमने सुना है कि अब वेही राजा विराट अपने पुत्रोंके सहित महाराज युधिष्ठिरके भक्त होगये हैं, जो पांच वीर केकय देशके राजोंसे राज्य मांगनेके कारण देशसे निकाल दिये गये थे, वे भी अब युधिष्ठिरके सङ्गी हो गये हैं, वे पांचो भाई महा धनुर्द्धारी हैं। हमने सुना है, कि पृथ्वीके सब राजा भक्ति और प्रेमके सहित धर्म्मराज युधिष्ठिरसे मिल गये हैं। पर्व्वत और कठिन स्थानोंके राजा तथा अनेक कुलीन शुद्ध वीर युधिष्ठिरके लिये प्राण देनेको उपस्थित हैं। अनेक शस्त्रधारी म्लेच्छभी युधिष्ठिरकी ओर होगये हैं। इन्द्रके समान पाण्ड्य देशके राजा अनेक वीरोंके सहित युधिष्ठिरसे मिल गये हैं, यह महात्मा, लोकप्रसिद्ध वीर और महा तेजस्वी हैं। जिसने अर्ज्जुन, कृष्ण, द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य और भीष्मसे शस्त्र विद्या सीखी है, जो प्रद्युम्नके समान महा योद्धा है, हमने सुना है कि वही सात्यकी पाण्डवोंकी ओरसे युद्ध करेगा। जिसके आश्रयसे चेदी और कारुषक देशके सब राजा निवास करते थे, जो इन सबके बीचमें अपने तेजसे सूर्य्यके समान तपता था, जिसको कोई धनुषधारी युद्धमें नहीं रोक सकता था, जिसने उस चेदिपति शिशुपालका मारा था, जिसने शिशुपालका मार पाण्डवोंके यश और मानको बढ़ाया था, जिसके मानको कारुषक देशके राजा आदि सब राजा मानते हैं, उस अजेय कृष्णसे कौन युद्ध कर सकता है? जब कृष्ण शैव्य और सुग्रीवयुक्त रथपर चढ़के युद्ध करनेको आये थे, उस समय शिशुपालको छोड़ और कौनसा वीर उनसे युद्ध करनेको उपस्थित हुआ था? उस समय सब राजा दबकर ऐसे रह गये थे, जैसे सिंहसे छोटे हरिण दब जाते हैं, उस समय शिशुपालही कृष्णके सङ्ग दो रथसे युद्ध करनेको गये थे। जिस कृष्णने उस शिशुपालको इस प्रकार मारकर गिरा दिया, जैसे कोई कचनारके वृक्षको काटकर गिरा देता है, हमने सुना है कि वही कृष्ण युधिष्ठिरकी ओर होकर आये हैं। जिस कृष्णके चरित्रोंको स्मरण करके चित्त शान्त नहीं होता, वेही कृष्ण युधिष्ठिरकी ओर हो गये हैं। जिसकी ओर साक्षात कृष्ण हैं, उस युधिष्ठिरसे कौन युद्ध कर सकता है? जब हम इस बातको सुनते हैं कि अर्ज्जुन और कृष्ण एक रथपर चढ़के लड़नेको आवेंगे, तब हमारा हृदय भयसे कांपने लगता है। यदि मेरा मूर्ख पुत्र युद्ध करनेको न जाय, तो कृष्ण और अर्ज्जुनसे जीता बच जायगा। नहीं तो अर्ज्जुन और कृष्ण हमारे वंशको इस प्रकार भस्म कर देंगे जैसे इन्द्र दैत्योंका नाश करते हैं। हम अर्ज्जुनको इन्द्रके समान वीर जानते हैं, और कृष्ण तो सनातन विष्णुही हैं। इस मूर्ख दुर्य्योधनने महात्मा लज्जावान, महा पराक्रमी, शत्रु रहित युधिष्ठिरको बहुत दुःख दिया है; अब वे क्रोध करके अवश्य इसका नाश कर देंगे। मैं इतना अर्ज्जुन, कृष्ण, भीम, नकुल और सहदेवसे नहीं डरता, जितना धर्म्मराज युधिष्ठिरके क्रोधसे डरता हूं; क्योंकि उनका क्रोध महा कठोर है, वे ब्रह्मचारी और सत्यवादी हैं, उनकी प्रतिज्ञा अवश्य सत्य होती है। हे सञ्जय! उनके क्रोधको याद करके मैं रात दिन भयसे व्याकुल रहता हूं। तुम इसी समय

शीघ्र चलानेवाले रथपर चढ़कर द्रुपदकी सेनामें जाओ; वहां जाकर महाराज युधिष्ठिरसे प्रीतिके सहित हमारी ओरसे वार वार कुशल पूछना। महापराक्रमी पाण्डवोंके मुख्य मन्त्री कृष्णसे भी कुशल पूछना और कहना कि महाराज धृतराष्ट्र कुशलसे हैं, वे आपके सङ्ग सन्धि करना चाहते हैं। हे सूत! तुम यह सब वचन कृष्णहीसे कहना, कृष्णके वचनको युधिष्ठिर अवश्य मानते हैं। कृष्ण उनके प्यारे मन्त्री विद्वान् और पाण्डवोंके सब कार्य्योंके करनेवाले हैं। इसके पश्चात् पाण्डवोंने जिन राजोंको बुलाया है, उन सबसे, सृञ्जयोंसे, कृष्णसे और राजा विराटसे हमारी ओरसे कुशल पूछना, इसके पश्चात द्रौपदीके पुत्रोंसे कुशल पूछना, इसके पश्चात् जिनसे योग्य समझो उनसे भी हमारी ओरसे कुशल पूछना। इसके पश्चात् सब राजोंके बीचमें हमारे कल्याणके वचन कहना; परन्तु हमारे वचन ऐसे न हों, जिनसे युद्धकी सिद्धि होती हो।

२२ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! राजा धृतराष्ट्रके ऐसे वचन सुन सञ्जय रथमें बैठकर महा तेजस्वी पाण्डवोंको देखनेके वास्ते विराट नगरको चले, वहां जाकर सूतपुत्र सञ्जयने राजोंके बीचमें सिंहासनपर बैठे महाराज युधिष्ठिरको देखा, अनन्तर महाराजको प्रणाम कर और हाथ जोड़कर कहा, हे महाराज! हम आज प्रारब्धहीसे आपको रोगरहित, सहायोंके सहित इन्द्रके समान बैठे देखते हैं। हे महाराज! अम्बिकापुत्र बूढ़े धृतराष्ट्र आपसे कुशल पूछते हैं; वह कहते हैं, कि पाण्डवश्रेष्ठ भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव कुशलसे तो हैं? हे भारत! उन्होंने पूछा है, कि जिससे तुम सब कल्याणोंकी इच्छा करते हो, वह वीरोंकी स्त्री पुत्री यशस्विनी शचीके समान पतिव्रता द्रौपदी पुत्रोंके सहित कुशलसे तो है?

महाराज युधिष्ठिर बोले, हे गावल्गणपुत्र सूत सञ्जय! हम तुम्हारा स्वागत करते हैं, तुम्हें देखकर आज हम बहुत प्रसन्न हुए। हम अपने भाइयोंके सहित कुशलसे हैं; तुम अपनी कुशल कहो। आज हमने बहुत दिनपर अपने बूढ़े महाराज धृतराष्ट्रकी कुशल सुनी। कुशल सुननेहीसे हमको ऐसा आनन्द हुआ जैसा उनके दर्शनसे होता है! उनका दर्शनही हमको कल्याणदायक है। हे प्यारे सञ्जय! कहो हमारे दादा महाबुद्धिमान सब धर्म्मके जाननेवाले बूढ़े भीष्म कुशलसे तो हैं? पहलेके समान धर्म्म करते हैं न? कहो विचित्रवीर्य्यपुत्र महाराज धृतराष्ट्र अपने पुत्रोंके सहित अच्छे तो हैं? हे सूतपुत्र! महाविद्वान प्रतिपियपुत्र महाराज वाह्लिक तो अच्छे हैं न? महा धर्म्मात्मा सोमदत्त, भूरिश्रवा, शल, द्रोणाचार्य्य और कृपाचार्य्य आदि महा धनुषधारी वीर लोग कुशलसे हैं न? जो सब कौरवोंके समान धनुषधारी महा बुद्धिमान सब शास्त्रोंके जाननेवाले राज और सेनाके जो प्रधान वीर हैं, वे सब कुशलसे हैं न? कहो ये सब राजासे उत्तम सम्मान पाते हैं न? जिनके राज्यमें महा धनुषधारी शीलवान सुन्दर अश्वत्थामा रहते हैं, उन कौरवोंकी सभामें सब प्रधान आदरसे रहते हैं न? कहो महा बुद्धिमान वैश्यापुत्र युयुत्सु अच्छे हैं न? कहो जिसने राजा दुर्य्योधनको मुख्य बनाया है, वह मन्त्री कर्ण तो अच्छे हैं? हम लोगोंकी माता कौरवकुलकी बूढ़ी स्त्री रसोई बनानेवाली, दास, दासी, बहू, बेटे, भानजे, बहिन, पुत्री और पुत्रोंके पुत्र ये सब अच्छे हैं न? कहो राजा दुर्य्योधन ब्राह्मणोंकी पुरुषार्थोंके समान मानते हैं न? कहो दुर्य्योधनने हमारे दिये हुए गांव आदि ब्राह्मण और वीरोंसे छीन तो नहीं

लिये? कहो राजा धृतराष्ट्र पुत्रोंके सहित ब्राह्मणोंकी सेवा तो करते हैं? वे अपने परलोक सुधारनेके उपाय करते तो हैं? ब्रह्माने कहा है, कि ब्राह्मणोंकी वृत्ति देनाही स्वर्गसाधनका उपाय है, क्योंकि ब्राह्मण लोग क्रोध करके सब कौरवोंका नाश कर सकते हैं। कहो राजा धृतराष्ट्र पुत्रोंके सहित अपने सेवकोंको भोजन देते हैं न? कहो उनके यहां कोई शत्रु मित्र होकर तो नहीं है? कहो, वे लोग पाण्डवोंके दोष तो नहीं वर्णन करते? द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य और वीर अश्वत्थामा हम लोगोंको पापी तो नहीं बनाते? कहो सब कौरव, राजा धृतराष्ट्रको पुत्रोंके सहित मानते हैं न? कहो डाकुओंको देखकर वे लोग कभी पाण्डवोंका स्मरण करते हैं? कभी वे लोग गाण्डीव धनुषसे छूटे हुए बिजलीके समान शब्दवाले अर्जुनके वाणोंको स्मरण करते हैं? मैंने आज पर्य्यन्त अर्ज्जुनके समान योद्धा किसीको नहीं देखा, इनके तीक्ष्णवाण इकसठ हाथ तक जासकते हैं। ऐसेही हमारे भाई भीमसेन इस प्रकार गदा लेकर युद्ध करते हैं, जैसे मतवाला हाथी युद्ध करता है, इनसे कोई शत्रु जीता हुआ नहीं बच सकता। कहो कभी कौरव लोग भीमसेनका भी स्मरण करते हैं? जिस हमारे छोटे भाई माद्रीपुत्र सहदेवने क्रोधसे भरकर बांये और दहने हाथमें खड्ग धारण करके कलिङ्ग देशके वीरोंका नाश किया था, कहो कौरव लोग कभी उस वीर सहदेवका भी स्मरण करते हैं? हे सञ्जय! जिसको हमने शिवि और त्रिगर्त्त देशको जीतनेको भेजा था, जिसने तुम्हारे देखते देखते सब पश्चिम दिशाको जीत कर हमारे वशमें कर दिया था, उस वीर नकुलका भी कभी कौरवोंको स्मरण होता है? जब घोषयात्रामें मूर्ख दुर्य्योधन शत्रुओंके वशमें होगया था, जहां उसका महानिरादर हुआ था, जहां मैंने पीछेसे अर्ज्जुनको रक्षा की थी, और जहां भीमने नकुल सहदेवकी रक्षा की थी, जिस युद्धमें अर्ज्जुनने दुर्य्योधनके शत्रुओंको नाश करके उसे छुड़ाया था, कहो उस युद्धका भी कभी दुर्य्योधनको स्मरण आता है? हे सूत! हमने दण्डके सिवा और किसी उपायसे दुर्य्योधनको अपने वशमें होते नहीं देखा, तब युद्धको उद्यत हुए हैं।

२३ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् युधिष्ठिर! आपने जो कुछ कौरवोंके प्रति पूछा वे सब यशस्वी-कौरव कुशलसे हैं। हे पाण्डव! सब वृद्ध धृतराष्ट्र-पुत्रसे अच्छा वर्त्ताव करते हैं, परन्तु धृतराष्ट्र-पुत्रका चित्त बहुत पापी है; हां यह बात है कि उसने शत्रुओंको भी जीविका देदी है फिर ब्राह्मणोंकी जीविका कैसे छीन सकता है? तुम धृतराष्ट्रपुत्रसे मौन होकर द्वेष करते हो, सो अच्छा नहीं। पापी धृतराष्ट्र पुत्रोंके सहित तुम साधुओंके सङ्ग द्वेष करते हैं। हे युधिष्ठिर! बहुत बूढ़ा कुछ धर्म्म नहीं जानता और सदा तुम लोगोंसे जलता रहता है। सदा ब्राह्मणोंसे विश्वासघातकी कथा सुना करता है! यह विश्वासघात महापातक है; हे युधिष्ठिर! सब कौरव युद्धोंमें तुम्हारा स्मरण किया करते हैं, वाण चलानेके समय अर्ज्जुनका स्मरण किया करते हैं, भीमसेनको शंख, भेरी और नगारोंके शब्दके सङ्ग स्मरण करते हैं। और महायुद्धोंमें चारो ओर युद्ध करते हुए नकुल और सहदेवका स्मरण किया करते हैं, कौरव लोग कहा करते हैं कि माद्रीपुत्र नकुल और सहदेव महायोद्धा हैं और युद्धसे कभी नहीं हटते। हे राजन्! हे पाण्डव! जगतमें ऐसा कोई मनुष्य नहीं जो प्रारब्धको जान सके। क्योंकि सब धर्म्म जाननेवाले आप भी दुःख भोगते हैं, इससे जानते हैं कि प्रारब्ध बड़ी

बलवान है। हे पाण्डव! आप इतने दुःख सह कर भी शान्ति चाहते हैं, इससे हम जानते हैं कि पाण्डुपुत्र किसी काम और धनके लिये भी धर्म्मको नहीं छोड़ेंगे, क्योंकि आप पांचो भाई इन्द्रके तुल्य हैं। हे अजातशत्रो! आप अपनी बुद्धिसे सन्धि कीजिये, जिसमें सब कुरुकुलका कल्याण हो। धृतराष्ट्रके पुत्र पाण्डव और सृञ्जय आदि राजा सुनें, हमसे जो कुछ तुम्हारे पिता धृतराष्ट्रने कहा है सो सुनो। हे राजन्! महाराज धृतराष्ट्रने पुत्र, मन्त्री और बान्धवोंके सहित जो कहा है सो सुनो।

२४ अध्याय समाप्त।

युधिष्ठिर बोले, हे गालवगणपुत्र सञ्जय! पांचो पाण्डव, सृञ्जय, श्रीकृष्ण, सात्यकी और विराट आदि सब महात्मा सभामें आगये हैं, अब जो कुछ राजा धृतराष्ट्रने तुमसे कहा है, सो तुम कहो।

सञ्जय बोले, महाराज युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल, सहदेव, श्रीकृष्ण, सात्यकी, चेकितान, पञ्चाल देशके स्वामी बूढ़े महाराज द्रुपद और महावीर धृष्टद्युम्न आदि महात्मा मेरे उन बचनोंको सुनें जो मैं कौरवोंके कल्याणके लिये कहता हूं। महाराज धृतराष्ट्रने मुझसे चलते समय जो कुछ अपने भतीजोंको कहा है, सो मैं कहता हूं। उन्होंने कहा है कि पाण्डव लोग सब प्रकारसे सब धर्म्मोंसे भरे हैं, उनमें बुद्धि, लज्जा और कोमलता निवास करती है, वे लोग उत्तम कुलमें उत्पन्न हुए पण्डित और जगतके नियमको जाननेवाले हैं। महाराजने कहा है कि तुम लोगोंमें दीनता नहीं है, तुम लोग महा पराक्रमी हो, और तुम्हारे पास सेना भी बहुत है; यदि कोई पाप तुम्हारी ओरसे हो जाय तो वह ऐसाही दीखने लगेगा जैसे सफेद वस्त्रपर स्याही। विरोधसे युद्धमें सब जगतके क्षत्रियोंका नाश होगा और इस पापसे सबको नर्क होगा। इस युद्धके करनेकी किस बुद्धिमानको इच्छा होगी, जिसमें हार और जीत समानही है, उनको धन्य है, जो जातिके लिये कल्याण करते हैं। वेही हमारे पुत्र, मित्र और बन्धु हैं, जो इस समय युद्धको रोकें, क्योंकि युद्ध न होनेहीसे कुरुकुलका कल्याण है। यदि वे लोग शत्रुओंको अपने वशमें करके पाण्डवोंको शिक्षा देकर राज्यका निर्णय कर दें तो बहुत अच्छा होगा, नहीं तो वंश नाश करके मरना और जीना समानही है। महाराजने कहा है, कि हमको निश्चय है कि धृष्टद्युम्नसे रक्षित, कृष्ण, सात्यकी और चेकितानके सहित पांचो पाण्डवोंसे कोई युद्ध नहीं कर सकता; वे सब देवतोंके सहित साक्षात इन्द्रको भी जीत सकते हैं, और यह भी निश्चय है कि द्रोणाचार्य्य, भीष्म, कृपाचार्य्य, शल्य और अश्वत्थामासे रक्षित राधापुत्र कर्ण आदि राजोंके सहित दुर्य्योधनको महा सेनाको भी कोई नहीं जीत सकता। परन्तु हमको हार और जीत किसीमें कल्याण नहीं दीखता। हम जानते हैं कि पाण्डव नीच कुलमें उत्पन्न हुए अधर्म्मियोंके समान इस कुकर्म्मको नहीं करेंगे, इस लिये हम हाथ जोड़कर सोमकवंश श्रेष्ठ बूढ़े महाराज द्रुपद और कृष्णके शरण हैं; उन दोनोंको ऐसा काम करना चाहिये, जिसमें सृञ्जय और कुरुकुलका कल्याण हो। यदि कृष्ण और अर्जुन मेरे इस बचनको नहीं मानेंगे तब वे लोग यह भी निश्चय रखें कि युद्धमें किसीका भी प्राण नहीं बचेगा। हमने जो कुछ कहा है, सो सब शान्तिके लिये कहा है, डरसे नहीं।

यह सब बचन महाराजने भीष्मकी सम्मतिसे कहे हैं। अन्तमें फिर महाराजने कहा कि शान्ति होनी अच्छी है

२५ अध्याय समाप्त।

महाराज युधिष्ठिर बोले, हे सूत! हे सञ्जय! तुमने हमारी कौनसी ऐसी वाणी सुनी जिससे तुमको यह निश्चय होगया कि युधिष्ठिर युद्ध करना चाहते हैं? तुम मेरे कौनसे वचन सुनकर युद्धसे डरे? मेरा सदासे सिद्धान्त है कि युद्धसे शान्ति अच्छी है। ऐसा कौन मूर्ख है जो सन्धि छोड़कर युद्ध करेगा? हे सूत! यदि बिना सङ्कल्पहीके कोई कार्य्य सिद्ध हो, तो सङ्कल्प न करना चाहिये। यदि सङ्कल्पहीसे कार्य्य सिद्ध हो, तो कर्म्महो नहीं करना चाहिये। यदि थोड़े कर्म्मसे कार्य्य सिद्ध होता हो तो बड़ा कर्म्म करना उचित नहीं, इस लिये मेरी बुद्धिमें यह होना अच्छा नहीं है। ऐसा कौन प्रारब्धका मारा है, जो शान्ति छोड़कर युद्धकी इच्छा करे? जगतमें ऐसा कौन है जो वृथा युद्ध करना चाहे? हां पाण्डव लोग सुखकी इच्छा करते हैं, परन्तु उस सुखको ऐसे कर्म्मसे प्राप्त करना चाहते हैं, जिसमें सब लोकका कल्याण हो। पाण्डव धर्म्मसे सब काम करते हैं, और धर्म्महीसे अपना राज्य तथा सुख प्राप्त करना चाहते हैं। वे लोग बड़े मूर्ख हैं जो इन्द्रियोंके सुखके लिये दुःखोंको दूर करके सुख प्राप्त करना चाहते हैं, जिन कर्म्मोंका उपाय कठिन है वे सब दुःखदायकही हैं। जिस प्रकार दबी रुई थोड़ी अग्नि बढकर सबको जला देती है, ऐसेही विषयोंकी चिन्ता शरीरको भस्म कर देती है; उससे पुरुषकी सब शक्ति घट जाती हैं, और अनेक दुःख प्राप्त होते हैं। जैसे अग्निमें जितना घी डालो उतनाही अग्नि बढ़ती जाती है, ऐसेही मनुष्यको जितना सुख मिले उतनोहीं इच्छा बढ़ती जाती है। देखो राजा धृतराष्ट्रने अपने धनसे तृप्त न होकर हमारे धनको भी छीन लिया तब भी उनको तृप्ति नहीं होती। हां हमें यह निश्चय है कि महाराज धृतराष्ट्र बड़े धर्म्मात्मा हैं, क्योंकि पापीको ऐसे सुख कहां होते हैं? पापी युद्ध और सन्धि करानेका स्वामी नहीं होता। पापी अच्छे गीत नहीं सुनता, पापीको उत्तम सुगन्धि माला और चन्दनादिक नहीं मिलते, पापीको उत्तम वस्त्र नहीं मिलते। इसमें एक प्रमाण यही है कि यदि महाराज पापी होते तो हम लोगोंका राज्य क्यों छीन लेते? क्योंकि धर्म्मात्माही शत्रुओंको राज्यसे निकालते हैं। परन्तु यह सब धर्म्म उनही मूर्ख दुर्योधनादिकोंके करने योग्य है, हम लोगोंके नहीं। यही विचार कर हमारा हृदय दुःखसे जला करता है। बड़े शोककी बात है कि राजा आपही सङ्कटमें पड़कर कर्णादिकोंकी शक्ति बढ़ा रहे हैं, सो अच्छा नहीं है, वे जैसे अपनेको समझते हैं, क्या ऐसेही कर्णादिकोंको समझते हैं? महाराजका ऐसाही विचार है जैसे कोई मनुष्य बहुत लकड़ीके ढेरमें गरमीके समय आग लगावे और कहे कि जाड़ोंमें बता दूंगा। हे सञ्जय! राजा धृतराष्ट्र सब प्रकारके सुखोंको पाकर अब किस लिये रोते हैं? वे अपने मूर्ख पुत्र दुष्ट कर्म्म करनेवाले दुर्योधनको लिये बैठे रहें, मूर्ख दुर्योधनने महाबुद्धिमान विदुरके वचनको मूर्खके वचनके समान भी नहीं सुना। राजा धृतराष्ट्र अपने पुत्रको सुख देना चाहते हैं, इस लिये यह सब अधर्म्म उन्हींको होगा। महाबुद्धिमान, महापण्डित, महाशीलवान, महावक्ता कौरवोंका सुख चाहनेवाले विदुरके वचनोंको भी महाराजने अपने पुत्रोंके लिये छोड़ दिया। हे सञ्जय! राजा धृतराष्ट्रने अपने पुत्रके सुखके लिये अर्थ और धर्म्मको छोड़ दिया है; उनका पुत्र दुर्योधन सबके सम्मानका नाशक मूर्ख, दूसरेकी उन्नतिको न सहनेवाला क्रोधी, अधर्म्मी, कठोरवादी, कामी, क्रोधके वशमें रहनेवाला, दुष्ट, किसीकी बातको न माननेवाला और दुष्टबुद्धि है। हे सञ्जय! जुवा खेलनेके समय

जब राजा धृतराष्ट्रने विदुरके वचन नहीं माने थे, तबही हमको निश्चय होगया था कि कुरु-वंशके नाशका समय आगया है। हे सूत! जिस समय राजा धृतराष्ट्र विदुरकी बुद्धिसे नहीं चले, तभी हमने जान लिया था कि कौरवोंके नाशका समय आगया। जबतक राजा धृतराष्ट्र विदुरकी बुद्धिसे चले तबतक उनका राज्य बढ़ा। हे गालवगण-पुत्र। अब मूर्ख दुर्य्योधनकी बुद्धि देखो, उसने शकुनि दुःशासन और सूतपुत्र कर्णको अपना मन्त्री बनाया है; हमें कोई उपाय अब ऐसा नहीं दीखता जिसमें सञ्जय और कौरवोंका कल्याण हो। जिस समय हम लोग बनको चले गये थे और राजा धृतराष्ट्रने महा बुद्धिमान विदुरको निकाल दिया था। उसी समय राजा धृतराष्ट्रने पुत्रोंके सहित समस्त पृथ्वीमें अपना निष्कण्टक राज्य समझ लिया था; ऐसे लोभी राजासे सन्धि किस प्रकार होसकती है, जो सबधनको अपनाही समझता है। कर्ण जो जानता है कि मैं न जीतने योग्य अर्जुनको युद्धमें जीत लूंगा, सो केवल उसकी मूर्खताही है। क्या पहले कोई घोर युद्ध नहीं हुआ? उन युद्धोंमें कर्णने कौरवोंकी रक्षा क्यों न करी? कर्ण, दुर्य्योधन, द्रोणाचार्य्य और भीष्म आदि सब कौरव जानते हैं कि अर्जुनके समान कोई धनुषधारी नहीं है। सब कौरव और राजा लोग यह भी जानते हैं कि शत्रु-नाशन अर्जुनके न रहते दुर्य्योधन राजा होगया है, इसी लिये धृतराष्ट्रपुत्र दुर्य्योधनने यह जान लिया है कि हम पाण्डवोंको जीत लेंगे, इसको वह उस समय जानेगा जब ताड़के समान धनुष लेकर अर्जुन युद्ध करेंगे। जबतक गाण्डीव धनुषके शब्दको नहीं सुनते, तबहीतक धृत-राष्ट्रके पुत्र अभिमान करते हैं। जबतक भीमसेन क्रोध करके युद्धमें नहीं जाते तबहीतक दुर्य्योधन अपनी सिद्धि देखता है। हे तात! भीमसेनके जीते इन्द्र भी हमसे राज्य नहीं छीन सकता? महावीर अर्ज्जुन और सहदेवके जीते क्या कोई हमसे राज्य छीन सकता है? हे सूत! यदि राजा धृतराष्ट्र हमसे युद्ध करनेकी इच्छा करेंगे तो उनके सब पुत्र पाण्डवोंके क्रोधकी अग्निमें भस्म हो जायेंगे! हे सञ्जय! तुम जानते हो कि उन्होंने हमको कैसे कैसे दुःख दिये हैं। हम तुम्हारे ऊपर कृपा करके क्षमा करते हैं, तुम्हें यह भी विदित है, कि हम दुर्य्योधनके सङ्ग कैसा बर्त्ताव करते थे? यदि तुम्हारे कहनेके अनुसार राजा धृतराष्ट्र वास्तवमें सन्धि करना चाहते हैं, तो जाओ हमारी भी सन्धि करनेहीकी इच्छा है, और हम सब व्यवहार पहलेके समान करेंगे। इन्द्रप्रस्थमें हमारा राज्य और कुरुश्रेष्ठ दुर्य्योधन हास्तनापुरमें रहैं।

२६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे पाण्डव! हे कुन्तीनन्दन युधिष्ठिर! आप धर्म्मको नित्य जानते हैं, आपकी कीर्त्ति जगतमें प्रसिद्ध है। आप जीनेको अनित्य जानते हैं, इस लिये धृतराष्ट्रके पुत्रोंका नाश मत कीजिये। हे युधिष्ठिर! यदि कौरव-लोग बिना युद्धके आपका राज्य न दें तो आप भिक्षा मांगकर अन्धक और वृष्णि देशमें रहिये, अथवा कोई और जीविकाका उपाय कर लीजिये, क्योंकि जीना अनित्य है; कीर्त्ति और सुख दुःख भी सदा नहीं रहते, और युद्ध करना आप ऐसे धर्म्मात्माओंका काम भी नहीं है, इस लिये आप इस पाप कर्म्मको न कीजिये। हे राजेन्द्र! सब मनुष्य अपनी इच्छानुसार जो चाहे सो कहैं, क्योंकि ये पापके मूल हैं, परन्तु बुद्धिमान मनुष्य इन मूर्खोंकी सङ्गतिको छोड़कर महा कीर्त्तिको प्राप्त होते हैं। हे कुन्ती-पुत्र! धनकी तृष्णा धर्म्मका नाश करती है, और महात्माओंको धर्म्मही करना चाहिये;

धनकी इच्छा करनेवालेका धर्म्म नाश होता है इस लिये आप इस पाप कर्म्मको मत कीजिये। हे प्यारे युधिष्ठिर! उत्तम कर्म्म और धर्म्म करनेसे आपका प्रताप सूर्य्यके समान दीखता है, और पापी दुर्य्योधन सब पृथ्वीका राजा होनेपर भी अधर्म्मके कारण दुःख पा रहा है। आपने वेद पढ़ा, ब्रह्मचर्य्य किया, अनेक यज्ञ किये, ब्राह्मणोंको दान दिये और केवल धर्म्मके लियेही तेरह बर्ष बनमें रहकर अनेक दुःख भोगे। आपने परलोकको सत्य जानकर अपना शरीरतक भी दे दिया। जो मूर्ख बहुत दिनतक सुख करके योगाभ्यास नहीं करता, वह धन नाश होनेके पश्चात अनेक चिन्ताओंसे व्याकुल होकर दुःख भोगता है। जो, मूर्ख ब्रह्मचर्य्यको छोड़ धर्म्मका नाश कर अधर्म्म करता है, और परलोकको सत्य नहीं मानता, वह मरकर महा दुःख भोगता है। पाप या पुण्यका कोई कर्म्म परलोकमें भी नष्ट नहीं होता, परलोकमें पहले कर्म्म और पीछे करनेवाला जाता है, आपने जो ब्राह्मणोंको न्याय और श्रद्धाके समेत पवित्र रस और सुगन्धसे भरे उत्तम अन्न दिये हैं, उससे और उत्तम दक्षिणा देनेसे आपकी कीर्त्ति जगतमें फैल रही है। हे युधिष्ठिर! इसी लोकमें सब कार्य्य किये जाते हैं, मरनेके पीछे कोई काम नहीं होता। आपने परलोकके लिये महात्माओंके करने योग्य अनेक धर्म्म किये हैं। जो धर्म्म करता है, वह मृत्यु, भूख, प्यास, मनके विरुद्ध कर्म्म सबको जीत लेता है। आपको जगतमें अब कुछ करना शेष नहीं है, अब आपको अपनी इन्द्रियोंको प्रसन्न करनेहीसे शेष है। हे पाण्डव! ऐसे उत्तम कर्म्म करके अब आप केवल लाभके वशमें होकर क्रोध या प्रसन्नतासे बहुत दिनके लिये दोनों लोकोंका नाश मत कीजिये। आप सब धर्म्मके पार होकर अब सत्य, धर्म्म कोमलता और लज्जाको मत छोड़िये। राजसूय और अश्वमेध आदि यज्ञ करके अब पापके मार्गमें मत चलिये। हे कुन्तीनन्दन! यदि आप इस बैर रूपी पापको करना चाहते हैं तो इससे सदा बनमें रहकर दुःख सहनाही अच्छा है; आपके वशमें जितनी सेना है, सबका बिना नाश करायेही आप बनको चले जाइये, क्योंकि बन जानेके पहले भी आपके मन्त्री, कृष्ण, महावीर सात्यकी राजा विराट पुत्रोंके सहित राजा रुक्मरथ और ये सब राजा तथा सब सहायक आपके वशहीमें थे, परन्तु इन सबको छोड़कर आप बनको चले गये थे; वैसेही अब भी चले जाइये। आप बहुत सहायकोंके सहित कृष्ण और अर्ज्जुनको मन्त्री करके अपने बलवान शत्रुओंको मारकर दुर्य्योधनके अभिमानका नाश करेंगे, भला यह क्या बुद्धिमानोंका काम है? किन्तु दूसरोंके बलको बढ़ा कर अपने बलको घटाकर अनेक बर्ष बनबास करके अब युद्ध करनेकी इच्छा करते हैं? अर्थात् उसी समय युद्ध क्यों नहीं किया? हे पाण्डव! उस समय क्या आप बुद्धिमान् नहीं थे जो युद्ध न किया? मूर्ख युद्ध करके, और बुद्धिमान् बिना युद्ध कियेही धैर्य्यसे धन धर्म्म और कल्याणको प्राप्त करता है। हे कुन्तीपुत्र! आपकी बुद्धि कभी अधर्म्ममें नहीं जाती, इस लिये इस पाप कर्म्म युद्धको मत कीजिये। युद्धमें किसीका कल्याण नहीं होता, आपने पहले किसी कारणसे युद्ध नहीं किया था, फिर अब इस बुद्धिविरोधी कर्म्मको क्यों करते हैं? हे महाराज! बिना रोगके रोग शिरमें पीड़ा करनेवाले, क्रोधको जीतिये और शान्त होइये। महात्मा लोग इस क्रोधरूपी विषको नहीं पीते हैं। ऐसा कौन बुद्धिमान होगा जो पापकर्म्म युद्धको करेगा? आपको भोगोंसे क्षमाही अच्छी लगती है, हे युधिष्ठिर! वह कौनसा उत्तम भोग है जिसे आप शान्तनुपुत्र भीष्म

द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा, शल्य, भूरिश्रवा, विकर्ण, विविंशति, कर्ण और दुर्य्योधनको मारकर भोगियेगा? आप इस समुद्र पर्य्यन्त पृथ्वीको पाकरभी क्या बुढ़ापे और मृत्युका जीत सकियेगा? आप अप्रिय सुख और दुःखको जानते हैं, इस लिये आप सरीखे विद्वानको युद्ध करना योग्य नहीं। यदि आप कहैं कि हम अपने मन्त्रियोंको राज्य देनेके लिये युद्ध करना चाहते हैं, तो यह भी आपके समान महात्माओंको करने योग्य नहीं है।

२३ अध्याय समाप्त।

महाराज युधिष्ठिर बोले, हे सञ्जय! तुमने जो कहा कि युद्धसे धर्म्म करना अच्छा है सो इसमें कुछ सन्देह नहीं है, हम भी ऐसाही मानते हैं। परन्तु तुमको हमारा धर्म्म और अधर्म्म विचार कर तब हमारी निन्दाकरनी उचित थी। जहां धर्म्म अधर्म्मरूप और अधर्म्म धर्म्मरूपसे माना जाता है, वहां बुद्धिमान पण्डितलोग धर्म्मके रूपको बुद्धिसे पहचान लेते हैं। हे सञ्जय! हमने जो धर्म्म और अधर्म्म कहे, यह धर्म्मके लक्षण जानो, धर्म्म और अधर्म्म सदाही जगतमें घूमा करते हैं। परन्तु जो जिसका पहला धर्म्म है, वही उसके लिये प्रमाण है; अर्थात ब्राह्मण, क्षत्री वैश्य और शूद्रोंके जो धर्म्म कहे हैं वेही उनके लिये कल्याणदायक हैं, दूसरेकी वृत्ति करना अधर्म्म कहाता है। जिस समय मनुष्यको अपनी वृत्ति नष्ट हो जाय, उस समय अत्यन्त दीन होकर दूसरे वर्णकी वृत्ति करनी चाहिये। हे सञ्जय! जो निज वृत्तिमें रहते दूसरे वर्णका काम करता है, और जो आपत्तिमें पड़कर हठसे अपना कर्म्म करना चाहता है, यह दोनोंही नीच कहाते हैं। ब्राह्मणोंके कल्याणके लिये प्रायश्चित्त कहे हैं, उस शास्त्रको देखकर तुम अच्छे कर्म्म करनेवालेकी प्रशंसा और बुरे कर्म्म करनेवालेकी निन्दा करो। महात्माओंकी बुद्धिको अलग करनेके लिये भिक्षावृत्ति बनाई है, वह भिक्षा वृत्ति ब्राह्मणोंको और अन्य वर्णवाले मनुष्योंको है, इस लिये सबको अच्छी अवस्थामें अपन अपना धर्म्म करनाही उचित है। जो कर्म्म हमारे पिता पितामह और उनसे पहले पुरुषोंने किया है, वही यज्ञादिक कर्म्म हमको भी करने चाहिये, क्योंकि उनके न करनेसे हम नास्तिक कहावेंगे। हे सञ्जय! हम अधर्म्मसे पृथ्वीका और सब देवतोंका भी धन प्रजापतिका स्थान और ब्रह्माका लोक लेना नहीं चाहते। श्रीकृष्ण, धर्म्मके स्वामी, नीतिके जाननेवाले, महा पण्डित और अनेक प्रकार राजके भोगोंको भोगते हैं, यदि मैं सन्धि तोड़कर युद्ध करनेकी इच्छा करता हूं, या युद्धमें भी अपने धर्म्मका छोड़ता हूं तो महा यशस्वी वसुदेवपुत्र कृष्णही कहैं, क्योंकि ये हम दोनोंका कल्याण चाहते हैं। यह सात्यकी, चेदि देशके राजा, अन्धक, वृष्णिवंशी, भोजवंशी, कुक्करवंशी और सृञ्जयवंशी क्षत्री सभामें बैठे हैं, ये सब कृष्णकी बुद्धिसे शत्रुओंका नाश करते हैं और मित्रोंको सुख देते हैं। यदुवंशी और अन्धकवंशी उग्रसेनादिक राजा कृष्णके आश्रयसे इन्द्रके तुल्य होगये हैं, यह सब महात्मा, सत्यवादी और अनेक भोग भोगते हैं, काशीके बसु नामक राजा कृष्णको भाई और स्वामी बनाकर परम लक्ष्मीको प्राप्त हुए हैं, हे सञ्जय! श्रीकृष्ण इस प्रकार धन देते हैं, जैसे वर्षा कालमें मेघ प्रजाको जल देते हैं। हे सञ्जय! श्रीकृष्ण महाविद्वान और कर्म्मोंके निश्चयको जाननेवाले हैं, कृष्ण हमारे बहुत प्यारे और महात्मा हैं। इस लिये जो ये कहेंगे सोई हम करेंगे।

२८ अध्याय समाप्त।

श्रीकृष्ण बोले, हे सञ्जय! हम पाण्डवोंका कल्याण और वृद्धिही चाहते हैं, उनके नाशकी कदापि इच्छा नहीं करते। ऐसेही महाराज धृतराष्ट्रके पुत्रोंकी भी उन्नतिही चाहते हैं। हे सञ्जय! मेरे अन्तःकरणका यही अभिप्राय है कि कौरव और पाण्डवोंमें शान्ति हो। मैं सदा पाण्डवोंसे यही कहता रहता हूं कि तुम लोग सन्धि कर लो; मेरी बुद्धिमें पाण्डव और राजा धृतराष्ट्रकी सन्धिसे कल्याण होगा। परन्तु यहभी निश्चय है, कि महाराज युधिष्ठिरके सङ्ग दुर्य्योधनकी सन्धि होनी बहुत कठिन है, क्योंकि जहां राजा धृतराष्ट्र ऐसे लोभी पुत्रोंके रहित जीते हैं, तहां युद्ध क्यों न होगा? हे सञ्जय! तुम हमारे और युधिष्ठिरके चित्तसे धर्म्मको नहीं उठा सकोगे, इस लिये हम लोगोंका अधर्म्मी भी नहीं सिद्ध कर सकते हो? तब धर्म्मपालक उत्साह भरे युधिष्ठिरको उनके कर्म्मसे क्यों रोकते हो? तुमने कुटुम्बमें शान्ति चाहनेवाले युधिष्ठिरको पापी कैसे कहा? जब महाराज युधिष्ठिर अपना धर्म्म करते हैं, तब ब्राह्मण लोग उनको अनेक प्रकारकी वाणी सुनाते हैं; कोई महात्मा कहते हैं कि इस लोकके कर्म्मसे परलोकमें सिद्धि होती है, कोई कर्म्मके बिनाही विद्यासे सिद्धि बतलाते हैं, परन्तु चाहे कोई कैसाही विद्वान हो, वह भी बिना भोजन किये तृप्त नहीं होता, इस लिये कर्म्म करनाही प्रधान है। जो विद्या कर्म्मको सिद्ध करती है उसीका फल भी दीखता है, और जिससे कुछ कर्म्म सिद्ध नहीं होता उस विद्याका फल भी नहीं दीखता। कर्म्मही करनेसे सिद्धि होती है। प्यासा पानी पीनेहीसे शान्त होता है, हे सञ्जय! यह सब कर्म्महीका फल है, इसमें जो कोई विरुद्ध कहेगा उसका कहना वृथा है, और कहनेवाला भी दुर्ब्बल समझा जायगा। कर्म्महीसे देवता स्वर्गमें रहते हैं; कर्म्महीसे वायु बहता है; कर्म्महीसे सूर्य्य आलस्य रहित होकर दिन और रातका विभाग करता है; कर्म्महीसे चन्द्रमा महीने पक्ष नक्षत्र और योगोंको अलग अलग करते हैं; कर्म्महीसे भगवान अग्नि सब वस्तुओंको जलाते हैं; कर्म्महीसे आलस्यरहित होकर पृथ्वी सब जगतको धारण करती है, आलसरहित जल शीघ्र बहता है; नदी सबको तृप्त करती है; आलसरहित होकर महातेजस्वी मेघ सब दिशा और आकाशको अपने शब्दसे पूरित करके जल वर्षाते हैं; आलसरहित इन्द्रने देवतोंमें उत्तम होनेके लिये ब्रह्मचर्य्य किया था; इन्द्र अपने मनके प्यारे कर्म्म और सुखको छोड़कर तथा सावधान होकर सत्य, धर्म्म, त्याग और सबकी तुल्यताको धारण करके देवतोंमें श्रेष्ठ हुए हैं। इन सब कर्म्मोंके करनेसे देवराज इन्द्र सब देवतोंमें मुख्य और देवतोंके राजा बने हैं। बृहस्पतिने अपने प्यारे कर्म्मोंको छोड़ इन्द्रियोंको अपने वशमें कर ब्रह्मचर्य्य व्रत किया था; इसहीसे वे महात्मा सब देवतोंके गुरु हुए। आकाशमें तारे, विश्वे देवता, सूर्य्य, रुद्र, यमराज; कुबेर, गन्धर्व्व और अप्सरा, ये सब कर्म्महीसे सिद्धिको प्राप्त करते हैं। ऋषि लोग वेदविद्या पढ़कर तथा ब्रह्मचर्य्य और उत्तम कर्म्म करके तेजस्वी बनते हैं। हे सञ्जय! तुम विद्वान होकर तीनों लोकोंके ब्राह्मण, क्षत्री और वैश्योंके धर्म्मको जानकर भी कौरवोंका पक्ष लेकर क्यों हठ करते हो? महाराज युधिष्ठिरने समस्त वेदको पढ़ा है उन्होंने अश्वमेध और राजसूय आदि अनेक यज्ञ किये हैं, ऐसे मनुष्यको शिक्षा देनी भूल नहीं तो क्या है? यह मनुष्य, कवच हाथी, घोड़े, रथ और शस्त्रोंसे अपनी वृद्धि करना चाहते हैं, और यदि महाराज युधिष्ठिर भीमसेनके क्रोधको रोककर बिना कौरवोंके नाश किये कोई राज्य-प्राप्तिका उपाय निकालें, तो बड़ेही धर्म्मात्मा गिने जायं

परन्तु हमारी बुद्धिमें यदि ये लोग अपने कुल-धर्म्मसे अर्थात युद्धमें प्रारब्ध वशसे मारे भी जायं तो वह मृत्यु भी प्रशंसा करनेके योग्य होगी। और यदि तुमने कोई सन्धिका उपाय सोचा हो तो हमको सुनाओ, क्योंकि तुम जानते हो कि युद्ध करनेसे धर्म्म होता है या सन्धि करनेसे धर्म्म होता है? जैसा तुम कहोगे तैसाही हम करेंगे। परन्तु इस कहनेके पहले चारों वर्णोंके विभाग और अपने कर्म्मको विचार लो; इसके पश्चात पाण्डवोंके वचन भी सुन लो; तब अपनी बुद्धिके अनुसार चाहे इनको निन्दा करो, चाहे प्रशंसा करो। वेदमें लिखा है कि ब्राह्मण पढ़े, पढ़ावे, महात्माओंको दान दे, यजमानोंको यज्ञ करावे और उचित दानको ग्रहण करे, यही ब्राह्मणके छः कर्म्म हैं। क्षत्री अपने धर्म्मके अनुसार सावधान होके प्रजाका पालन करे, दान दे, वेद पढ़े, यज्ञ करे और घरमें रहकर दान करे, यही क्षत्रीके धर्म्म हैं। जो इन कर्म्मोंको करता है, वही युद्ध करनेवाला धर्म्मात्मा क्षत्री स्वर्गको जाता है। वैश्य वेद पढ़कर खेती करे, गौओंकी रक्षा करे और सावधान होकर धनसे व्यापार करे। पुण्यात्मा वैश्यको उचित है कि ब्राह्मण और क्षत्रियोंका प्यारा कर्म्म करके घरमें बसे। शूद्र तीनों वर्णोंकी सेवा करे, और सदा आलसरहित होकर तीनो वर्णोंका कल्याण चाहे। शूद्रको वेद पढ़ने और यज्ञ करनेका अधिकार नहीं है। महाराज युधिष्ठिर सावधान होकर अपने धर्म्मका पालन करते हैं और सब वर्णोंको उचित धर्म्मोंमें चलाते हैं, वे कामी नहीं हैं, प्रजाको समान मानते हैं और कभी अधर्म्ममें नहीं जाते। जो मनुष्य इनसे अधिक ज्ञानी और धर्म्मात्मा हो, वही इनको शिक्षा दे, वह शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जिसमें महाराजको राज्य भी मिले, और युद्ध भी न हो, ऐसे उपायको महाराज अवश्यही मानेंगे। हे सञ्जय! तुमं जानते हो, जब कोई अपने बलके अभिमानमें आकर दूसरे राजाके धनको छीनना चाहता है, तबही युद्ध होता है, उसी युद्धके लिये ब्रह्माने शस्त्र और धनुष बनाये हैं। इन्द्रने डाकुओंके मारनेके लिये युद्ध बनाया है और इसी लिये शस्त्र, कवच और धनुष उत्पन्न हुए हैं। दुष्टोंके मारनेहीसे धर्म्म होता है, और यह दुष्टता दोष कौरवोंमें निवासही करता है। हे सञ्जय! यह छलरूपी दोष अधर्म्मी कौरवोंहीसे उत्पन्न हुआ है, सो अच्छा नहीं है। हमें निश्चय है कि राजा धृतराष्ट्र पुत्रोंके सहित पाण्डवोंका धर्म्म नाश करना चाहते हैं; उनके पास बैठनेवाले और उनके वंशके क्षत्री भी सनातन धर्म्मको नहीं जानते। हे सञ्जय! जहां चोर बिना देखे धन चुराते वा कोई दुष्ट देखते हुए छलसे धन छीन ले यह दोनोंही चोर कहाते हैं और दोनोंहीको निन्दा होती है। तब कहो क्या राजा दुर्य्योधन इन दोषोंसे बचे हैं? वह लोभके वशमें होकर पाण्डवोंके धन लेनेहीको धर्म्म समझते हैं, परन्तु पाण्डव उस क्रोधीको अपना भाग क्यों देंगे? हे सञ्जय! इस विषयको तुम सब राजोंके आगे राजा धृतराष्ट्रसे कहना कि चाहे युद्ध करो वा मत करो, पाण्डवोंको राज्य देनाही उत्तम है, क्योंकि दूसरेका राज्य लेनेसे मरना अच्छा है। हे सञ्जय! जो मूर्ख राजा लोग मृत्युके वशमें होकर दुर्य्योधनकी सहायताको आये हैं, उनसे पूछना कि यह धर्म्म है वा अधर्म्म? भीष्मादिक धर्म्मात्मा कौरवोंसे पूछना कि कौरवोंकी सभाके बीचमें रजस्वला, धर्म्म करनेवाली यशस्विनी पतिव्रता द्रौपदीको लानाही धर्म्म है? यदि राजा धृतराष्ट्र कुरु सभाके बीचमें दुष्ट दुःशासनको इस बुरे कर्म्मसे रोकते तो अवश्यही मैं उनसे प्रसन्न होता और उनको धर्म्मात्मा कहता और उनके पुत्रोंका भी कल्याण होता; दुःशासनने अधर्म्मसे द्रौपदीको ससुरोंके सामने

सभामें खींचा, क्या यही धर्म्मका काम है? द्रौपदीके सभामें रोनेको हम चमा नहीं कर सकते हैं और सब चमा होसकता है, उस सभामें अनेक राजाभी बैठे थे, परन्तु भयसे कोई धर्म्मका बचन न कह सका, केवल विदुरही धर्म्मके अनुसार दुर्य्योधनसे विवाद करते रहे। हे सञ्जय! तुम बिना धर्म्म जानेही इस सभामें युधिष्ठिरको उपदेश करना चाहते हो? द्रौपदीने जो सभामें आकर कहा था, सो बहुत उचित और पवित्र था, द्रौपदीने उस समय पाण्डवोंका और अपना इस प्रकार उद्धार किया था, जैसे समुद्रमें डूबते हुए मनुष्यको नाव बचाती है। उसी समय बूढ़ोंके आगे सूतपुत्र कर्णने कहा था, हे द्रौपदी! हे भामिनी! अब तुझे कहीं गति नहीं है, तू दुर्य्योधनकी दासी बनके रह, तेरे पति हार गये। अब तू किसी दूसरेको पति बना। तुम जानते हो, कि कर्णके ये वचन अर्ज्जुनके हृदयमें तेज बाणके समान लगे हैं, उस घोर बाणसे अर्ज्जुनके मर्म्मस्थान कटे जाते हैं, जिस समय पाण्डवोंने बनको चलनेके लिये काले हरिणके चमडे ओढ़े थे, उसी समय दुःशासनने यह कठोर बचन कहे थे कि नपुंसक पापी पाण्डव बहुत कालके लिये घोर नरकमें पड़े। गान्धार देशके राजा शकुनिने छलसे जुआ खेलनेके समय युधिष्ठिरसे यह कठोर बचन कहे थे, कि तेरे छोटे भाइयोंको हमने जीत लिया अब द्रौपदीको दांव पर लगाओ। हे सञ्जय! तुम तो इन सब बातोंको जानतेही हो, कि जूएके समय पाण्डवोंको कौरवोंने कैसे कैसे कठोर बचन कहे थे, इन सब प्रश्नोंके समाधान करनेको स्वयम् हमारोही इच्छा हस्तिनापुर जानेका है। यदि तुम किसी उपायसे कौरव और पाण्डवोंमें सन्धि करा दो तो हमारे मनकी इच्छा पूरी हो, और हमारे पुण्यका फल मिले, तथा कौरव भी मरनेसे बच जायं। यदि मेरी धर्म्म भरी और नीति-भरी बाणीको कौरव लोग मानेंगे और वहां आनेसे मेरा आदर करेंगे तो उनका कल्याण होगा और जो मेरी द्वेष रहित बाणीको नहीं मानेंगे तो तुम पापी धृतराष्ट्रके पुत्रोंको युद्ध करते हुए अर्ज्जुन और भीमके बाणोंसे मरा हुआ जानो। धृतराष्ट्रपुत्र दुर्य्योधनने जो जूएमें हारे हुए पाण्डवोंको कठोर बचन कहे थे, उनको सावधान भीमसेन हाथमें गदा लेकर स्मरण करावेंगे। महाबुद्धिमान् राजा धृतराष्ट्र जड़, क्रोधी दुर्य्योधन वृक्ष, कर्ण बड़ी शाखा, शकुनि छोटी शाखा, तथा दुःशासन फल और फूल हैं। मैं ब्राह्मण और वेद जड़, धर्म्मात्मा युधिष्ठिर वृक्ष; अर्ज्जुन गुद्दा, भीमसेन डाली, तथा नकुल सहदेव फल और फूल हैं। राजा धृतराष्ट्र पुत्रोंके सहित बन और पाण्डव सिंह हैं। हे सञ्जय! तुम बनको मत काटो और न सिंहको बनसे निकालो! बिना सिंहके बन काटा जाता है, और बिना बनका सिंह मारा जाता है, इस लिये सिंह बनकी और बन सिंहकी रक्षा करे। धर्म्म लता, धृतराष्ट्रके पुत्र और पाण्डव शाखा हैं। बिना वृक्षके शाखा नहीं बढ़ती, इस लिये सन्धि करनी चाहिये। पाण्डव लोग युद्ध करनेको भी उपस्थित हैं, और सन्धि करनेको भी तयार हैं, राजा दुर्य्योधनको जो इच्छा हो सो करें, विशेष इतनाही है कि महात्मा धार्म्मिक पाण्डव सन्धिही करना चाहते हैं, और युद्ध करनेको भी समर्थ हुए हैं। तुम यह सब जाकर राजा धृतराष्ट्रसे यथायोग्य कहना, उनकी जो इच्छा हो सो करें।

२९ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे महाराज युधिष्ठिर! हे राजराजा युधिष्ठिर! आपका कल्याण हो, मैं हस्तिनापुर जानेकी आज्ञा मांगता हूं। हमने जो कुछ अनुचित कहा हो, सो आप

क्षमा कीजियेगा, मैंने जो कुछ कहा है, सो अपने मनकी इच्छासे कहा है। हे कृष्ण! हे भीमसेन! हे अर्जुन! हे नकुल! हे सहदेव! हे सात्यकि! हे चेकितान! आप सब लोगोंका कल्याण हो, मैं आप सब लोगोंसे बिदा मांगता हूं, आप सब प्रेमकी दृष्टिसे मुझे देखिये। महाराज युधिष्ठिर बोले, हे पण्डित सञ्जय! हम तुम्हें जानेकी आज्ञा देते हैं, तुम कल्याण सहित हस्तिनापुरको जाओ; वहां जाकर हमारे कल्याणका बिचार करना; हम तुम्हें पवित्रात्मा और अपना मित्र समझते हैं; तुम आर्य्य उत्तम दूत, मीठो वाणीवाले, शीलवान, मनुष्योंके प्यारे और सन्तुष्ट हो; तुम बात कहनेमें रुकते नहीं हो और कठोर बात सुन कर क्रोध नहीं करते; तुम कठोर रूपी और कड़वी बात नहीं कहते; तुम्हारी वाणी धर्म्म और अर्थसे भरी हिंसारहित और मीठी है। हे सूत! तुमही हमारे प्यारे दूत हो, तुम्हारे और विदुरके सिवा हमारे कल्याणकी वाणी और कौन कहेगा? हमने तुम्हें बहुत दिनपर देखा है, तुम अर्जुनके प्यारे मित्र हो। हे सञ्जय! तुम हस्तिनापुरमें जाकर प्रणाम करने योग्य ब्राह्मण, महा पराक्रमी धर्म्मात्मा युद्ध करनेवाले क्षत्री और बनमें रहनेवाले वेद जाननेवाले महात्मा ब्राह्मणोंको हमारी ओरसे प्रणाम कहना, तथा और वृद्धोंको भी हमारी ओरसे प्रणाम कहना। हे सूत! राजा धृतराष्ट्रके पुरोहित, आचार्य्य, यज्ञ करानेवाले तथा और भी सब महात्माओंको हमारा प्रणाम कहके कुशल पूछना। जो महा बलवान बूढ़ यशस्वी क्षत्री हस्तिनापुरमें हमारा स्मरण करते हैं, और जो शक्तिके अनुसार धर्म्म करते हैं, उनसे हमारा प्रणाम कहना। तुम कहना कि महाराज युधिष्ठिर कुशलसे हैं, और आप लोगोंसे कुशल पूछते हैं, जो उस राज्यमें व्यवहार करके जीते हैं, सबसे कुशल पूछना और जो राजा राज्यमें राज्यकी रक्षा करते हैं, उनकी भी कुशल पूछना। सब वेदोंके जाननेवाले हमारे गुरु द्रोणाचार्य्यसे हमारा बार बार प्रणाम कहना। जिन द्रोणाचार्य्यने ब्रह्मचर्य्य करके चारों चरणोंके सहित अस्त्र विद्या सीखी है, जिन्होंने प्रसन्न होकर हमको भी शस्त्रविद्या सिखाई है, उन द्रोणाचार्य्यको हमारी ओरसे प्रणाम कहना। जिसने समस्त विद्याओंको पढ़कर चार चरणोंके सहित शस्त्र विद्याको पढ़ा है, उन गन्धर्व्वपुत्रके समान पराक्रमी अश्वत्थामासे हमारी ओरसे कुशल पूछना। वेद विद्याओंके जाननेवालोंमें श्रेष्ठ महारथ शरद्दपुत्र कृपाचार्य्यके स्थानमें जाकर हमारी ओरसे उनके चरण पकड़ लेना और कहना कि महाराज युधिष्ठिर अपने भाइयोंके सहित बहुत कुशलसे हैं। इसके पश्चात तेज, लज्जा, तप, बुद्धि, शील, विद्या, पराक्रम और बुद्धिसे भरे हुए भीष्मके पास जाना और हमारी ओरसे उनके चरणोंमें प्रणाम करके हमारा कुशल निवेदन करना। हे सञ्जय! इसके पश्चात हमारे पिता सब वीरवरोंको आज्ञामें रखनेवाले, महाबुद्धिमान अनेक वृद्धोंके सेवक महात्मा धृतराष्ट्रके पास जाकर हमारी ओरसे प्रणाम कहना और कहना कि महाराज युधिष्ठिर अपने भाइयोंके सहित रोगरहित हैं। इसके पश्चात राजा धृतराष्ट्रके बड़े बेटे मूर्ख मन्दिबुद्धि दुष्ट, पापी दुर्य्योधनसे हमारी ओरसे कुशल पूछना, उसने सब पृथ्वीको अपने वशमें कर रक्खा है। इसके पश्चात कौरवोंमें महावीर दुष्ट पापी दुःशासनसे कहना कि पाण्डव लोग बहुत आनन्दसे हैं, इसके पश्चात कौरवोंकी शान्तिके सिवा जिसको और कुछ इच्छा नहीं है, उस साधु, शीलवान, वाह्लिकके पास जाकर हमारी ओरसे प्रणाम कहना। इसके पश्चात अनेक गुणोंसे भरे, न बहुत कठोर न बहुत कोमल,

प्रेमसे क्रोध सहनेवाले सोमदत्तको हमारी ओरसे प्रणाम करना। इसके पश्चात पूजा पानेके योग्य महा धनुषधारी, महारथ भूरिश्रवासे हमारी ओरसे कुशल पूछना, क्योंकि वे हमारे भाई और मित्र हैं। इसके पश्चात कौरवोंमें मुख्य हमारे भाई, बेटे पोते और जो आदर पानेके योग्य हों, उन सबसे यथायोग्य कुशल पूछना। हे सूत! इसके पश्चात जो राजा दक्षिण पश्चिम और उत्तरसे पाण्डवोंके सङ्ग युद्ध करनेको आये हैं, उनसे हमारी ओरसे कुशल पूछना। इसके पश्चात शीलवान लज्जावान उत्तम कुलमें उत्पन्न हुए वसाती, शाल्वक, केकय, अम्बष्ठ, पर्व्वत और त्रिगर्त्त देशके मुख्य राजोंसे हमारी ओरसे कुशल पूछना। इसके पश्चात हाथी घोड़े और रथोंमें चढ़नेवाले तथा पैदल सेनाके सामान्य लोगोंसे हमारी ओरसे कुशल पूछना, और सबसे कहना कि पाण्डव लोग बहुत सुखी हैं। इसके पश्चात राजाके धन विभागके मन्त्री, द्वारपाल, सेनाके प्रधान; लाभ और खर्चको गिननेवाले, सदा धनकी चिन्ता करनेवाले, सबसे कुशल पूछना। इसके पश्चात जो कभी युद्ध नहीं चाहते, जो सब कौरवोंमें श्रेष्ठ और महा बुद्धिमान हैं, उन वैश्यापुत्र युयुत्सुसे हमारी ओरसे कुशल पूछना। इसके पश्चात जो सदा युद्धकी इच्छा करता है जो देवतोंसे भी दुःखसे जीतने योग्य है, जो सदा जुवेको अच्छा समझता है, जो छिपकर छल करता है, उस कर्णसे हमारी ओरसे कुशल पूछना।

इसके पश्चात पर्व्वत देशके गान्धार देशके युवा, छली, दूसरेका धन छीननेवाला, धूर्त्त, पाखण्डी शकुनीसे आदरके सहित कुशल पूछना। जो महावीर एक रथपर चढ़ करके जीतने योग्य पाण्डवोंको जीतनेका साहस करता है, जो भूलमें पड़े धृतराष्ट्रके पुत्रोंको अधिक भुलाना चाहता है, उस कर्णसे भी हमारी ओरसे कुशल पूछना। जो हमारे मन्त्री, भक्त, गुरु, स्वामी, माता, पिता और मित्र हैं, उन महाबुद्धिमान विदुरसे भी हमारी ओरसे कुशल पूछना। हे सञ्जय! जो गुणसे भरी हमारी माताके समान बूढ़ी स्त्री हैं, उनको हमारी ओरसे प्रणाम करना और पूछना कि तुम लोग अपने पुत्र पाण्डवोंसे प्रेम करती हो? इसके पश्चात उनसे कहना कि युधिष्ठिर अपने भाई और पुत्रोंके सहित कुशलसे हैं, जो धृतराष्ट्रके पुत्रोंकी स्त्री हैं, उनसे भी हमारी ओरसे कुशल पूछना; वे सब गुप्त होकर अपने धर्म्मसे घरोंमें रहती हैं; फिर उनसे हमारी ओरसे कहना कि तुम सब अपने ससुरोंकी सुखसे सेवा करो, और जिसमें तुम्हारे पति तुम्हारे वशमें रहें ऐसे उपाय करो। हे सञ्जय! वहां जो हमारे बेटोंकी बहू उत्तम गुणोंसे भरी और उत्तम कुलोंमें उत्पन्न हुई हैं, उन सबसे कहना कि महाराज युधिष्ठिरने तुम्हारी कुशल पूछी है। इसके पश्चात जो हमारी कन्या मिलें उन सबसे कुशल पूछकर कहना कि तुम्हारे पति तुम्हारे वशमें रहें, और तुम अपने पतियोंके वशमें रहो। इसके पश्चात उत्तम आभूषण वस्त्र और सुगन्ध धारण किये, सुन्दरी, सुख और भोगको भोगनेवाली शरीरकी छोटी और बचनोंमें बड़ी, वेश्याओंसे हमारी ओरसे कुशल पूछना। इसके पश्चात कौरवोंके दास और दासियोंसे हमारी ओरसे कुशल पूछना। इसके पश्चात् अन्धे लंगड़े लूले और उन अनाथोंसे कुशल पूछना जिनका पालन दयावान धृतराष्ट्र करते हैं। इसके पश्चात जो हाथियोंसे अपनी अपनी आजिविका करते हैं, उनसे भी कुशल पूछना। इसके पश्चात उनसे कहना कि महाराज युधिष्ठिर पूछते हैं कि महाराज धृतराष्ट्र तुम लोगोंको अच्छी प्रकार भोजन

देते हैं वा नहीं? इसके पश्चात अञ्जहोन, दरिद्री और बौने आदि मनुष्योंसे कुशल पूछना और उनसे यह भी कहना कि महाराज युधिष्ठिर अपने भाइयोंके सहित कुशलसे हैं, और उनसे यह भी कहना कि तुम लोग थोड़ी जीविका पानेके कारण भय मत करो, यह पूर्व्व जन्मके पापोंका फल है, हम अपने शत्रुओंको मार कर और मित्रोंको प्रसन्नकरके शीघ्रही तुम लोगोंका पालन करेंगे। राजा दुर्य्योधनसे यह कहना कि जैसे तुम्हारे अधिकारियोंने हमारी दी हुई ब्राह्मणोंकी वृत्ति नहीं छीनी ऐसेही तुम्हारे मरनेके पश्चात् तुम्हारी दी हुई वृत्ति हम भी नहीं छीनेंगे। हे तात! हे सञ्जय! इसके पश्चात् तुम अनाथ, दुर्ब्बल असमर्थ मूर्ख और दरिद्रियोंसे हमारी ओरसे कुशल पूछना। इसके पश्चात् राजा दुर्य्योधनके यहां उन सबसे भी हमारी ओरसे कुशल पूछना जो अनेक देशोंसे आये हैं। इस प्रकार जो आता, जाता, पाहुना, वा दूत तुम्हें मिलते जायं, उन सबसे हमारी ओरसे कुशल पूछना, पीछे सबसे हमारा कुशल भी कह देना। हे सूतपुत्र! हमें यह खूब निश्चय है कि जैसे बीर दुर्य्योधनसे मिले हैं, वैसे बीर और पृथ्वीमें नहीं हैं, परन्तु सञ्जही यह भी निश्चय रक्खो कि धर्म्म नित्य है और मैं शत्रुओंको मारनेके लिये धर्म्महीको अपना बल समझता हूं। हे सञ्जय! इसके पश्चात तुम राजा दुर्य्योधनसे हमारी ओरसे कहना कि हम तुम्हारे शत्रु नहीं हैं, और मित्र होकर तुमको शिक्षा देते हैं, परन्तु तुम अपने हृदयमें हमको शत्रु जानते हो। हम लोग कभी वह काम नहीं करेंगे जिसमें तुम्हारी हानि हो, इसलिये इन्द्रप्रस्थका राज्य हमें देदो, अथवा घोर युद्ध करो।

३० अध्याय समाप्त।

महाराज युधिष्ठिर बोले, हे सञ्जय! बालक बूढ़े, साधु, दुष्ट, बलवान सबको ईश्वर अपने वशमें रखता है, ईश्वर प्रारब्धके अनुसार पण्डितको मूर्ख और मूर्खको पण्डित बना देता है, यही सब बचन तुम महाराज धृतराष्ट्रसे कहना। हे गावल्गणपुत्र! सेना इकट्ठी करते हुए और सम्मानित करते हुए प्रसन्न राजा धृतराष्ट्रसे कहना कि ईश्वर जो चाहेगा, सो करेगा। तुम जिस समय कौरवोंकी सभामें पहुंचो, उस समयकौरवोंके बीचमें बैठे महा बलवान धृतराष्ट्रके चरण पकड़कर हमारी ओरसे प्रणाम करना और कहना कि हे महाराज! आपहीके पराक्रमसे पाण्डव लोग सुखसे आजतक जीते हैं; हे शत्रुनाशन! आपहीकी कृपासे बालक पाण्डवोंको राज्य मिला था; आप उनको राज्यपर बिठला कर अब उनके नाशका समय न देखिये। इसके पश्चात हमारे पितामहसे प्रणाम करके कहना कि हे पितामह! आपने नाश होते कुरुवंशका उद्धार किया था, अब प्रायः ऐसा उपाय फिर कीजिये, जिससे आपके पौते प्रेमके सहित जीते रहैं। इसके पश्चात कौरवोंके मन्त्री विदुरसे कहना, कि हे साधो! आप युधिष्ठिरका कल्याण चाहते हैं, ऐसा उपाय कीजिये जिससे युद्ध न हो। इसके पश्चात महा क्रोधी राजपुत्र दुर्य्योधनसे कहना कि तुमने जो कौरवोंके बीचमें बैठकर पापरहित द्रौपदीको ओर बारबार बुरीदृष्टिसे देखा था, सो सब तुम्हारा अपराध मैं क्षमा करे देता हूं; तुम कौरवोंका नाश मत करो; तुमने जो काले हरिनका चमड़ा पहनाकर पाण्डवोंको बनको भेजा था, और जो तुमने पहले पाण्डवोंको अनेक दुःख दिये थे, जिनको सब कुरुवंशी जानते हैं, पाण्डव लोग बलवान और समर्थ होकर भी उन सब अपराधोंको क्षमाकर देते हैं, तुम कुरुवंशका नाश मत

करा। तुम्हारी आज्ञासे जो दुःशासनने द्रौपदीके बाल खींचे थे सो पाण्डवोंने चमा किया। हे शत्रुनाशन पुरुषसिंह! तुम अबभी हमारा राज्य हमको दे दो, तुम अपनी बुद्धिको दूसरेके धनसे हटा लो और लोभ मत करो। हे राजेन्द्र! ऐसा करनेसे शान्ति होगी और हमारा तुम्हारा प्रेम बना रहैगा। अथवा शान्ति चाहनेवाले हमको राज्यका एकही भाग दे दो, अथवा पांचही गांव देदो, परन्तु वे पांच गांव अविस्थल, वृकस्थल, माकन्दी, और वारणावत और पांचवां जो तुम्हारी इच्छा हो सोही दे दो। हे दुर्य्योधन! हम पांच भाइयोंको पांच गांव दो, ऐसा करनेसे शान्ति होगी और कुरुकुलका कल्याण होगा। भाई भाईसे मिल जायं, पिता पुत्रसे मिल जाय, सृञ्जय और पाञ्चाल प्रसन्न होकर अपने अपने देशोंको चले जायं। हमारी यही इच्छा है, कि कौरव और पाञ्चालोंका नाश न हो। हे सञ्जय! हमारी इच्छा यह है कि सृञ्जय और पाण्डवोंका नाश न हो। हे तात! ये सब प्रसन्नता पूर्व्वक अपना अपना राज्य करें, हम कदापि युद्ध करना नहीं चाहते, इस लिये यह घोर आपत्ति शान्त हो क्योंकि इससे धर्म्म और अर्थका नाश होता है।

३१ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! महाराज युधिष्ठिरकी आज्ञा ले और महाराज धृतराष्ट्रके वचन पूछकर सञ्जय हस्तिनापुरको चले। नगरमें जाकर सञ्जय रानवासके द्वारपर पहुंचे और द्वारपालसे बोले, हे द्वारपाल! तुम जाकर महाराजसे कहो कि विराटनगरसे सञ्जय लौट आये। हे द्वारपाल! यदि महाराज जागते हों तो तुम हमारे आनेका समचार कहना, हमको उनसे बहुत आवश्यक बात कहनी है, इस लिये तुम जलदी कहकर लौटो। सञ्जयके वचन सुन द्वारपाल महाराजके पास जाकर कहने लगा, हे महाराज! हे पृथ्वीनाथ! द्वारपर खड़े सञ्जय आपको प्रणाम करते हैं, वे अभी पाण्डवोंके पाससे लौटे हैं और महाराजका दर्शन करना चाहते हैं, मुझे जो आज्ञा हो सो करूं। महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे द्वारपाल! तुम सञ्जयसे हमारी कुशल कहो और सत्कार सहित उनको भीतर लाओ, मैं उनको कभी भी भीतर आनेसे रोकता नहीं, तब वे द्वारपर क्यों खड़े हैं?

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! इसके पश्चात सञ्जय महावीर चत्रियोंसे रक्षित महाराजके स्थानमें गये। उन्होंने सिंहासनपर बैठे विचित्रवीर्य्यपुत्र महाराज धृतराष्ट्रको देखा पश्चात उन्होंने हाथ जोड़कर प्रणाम किया और कहने लगे, सञ्जय बोले, हे महाराज! हे पृथ्वीनाथ! मैं सञ्जय हूं, आपके चरणोंमें प्रणाम करता हूं। मैं पाण्डवोंके पाससे लौट आया; हे पृथ्वीनाथ! पाण्डवपुत्र युधिष्ठिरने आपको प्रणाम करके कुशल पूछी है। महाराज युधिष्ठिरने आपके पुत्र, पौत्र, मित्र, मन्त्री और नौकरोंकी कुशल पूछी है। महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! हम तुमको प्रसन्न करके पूछते हैं, कहो कुन्तीपुत्र महाराज युधिष्ठिर पुत्र, मन्त्री और भाइयोंके सहित कुशलसे हैं? सञ्जय बोले, महाराज युधिष्ठिर निर्णय जाननेवाले, महात्मा, शीलवान, महा पण्डित और बुद्धिमान हैं। हे भारत! युधिष्ठिर धर्म्मसे दयाको और धन इकट्ठा करनेसे धर्म्मको अधिक समझते हैं। वे अपने प्यारे सुख अधर्म्म और प्रयोजन रहित कामोंको नहीं करते। वह जानते हैं कि जैसे सूतमें बंधी कठपुतली नचानेवालेके वशमें रहती है, ऐसे मनुष्य भी किसी दूसरेके वशमें रहता है। हमने युधिष्ठिरका ऐसा निश्चय देख जान

लिया कि प्रारब्ध बड़ा बलवान है। आपके कर्म्मके दोष और न सहने योग्य पापके उदयको देखकर हमें यह भी निश्चय हो गया है, कि जब तक वैर करनेवाले मनुष्यको शव छोड़ता है, तभीतक उसकी प्रशंसा होती है। वीर युधिष्ठिर अधर्म्मको सांपको असमर्थ केंचुलीके समान छोड़कर, आपसे सन्धि करना चाहते हैं, उनका आपसे कुछ वैरभी नहीं है। हे महाराज! आप अपने कर्म्मोंको सुनिये। आपका कर्म्म धर्म्म और अर्थसे बाहर है; इसको कोई साधु नहीं कह सकता है, आपने जो कर्म्म किया है; वह इस लोक और परलोकमें दुःख देनेवाला है; आप अपने पुत्रोंके वशमें होकर पाण्डवोंके सङ्ग जो अन्याय करते हैं, सो महा अधर्म्म है; आप भरतकुलमें श्रेष्ठ हैं, इस लिये आपको यह कर्म्म नहीं करना चाहिये। यह कर्म्म, मूर्ख, नीच कुलमें उत्पन्न हुए, दयारहित, वैरी, क्षत्रियोंके धर्म्मको न जाननेवाले, मूर्ख और दुर्ब्बलको करना चाहिये। क्योंकि ऐसेही मनुष्य आपत्तिमें पड़ने योग्य होते हैं। उत्तम कुलमें उत्पन्न हुए, बलवान, यशस्वी पण्डित, सुखसे जीनेवाले, जितेन्द्रिय धर्म्म और अधर्म्मको जाननेवाले महात्मा ऐसे कर्म्मको नहीं करते; प्रारब्धहीसे ईश्वरने यह सब गुण आपको दिये हैं; परन्तु न जाने आप ऐसा अधर्म्म क्यों करते हैं? आपके समान सब धर्म्मोंको जाननेवाले बुद्धिमान भीष्मादिक मन्त्रियोंसे युक्त आप अपने मन्त्रियोंकी सम्मतिके विरुद्ध अधर्म्म कैसे करते हैं? आपके सब मन्त्री सब विषयोंके जाननेवाले हैं, वे आपको सदा सब कामोंमें उत्तम सम्मति देते हैं; उन्होंने यह निश्चयकर लिया है, कि पाण्डवोंको राज्य न देनेसे अवश्य कुरुकुलका नाश हो जायगा। यदि बिना समयमें युधिष्ठिर कौरवोंके नाशकी इच्छा करते तो यह पाप उन्हींके शिर रहता; परन्तु उन्होंने यह सब दोष आपहीके शिर रख दिया है, इससे जगतमें आपकी बहुत निन्दा होगी। हे महाराज! अर्ज्जुन इसी शरीरसे स्वर्गमें गया और फिर जगतमें लौट आया; इसमें प्रारब्धको छोड़कर और किसे बलवान कहेंगे। स्वर्गमें जानेहीसे सब लोग अर्ज्जुनको मानते हैं, इससे जान पड़ता है कि प्रारब्ध बड़ा बलवान है; यही पाण्डवोंके तेज और प्रारब्धके कर्म्मको देखके निश्चय होता है कि हानि और लाभ अनित्य हैं, राजा बलि अपनी प्रारब्धको किसी प्रकार नांघ नहीं सके, अर्थात सौ यज्ञ करनेपर भी उन्हें पातालमें जाना पड़ा, इससे हमको निश्चय होता है कि समय बड़ा बलवान है। जन्तुओंके आंख, कान, जीभ, नाक और खालही ज्ञानके स्थान हैं; इस लिये सुखी बुद्धिमानको उचित है कि इन पांचो इन्द्रियोंको इनके विषयोंसे रोके, अर्थात इनको किसी बुरे विषयोंमें न जाने दे। ऐसा जान पड़ता है कि केवल अपनाही कर्म्म अपनेको फलदायक नहीं होता, क्योंकि लड़काईमें माता और पिताके दिये हुए अन्नसे लड़का बढ़ता है; वहां अपना कर्म्म जन्मका हेतु है। हे राजन्! प्रिय, अप्रिय, सुख, दुःख, निन्दा और प्रशंसा मनुष्यको अपने कर्म्मसे प्राप्त होते हैं, जो इन्हें मानता है, उस उत्तम वृत्तिवालेकी प्रशंसा महात्मा करते हैं। यदि उससे कोई अपराध हो जाय तो उसीको निन्दा होने लगती है; इस लिये हम आपकी निन्दा करते हैं; क्योंकि आपका किया हुआ विरोध कुरुवंशका नाश करेगा। यह विरोध आपहीके कर्म्मसे हुआ है, इस लिये कौरवोंको इस प्रकार भस्म करेगा। हे राजन्! आप अकेले होने अपने लोभी पुत्रके वशमें होकर जुएके समयमें शान्ति न करी। अब उसके फलको भोगिये। हे कुरुनन्दन! हे कौरवेन्द्र!

आपने महात्माओंसे वैर और मूर्खोंसे प्रीति करी है, इस लिये और दुर्बल होनेके कारण इस समस्त पृथ्वीका राज्य आप नहीं कर सकते हैं। हे पुरुषसिंह! मैं रथमें बैठके चलनेमें बहुत थक गया हूं, इस लिये मुझे घरमें जाकर सोनेकी आज्ञा दीजिये; प्रातःकाल जब सब कौरव सभामें बैठेंगे, तब महाराज युधिष्ठिरके वचन सुनाऊंगा।

महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे पुत्र! हम तुम्हें घर जानेकी आज्ञा देते हैं, तुम घरमें जाकर सोओ; प्रातःकाल हम सब कौरवोंके सहित सभामें बैठकर युधिष्ठिरके वचन सुनेंगे।

२२ अध्याय और सञ्जययान पर्व्वसमाप्त।

अथ प्रजागर पर्व्व।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! सञ्जयके जानेके पश्चात महाबुद्धिमान महाराज धृतराष्ट्रने द्वारपालसे कहा, हम विदुरको देखना चाहते हैं, तुम शीघ्र उनको बुला लाओ, देर मत करो। राजाके वचन सुनतेही द्वारपाल विदुरके पास गया और कहने लगा, हे महा पण्डित! महाराजाधिराज आपको देखना चाहते हैं। द्वारपालके वचन सुन विदुर शीघ्रतासे राजाके द्वारपर पहुंचे और द्वारपालसे कहा कि महाराजसे हमारे आनेका निवेदन करो। द्वारपाल उनकी आज्ञा सुन महाराजके पास गये और कहने लगा, हे राजेन्द्र! आपकी आज्ञानुसार विदुर आये हैं, वह आपके चरणोंका दर्शन करना चाहते हैं, जैसी आज्ञा हो वैसा किया जाय।

महाराज बोले, तुम महा बुद्धिमान दूरदर्शी विदुरको शीघ्र हमारे पास ले आओ, क्योंकि हम उनके देखनेमें कुछ बिलम्ब करना नहीं चाहते।

द्वारपाल विदुरके पास आकर बोला, आप बुद्धिमान महाराजकी रनिवासमें जाइये। महाराजने कहा है कि हम आपके दर्शनके लिये कुछ बिलम्ब नहीं चाहते।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, द्वारपालके वचन सुन विदुर भीतर चले गये और चिन्ता सहित राजाको बैठे देख हाथ जोड़कर बोले, हे महाराज! मैं विदुर आपकी आज्ञासे आपके पास आया हूं, जो मेरे योग्य काम हो, उसकी मुझे आज्ञा कीजिये।

धृतराष्ट्र बोले, हे विदुर! सञ्जय पाण्डवोंके पाससे लौट आया; वह मेरी निन्दा करके अभी अपने घरको गया है, प्रातःकाल सभामें युधिष्ठिरके वचन सुनावेगा। मैंने अभी तक कुरुकुल श्रेष्ठ युधिष्ठिरके वचन नहीं सुने हैं; यही चिन्ता मेरे शरीरको जलाये देती है; इसीसे मुझे निद्रा भी नहीं आई; जागनेसे भी हृदय जला जाता है, तुम धर्म्म और अर्थके जाननेवाले हो; इससे जो हमारे कल्याणकी बात हो सो कहो। जिस समयसे सञ्जय पाण्डवोंके पाससे आया, उसी समयसे मेरा मन शान्त नहीं होता। मेरी सब इन्द्री नष्ट होगई हैं, और मुझे यह चिन्ता हो रही है कि न जाने प्रातःकाल सञ्जय क्या कहेगा!

विदुर बोले, बलवान शत्रुसे अभियुक्त दुर्बल, सामग्री रहित, लुटे हुए, कामी और चोरको निद्रा नहीं आती। हे महाराज! कहिये आपने इन महा दोषोंमेंसे कोई दोष तो नहीं किया? कहिये, आप किसी दूसरेका धन छीननेके लोभकर दुःख तो नहीं करते?

महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे विदुर! तुम राजऋषिकुलमें बड़े बुद्धिमान और महाप्राज्ञ उत्पन्न हुए हो, इस लिये हम तुम्हारे अर्थ और कल्याणसे भरे वचन सुनना चाहते हैं।

विदुर बोले, हे धृतराष्ट्र! जो प्रशंसनीय कर्म्म करते हैं, निन्दित कर्म्म नहीं करते तथा अनास्तिक, और श्रद्धालु हैं ऐसे महाराज युधि-

ष्ठिर सब राजलक्षणोंसे भरे और तीन लोकके स्वामी होनेके योग्य हैं; आपको उचित था कि सदा उनकी प्रार्थना करते रहें; परन्तु आपने उन्हेंही वनको निकाल दिया। आपने परम धर्म्मात्मा और सब शास्त्रोंके पण्डित होकर भी अन्धे होनेके कारण राज्य नहीं पाया, तथापि पाण्डवोंका राज्य छीन लिया, इस लिये आप सत्यही अन्धे हैं। हे राजेन्द्र! महाराज युधिष्ठिर दयावान, साधु, धर्म्मात्मा, सत्यवादी और महाबली होनेके कारण तथा आपको अपना पिता समझकर आपके सब अपराधोंको क्षमा कर रहे हैं। आप दुर्य्योधन, शकुनि, कर्ण और दुःशासनको समर्थ बनाकर किस लिये अपने कल्याणकी इच्छा करते हैं? जिसको शास्त्र शक्ति, वैराग्य और धर्म्म यथार्थ भावसे न चलने दे, उसे पण्डित मूर्ख कहते हैं; अर्थात जो पण्डित, वैराग्यवान, धर्म्मात्मा और शक्तिमान होकर धर्म्मको छोड़ दे वही मूर्ख है। जो उत्तम कर्म्मोंको करे, नीच कर्म्मोंको त्यागे, ईश्वरको सत्य माने और सबमें श्रद्धा करे वही पण्डित कहाता है। जो क्रोध, आनन्द, अभिमान और लज्जासे धर्म्मको न छोड़े तथा आदरयोग्य मनुष्यका आदर करे, वही पण्डित कहाता है! जिसके उपाय और सम्मतिको कोई न जान सके, सब कोई किये हुए कार्य्यहीको देखें वही पण्डित कहाता है। जिसके कार्य्यको जाड़ा, गर्मी, डर, काम, धन और निर्धनता नाश न कर सके वही पण्डित कहाता है। जिसकी सारी बुद्धि धर्म्म और अर्थसे भरी हो, जो कामको छोड़कर अर्थको उत्पन्न करे वही पण्डित कहाता है। पण्डित लोग शक्तिके अनुसार करनेकी इच्छा करते हैं, और करनेकी इच्छाके समान कार्य्य करके दिखा देते हैं, और किसीका निरादर नहीं करते। पण्डितोंकी यही पहचान है कि अर्थको शीघ्र समझ लें, विषयोंको बड़ी देरतक सुनते रहें, खूब समझकर कार्य्य करते रहें; वे कदापि काम और क्रोधसे कोई कार्य्य नहीं करते और बिना पूछे बोलते नहीं। पण्डित लोग प्राप्त न होने योग्य वस्तुकी इच्छा नहीं करते, नष्ट हुएका सोच नहीं करते और आपत्तिमेंभी नहीं घबड़ाते। जो निश्चय करके कार्य्यको करता है, बिना समाप्त किये कामको नहीं छोड़ता, जो किसी समय अपने कार्य्यसे नहीं रुकता; जो अपनी इन्द्रियोंको अपने वशमें रखता है, वही पण्डित कहाता है। हे भरतकुलसिंह! पण्डित लोग अच्छे कर्म्म करते हैं, सदा धन प्राप्तिका उपाय करते हैं, और अपने हितको नहीं छोड़ते। जो आदरसे प्रसन्न हो और निरादरसे क्रोध न करे, जो गङ्गाके समान गम्भीर हो वही पण्डित कहाता है। जिसकी बुद्धि विद्याके अनुसार और विद्या बुद्धिके अनुसार हो और जो किसी मर्य्यादाको न तोड़े, वही पण्डित पदवीको प्राप्त कर सकता है। जो कहनेमें न रुके, उत्तम कथा जानता हो, तर्क वितर्क कर सकता हो, जिसकी बुद्धि उसी समय अर्थोंको समझ ले, जो पथ देखतेही कह सके उसे पण्डित कहते हैं। जो बिना पढ़ा, अभिमानी, और दरिद्र होकर ऊंची इच्छावाला हो, जो नीच कर्म्मोंसे धन उत्पन्न करे, वही मूर्ख कहाता है। जो अपने प्रयोजनको छोड़ दूसरेके प्रयोजनको सिद्ध करता है, जो समर्थ होकर भी मित्रकी सहायता नहीं करता, और असमर्थ होकर सहायता करना चाहता है, वही मूर्ख कहाता है। जो अयोग्य वस्तुओंकी इच्छा करे, योग्य वस्तुओंको छोड़े, और जो बलवानसे शत्रुता करे, वही मूर्ख कहाता है। जो शत्रुको मित्र बनावे, मित्रको शत्रु बनावे; मित्रकी हानि करे, और बुरे कर्म्म करे वही मूर्ख

कहाता है। हे भरतकुलसिंह! जो सेवकोंके द्वारा कार्य्य करे, आप काम करनेमें सन्देह करे और शीघ्र करने योग्य काममें देर करे, वही मूर्ख कहाता है। जो पितरोंका श्राद्ध न करे, देवतोंकी पूजा न करे, और अच्छे मित्रसे प्रेम न करे, वही मूर्ख कहाता है। जो बिना बुलाये जाय, बिना बूझे बके और विश्वास न करने योग्य मनुष्यका विश्वास करे, वही मूर्ख कहाता है। जो दूसरेको दोष दे और आप वैसेही बुरे कर्म्म करे, और जो बिना प्रयोजन क्रोध करे, वह महामूर्ख कहाता है। जो धर्म्म और अर्थके बिना अपनेको बलवान समझके बुरे कर्म्मोंसे न प्राप्त होने योग्य वस्तुकी इच्छा करे वह महामूर्ख कहाता है। जो न आज्ञा करने योग्य मनुष्यपर आज्ञा करे, जो राजाके बिना रनिवासमें जाय और जो सूमकी सेवा करे, वह महामूर्ख कहाता है। जो धन या बहुत विद्याको प्राप्त करके अभिमानरहित होकर घूमता है, वही पण्डित कहाता है।

हे राजन्! एकेलाही धनको भोगनेवाला, अकेलाही सुन्दर घरमें रहनेवाला जो सेवकोंको बिना दिये भोजन कर ले, उसके समान दयारहित और कौन होगा? अकेलाही पाप करता है, अकेलाही फल भोगता है, उसके सङ्गी सब छूट जाते हैं और कर्त्ताही दोषमें फंसता है। धनुषधारीका वाण एकहीको मारता है, कभी नहीं भी मारता है, परन्तु बुद्धिमानकी बुद्धि राजाके सहित राज्यका नाश कर देती है। हे राजन्! आप अपनी एक बुद्धिसे मित्र और शत्रुओंका निश्चय कीजिये; साम, दान, दण्ड और भेद इन चार यत्नोंसे मित्र उदासीन और शत्रुओंको जीतकर सन्धि और विग्रह आदि राज्यके छः अङ्गको जानकर स्त्री, जुआ, आखेट, मद्यपान, कठोर बचन, महादण्ड, और प्रयोजन दूषण इन सात बुरे कामोंको छोड़कर सुखी होइये। घोर विष एकहीका नाश करता है, शस्त्रसे एकही मनुष्य मरता है, परन्तु राजाकी बुरी बुद्धि राज्यके समेत राजाका नाश करती है। एकला स्वादिष्ट भोजन न करे, एकला विषयोंको न विचारे, एकला मार्गमें न चले, और सबके सोने पर एकला न जागता रहे। हे राजेन्द्र! ईश्वर एक है, उसको तुम नहीं जानते हो; वह दुःखोंसे इस प्रकार उद्धार करता है, जैसे समुद्रसे नाव। क्षमावान मनुष्यको सब कोई असमर्थ जान लेते हैं, यही क्षमावानमें एक दोष है, दूसरा नहीं। इस दोषसे क्षमावानका निरादर नहीं करना चाहिये क्योंकि क्षमाही परम बल है, क्षमा समर्थोंका गुण और असमर्थ मनुष्योंका भूषण है। क्षमासे सबको वशमें कर सकता है, ऐसा कर्म्म कोई नहीं जो क्षमासे न सिद्ध हो सके, जिसके हाथमें शान्ति रूपी खड्ग है, उसका दुष्ट मनुष्य क्या कर सकता है? जहां तिनका नहीं है; वहां गिरी अग्नि आपही शान्त हो जाती है। क्रोधी मनुष्य अपने दोषोंसे आपही दुःखोंमें पड़ता है। अकेला धर्म्मही कल्याणदायक है, अकेली क्षमाही परम शान्ति है, अकेली विद्याही परम सन्तोष है और किसीकी हिंसा न करनाही परम सुख है। विरोध न करनेवाले राजाको और परदेश न जानेवाले ब्राह्मणको पृथ्वी इस प्रकार खा जाती है, जैसे बिलमें आये पदार्थोंको सर्प! मनुष्य मीठी वाणी और महात्माओंसे प्रेम इनही दो कर्म्मोंके करनेसे इस लोकमें प्रतिष्ठाको प्राप्त करता है। हे पुरुषव्याघ्र! चाहे हुए मनुष्यको चाहनेवाली स्त्री, और पूजा किये हुएकी पूजा करनेवाला मनुष्य यह दोनों बिना विचारे करनेवाले मूर्ख हैं। जो दरिद्र होकर प्राप्त न होने योग्य वस्तुकी इच्छा करे, और जो असमर्थ होकर क्रोध करे, ये दोनों शरीरनाशक तेज कांटे हैं। जो गृहस्थ होकर कुछ कर्म्म न करे और जो